



# اصولِ تحقیق

تراہیم و اضافہ جات کے ساتھ

پروفیسر ڈاکٹر عبدالحمید خان عباسی



# اصول تحقیق

(تراجم و اضافہ جات کے ساتھ)

پروفیسر ڈاکٹر عبدالحمید خان عباسی



نیشنل بک فاؤنڈیشن  
اسلام آباد





© 2015 نیشنل بک فاؤنڈیشن، اسلام آباد  
جملہ حقوق محفوظ ہیں۔ یہ کتاب یا اس کا کوئی بھی حصہ کسی بھی شکل میں  
نیشنل بک فاؤنڈیشن کی باقاعدہ تحریری اجازت کے بغیر شائع نہیں کیا جاسکتا



نگران : پروفیسر ڈاکٹر انعام الحق جاوید  
مصنف : پروفیسر ڈاکٹر عبدالحمید خان عباسی  
سرورق : منصور احمد  
اشاعت : فروری 2015ء  
تعداد : 2000  
کوڈ نمبر : GNU-220.  
آئی ایس بی این : 978-969-37-0745-8  
طالع : ماریہ پرنٹرز، اسلام آباد  
قیمت : 250 روپے

نیشنل بک فاؤنڈیشن کی مطبوعات کے بارے میں مزید معلومات کے لیے رابطہ:  
ویب سائٹ: <http://www.nbf.org.pk> یا فون: 92-51-9261125  
یا ای میل: [books@nbf.org.pk](mailto:books@nbf.org.pk)



## فہرست

|    |                        |          |   |
|----|------------------------|----------|---|
| 23 | ڈاکٹر انعام الحق جاوید | پیش لفظ  | o |
| 25 | ڈاکٹر شاہد صدیقی       | دیباچہ   | o |
| 27 | عبدالحمید خان عباسی    | عرض مؤلف | o |

### باب ۱: اسلام میں تحقیق کے اصول (اصول روایت و درایت)

| صفحہ نمبر | مضمون   |   |  |
|-----------|---|---|--|
| 35        | تحقیقی اصولوں کی طرح مسلمانوں نے ڈالی                 | ☆ |  |
| 37        | محدثین کے اصول روایت و درایت                          | ☆ |  |
| 38        | اولاً: اصول روایت                                     | ☆ |  |
| 38        | اصول روایت کا ماخذ                                    | ☆ |  |
| 39        | تاریخی پس منظر  | ☆ |  |
| 39        | صحابہ کرام رضی اللہ عنہم اور اصول روایت               | ☆ |  |
| 40        | قبول روایت میں حضرت ابو بکر رضی اللہ عنہ کی محتاط روش | ☆ |  |
| 40        | ابو بکر رضی اللہ عنہ اصول شہادت کے بانی ہیں           | ☆ |  |
| 41        | قبول روایت میں حضرت عمر رضی اللہ عنہ کا محتاط رویہ    | ☆ |  |
| 43        | قبول روایت میں حضرت علی رضی اللہ عنہ کی محتاط روش     | ☆ |  |
| 45        | ایک بے مثل اہتمام                                     | ☆ |  |
| 45        | سند کا مفہوم  | ☆ |  |



|    |   |   |
|----|---|---|
| 46 | حدیث کی تحقیق کے لیے سند کی تفتیش کا باقاعدہ آغاز | ☆ |
| 47 | متصل و صحیح سند کا اہتمام                         | ☆ |
| 48 | صحیح سند  | ☆ |
| 49 | ثمرات   | ☆ |
| 50 | جرح و تعدیل رواد کے مؤسسین                        | ☆ |
| 50 | عالی سند کی تلاش                                  | ☆ |
| 51 | نتیجہ   | ☆ |
| 52 | ائمہ مجتہدین اور اصول روایت                       | ☆ |
| 53 | امام ابوحنیفہ اور اصول روایت                      | ☆ |
| 53 | امام ابوحنیفہ کی شرائط                            | ☆ |
| 55 | امام مالک (۹۳ھ تا ۱۷۹ھ)                           | ☆ |
| 55 | امام شافعی (۱۵۰ھ تا ۲۰۴ھ)                         | ☆ |
| 56 | امام احمد بن حنبل (۱۶۴ھ تا ۲۴۱ھ)                  | ☆ |
| 57 | ائمہ محدثین اور اصول روایت                        | ☆ |
| 58 | تحمل و ادائے حدیث کی شروط                         | ☆ |
| 58 | روایت میں راوی کے قیاس کی تحقیق                   | ☆ |
| 59 | معیار راوی بلحاظ نوعیت واقعہ                      | ☆ |
| 60 | تحقیق سند بلحاظ اہمیت متن                         | ☆ |
| 60 | خلاف قیاس مرویات کی سند میں فقہاء کا اعتبار       | ☆ |
| 61 | تحقیقات رواد کے دیگر ثمرات                        | ☆ |
| 61 | صحیح حدیث   | ☆ |
| 61 | ۵۔ عدالت  | ☆ |



|    |   |   |
|----|---|---|
| 62 | ۶۔ علت                                  | ☆ |
| 63 | شدوذ                                    | ☆ |
| 63 | روایت بالمعنی                           | ☆ |
| 63 | ثانیاً: اصول درایت                      | ☆ |
| 63 | درایت کا مفہوم                          | ☆ |
| 63 | الف۔ لغوی مفہوم                         | ☆ |
| 64 | ب۔ اصطلاحی مفہوم                        | ☆ |
| 64 | درایت کا عام اصطلاحی مفہوم              | ☆ |
| 65 | درایت کا خاص اصطلاحی مفہوم              | ☆ |
| 66 | اصول درایت کا ماخذ                      | ☆ |
| 66 | قرآن مجید اور اصول درایت                | ☆ |
| 69 | حدیث رسول ﷺ اور اصول درایت              | ☆ |
| 69 | صحابہ کرام رضی اللہ عنہم اور اصول درایت | ☆ |
| 72 | درایت کے اصول                           | ☆ |
| 74 | مغربی فکر تحقیق                         | ☆ |
| 75 | نتائج                                   | ☆ |
| 78 | حوالہ جات و حواشی                       | ☆ |

### باب ۲: تحقیق و تنقید کا مفہوم اور دونوں کا باہمی تعلق

|    |                  |   |
|----|------------------|---|
| 89 | تحقیق کا مفہوم   | ☆ |
| 89 | الف۔ لغوی مفہوم  | ☆ |
| 89 | ب۔ اصطلاحی مفہوم | ☆ |
| 92 | تنقید کا مفہوم   | ☆ |



| صفحہ نمبر   | عنوان  |   |
|---|--|---|
| 92  | الف۔ لغوی مفہوم                              | ☆ |
| 92  | ب۔ اصطلاحی مفہوم                             | ☆ |
| 93  | تحقیق و تنقید کا باہمی تعلق                  | ☆ |
| 93  | تحقیق و تنقید اور تخلیق میں ربط              | ☆ |
| 94  | پہلا رجحان                                   | ☆ |
| 101   | دوسرا رجحان                                  | ☆ |
| 104   | ترجیح  | ☆ |
| 104   | تحقیق و تنقید سے مزین اسلامی کتب             | ☆ |
| 104   | الفہرست از محمد بن اسحاق ابن ندیم            | ☆ |
| 107   | مقدمہ ابن خلدون (عبدالرحمن بن محمد بن خلدون) | ☆ |
| 110   | تاریخ التراث العربی از پروفسر فواد سزگین     | ☆ |
| 110   | سیرت النبی صلی اللہ علیہ وسلم از شبلی نعمانی | ☆ |
| 112   | حوالہ جات و حواشی                            | ☆ |
| <b>باب ۳: تحقیق کی خصوصیات اور اس کے بنیادی لوازم</b> |  |   |
| 117   | اولاً: تحقیق کی خصوصیات                      | ☆ |
| 117   | مسئلہ (موضوع)                                | ☆ |
| 118   | مسئلہ کے انتخاب میں معاون ذرائع              | ☆ |
| 119   | طریق کار                                     | ☆ |
| 120   | تحقیق میں قیاس و تخیل کا عمل دخل             | ☆ |
| 122   | مواد کا تجزیہ                                | ☆ |
| 122   | فائدہ  | ☆ |
| 123   | متوقع نتائج                                  | ☆ |



| صفحہ نمبر | عنوان   |   |
|-----------|---|---|
| 124       | خاکہ تحقیق                                      | ☆ |
| 125       | حیات انسانی کا جزو لاینفک                       | ☆ |
| 125       | ماضی، حال اور مستقبل میں ربط                    | ☆ |
| 125       | موجودہ مواد کی ترتیب                            | ☆ |
| 125       | انسانی ترقی                                     | ☆ |
| 126       | بے کنار سمندر و ترقی پسند قوت                   | ☆ |
| 126       | نظریات میں تغیر و تبدل کا سبب                   | ☆ |
| 127       | ثانیاً: تحقیق کے لوازم                          | ☆ |
| 127       | تحقیق کو بطور طرز زندگی اپنانا                  | ☆ |
| 128       | سچی لگن   | ☆ |
| 128       | مختلف علوم سے واقفیت                            | ☆ |
| 128       | اہم مصادر و مراجع سے واقفیت                     | ☆ |
| 129       | زبانوں سے واقفیت                                | ☆ |
| 130       | حصول مواد کے ذرائع سے واقفیت                    | ☆ |
| 130       | حقائق کی تلاش اور چھان پھٹک                     | ☆ |
| 132       | مواد کی ترتیب و تنظیم                           | ☆ |
| 132       | مقالہ کی تسوید و پیش کش                         | ☆ |
| 133       | محقق کے لیے بنیادی لوازم                        | ☆ |
| 133       | حق گوئی کی صفت سے متصف ہونا                     | ☆ |
| 134       | غیر متعصب و غیر جانبدار ہونا                    | ☆ |
| 134       | ہٹ دہرم و ضدی نہ ہونا                           | ☆ |
| 134       | تحقیق کو دنیاوی مقاصد کے حصول کا ذریعہ نہ بنانا | ☆ |



| صفحہ نمبر | عنوان                                    |   |
|-----------|--|---|
| 134       | دلچسپی اور محنت کی صفت سے مزین ہونا      | ☆ |
| 135       | فضیلتِ صبر سے متصف ہونا                  | ☆ |
| 135       | متوازن و معتدل ہونا                      | ☆ |
| 135       | اخلاقی جرأت کا مظاہرہ کرنا               | ☆ |
| 135       | وسعت مطالعہ                              | ☆ |
| 136       | نقاد ہونا                                | ☆ |
| 136       | محقق طلبہ کی صلاحیتوں کو جانچنے کی شرطیں | ☆ |
| 138       | حوالہ جات                                | ☆ |

### باب ۴: موضوع تحقیق کا انتخاب اور خاکہ

|     |                                  |   |
|-----|----------------------------------|---|
| 143 | اولاً: موضوع تحقیق کا انتخاب     | ☆ |
| 146 | انتخاب موضوع کے لیے امدادی وسائل | ☆ |
| 147 | ثانیاً: موضوع تحقیق کا خاکہ      | ☆ |
| 147 | خاکہ کا مفہوم                    | ☆ |
| 148 | خاکہ بنانا ایک مسلسل عمل ہے      | ☆ |
| 148 | خاکہ کی اہمیت و افادیت           | ☆ |
| 149 | تشکیل و ہیئت                     | ☆ |
| 149 | مسئلے کا بیان                    | ☆ |
| 150 | لٹریچر کا جائزہ                  | ☆ |
| 150 | مسئلے (موضوع) کی اہمیت           | ☆ |
| 151 | مفروضات کا بیان                  | ☆ |
| 151 | نمونہ بندی کا طریق کار           | ☆ |
| 151 | آلات کا استعمال                  | ☆ |



| صفحہ نمبر | عنوان                         |   |
|-----------|-------------------------------|---|
| 152       | تحقیق کا طریق کار             | ☆ |
| 152       | جدول اوقات                    | ☆ |
| 153       | ماہر اساتذہ کی کمیٹی اور خاکہ | ☆ |
| 153       | حوالہ جات                     | ☆ |

### باب ۵: اقسام تحقیق اور ان کے مابین فرق

|     |  |   |
|-----|--|---|
| 157 | مقاصد تحقیق                              | ☆ |
| 157 | پہلا مقصد                                | ☆ |
| 157 | دوسرا مقصد                               | ☆ |
| 158 | تیسرا مقصد                               | ☆ |
| 158 | خالص تحقیق                               | ☆ |
| 159 | اطلاقی تحقیق                             | ☆ |
| 161 | تجرباتی تحقیق                            | ☆ |
| 162 | تجرباتی تحقیق میں سائنسی تجزیہ کی نوعیت  | ☆ |
| 163 | تجرباتی تحقیق میں تجرباتی خاکے کے عناصر  | ☆ |
| 163 | تجرباتی تحقیق کی مثال                    | ☆ |
| 164 | اسلامی علوم میں ہونے والی تحقیق کی اقسام | ☆ |
| 165 | میکانیکل اسلامی تحقیق                    | ☆ |
| 167 | تاریخی تحقیق                             | ☆ |
| 167 | تعمیری تحقیق                             | ☆ |
| 171 | حوالہ جات                                | ☆ |

### باب ۶: مآخذ کا مفہوم اور اولین و ثانیوی مآخذ میں فرق

|     |               |   |
|-----|---------------|---|
| 175 | مآخذ کا مفہوم | ☆ |
|-----|---------------|---|



|  |   |   |
|--|---|---|
| 176  | ماخذ کی اقسام                             | ☆ |
| 176  | اصول                                      | ☆ |
| 177  | معتبر ماخذ                                | ☆ |
| 177  | فرق                                       | ☆ |
| 177  | ماخذ کی اہمیت                             | ☆ |
| 178  | حوالہ جات                                 | ☆ |
| <b>باب ۷: دستاویزی تحقیق اور اس کے لیے بنیادی و ثانوی ماخذ کا تعین</b> |   |   |
| 181  | دستاویزی اسلوب تحقیق                      | ☆ |
| 181  | تاریخ کا مفہوم                            | ☆ |
| 181  | الف۔ لغوی مفہوم                           | ☆ |
| 182  | ب۔ اصطلاحی مفہوم                          | ☆ |
| 183  | دستاویزی تحقیق کی اہمیت و افادیت          | ☆ |
| 184  | طریق کار اور اس کے مدارج                  | ☆ |
| 185  | دستاویزی تحقیق کی اقسام                   | ☆ |
| 185  | تاریخی تحقیق کے لیے بنیادی اور ثانوی ماخذ | ☆ |
| 185  | اولاً: بنیادی ماخذ                        | ☆ |
| 186  | ثانیاً: ثانوی ماخذ                        | ☆ |
| 187  | ریکارڈز اور آثار                          | ☆ |
| 187  | ۱۔ سرکاری ریکارڈز                         | ☆ |
| 187  | ۲۔ ذاتی ریکارڈز                           | ☆ |
| 187  | ۳۔ زبانی روایات                           | ☆ |
| 188  | ۴۔ تصویری ریکارڈز                         | ☆ |



## صفحہ نمبر

## عنوان

|     |                     |   |
|-----|---------------------|---|
| 188 | ۵۔ مطبوعہ مواد      | ☆ |
| 188 | ۶۔ میکانیکی ریکارڈز | ☆ |
| 188 | ۷۔ آثار             | ☆ |
| 189 | الف۔ مادی آثار      | ☆ |
| 189 | ب۔ مطبوعہ آثار      | ☆ |
| 189 | ج۔ خطی مواد         | ☆ |
| 190 | متفرقات             | ☆ |
| 190 | سالنامے             | ☆ |
| 190 | دستاویزات           | ☆ |
| 190 | فہرست               | ☆ |
| 190 | کرائیکل             | ☆ |
| 191 | وثیقہ               | ☆ |
| 191 | قصے کہانیاں         | ☆ |
| 191 | مخطوط               | ☆ |
| 191 | یادداشت             | ☆ |
| 191 | یادگار              | ☆ |
| 192 | اسناد حقوق و مراعات | ☆ |
| 192 | رجسٹر               | ☆ |
| 192 | رول                 | ☆ |
| 192 | جدول                | ☆ |
| 193 | الف۔ ابتدائی ماخذ   | ☆ |
| 193 | ب۔ ثانوی ماخذ       | ☆ |



|   |                                    |   |
|---|------------------------------------|---|
| 194   | دستاویزی ماخذ کی تنقید             | ☆ |
| 194   | خارجی تنقید/ جانچ پرکھ             | ☆ |
| 194   | داخلی تنقید/ جانچ پرکھ             | ☆ |
| 195   | دستاویزات کے مطالعہ میں معاون نکات | ☆ |
| 198   | حوالہ جات                          | ☆ |
| <b>باب ۸: تحقیق کے لیے حصول مواد کے وسائل اور طریقے</b> |                                    |   |
| 203   | تحقیقی عمل میں مواد کا کردار       | ☆ |
| 203   | مواد کی فراہمی میں احتیاط کی ضرورت | ☆ |
| 204   | مواد تحقیق کے حصول کے وسائل        | ☆ |
| 204   | لائبریریاں                         | ☆ |
| 205   | حلقہ عمل                           | ☆ |
| 205   | تحقیقی رسائل                       | ☆ |
| 205   | اخبار                              | ☆ |
| 206   | عوام                               | ☆ |
| 206   | مواد تحقیق کے حصول کے طریقے        | ☆ |
| 206   | بنیادی وسائل کا استعمال            | ☆ |
| 207   | سروے                               | ☆ |
| 208   | پہلا طریقہ: سوال نامہ              | ☆ |
| 208   | سوال نامہ کی اقسام                 | ☆ |
| 208   | الف۔ کھلا سوال نامہ                | ☆ |
| 209   | ب۔ بند سوال نامہ                   | ☆ |
| 209   | سوال نامہ کی تیاری کے مراحل        | ☆ |



| صفحہ نمبر | عنوان   |   |
|-----------|---|---|
| 210       | دوسرے طریقہ: انٹرویو                                | ☆ |
| 212       | مشاہدات   | ☆ |
| 212       | پڑتالی فہرست  | ☆ |
| 212       | وقت کا گوشوارہ                                      | ☆ |
| 213       | انسانی رویہ کی ڈائری                                | ☆ |
| 213       | ملکیکل آلات   | ☆ |
| 214       | کیس اسٹڈی   | ☆ |
| 214       | مقصد  | ☆ |
| 214       | اہمیت   | ☆ |
| 215       | ضروری شرائط   | ☆ |
| 216       | معلومات جمع کرنے کے ماخذ                            | ☆ |
| 216       | معلومات جمع کرنے کے طریقے                           | ☆ |
| 217       | سروے اور مطالعہ احوال میں فرق                       | ☆ |
| 217       | تحقیقی مواد کے حصول کے لیے آزمون یا ٹیسٹ کا استعمال | ☆ |
| 218       | اہمیت   | ☆ |
| 218       | فوائد   | ☆ |
| 219       | حوالہ جات   | ☆ |

### باب ۹: مفروضات اور تحقیق میں ان کی اہمیت

|     |                           |   |
|-----|---------------------------|---|
| 223 | مفروضات کا مفہوم          | ☆ |
| 224 | فرضیہ کی علمی و فنی تعریف | ☆ |
| 225 | نتیجہ                     | ☆ |
| 225 | تحقیق میں مفروضہ کی اہمیت | ☆ |



| صفحہ نمبر | عنوان   |   |
|-----------|---|---|
| 227       | مسائل کی نشاندہی                              | ☆ |
| 227       | حقائق کے ساتھ مناسبت                          | ☆ |
| 228       | طریق تحقیق کی نشاندہی                         | ☆ |
| 228       | فرضیات کی بتائی ہوئی وضاحتیں                  | ☆ |
| 229       | نتائج کے لیے فریم ورک کی فراہمی               | ☆ |
| 229       | مزید تحقیق کے لیے تحریک                       | ☆ |
| 230       | اچھے فرضیے کے خصائص                           | ☆ |
| 230       | فرضیہ لکھنے کے متعلق چند تجاویز               | ☆ |
| 231       | ہر قسم کی تحقیق میں مفروضے کی ضرورت نہیں پڑتی | ☆ |
| 233       | حوالہ جات                                     | ☆ |

باب ۱۰: حواشی و تعلیقات، حوالہ جات، اقتباسات  
اور اشاریہ سازی میں فرق اور ان کی اہمیت

|     |                                 |   |
|-----|---------------------------------|---|
| 237 | حواشی و تعلیقات کا مفہوم        | ☆ |
| 238 | حواشی و تعلیقات کا رواج قدیم ہے | ☆ |
| 238 | اہمیت                           | ☆ |
| 240 | حواشی کے مقاصد                  | ☆ |
| 241 | کچھ اصول                        | ☆ |
| 242 | حواشی و تعلیقات کا مقام         | ☆ |
| 243 | تعلیقات و حواشی میں فرق         | ☆ |
| 244 | حواشی کی اقسام                  | ☆ |
| 244 | حوالہ جات (استنادی حواشی)       | ☆ |
| 245 | مقاصد                           | ☆ |



|     |                                   |   |
|-----|-----------------------------------|---|
| 245 | منابع کی اقسام                    | ☆ |
| 246 | حوالہ جات کے طریقے                | ☆ |
| 247 | اقتباسات                          | ☆ |
| 248 | چند ضروری قواعد                   | ☆ |
| 249 | اقتباسات پیش کرنے کی ضرورت        | ☆ |
| 250 | اخذ و استعمال اقتباسات میں احتیاط | ☆ |
| 251 | اشاریہ سازی                       | ☆ |
| 251 | اشاریہ کا مفہوم                   | ☆ |
| 252 | اہمیت و افادیت                    | ☆ |
| 252 | اشاریہ کے مقاصد                   | ☆ |
| 253 | مقام                              | ☆ |
| 253 | ترتیب اشاریہ کے اسالیب            | ☆ |
| 254 | نتائج                             | ☆ |
| 255 | حوالہ جات                         | ☆ |

### باب ۱۱: الحاقی کلام اور اس کی نشاندہی کے طریقے

|     |                        |   |
|-----|------------------------|---|
| 261 | الحاقی کلام کا مفہوم   | ☆ |
| 261 | الحاقی کلام کی نشاندہی | ☆ |
| 263 | تحقیق متن بلحاظ تدوین  | ☆ |
| 264 | نسخوں کی اقسام         | ☆ |
| 265 | تنقید متن              | ☆ |
| 266 | تنقید متن کے لوازمات   | ☆ |
| 268 | الحاقی مواد کی مثالیں  | ☆ |



|  |   |   |
|--|---|---|
| 270  | متن میں الحاق در آنے کی وجوہ              | ☆ |
| 272  | حوالہ جات                                 | ☆ |
| <b>باب ۱۲: تحقیق متن کے طریقے اور متن میں غلطیاں معلوم کرنے کے ذرائع</b> |   |   |
| 277  | مفہوم متن                                 | ☆ |
| 277  | متن کا لکھا ہوا ہونا ضروری ہے             | ☆ |
| 278  | اقسام متن                                 | ☆ |
| 279  | تحقیق و تصحیح متن کے لوازمات              | ☆ |
| 279  | طرز املأ و تارتخ خط سے واقفیت             | ☆ |
| 280  | شاعری و فن عروض سے واقفیت                 | ☆ |
| 280  | عہد بعہد زبان سے واقفیت                   | ☆ |
| 281  | کاغذ اور روشنائی کی پہچان                 | ☆ |
| 281  | خطاطوں کے تذکروں سے استفادہ               | ☆ |
| 282  | متن میں تبدیلی یا غلطی کیسے واقع ہوتی ہے؟ | ☆ |
| 282  | متن میں غلطیوں یا تبدیلیوں کی اقسام       | ☆ |
| 287  | حوالہ جات                                 | ☆ |

### باب ۱۳: رموز اوقاف اور ان کے استعمال کے اصول

|     |   |   |
|-----|---|---|
| 291 | رموز اوقاف کا مفہوم                                   | ☆ |
| 292 | تاریخی پس منظر  | ☆ |
| 294 | اردو جملے کی خصوصیات                                  | ☆ |
| 294 | قرآن مجید کے رموز اوقات کا استعمال کہیں اور ممکن نہیں | ☆ |
| 295 | اردو میں رموز اوقاف کے استعمال کا باقاعدہ آغاز        | ☆ |



|                              |  |   |
|------------------------------|--|---|
| 398                          | افادیت   | ☆ |
| 399                          | رموز اوقاف کی اہمیت                              | ☆ |
| 301                          | رموز اوقاف اور ان کے استعمال کے اصول             | ☆ |
| 302                          | ختمہ (-) Fullstop                                | ☆ |
| 302                          | سکتہ (،) Comma                                   | ☆ |
| 305                          | وقفہ (;) Semi Colon                              | ☆ |
| 306                          | رابطہ (: ) Colon                                 | ☆ |
| 306                          | تفصیلیہ (-:) Colon & Dash                        | ☆ |
| 307                          | سوالیہ (?) Mark of Interogation                  | ☆ |
| 307                          | فجائیہ، ندائیہ (!) Mark of Exclamation           | ☆ |
| 307                          | قوسین ( ) یا [ ] Brackets                        | ☆ |
| 308                          | خط (___) Dash                                    | ☆ |
| 308                          | واوین (" ") Inverted Commas                      | ☆ |
| 309                          | زنجیرہ (___) Hyphen                              | ☆ |
| 309                          | نقطے (...) Dots                                  | ☆ |
| 309                          | ترچھا خط (/) Oblique                             | ☆ |
| 310                          | رموز اوقاف کے استعمال کے بارے میں چند اہم ہدایات | ☆ |
| 311                          | حوالہ جات  | ☆ |
| <b>باب ۱۴: املاء کے اصول</b> |  |   |
| 315                          | الف مقصورہ                                       | ☆ |
| 316                          | الف اور الف مقصورہ                               | ☆ |
| 316                          | الف لام اور عربی کے مرکبات                       | ☆ |



|     |                         |   |
|-----|-------------------------|---|
| 316 | الف بجائے ہائے مختلف    | ☆ |
| 318 | تنوین                   | ☆ |
| 319 | ہائے مخلوط (ھ)          | ☆ |
| 319 | نون غنہ                 | ☆ |
| 320 | واو                     | ☆ |
| 320 | واو معدولہ (و)          | ☆ |
| 321 | ہمزہ اور الف            | ☆ |
| 321 | ہمزہ اور واد            | ☆ |
| 321 | ”ہمزہ“ اور ”ی“          | ☆ |
| 323 | ”ہمزہ“ اور ”یے“         | ☆ |
| 323 | ”ہمزہ“ اور ”ی“ (آزمائش) | ☆ |
| 324 | ہمزہ اور اضافت          | ☆ |
| 325 | فصل و وصل               | ☆ |
| 326 | امالہ                   | ☆ |
| 327 | اعراب                   | ☆ |
| 327 | علامات                  | ☆ |
| 327 | أعداد                   | ☆ |
| 330 | حوالہ جات               | ☆ |

### باب ۱۵: حوالہ جاتی اصول اور کتابیات کی تیاری کے طریقے

|     |                              |   |
|-----|------------------------------|---|
| 333 | حوالہ دینے کی ضرورت و افادیت | ☆ |
| 334 | افادیت                       | ☆ |
| 334 | حوالہ دینے کے مقامات         | ☆ |



| صفحہ نمبر | عنوان                             |   |
|-----------|-----------------------------------|---|
| 334       | پہلی جگہ: ہر صفحے کا نچلہ حصہ     | ☆ |
| 334       | دوسری جگہ: ہر باب کا آخر          | ☆ |
| 335       | تیسری جگہ: کتاب یا مقالے کا آخر   | ☆ |
| 335       | چوتھی جگہ                         | ☆ |
| 336       | حوالہ دینے کے مروجہ طریقے         | ☆ |
| 336       | پہلا طریقہ                        | ☆ |
| 336       | دوسرا طریقہ                       | ☆ |
| 337       | تیسرا طریقہ                       | ☆ |
| 338       | اختصارات کا استعمال               | ☆ |
| 339       | حوالہ دینے کے اصول                | ☆ |
| 343       | حوالوں کو ترتیب دینے کے طریقے     | ☆ |
| 347       | مصنف کا نام                       | ☆ |
| 344       | کتاب کا عنوان                     | ☆ |
| 345       | کتاب کے اشاعتی کوائف              | ☆ |
| 346       | ذیلی حاشیہ (فٹ نوٹ) کے عمومی اصول | ☆ |
| 346       | ثانیاً: کتابیات کی تیاری کے طریقے | ☆ |
| 346       | کتابیات کی اہمیت و افادیت         | ☆ |
| 348       | کتابیات کی تیاری کے لوازمات       | ☆ |
| 349       | کتابیات کی تیاری کے چند مراحل     | ☆ |
| 349       | دو الفاظ پر مشتمل نام             | ☆ |
| 350       | مرکب نام                          | ☆ |
| 350       | تین الفاظ پر مشتمل نام            | ☆ |



|   |   |   |
|---|---|---|
| 350   | خواتین کے ناموں کا طریقہ اندراج                     | ☆ |
| 351   | کتب کے نام کے اعتبار سے حوالوں اور کتابیات کے فوائد | ☆ |
| 351   | کتاب کے نام سے شروع کرنا فطری طریقہ ہے              | ☆ |
| 352   | کتب کے نام کے اعتبار سے حوالہ دینے کا طریقہ         | ☆ |
| 354   | حوالہ جات   | ☆ |
| <b>باب ۱۶: معیاری تحقیقی مقالے کی خصوصیات</b> |   |   |
| 357   | تحقیق مقالے کی تعریف                                | ☆ |
| 357   | معیاری تحقیق مقالے کی خصوصیات                       | ☆ |
| 358   | مواد کی ترتیب و تنظیم                               | ☆ |
| 359   | تسوید مقالہ   | ☆ |
| 359   | آغاز تحریر کے اصول                                  | ☆ |
| 360   | الف۔ تحریر کا آغاز موضوع سے کرنا                    | ☆ |
| 360   | ب۔ نتائج اور تاثرات کو خلوص و اختصار سے پیش کرنا    | ☆ |
| 360   | اسلوب تحریر   | ☆ |
| 361   | انداز تحریر کی خصوصیات                              | ☆ |
| 361   | مقالے کی زبان                                       | ☆ |
| 362   | الفاظ کا استعمال                                    | ☆ |
| 363   | تکرار کلمات سے اجتناب                               | ☆ |
| 363   | مناسب اختصار  | ☆ |
| 363   | مطالعہ مواد   | ☆ |
| 364   | جدت   | ☆ |
| 364   | اقتباسات کا صحیح استعمال                            | ☆ |



| صفحہ نمبر | عنوان   |   |
|-----------|---|---|
| 365       | جملوں اور پیرا گرافز میں ربط                    | ☆ |
| 366       | حواشی و حوالہ جات                               | ☆ |
| 366       | خوب توجہ سے نظر ثانی کرنا                       | ☆ |
| 366       | مقاصد   | ☆ |
| 366       | الف۔ حذف و اضافہ                                | ☆ |
| 366       | ب۔ بہتر ترتیب                                   | ☆ |
| 367       | ج۔ حوالوں کی تصحیح                              | ☆ |
| 367       | د۔ جملوں کی ساخت اور زبان کی بہتری              | ☆ |
| 368       | عمدہ کتابت اور جلد بندی                         | ☆ |
| 368       | تحقیقی مقالے کی ہیئت                            | ☆ |
| 368       | سرورق   | ☆ |
| 369       | بسم اللہ الرحمن الرحیم                          | ☆ |
| 369       | ہدیہ تشکر                                       | ☆ |
| 370       | فہرست مضامین                                    | ☆ |
| 370       | ابواب   | ☆ |
| 371       | نتائج یا خلاصہ بحث                              | ☆ |
| 371       | ملحقات اور ضمیمے                                | ☆ |
| 371       | مصادر و مراجع کی فہرست                          | ☆ |
| 372       | زبانی امتحان: معیار مقالہ کے تعین کا آخری مرحلہ | ☆ |
| 372       | وقت امتحان کا تعین                              | ☆ |
| 372       | خلاصہ بیان کرنے کا مطالبہ                       | ☆ |
| 374       | سوالات کی نوعیت                                 | ☆ |



| صفحہ نمبر  | عنوان                                   |   |
|--|---|---|
| 374  | ہیئت مقالہ                              | ☆ |
| 374  | اسلوب تحقیق                             | ☆ |
| 375  | علمی پہلو                               | ☆ |
| 375  | حوالہ جات                               | ☆ |
| 377  | پی ایچ ڈی علوم اسلامیہ کے خاکہ کا نمونہ | ☆ |
| 378  | موضوع کا تعارف اور اس کی اہمیت          | ☆ |
| 381  | موضوع کا بنیادی سوال                    | ☆ |
| 382  | موضوع تحقیق پر سابقہ کام کا جائزہ       | ☆ |
| 384  | حدود (Limitations)                      | ☆ |
| 385  | موضوع پر تحقیق کی گنجائش                | ☆ |
| 386  | فوائد                                   | ☆ |
| 387  | مقالہ ہذا کے مصادر کی نوعیت             | ☆ |
| 388  | اسلوب تحقیق (Research Methodology)      | ☆ |
| 390  | عنوانات مقالہ کی تقسیم و ترتیب          | ☆ |
| 391  | ابواب کی تقسیم                          | ☆ |
| 394  | حوالہ جات                               | ☆ |
| <b>باب ۱: تحقیق و تدوین کی اردو و انگریزی اصطلاحات</b> |   |   |
| 397  | اولاً: اردو اصطلاحات                    | ☆ |
| 405  | ثانیاً: انگریزی اصطلاحات                | ☆ |
| <b>ماہمق: حصول مواد کے جدید ذرائع</b>                  |   |   |
| 421  | حصول مواد کے جدید ذرائع                 | ☆ |
| 435  | مصادر و مراجع کی فہرست (BIBLIOGRAPHY)   | ☆ |



## پیش لفظ

تحقیق و جستجو ایک فطری داعیہ ہے، جس کا بنیادی مقصد حقیقت و اصلیت تک پہنچنا ہے۔ انسان حقیقت کی تلاش میں سرگرداں ہے، وہ اپنے علم و ہنر سے حق و صداقت اور حقائق کی معرفت حاصل کر لیتا ہے۔

تحقیق و جستجو ایک علم بھی ہے اور ایک فن بھی۔ موجودہ دور میں نئی نئی تحقیقات و ایجادات سے علوم و فنون میں بے پناہ ترقی ہوئی ہے۔ ان علوم کی معرفت اور ان تک رسائی کے لیے بھی اسی طرح کی فنی و تکنیکی مہارتوں کی ضرورت ہے۔ یہی وجہ ہے اب تحقیق ایک علم سے بڑھ کر فن کی حیثیت اختیار کر گیا ہے۔ کمپیوٹر، انٹرنیٹ، اور سوشل میڈیا نے اس فن میں بھی نئی نئی اختراعات پیدا کر دی ہیں۔ ایک محقق کے لیے اب ضروری ہو گیا ہے کہ وہ ان مہارتوں اور تحقیقی ذرائع و وسائل سے بھی آگاہ ہو۔

علوم شرقیہ (اُردو فارسی، عربی، اور مقامی زبانوں) اور علوم اسلامیہ کے محققین کے لیے جن فنی مہارتوں اور تحقیقی اصولوں کی راہنمائی درکار ہے اس کے لیے عربی اردو اور انگریزی میں بہت سی کتب دستیاب ہیں، جن میں تحقیق و تنقید، تدوین و تسوید، تدوین متن و تحقیق متن کے اصول وغیرہ پر بحث کی گئی ہے۔ زیر نظر کتاب میں جہاں اصول تحقیق کے عمومی مباحث تفصیل سے بیان ہوئے وہاں علوم اسلامیہ کے تمام پہلوؤں مثلاً تفسیر، حدیث، فقہ، تاریخ و سیر، معاشرتی، معاشی اور سیاسی علوم خصوصی طور پر بحث کی گئی ہے اور ان علوم کے حوالے سے موضوعات پر تحقیق کرتے ہوئے جن راہنما اصولوں کی پاسداری ضروری ہے ان کو مثالوں سے واضح کیا گیا ہے۔ زبان آسان ہے اور انداز و اسلوب محققانہ ہیں۔



ڈاکٹر عبدالحمید خان عباسی نے اپنے علمی و تحقیقی تجربات و مشاہدات کو بھی پیش نظر رکھا ہے۔  
اس طرح اس کتاب کی حیثیت فنی سے بڑھ کر عملی ہوگئی ہے۔ مجھے اُمید ہے کہ یہ کتاب علوم شرقیہ  
اور علوم اسلامیہ کے محققین کے لیے بہترین رہنمائی کا ذریعہ ثابت ہوگی۔

پروفیسر ڈاکٹر انعام الحق جاوید  
مینجنگ ڈائریکٹر



## دیباچہ

تحقیق کرنا انسان کی فطرت میں شامل ہے۔ اسی کی بدولت وہ زندگی کے آغاز سے اختتام تک ضروریات کی اشیاء اور مسائل کا حل دریافت کر کے اپنے لیے آسانیاں پیدا کر لیتا ہے۔ تحقیق ہی سے وہ ہر میدان میں ترقی کی راہوں پر گامزن رہتا ہے، گویا تحقیق کی ضرورت واہمیت مسلم ہے۔ علم و فن کے شعبوں میں تو تحقیق روح کی حیثیت رکھتی ہے کیونکہ اسی کے ذریعہ کسی موضوع سے متعلقہ مواد کو مرتب کیا جاتا ہے، اس کا تجزیہ کیا جاتا ہے، اس پر تنقید کی جاتی ہے اور پھر اس سے حاصل ہونے والے نتائج سے دوسروں کو آگاہ کیا جاتا ہے۔

ہر محقق کی دلی خواہش ہوتی ہے کہ اس کا تحقیقی عمل معیاری ہو، وہ دوسروں کے لیے سود مند ثابت ہو، علمی حلقوں میں اس کی کوئی قدر و قیمت ہو، اسے پذیرائی اور شرف قبولیت حاصل ہو۔ اس نوعیت کے مقاصد کا حصول صرف اسی صورت میں ممکن ہو سکتا ہے کہ محقق اپنے تحقیقی عمل کو ابتداء سے آخر تک ان قواعد و ضوابط اور انداز و طرق کی روشنی میں انجام دے جن پر ”اصول تحقیق“ کا اطلاق ہوتا ہے۔ زیر نظر کتاب میں ان ہی اصولوں کا احاطہ کیا گیا ہے اور ان سے متعلقہ قابل قدر مواد کو ممکنہ مصادر و مراجع سے استفادہ کرتے ہوئے جمع کر دیا گیا ہے۔

مجھے یہ جان کر بہت خوشی ہوئی ہے کہ ہماری یونیورسٹی کے استاد کی تالیف کردہ اس کتاب کو ملک کی دیگر یونیورسٹیوں نے ایم اے، ایم فل اور پی ایچ ڈی سطح کے تحقیق کے پرچہ کے لیے لازمی امدادی مواد کے طور پر منظور کیا ہوا ہے۔ ہماری یونیورسٹی میں بھی ان ہی سطحوں کے ”اصول تحقیق“ کے پرچہ کے لیے اسے امدادی مواد کے طور پر منظور کیا جا چکا ہے۔ مجھے اُمید ہے کہ ان شاء اللہ اس کتاب سے نہ صرف طلبہ بلکہ اساتذہ کرام بھی مستفید ہوں گے۔



دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ اپنے حبیب حضرت محمد ﷺ کے طفیل پروفیسر ڈاکٹر عبدالحمید خان عباسی کی اس کاوش کو شرف قبولیت بخشے، آمین یا رب العالمین۔

پروفیسر ڈاکٹر شاہد صدیقی

وائس چانسلر

علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد



## عرض مؤلف

اللہ تعالیٰ نے انسان کی جبلت میں تلاش و جستجو کرنے اور کھوج لگانے کی صفت ودیعت کر رکھی ہے۔ اس صفت کا مظاہرہ وہ اپنے جنم دن سے ہی شروع کر دیتا ہے۔ وہ جب لطن مادر سے اس فانی دنیا میں قدم رکھتا ہے تو اپنی آواز اور ہاتھ پاؤں کی حرکات و سکنات کے ذریعہ اپنی ضروریات کا مطالبہ کرنا شروع کر دیتا ہے۔ جونہی اس کے منہ میں کوئی چیز ڈال دی جاتی ہے تو وہ خاموش ہو جاتا ہے۔ یہ خاموشی گویا اس کی تلاش و جستجو کا نتیجہ ہے۔ تلاش کے اس ابتدائی مظاہرہ کے بعد وہ آنے والی زندگی میں حسب ضرورت تحقیق و جستجو کے عمل کو جاری رکھتا ہے اور بالآخر وہ مطلوبہ حقائق و اہداف تک پہنچ جاتا ہے۔ یہی حال اس مبتدی محقق طالب علم کا ہوتا ہے جو تحقیقی دنیا میں قدم رکھتا ہے اور تلاش و جستجو اور کھوج کا مظاہرہ ایک خاص تسلسل کے ساتھ شروع کر دیتا ہے۔ نتیجتاً وہ کسی موضوع پر تحقیق کر کے پنہاں یا مبہم حقیقت کو دنیا کے سامنے لے آتا ہے اور یہی اس کے تحقیقی عمل کا مقصد ہوتا ہے۔

اس حقیقت تک پہنچنے کے لیے ایک ذمہ دار محقق کو کئی مراحل اور راستوں سے گزرنا پڑتا ہے، جیسے انتخاب موضوع کا مرحلہ، تیاری خاکہ کا مرحلہ، موضوع سے تعلق رکھنے والے مواد کو جمع کرنے کا مرحلہ، پھر اس مواد کی چھان پھٹک کا مرحلہ، لکھ کر مکمل مسودہ تیار کرنے کا مرحلہ، پورے مسودہ پر نظر ثانی کرنے کا مرحلہ، مبیضہ (مسودے میں نظر ثانی کے بعد صاف نقل کیا ہوا نسخہ) تیار کرنے کا مرحلہ ٹائپنگ، کمپوزنگ، پروف خوانی وغیرہ کا مرحلہ۔

ان مراحل سے گزرنے کے بعد ایک محقق اس قابل ہو جاتا ہے کہ وہ اپنے تحقیقی کام سے



نتائج اخذ کر کے دنیا والوں کے سامنے پیش کرے اور وہ اس کے کام کو قدر کی نگاہ سے دیکھیں۔  
میں اپنے جملہ اساتذہ کرام کا شکر گزار ہوں جن کی مساعی و جہود سے میں ناتواں علم کی  
تھوڑی بہت خدمت کرنے کے قابل ہوا، بالخصوص حضرت مولانا پروفیسر عبداللہ کا کاخیل  
مرحوم و مغفور کا، علمی اور تحقیقی اعتبار سے ان کے مجھ پر بہت احسانات ہیں۔ اللہ تعالیٰ انہیں  
جنت الفردوس میں جگہ نصیب فرمائے اور ان کے فیض سے ہمیں نوازے (آمین!)۔

ان کے علاوہ میں علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی کے وائس چانسلر پروفیسر ڈاکٹر شاہد صدیقی  
صاحب کا شکر گزار ہوں جنہوں نے اس کتاب کے متعلق اپنے تاثرات رقم کر کے میری حوصلہ  
افزائی فرمائی اور میرے علمی و تحقیقی ذوق کو جلا بخشی۔

پروفیسر ڈاکٹر خالد محمود شیخ صاحب اور پروفیسر ڈاکٹر محمود الحسن عارف صاحب کا بھی شکر  
یہ ادا کرتا ہوں جنہوں نے اپنی قیمتی آراء سے نوازا اور حوصلہ افزائی فرمائی۔

اس موقع پر میں نیشنل بک فاؤنڈیشن اسلام آباد کے مینجنگ ڈائریکٹر جناب پروفیسر ڈاکٹر  
انعام الحق جاوید صاحب کا دل کی اتھاہ گہرائیوں سے شکر یہ ادا کرتا ہوں جن کی دلچسپی اور کوشش  
کے نتیجے میں کتاب ہذا کا چوتھا ایڈیشن ترامیم و اضافہ جات کے ساتھ زیور طبع سے آراستہ ہوا۔  
اللہ تعالیٰ انہیں جزائے خیر عطا فرمائے (آمین!)۔

الحمد للہ یہ کتاب اس وقت پاکستان کی یونیورسٹیوں میں پوسٹ گریجویٹ، ایم۔ فل اور  
ڈاکٹریٹ کی سطح تک "اصول تحقیق" کے پرچہ کے لیے لازمی امدادی کتاب کے طور پر نصاب میں  
شامل ہے۔ یہ میری تالیف کردہ ان دس کتب میں شامل ہے جنہیں ۲۰۰۸ میں قومی سطح پر بہترین  
درسی کتب قرار دیا گیا اور مجھے صدارتی ایوارڈ "اعزاز فضیلت" سے نوازا گیا۔ علاوہ ازیں!  
ہائر ایجوکیشن کمیشن نے ۲۰۱۱ء میں اسے "X" کیٹیگری کی دوریرسچ پبلیکیشنز کے برابر قرار  
دیا ہے۔



میں ان افراد کا بے حد ممنون ہوں جنہوں نے کتاب کے اس ایڈیشن کی تیاری میں میری معاونت کی ہے، بالخصوص پی۔ ایچ ڈی (علوم اسلامیہ) کے ریسرچ سکالر جناب محمد نجیب صاحب اور ایم۔ فل علوم اسلامیہ (تخصص قرآن و تفسیر) کے ریسرچ سکالر ڈاکٹر وسیم حسن قریشی صاحب کا، جنہوں نے کتاب کا دقت نظر سے مطالعہ کیا اور اس میں پائی جانے والی اغلاط کی نشاندہی کی جن کو درست کر دیا گیا ہے۔ اللہ تعالیٰ انہیں جزاء خیر عطا فرمائے۔

قارئین حضرات سے التماس ہے کہ اگر وہ اس کتاب میں کوئی غلطی، کوتاہی یا کوئی نقص دیکھیں، جو میری کم علمی اور کم ہمتی کا نتیجہ ہو سکتا ہے، تو اس سے آگاہ فرمائیں تاکہ آئندہ ایڈیشن میں تصحیح کی جاسکے۔ اللہ تعالیٰ اپنے حبیب حضرت محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے طفیل میری اس کوشش کو قبول فرمائے (آمین!)۔

پروفیسر ڈاکٹر عبدالحمید خان عباسی

چیرمین شعبہ قرآن و تفسیر

علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد

۴/ فروری ۲۰۱۵ء



باب ۱

اسلام میں تحقیق کے اصول  
(اصول روایت و درایت)



# اسلام میں تحقیق کے اصول

(اصول روایت و درایت)

اسلام میں تحقیق کے اصولوں کا اطلاق ان قواعد و ضوابط پر ہوتا ہے جنہیں اصل میں مسلمانوں نے احادیث رسول ﷺ کی جانچ پرکھ کے لیے وضع کیا اور ان کے ذریعے احادیث کو غیر احادیث سے الگ کر کے رکھ دیا۔ یہ اصول دو طرح کے ہیں: ایک روایتی اور دوسرے درایتی۔ اس سے قبل کہ اسلام کے ان اصولوں اور ان کے استعمال کے انداز و طرق بیان کیے جائیں مناسب رہے گا کہ تمہیداً بالاختصار حدیث رسول ﷺ کی اہمیت کو بیان کیا جائے کیونکہ یہ (یعنی اہمیت حدیث) ایک ایسا پہلو ہے جس کے پیش نظر ملت اسلامیہ کے علماء کرام نے روایتی و درایتی اصول وضع کیے اور انہیں ہر طرح کے علم سے متعلق مواد کی جانچ پرکھ کے لیے استعمال کیا۔ یہ سلسلہ جاری ہے اور انشاء اللہ تا قیامت جاری رہے گا۔

اہمیت حدیث کے حوالے سے اس بات کا ذہن میں رکھنا ضروری ہے کہ اسلام کے اعتقادی و عملی احکام کا پہلا اساسی مصدر قرآن مجید اور دوسرا سنت رسول ﷺ ہے۔ اول الذکر مصدر ان احکام کا اجمال ہے اور ثانی الذکر ان کی تفصیل و توضیح ہے۔ گویا دونوں لازم و ملزوم ہیں۔ ان کے آپس میں تعلق و ربط کو علامہ سید سلیمان ندوی نے یوں بیان فرمایا ہے:

۱۔ ”علم القرآن اگر اسلامی علوم میں دل کی حیثیت رکھتا ہے تو علم حدیث شہ رگ کی۔ یہ شہ رگ اسلامی علوم کے تمام اعضاء و جوارح تک خون پہنچا کر ہر آن ان کے لیے تازہ زندگی کا سامان پہنچاتی رہتی ہے۔ آیات کا شان نزول اور ان کی تفسیر، احکام القرآن کی تشریح و تعین، اجمال



- کی تفصیل، عموم کی تخصیص، مبہم کی تعیین سب علم حدیث کے ذریعہ معلوم ہوتی ہیں“ (۱)۔
- ۲۔ ”اس طرح حامل قرآن کی سیرت، حیات طیبہ اور آپ ﷺ کے اخلاق و عادات مبارکہ، اقوال و اعمال، سنن و مستحبات اور احکام و ارشادات اسی علم کے ذریعے ہم تک پہنچے ہیں“ (۲)۔
- ۳۔ ”اسی طرح خود اسلام کی تاریخ، صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے احوال اور ان کے اعمال و اقوال اور اجتہادات و استنباطات کا خزانہ بھی اسی (علم حدیث) کے ذریعہ ہم تک پہنچا ہے“ (۳)۔
- علامہ ندویؒ آخر میں لکھتے ہیں: ”اسی بناء پر یہ کہا جائے تو صحیح ہے کہ اسلام کے عملی پیکر کا صحیح مرقع اسی علم کی بدولت مسلمانوں میں ہمیشہ کے لیے قائم ہے اور ان شاء اللہ تاقیامت رہے گا“ (۴)۔

علامہ جعفر الکتانی (متوفی ۱۳۴۵ھ) لکھتے ہیں: ”یقیناً وہ علم جو ہر ارادہ رکھنے والے کے لیے ضروری ہے اور ہر عالم و عابد کو اس کی ضرورت پڑتی ہے وہ یہی علم حدیث و سنت ہے یعنی جو بھی حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اپنی امت کے لیے مشروع و مسنون قرار دیا ہے“ (۵)۔

اس کے بعد علامہ کتانی نے یہ اشعار نقل کیے ہیں:

دین النبى و شرعه اخباره      واجل علم یقتدى آثاره

من كان مشتغلاً بها و بنشرها      بین البریة لا عفت آثاره (۶)۔

(نبی کریم ﷺ کا دین اور شریعت آپ ﷺ کی احادیث ہیں اور یہ وہ عظیم علم ہے جس کی پیروی کی جاتی ہے۔ جو اس میں اور اس کی نشر و اشاعت میں مشغول ہو اس کے آثار (نشانات) مخلوق میں باقی رہتے ہیں۔)

احادیث رسول ﷺ کی اس ضرورت و اہمیت اور عظمت و رفعت کے پیش نظر آغاز اسلام ہی سے مسلمانوں نے انہیں پوری محنت اور اخلاص و عقیدت سے سمجھنے اور عملی زندگی میں اپنانے کے ساتھ ساتھ محفوظ و مدون کرنے کا اہتمام بھی کیا اور ایسی خدمات سرانجام دیں جن کی



دنیا کے دیگر مذاہب میں کوئی نظیر نہیں ملتی۔ چنانچہ مولانا محمد علی صدیقی کا ندھلوی نے حافظ ابن حزم کے حوالے سے لکھا ہے کہ:

”..... اقوام عالم میں کسی کو بھی اسلام سے پہلے یہ توفیق میسر نہیں ہوئی کہ وہ اپنے پیغمبر کی باتیں صحیح ثبوت کے ساتھ محفوظ کر سکے۔ یہ شرف صرف ملت اسلامیہ کو حاصل ہے کہ اس نے اپنے رسول ﷺ کے ایک ایک کلمہ کو صحت و اتصال کے ساتھ جمع کیا۔ آج روئے زمین پر کوئی ایسا مذہب نہیں ہے جو اپنے پیشوا کے ایک کلمہ کی سند بھی صحیح طریق پر پیش کر سکے۔ اس کے برعکس اسلام نے اپنے رسول ﷺ کی سیرت کے ایک ایک گوشہ کو پوری صحت و اتصال کے ساتھ محفوظ کیا“ (۷)۔

مسلمانوں کا یہ بے مثل اہتمام مجرد حفظ و تدوین تک ہی محدود نہیں تھا بلکہ احادیث رسول ﷺ کو دشمنان اسلام کے حملوں سے بچانا، صحیح و سقیم احادیث میں امتیاز برقرار رکھتے ہوئے پوری صحت و اتصال کے ساتھ نسل در نسل انہیں منتقل کرنا بھی تھا تا کہ مدو نہ ذخیرہ احادیث شکوک و شبہات سے اس قدر بلند و بالا ہو کہ ہر فرد، خواہ وہ اپنوں میں سے ہو یا اغیار میں سے، دیکھتے ہی یہ تسلیم کرنے پر مجبور ہو جائے کہ یہ ذخیرہ ہر قسم کی ملاوٹوں و آمیزشوں سے پاک ہے اور حفاظت و صیانت کے اس بند و بست سے بڑھ کر کوئی اور ممکن نہیں۔

### تحقیقی اصولوں کی طرح مسلمانوں نے ڈالی

ان اعلیٰ و ارفع مقاصد کے حصول کی خاطر مسلمانوں نے ابتدائی طور پر روایت و درایت کی صورت میں بے مثل تحقیقی اصول وضع کرنے کی نہ صرف طرح ڈالی بلکہ عملاً انھیں استعمال میں لایا اور آئندہ آنے والوں کے لیے انتہائی مضبوط بنیادیں فراہم کیں جن پر قائم ہونے والی عالیشان عمارات آج دنیا میں بڑی بڑی ضخیم مدونات احادیث کی شکل میں موجود ہیں، ان اصولوں کے متعلق ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان لکھتے ہیں:



”قرون اولیٰ کے مسلمانوں نے علم حدیث کے بارے میں روایت اور درایت کے لیے جو اصول منضبط کیے ہیں ان پر جس قدر فخر کیا جائے کم ہے۔ روایت کے بارے میں ان کے حزم و احتیاط کا عالم یہ تھا کہ سیر و مغازی تو بہت بڑی چیز ہے۔ وہ عام خلفاء اور سلاطین کے حالات اس وقت تک بیان نہیں کرتے جب تک کہ ان کے پاس آخری راوی سے لے کر چشم دید گواہ تک تسلسل کے ساتھ روایت موجود نہ ہو۔ یعنی جو واقعہ لیا جائے وہ اس شخص کی زبانی ہو جو خود شریک واقعہ رہا ہو اور اگر وہ خود شریک واقعہ نہیں تھا تو اس واقعے تک تمام درمیانی راویوں کے نام ترتیب کے ساتھ بیان کیے جائیں اور ساتھ ہی یہ بھی تحقیق کی جائے کہ وہ لوگ کون تھے؟ کیسے تھے؟ ان کے مشاغل کیا تھے؟ ان کا کردار کیسا تھا؟ ان کی سمجھ کیسی تھی؟ ثقہ کہاں تک تھے؟ سطحی الذہن تھے یا نکتہ رس تھے؟ عالم تھے یا جاہل؟ تمام جزئی باتوں کا پتہ لگانا بے حد دشوار تھا لیکن ہزاروں محدثین نے اس کام کے لیے اپنی عمریں وقف کر دیں اور ان تحقیقات سے اسماء الرجال کا ایک بے مثل فن ایجاد کیا جس کی بدولت کم از کم ایک لاکھ شخصیتوں کے صحیح حالات معلوم ہو سکتے ہیں۔ اگر کسی راوی پر کذب، تہمت، غفلت، ثقات کی مخالفت یا حافظے کی کمزوری وغیرہ کا الزام ہے تو محدثین نے بلا تکلف اس کو مجروح اور اس کی روایت کو مردود قرار دیا ہے۔ مرفوع، موقوف، قولی و فعلی و تقریری، نیز آحاد و متواتر، مشہور و عزیز و غریب، اسی طرح صحیح و حسن اور مقبول و مردود وغیرہ کتنی اقسام حدیث ہیں، جن کی تقسیم خود اپنی جگہ اس امر کی شاہد ہے کہ علمائے اسلام کی نظر کسی قدر گہری تھی اور ان کا معیار تحقیق کس قدر بلند تھا (۸)۔

اصول درایت کے متعلق لکھتے ہیں کہ: ”فن روایت کے بعد درایت کا نمبر آتا ہے۔ یعنی ایک حدیث کے تمام راوی (شروع سے آخر تک) ثقہ اور مستند تو ضرور ہیں لیکن ممکن ہے کہ عقلاً اس روایت میں کوئی خامی موجود ہو۔ چنانچہ ایسی روایت بھی غیر معتبر قرار دی جائے گی۔ درایت یعنی عقلی حیثیت سے واقعات کو جانچنے کے یہ اصول (جو اس باب کے آخر میں مذکور ہیں)



اس قدر قوی ہیں کہ راویوں کی صداقت اور دیانت کا پورا پورا اندازہ ہو جاتا ہے اور ساتھ ہی منافقین کی افتر پردازی کی قلعی بھی کھل جاتی ہے..... چنانچہ محدثین نے بے خوف ہو کر بڑے سے بڑے راوی اور روایت کو پرکھا ہے اور احتیاط کے معاملہ میں کسی روایت کو جگہ نہیں دی، مثلاً:

۱۔ امام وکیع خود بڑے محدث تھے لیکن ان کے باپ سرکاری خزانچی تھے۔ اس بناء پر وہ خود ان سے جب روایت کرتے تو ان کی تائید میں کسی دوسرے راوی کو ضرور ملا لیتے، یعنی تنہا اپنے باپ کی روایت کو تسلیم نہیں کرتے۔ اس احتیاط اور حق پسندی کی کوئی حد ہے۔

۲۔ مسعودی ایک محدث ہیں۔ ۱۵۴ھ میں ایک امام معاذ بن معاذ نے ان کو دیکھا کہ ان کو اپنی تحریری یادداشت کے دیکھنے کی ضرورت ہوتی ہے تو انہوں نے فوراً ان کے حافظہ سے اپنی بے اعتباری ظاہر کر دی۔

۳۔ یہی امام معاذ بن معاذ وہ بزرگ ہیں کہ ان کو ایک شخص نے دس ہزار دینار کا معاوضہ صرف اس لیے پیش کرنا چاہا کہ وہ ایک شخص کو معتبر (عدل) اور غیر معتبر کچھ نہ کہیں، یعنی اس کے متعلق خاموش رہیں۔ انہوں نے دیناروں کو حقارت کے ساتھ ٹھکرا دیا اور کہا کہ میں اس حق کو چھپا نہیں سکتا (۹)۔

کیا تاریخ اس سے زیادہ احتیاط اور زیادہ دیانتداری کی کوئی مثال پیش کر سکتی ہے؟ اس سے زیادہ حیرت انگیز واقعہ یہ ہے کہ یہ تمام کچا پکا، صحیح اور غلط، قوی اور ضعیف، قابل قبول اور ناقابل قبول روایتوں کا انبار آج بھی دنیا کے سامنے موجود ہے اور آج بھی ان ہی اصولوں کے مطابق ہر واقعہ کی چھان پھٹک کی جاسکتی ہے اور کھرے کھولے کو الگ کیا جاسکتا ہے (۱۰)۔

### محدثین کے اصول روایت و درایت

ان تمہیدی کلمات کے بعد ذیل میں محدثین حضرات کے دونوں اصولوں کے متعلق الگ الگ بحث کی جاتی ہے:



## اولاً۔ اصول روایت

ان سے مراد محدثین حضرات کے وضع کردہ وہ سنہری قواعد و ضوابط ہیں جن کے ذریعہ روایان (ناقلین) حدیث کے متعلق تحقیق کی جاتی ہے کہ وہ کس معیار کے لوگ ہیں۔ دوسرے الفاظ میں یوں سمجھیے کہ ان اصولوں کی روشنی میں سند حدیث کی چھان پھٹک کی جاتی ہے۔ اس چھان بین کو ”خارجی نقد“ یا ”نقد سند“ کہتے ہیں جبکہ متن حدیث کی چھان بین کو ”داخلی نقد“ یا ”نقد متن“ کہتے ہیں۔ اس کا ذکر اصول درایت کے تحت آئے گا۔

محدثین کے اصول روایت کے لحاظ سے راویوں سے حصول حدیث کے وقت بنیادی طور پر ان امور کو دیکھا جاتا ہے: ”راویوں کی عدالت و ثقاہت، اتصال سند، طبقات سند میں راویوں کی تعداد، منبع روایت اور طریق روایت۔ یہی وہ اساسی امور ہیں جو مختلف اعتبارات سے احادیث کی تقسیم کا سبب بنے ہیں“ (۱۱)۔ ان امور کا ذکر بعد میں آئے گا۔

## اصول روایت کا ماخذ

اصول روایت وضع کرنے اور ان کے ذریعہ روایان حدیث کی صداقت معلوم کرنے کا اصلی ماخذ قرآن مجید کی یہ آیت ہے: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ﴾ (۱۲)۔  
(اے ایمان والو! اگر تمہارے پاس کوئی فاسق (بد کردار، غیر ذمہ دار شخص) کوئی (اہم) خبر لے آئے تو اس کی خوب تحقیق کر لیا کرو، ایسا نہ ہو کہ تم کسی قوم کو بے علمی میں ضرر پہنچاؤ پھر تم اپنے کیے پر پچھتائے لگو)۔

اس آیت کریمہ میں بتایا گیا ہے کہ اگر کوئی فاسق یعنی غیر معتبر آدمی کسی اہم بات کے متعلق آکر بتائے تو فوراً اس کی بات پر یقین نہیں کر لینا چاہیے بلکہ قبولیت سے قبل تحمل مزاجی کے ساتھ اس کی بات کی اچھی طرح سے اس وقت تک تحقیق کرتے رہنا چاہیے جب تک کہ اس کی



صحت و صداقت معلوم نہ ہو جائے۔ گویا تحقیق کے ذریعہ تلاش حقیقت کو ضروری قرار دیا گیا تا کہ بعد میں پچھتانا نہ پڑے اور نقصانات سے ان کے وقوع سے قبل ہی بچا جاسکے۔ اس تحقیق کا اہتمام اگر نہ کیا جائے اور صرف زبانی باتوں پر یقین کر لیا جائے تو آدمی کے جھوٹا ہونے کے لیے یہی کافی ہے۔ اسی لیے حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا: ”كَفَى بِالْمَرْءِ كَذِبًا أَنْ يُحَدِّثَ بِكَلِّ مَا سَمِعَ“ (۱۳)۔ (آدمی کے جھوٹے ہونے کی یہ دلیل کافی ہے کہ جو کچھ سنے روایت کر دے) یعنی تحقیق نہ کرے۔ قرآن مجید کی مذکورہ آیت کی طرح یہ حدیث مبارک بھی روایت کے اصول تحقیق کا ماخذ ہے۔

اس سے ثابت ہوا کہ قرآن مجید اور حدیث رسول ﷺ دونوں نے تحقیق کرنے کی ہدایت فرمائی، جس کے پیش نظر مسلمان ہر دور میں حفاظت و تدوین حدیث کے عمل میں نہ صرف محتاط رہے بلکہ جو کچھ سنا پہلے مکمل طور پر اس کی تحقیق کی حتیٰ کہ بعضوں نے تو صحت حدیث، جیسا کہ مصادر سے پتہ چلتا ہے، معلوم کرنے کے لیے دور دراز کے سفر کیے اور مختلف نوعیت کی مشکلات کا سامنا کیا (۱۴)۔

### تاریخی پس منظر

ذیل میں تاریخی پس منظر کے طور پر روایت کے اصولوں کا بالاختصار جائزہ لیا جاتا ہے تا کہ ایک جانب سے ان کے ایجاد کی تاریخ کا تعین ہو سکے اور دوسری جانب سے یہ بھی معلوم ہو سکے کہ مرور زمانہ کے ساتھ ساتھ محدثین حضرات حدیث کی جانچ پرکھ میں کس طرح ان (اصولوں) سے کام لیتے رہے:

### صحابہ کرام رضی اللہ عنہم اور اصول روایت

صحابہ کرام رضی اللہ عنہم وہ ہستیاں ہیں جن کے سر تحقیق کے اصول روایت کی طرح ڈالنے اور عملی طور پر انہیں استعمال کرنے کا سہرا ہے۔ انھیں حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کی ذات پاک



سے انتہائی عقیدت و محبت اور والہانہ وابستگی کے ساتھ ساتھ آپ ﷺ کی بے حجاب حیات طیبہ کے معمولات سے بخوبی واقفیت تھی۔ لیکن اس کے باوجود ان ہستیوں نے آپ ﷺ کی احادیث مبارکہ کو قبول کرنے اور روایت کرنے کے عمل میں انتہائی محتاط رویوں و روشوں کا مظاہرہ کیا۔ ذیل میں اس سلسلہ کی چند مثالیں پیش کی جاتی ہیں:

### ۱۔ قبول روایت میں حضرت ابو بکرؓ کی محتاط روش

حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ (متوفی ۱۳ھ) کو قبول روایت کے سلسلہ میں محتاط روش اختیار کرنے میں اولیت حاصل ہے، چنانچہ حافظ ذہبیؒ (متوفی ۴۸۷ھ) آپ کے تذکرہ میں لکھتے ہیں: "كَانَ أَوَّلَ مَنْ أَحْتَاطَ فِي قَبُولِ الْأَخْبَارِ" (۱۵)۔

(یعنی وہ پہلے آدمی تھے جنہوں نے احادیث قبول کرنے میں احتیاط سے کام لیا)۔

حضرت قبیسہ بن زویب رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ:

"ایک دادی ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کے پاس میراث مانگنے آئی تو آپ نے فرمایا کہ اللہ کی کتاب میں تیرے لیے کچھ حصہ مقرر نہیں اور نہ ہی میں نے رسول اللہ ﷺ سے اس باب میں کوئی حدیث سنی ہے، تو واپس چلی جا، میں لوگوں سے پوچھ کر دریافت کروں گا۔ ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ نے لوگوں سے پوچھا تو مغیرہ بن شعبہ رضی اللہ عنہ نے کہا کہ میں اس وقت موجود تھا، میرے سامنے رسول اللہ ﷺ نے دادی کو چھٹا حصہ دلایا تھا۔ ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ نے فرمایا کہ کیا کوئی اور آدمی بھی تمہارے ساتھ ہے (جو اس معاملے کو جانتا ہو)؟ تو محمد بن مسلمہ انصاری رضی اللہ عنہ کھڑے ہوئے اور جیسا مغیرہ بن شعبہ رضی اللہ عنہ نے کہا تھا، ویسا ہی بیان کیا تو حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ نے (اس گواہی کی بنیاد پر) پوتے کی میراث میں سے اسے چھٹا حصہ دلادیا" (۱۶)۔



## ابوبکرؓ اصول شہادت کے بانی ہیں

اس طرح حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ نے اپنے طرز عمل سے تحقیق حدیث کے لیے ”اصول شہادت“ کی طرح ڈالی اور اس کے اول بانی قرار پائے۔ آپ کی قائم کی ہوئی اس بنیاد پر بعد میں دیگر تحقیقی و تنقیدی نوعیت کے علوم کی عظیم الشان اور بے نظیر عمارت تعمیر ہوئی، چنانچہ مولانا محمد محترم فہیم عثمانی لکھتے ہیں:

”..... بعد کے زمانوں میں احادیث کے لیے چھان بین، تحقیق و تلاش اور تنقید و تمحیص کے جتنے علوم وجود میں آئے ان سب کا منبع حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ کے جاری کردہ اسی چشمے سے پھوٹا نظر آتا ہے، اسی طرح بعد کے زمانوں میں روایتوں میں قوت پیدا کرنے کے لیے محدثین کے درمیان توابع و شواہد (۱۷) کو جمع کرنے کا جو عظیم الشان سلسلہ شروع ہوا اس کی ابتداء گویا اسی دن سے ہو گئی تھی جس دن حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ کی زبان سے ”هل معك احد“ کے الفاظ نکلے تھے اور حضرت محمد بن مسلمہ رضی اللہ عنہ نے کھڑے ہو کر حضرت مغیرہ رضی اللہ عنہ کی بیان کردہ روایت کے لیے اولین متابعت و شہادت مہیا کر دی تھی“ (۱۸)۔

پھر جیسے جیسے زمانہ گزرتا گیا محدثین میں توابع و شواہد کے جمع کرنے کا شوق زیادہ شدت پذیر ہوتا رہا۔ آپ کو یہ سن کر حیرت ہوگی کہ صرف ایک مشہور حدیث ”انما الاعمال بالنیات“ سات سو طریقوں سے مروی ہے، یعنی حدیث ایک ہے لیکن اس کی سندیں سات سو ہیں۔ اور یہ عدد بھی ایک خاص نقطہ نظر سے ہے ورنہ اس حدیث کے طرق دراصل اس سے بھی زیادہ ہیں۔ روایتوں میں قوت پیدا کرنے کا یہ ایک بہترین طریقہ تھا۔ محدثین نے اس پر بہت زور دیا ہے (۱۹)۔

## ۲۔ قبول روایت میں حضرت عمرؓ کا محتاط رویہ

حضرت عمرؓ (متوفی ۲۳ھ) کے احوال میں امام ذہبیؒ لکھتے ہیں کہ: ”هو الذي سن للمحدثين“



الثبت فی النقل وربما يتوقف فی خبر الواحد اذا ارتاب (۲۰)۔

(حضرت عمر رضی اللہ عنہ وہ ہستی ہیں جنہوں نے محدثین کے لیے روایت (حدیث) کے بارے میں تحقیق و تثبت کا طریقہ جاری فرمایا اور جب انہیں تردد ہوتا تو خبر واحد کو قبول کرنے میں توقف سے کام لیتے)۔

ربیعہ بن ابی عبدالرحمن سے روایت ہے کہ انہوں نے بہت سے علماء سے سنا کہ: ”ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ (متوفی ۴۴ھ) حضرت عمر رضی اللہ عنہ کے مکان کی جانب آئے اور تین بار اندر آنے کی اجازت طلب کی جب تینوں بار جواب نہ ملا تو واپس چلے گئے۔ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے ان کے پیچھے آدمی بھیجا جب وہ آئے تو ان سے کہا کہ آپ اندر کیوں نہ آئے۔ ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ نے کہا: میں نے رسول اللہ ﷺ کو یہ فرماتے ہوئے سنا کہ اجازت تین بار لینی چاہیے۔ اگر اجازت مل جائے تو اندر داخل ہو جاؤ ورنہ واپس چلے جاؤ۔ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے فرمایا: آپ کے علاوہ اور کس نے یہ حدیث سنی ہے؟ اس کو (گواہی دینے کے لیے) لے آؤ۔ اگر نہ لائے تو میں آپ کو سزا دوں گا۔ ابو موسیٰ رضی اللہ عنہ باہر نکلے اور مسجد میں بہت سے آدمیوں کو ایک مجلس میں بیٹھے دیکھا جسے ”مجلس انصار“ کہتے تھے اور کہا میں نے رسول اللہ ﷺ کو فرماتے سنا کہ اجازت تین بار لینی چاہیے اگر اجازت مل جائے تو داخل ہو جاؤ نہیں تو واپس چلے جاؤ۔ میں نے یہ حدیث حضرت عمر رضی اللہ عنہ سے بیان کی تو انہوں نے فرمایا کہ کسی اور نے یہ حدیث سنی ہو تو اسے لے آؤ نہیں تو میں آپ کو سزا دوں گا۔ اگر آپ میں سے کسی نے یہ حدیث سنی ہو تو میرے ساتھ چلے۔ لوگوں نے ابو سعید خدری رضی اللہ عنہ سے کہا آپ جائیں وہ سب لوگوں میں کم سن تھے۔ ابو سعید رضی اللہ عنہ ابو موسیٰ رضی اللہ عنہ کے ساتھ آئے اور یہ حدیث حضرت عمر رضی اللہ عنہ سے بیان کی۔ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے ابو موسیٰ رضی اللہ عنہ سے کہا میں آپ کو جھوٹا نہیں سمجھتا لیکن میں ڈرا کہ ایسا نہ ہو کہ لوگ نبی اکرم ﷺ پر باتیں گھڑ لیا کریں“ (۲۱)۔



امام ذہبیؒ اس واقعہ کو نقل کرنے کے بعد لکھتے ہیں: ”احب عمر رضی اللہ عنہ ان یتأ کد عنده خبر ابی موسی بقول صاحب آخر، ففي هذا دليل على ان الخبر اذا رواه ثقتان كان اقوى وارجح مما انفرد به واحد، وفي ذلك حض علي تكثير طرق ا لحديث لكي يرتقى عن درجة الظن الى درجة العلم، اذ الواحد يجوز عليه النسيان والوهم ولا يكاد يجوز ذلك على ثقتين لم يخالفهما احد“ (۲۲)۔

(یعنی حضرت عمر رضی اللہ عنہ چاہتے تھے کہ ابو موسی اشعری رضی اللہ عنہ کی حدیث کسی دوسرے صحابی کی شہادت سے مؤکد ہو جائے۔ پس اس میں اس بات کی دلیل ہے کہ جب کسی حدیث کو دو ثقہ (قابل اعتماد) آدمی روایت کریں تو وہ حدیث منفرد یعنی ایک آدمی کے مقابلے میں زیادہ قوی اور زیادہ قابل ترجیح ہو جاتی ہے۔ اور اس میں لوگوں کو طرق حدیث کی کثرت (یعنی زیادہ سے زیادہ سندیں تلاش کرنے) کی طرف ترغیب دینے کی دلیل بھی ہے تاکہ (کثرت طرق کے سبب) وہ حدیث ظن کے درجہ سے ترقی کر کے علم (یقین) کے درجہ پر فائز ہو جائے کیونکہ ایک آدمی کے بھول جانے اور وہم میں پڑ جانے کا زیادہ خدشہ ہوتا ہے، جبکہ دو ثقہ آدمی جن کی کسی نے مخالفت بھی نہ کی ہو تو ان کے نسیان اور وہم میں پڑ جانے کا خدشہ نہیں ہو سکتا)۔

علامہ ذہبیؒ نے ”تذکرۃ الحفاظ“ میں حضرت معاویہ رضی اللہ عنہ کا یہ قول نقل کیا

ہے: ”... علیکم من الحدیث بما کان فی عهد عمر رضی اللہ عنہ فانہ کان

قد اخاف الناس فی الحدیث عن رسول اللہ ﷺ“ (۲۳)۔

(حضرت عمر رضی اللہ عنہ کے عہد میں جو حدیثیں راجح تھیں ان کو لازم پکڑو کیونکہ حضرت عمر

رضی اللہ عنہ نے لوگوں کو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے حدیث کی روایت میں محتاط بنا دیا تھا)۔

### ۳۔ قبول روایت میں حضرت علیؑ کی محتاط روش

جہاں تک حضرت علیؑ کے قبول روایت کا تعلق ہے تو ان کا معمول تھا کہ اگر ان کے



سامنے کوئی شخص حدیث روایت کرتا تو وہ اس سے قسم لیتے (۲۴)۔

یہ مثالیں اور جوان کے علاوہ اس باب سے متعلق ہیں (۲۵) واضح طور پر دلالت کرتی ہیں کہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم احادیث کے نقل و روایت کے معاملہ میں کس قدر احتیاط سے کام لیتے تھے حتیٰ کہ بعض کا تو یہ عالم تھا کہ قال رسول اللہ ﷺ جیسے الفاظ استعمال کرتے وقت ڈرتے تھے، چنانچہ ابو عمر و الشیبانی (متوفی ۹۸ھ) کہتے ہیں کہ:

”میں حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہما (متوفی ۳۲ھ) کے ساتھ اٹھتا بیٹھتا، وہ خوف کے مارے قال رسول اللہ کہہ کر حدیث بیان نہیں کرتے تھے۔ اگر کبھی قال رسول اللہ کہہ کر حدیث بیان کرنے لگتے تو ان پر لرزہ طاری ہو جاتا، پھر کہتے: رسول اللہ ﷺ نے اس طرح فرمایا، یا اس کی مثل فرمایا، یا اس کے قریب قریب فرمایا“ (۲۶)۔

مولانا سعید احمد اکبر آبادی لکھتے ہیں: ”ان آثار و روایات سے جن کا تاریخی اعتبار بہر حال مسلم ہے حسب ذیل نتائج نکلتے ہیں:

- ۱۔ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم روایت و قبول حدیث کے معاملہ میں حد درجہ احتیاط پسند تھے۔
  - ۲۔ وضاعین و کذابین کا طبقہ ان کے عہد..... میں ہی پیدا ہو گیا تھا۔
  - ۳۔ ان لوگوں کے فتنہ و شر سے بچنے اور صحیح احادیث کو محفوظ رکھنے کے لیے صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے قبول حدیث کے لیے ایک خاص معیار قائم کر لیا تھا۔ جو حدیث اس پر پوری اترتی تھی اس کو بے تکلف قبول کرتے اور اس پر عمل پیرا ہوتے تھے۔
  - ۴۔ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کی ان احتیاط پسندیوں کے باعث صحیح و غیر صحیح احادیث میں ایک خط امتیاز کھینچ گیا اور وضاعین و کذابین کے تمام منصوبے پادر ہوا ثابت ہوئے“ (۲۷)۔
- صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کی یہ محتاط روش کسی عدم اعتماد اور سوء ظن کا نتیجہ نہیں تھی بلکہ اس میں انتہائی احترام اور تقویٰ کا رفرما تھا کہ سننے اور سمجھنے کی غلطی کی وجہ سے حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام



کی جانب کوئی غلط بات منسوب نہ ہو جائے۔ اکثر صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے پیش نظر نقل و روایت یعنی تحمل و اداء کے عمل میں آپ ﷺ کا یہ قول رہتا: ”مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَّبِعْهُ مِنْ النَّارِ“ (۲۸)۔ (جو شخص قصداً میری جانب جھوٹی بات منسوب کرے تو اسے اپنا ٹھکانہ جہنم میں بنالینا چاہیے)۔

جہاں تک حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر رضی اللہ عنہما کی محتاط روش کا تعلق ہے ”تو انہوں نے راویوں سے گواہوں کا مطالبہ کر کے سب کو محتاط کر دیا اور تمام صحابہ کرام رضی اللہ عنہم اس مطالبہ میں کارفرما حکمت سے آگاہ ہو کر یہ راز جان گئے کہ پس پردہ مقصد ”حفاظت حدیث“ ہے۔ اور احادیث روایت کرنے والوں کو یہ احساس دلانا ہے کہ وہ روایت حدیث میں غیر ذمہ داری کا مظاہرہ نہ کریں، بلکہ جو احادیث مسموع (سنی ہوئی) اور یاد ہوں انہیں بھی احتیاط سے بیان کریں، اور جو دوسروں سے سنیں تو ان کے بارے میں یہ یقین حاصل کر لیں کہ روایت کرنے والوں نے صحت کے ساتھ بیان کی ہیں“ (۲۹)۔

### ایک بے مثل اہتمام

احادیث کی حفاظت یعنی انہیں خارجی آمیزشوں سے مکمل طور پر پاک رکھنے، انہیں دوسروں سے اخذ یعنی حاصل کرنے، پھر آگے بیان کرنے میں مزید احتیاط برتنے اور صحیح و غیر صحیح میں حد فاصل برقرار رکھنے کی خاطر مسلمانوں نے جو اہتمام کیے ”ان میں سے ایک ”سند“ کا اجراء اور دوسرا ”صیغ اداء“ کی ایجاد ہے۔ ان دو حفاظتی انتظامات نے شکوک و شبہات کی راہیں بند کر دیں، اور عقل سلیم رکھنے والوں کے لیے غیر متزلزل یقین و اطمینان حاصل کرنے کا سامان پیدا کر دیا“ (۳۰)۔

### سند کا مفہوم

حدیث کی سند حقیقت میں دو چیزوں پر مشتمل ہوتی ہے: ایک ”راویوں کے اسماء“ اور



دوسرے ”صیغ اداء“ جیسے حد ثنا، حد ثنی، اخبارنا اور اخبارنی وغیرہ۔ یہ صیغے سند کی ابتداء سے لے کر اخیر تک راویوں میں ربط و اتصال کا کام دیتے ہیں یعنی دونوں لازم و ملزوم ہیں۔ ہر ایک کا مدار دوسرے پر ہے۔ اگر ایک نہ ہو تو دوسرے کا وجود بے معنی ہو کر رہ جاتا ہے۔

متن حدیث سے قبل راویوں کا جو طویل سلسلہ ہوتا ہے اسے ”سند“ کہتے ہیں۔ ”سند“ اگرچہ اصل حدیث (متن) کا جزء نہیں ہے لیکن چونکہ اولاً حدیث کی صحت کا مدار سند ہی پر ہے، اس بناء پر محدثین کے نزدیک اس کی حیثیت کسی طرح ”جزء“ سے کم نہیں“ (۳۱)۔

### حدیث کی تحقیق کے لیے سند کی تفتیش کا باقاعدہ آغاز

حضرت محمد بن سیرین رحمہ اللہ (۳۳ھ-۱۱۰ھ) نے صحابہ رضی اللہ عنہم کے ابتدائی دور میں تحقیق حدیث کے لیے سند کی عدم تفتیش اور بعد میں اس کی تفتیش کے آغاز کو یوں بیان فرمایا ہے:

”لَمْ يَكُونُوا يَسْأَلُونَ عَنِ الْإِسْنَادِ فَلَمَّا وَقَعَتِ الْفِتْنَةُ قَالُوا سَمُّوْنَا رَجَالَكُمْ فَيَنْظُرُوا إِلَى أَهْلِ السُّنَّةِ فَيُؤْخَذُ حَدِيثُهُمْ وَيُنْظَرُ إِلَى أَهْلِ الْبِدْعِ فَلَا يُؤْخَذُ حَدِيثُهُمْ“ (۳۲)۔

(پہلے لوگوں سے محدثین اسناد کے بارے میں سوال نہیں کرتے تھے پھر جب فتنہ واقع ہوا تو انہوں نے کہنا شروع کر دیا کہ اپنے راویوں کے نام بتاؤ تا کہ دیکھا جائے کہ جو اہل سنت ہیں ان سے احادیث لی جائیں اور جو اہل بدعت ہیں ان سے نہ لی جائیں)۔

یہاں فتنہ کے وقوع سے مراد وہ پر فتن دور ہے جس کی ابتداء حضرت عثمان رضی اللہ عنہ (متوفی ۳۵ھ) کی خلافت کے آخری ایام سے ہوئی تھی اور لوگ گروہوں میں بٹ گئے تھے، بدعات پیدا ہو گئی تھیں جھوٹی باتیں وضع کر کے احادیث رسول ﷺ کے طور پر کثرت سے پھیلا یا جانے لگا تھا۔ اس موقع پر اللہ تعالیٰ نے اسناد کی تفتیش اور تحقیق کرنے کا ان (محدثین) کے قلوب میں الہام کیا۔ اس سے ہر حدیث کی اسناد کو معلوم کیا جانے لگا۔ اور اس کے ساتھ اس کی تحقیق و تنقید



اور راویوں کے ثقہ و غیر ثقہ ہونے سے بحث شروع ہوئی۔ اس طرح صحیح و غیر صحیح کو الگ کیا جانے لگا (۳۳)۔

ایک اور امر جس کی وضاحت مولانا معراج الاسلام نے کی ہے، اس کا ما حاصل یہ ہے کہ سن ۴۰ھ میں جب خلافت راشدہ کا دور ختم ہوا تو ایک نئی نسل جوان ہو چکی تھی جس کے ذہن میں یہ تجسس پیدا ہوا کہ جو احادیث ان تک پہنچی ہیں۔ ان کے بارے میں حضور ﷺ سے براہ راست سننے والوں سے دریافت کیا جائے۔ تاکہ درمیانی راوی کی حیثیت اور قدر و قیمت کا تعین ہو جائے اور اس کی ثقاہت و صداقت ثابت ہو جانے کی صورت میں بغیر کسی تردد کے اس کی روایت قبول کر لی جائے۔

حصول علم و یقین کا یہ مؤثر ذریعہ بہت جلد مقبول ہوتا گیا اور راویوں نے سابقہ راویوں (یعنی صغار صحابہ نے کبار صحابہ رضی اللہ عنہم) کے نام لے کر احادیث بیان کرنا شروع کر دیں۔ اس طرح پہلی صدی ہجری ابھی ختم نہیں ہوئی تھی کہ سند بیان کرنے کا عام رواج ہو گیا اور ایک لازمی قانون بن گیا کہ جو راوی گذشتہ راویوں کا نام لے کر حدیث بیان نہیں کرے گا اس کی روایت معتبر نہیں ہوگی اور جو نام لے کر بیان کرے گا، اس کی روایت معتبر ہوگی (۳۴)۔

### متصل و صحیح سند کا اہتمام

تابعین حضرات کے دور میں سند کو خوب رواج ملا اور دوسری صدی ہجری کے ابتداء تک معاملہ یہاں تک پہنچ گیا کہ اسے اس کی اہمیت کے پیش نظر دین کہا گیا۔ کیونکہ اس کے ذریعہ روایت کی قدر و قیمت متعین ہوتی ہے۔ حضرت محمد بن سیرین (متوفی ۱۱۰ھ) فرماتے ہیں: "إِنَّ هَذَا الْعِلْمَ دِينَ فَاَنْظُرُوا عَمَّنْ تَأْخُذُونَ دِينَكُمْ" (۳۵)۔ (بے شک یہ علم (یعنی علم حدیث) دین ہے پس تم دیکھو کہ کس شخص سے اپنے دین کو حاصل کر رہے ہو)۔ یعنی ہر شخص کا اس میں اعتبار نہ کرو بلکہ جو سچا، دین دار اور معتبر ہو اسی سے احادیث لو۔



محدثین حضرات نے مجرد سند (یعنی راویوں کے اسماء) معلوم کر لینے پر اکتفا نہ کیا بلکہ اس میں اتصال کی بے مثل صفت کو لازمی قرار دیا۔ وہ اس طرح کہ: ”جب کوئی راوی روایت بیان کرتا تھا تو اسے بتانا پڑتا تھا کہ اس نے وہ روایت کس سے سنی ہے۔ اور اس نے کس سے سنی تھی یہاں تک کہ وہ سلسلہ صحابی تک پہنچ جاتا تھا، بڑے بڑے ائمہ اس کا التزام کرتے تھے“ (۳۶)۔

محدثین کے اسی اہتمام و التزام کو علامہ شبلی نعمانی نے روایت کا اولین اصول قرار دیا ہے، وہ لکھتے ہیں:

”..... مسلمانوں نے فن سیرت کا جو معیار قائم کیا وہ بہت زیادہ بلند تھا۔ اس کا پہلا اصول یہ تھا کہ جو واقعہ بیان کیا جائے اس شخص کی زبان سے بیان کیا جائے جو خود شریک واقعہ تھا، اور اگر خود نہ تھا تو شریک واقعہ تک تمام راویوں کے نام بہ ترتیب بتانا جائے“ (۳۷)۔

### صحیح سند

سند کے متصل ہونے کے ساتھ ساتھ صحیح ہونے کا مطلب یہ ہے کہ اس میں پائے جانے والے راوی اعلیٰ صفات و خصوصیات کے مالک ہوں جن کی بنیاد پر ان کی روایت کردہ احادیث کو قبول کرنے میں کسی قسم کا تردد پیدا نہ ہو۔ محدثین حضرات نے اس پہلو کی جانب بھرپور توجہ کی اور تحقیقات کے ذریعہ راویوں کے مثبت و منفی دونوں اوصاف دنیا کے سامنے لے آئے، چنانچہ شبلی نعمانی لکھتے ہیں:

”اس (اتصال سند) کے ساتھ یہ بھی تحقیق کی جائے کہ جو اشخاص سلسلہ روایت میں آئے، کون لوگ تھے؟ کیسے تھے؟ کیا مشاغل تھے؟ چال چلن کیسا تھا؟ حافظ کیسا تھا؟ سمجھ کیسی تھی؟ ثقہ تھے یا غیر ثقہ؟ سطحی الذہن تھے یا دقیقہ بین؟ عالم تھے یا جاہل؟ ان جزئی باتوں کا پتہ لگانا سخت مشکل بلکہ ناممکن تھا، سینکڑوں ہزاروں محدثین نے اپنی عمریں اسی کام میں صرف کر دیں، ایک ایک شہر میں گئے راویوں



سے ملے، ان کے متعلق ہر قسم کی معلومات بہم پہنچائیں، جو لوگ ان کے زمانہ میں موجود نہ تھے، ان کے دیکھنے والوں سے حالات دریافت کیے“ (۳۸)۔

## ثمرات

محدثین کی جانب سے حدیث کی تحقیق و تنقید کے لیے اس کی سند بیان کرنے کے مطالبہ کے نتیجہ میں ”علم اسناد الحدیث“ وجود میں آیا۔ پھر علم اسناد الحدیث کا یہ مطالبہ اور تقاضا تھا کہ رواۃ حدیث کے حالات و سوانح کی چھان بین کی جائے ورنہ پھر سند حدیث کا ہونا نہ ہونا برابر ہوتا۔ لہذا رواۃ کے اخلاق و کردار کے ایک ایک گوشے کی انتہائی احتیاط و دیدہ وری کے ساتھ تحقیق و تفتیش کی گئی جس کا اصطلاحی نام ”جرح و تعدیل“ ہے اور جس کے نتیجے میں ”اسماء الرجال“ کا وہ عظیم الشان فن ایجاد و مدون ہوا جس کی نظیر کسی قوم کی تاریخ میں نہیں مل سکتی“ (۳۹)۔ بقول ڈاکٹر اسپرنگر:

”نہ کوئی قوم دنیا میں ایسی گزری نہ آج موجود ہے جس نے مسلمانوں کی طرح اسماء الرجال جیسا عظیم الشان فن ایجاد کیا ہو، جس کی بدولت آج پانچ لاکھ شخصوں کا حال معلوم ہو سکتا ہے“ (۴۰)۔

اسماء الرجال کے فن کی محدثین حضرات نے اس حد تک خدمات انجام دیں کہ راویوں کے اوصاف و خصائص کے لحاظ سے کتب مدون کی گئیں، جیسے: ثقات کے لیے الگ اور ضعفاء کے لئے الگ کتب۔ طوالت کے خوف سے یہاں ان کتب کا ذکر نہیں کیا جاسکتا (۴۱)۔

جہاں تک راویوں کی تخریج و تعدیل کے عمل کا تعلق ہے تو محدثین حضرات نے اس کے لئے جو معیار مقرر کیا تھا اس پر بادشاہوں سے لے کر بڑے بڑے ائمہ مذاہب کو پرکھا گیا۔ اور اس راہ میں نہ ان کو کوئی دنیوی..... طاقت مرعوب کر سکی اور نہ وہ کسی مذہبی قیادت..... سے خوفزدہ ہوئے۔ جس شخص میں کوئی ذرا سا نقص بھی دیکھا اس کو..... علی الاعلان کہا کہ لوگ اس کی روایتیں قبول کرنے میں احتیاط برتیں (۴۲)۔



## جرح و تعدیل روایہ کے مؤسسین

جرح و تعدیل روایہ کے فن کا آغاز صحابہ رضی اللہ عنہم کے عہد ہی میں ہو گیا تھا۔ اس ضمن میں تفصیل حسب ذیل ہے:

- الف۔ صحابہ میں سے اس فن کے یہ مؤسسین قابل ذکر ہیں: ابن عباس (متوفی ۶۸ھ)، عبادہ بن صامت (متوفی ۳۴ھ)، انس بن مالک (متوفی ۹۳ھ) رضی اللہ عنہم۔
- ب۔ تابعین میں سے ان حضرات نے اس فن میں نمایاں حصہ لیا سعید بن المسیب (متوفی ۹۳ھ)، امام شعبی (متوفی ۱۰۴ھ)، ابن سیرین (متوفی ۱۱۰ھ) رحمہم اللہ۔
- ج۔ پھر اس کے بعد جرح و تعدیل میں حصہ لینے والے علماء پیدا ہوتے گئے۔ مشہور فضلاء میں سے شعبہ (متوفی ۱۶۰ھ) اور امام مالک (متوفی ۱۷۹ھ) کا نام قابل ذکر ہے (۴۳)۔

## عالی سند کی تلاش

ایک اور اہم چیز جس کا محدثین حضرات نے ابتداء ہی سے خوب اہتمام کیا وہ ہے ”عالی سند“ کی تلاش۔ عالی سند، وہ ہے جس کے راوی قلت تعداد کے باعث نبی کریم ﷺ سے قریب تر ہوں اور اسی حدیث کی کسی دوسری سند میں راویوں کی تعداد اس سے زیادہ ہو، ایسی سند کو ”اجل الاسانید“ کہتے ہیں بشرطیکہ وہ صحیح ہو، اگر علو (بلندی) کے ساتھ ضعیف ہو تو اس کا علونا قابل التفات ہے (۴۴)۔ محدثین حضرات عالی سند کی تلاش میں سرگرداں رہتے اور دروازے کے سفر کرتے مثلاً: ”حضرت عبداللہ بن مسعود کے رفقاء کوفہ سے مدینہ سفر کر کے حضرت عمر رضی اللہ عنہم سے حدیث سنتے اور اس طرح اپنی سنداؤں کو لیتے..... (اسی طرح) متعدد صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے اسناد کی بلندی کے حصول کے لیے سفر کیا۔ حضرت ابو ایوب رضی اللہ عنہ اور حضرت جابر رضی اللہ عنہ کا شمار ان ہی میں ہوتا ہے“ (۴۵)۔



عالی سند کی اہمیت کو ڈاکٹر نجم الاسلام نے امام حاکم (متوفی ۴۰۵ھ) کے حوالے سے ان کی کتاب ”معرفة علوم الحدیث“ پر تبصرہ کرتے ہوئے یوں بیان کیا ہے:

”حدیث کے حوالے سے تحقیق کے فن کو ترقی دینے والوں میں امام حاکم نیشاپوری ایک بہت بڑا درجہ رکھتے ہیں..... حاکم کا پہلا اصول اسناد کی آخری کڑی کی واقفیت حاصل کرنے سے متعلق ہے۔ اسناد کی پوری کڑیاں معلوم کرنا سنت صحیحہ (سے) ثابت ہے۔ انسان کو اسناد کی اوپر کی کڑی معلوم کرنے اور نیچے کی کڑی پر اکتفا نہ کرنے کی اجازت ہے، اگرچہ اس نے ثقہ آدمی سے سنا ہو۔ اس کی دلیل صحیح مسلم میں موجود ہے۔ اور یہ کہ سند کے عالی ہونے کا مفہوم محض کڑیاں گننا ہی نہیں، اس کی شناخت تو عقل و فہم سے ہوتی ہے“ (۴۶)۔

پھر لکھتے ہیں: ”حاکم کی ان تصریحات سے اولین مآخذ کی اہمیت پر بخوبی روشنی پڑتی ہے۔ ثانوی مآخذ کے مقابلے میں اولین مآخذ کی تلاش و تحقیق دستاویزی تحقیق کے بنیادی اصولوں میں سے ہے اور اس کی بہترین صورت علوم حدیث ہی میں ملتی ہے“ (۴۷)۔

مختصر یہ کہ محدثین حضرات نے حدیث کی تحقیق و تفتیش کے لیے صرف سند اور اس کے لئے ”قواعد و ضوابط بنانے پر ہی اکتفا نہیں کیا بلکہ مختلف بلاد کی اسانید (یعنی راویوں) کا فرداً فرداً جائزہ لیا اور دقت نظر سے اس کا مطالعہ کیا اور ان کے مراتب و مدارج متعین کیے، جس کی وجہ سے ”اصح الاسانید“ کے عنوان سے ہر ایک نے اپنی اپنی تحقیق کو پیش کیا“ (۴۸)۔

### نتیجہ

متصل، صحیح اور عالی سند اسلامی ملت کے ساتھ مخصوص ہے۔ جو محققین حضرات یوں لکھتے ہیں کہ سند مسلمانوں کی خصوصیت ہے، میرے خیال میں اس سے ان کی مراد متصل، صحیح اور عالی سند ہی ہوتی ہے نہ کہ صرف سند۔ کیونکہ، جیسا کہ مصادر سے پتہ چلتا ہے کہ، قبل از اسلام سند سے ملتا جلتا ایک اسلوب رائج تھا جس سے نقل و روایت کا کام لیا جاتا تھا، چنانچہ ڈاکٹر مصطفیٰ اعظمی



اس بات کی تائید میں لکھتے ہیں:

”اسلام سے قبل بعض کتب یا بعض معلومات کے نقل کرنے میں ایک منہج استعمال میں لایا جاتا تھا جو کسی حد تک اسناد سے مشابہ تھا لیکن اسے کوئی خاص اہمیت نہیں دی جاتی تھی۔ اس کی مثال ہم یہود کی کتاب ”مشنا“ میں پاسکتے ہیں“ (۴۹)۔

اور اسی طرح ”جاہلیت کے زمانہ میں شاعری (کلام شعراء) نقل کرنے میں کسی حد تک اسناد ہی سے کام لیا جاتا تھا“ (۵۰)۔

### ائمہ مجتہدین اور اصول روایت

مجتہدین سے مراد وہ لوگ ہیں جو شرعی نصوص (یعنی قرآن و حدیث) سے احکام و مسائل نکالتے ہیں اور تائید میں ان روایتوں کو بیان کرتے ہیں جو ان کی قائم کردہ شرائط پر پوری اترتی ہوں۔ یہی وجہ ہے کہ بعض ائمہ مجتہدین نے کثرت سے احادیث کو روایت نہیں کیا ہے، چنانچہ علامہ ابن خلدون لکھتے ہیں:

”اور ائمہ میں سے جس نے بھی بہت کم روایت کی ہے اس کے ایسا کرنے کی وجہ (ان کا حدیث میں کم سرمایہ ہونا نہیں بلکہ) طعن کا اندیشہ ہے جو روایت حدیث کے سلسلے میں اسے لاحق تھا نیز وہ علل (کمزوریاں) ہیں جو طریق احادیث میں پیش آتی ہیں، خاص طور پر اس لیے کہ اکثر لوگوں کے نزدیک جرح (نہ کہ تعدیل) مقدم ہوتی ہے۔ اس لئے اس (امام) کا اجتہاد اسے ایسی احادیث اور طرق اسانید کو اخذ کرنے سے روکتا ہے جن میں یہ (کمزوریاں اور نقائص) آسکتے ہیں اور ایسی احادیث اور طرق اسانید بکثرت ہیں۔ اس لیے ضعف طرق کی وجہ سے وہ بہت کم روایت کرتا ہے“ (۵۱)۔

جہاں تک حدیث کی جانچ پرکھ کے لیے اصول روایت کے استعمال کا تعلق ہے تو اس

حوالے سے اختصار کے پیش نظر صرف ائمہ اربعہ پر ہی اکتفا کیا جاتا ہے:



## ۱۔ امام ابوحنیفہؒ اور اصول روایت

امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ (متوفی ۱۵۰ھ) علم حدیث کے بہت بڑے مجتہدین میں سے ہیں یہ حدیث روایت کرنے میں بہت احتیاط کرتے تھے، چنانچہ یحییٰ بن معینؒ (متوفی ۲۳۳ھ) فرماتے ہیں: "کان ابو حنیفۃ ثقة لا یحدّث الا ما یحفظ ولا یحدّث بما لا یحفظ" (۵۲)۔

(امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ ثقہ ہیں جو حدیث ان کو یاد ہوتی ہے اسے ہی بیان کرتے ہیں اور جو یاد نہیں ہوتی اسے بیان نہیں کرتے)۔

امام وکیع بن جراحؒ (متوفی ۱۹۷ھ) فرماتے ہیں کہ "جیسی احتیاط امام صاحب سے حدیث میں پائی گئی دوسروں سے نہیں پائی گئی" (۵۳)۔

جہاں تک احادیث کی قبولیت و عدم قبولیت کے لئے شرائط و قواعد مرتب کرنے کا تعلق ہے تو امام ابوحنیفہؒ نے اس کی بنیاد ڈالی اور بلحاظ ثبوت احکام ان کے مراتب کی تفریق کی، ان کے اصول تنقید بہت سخت تھے۔ اس لئے "متشدد فی الروایۃ" کا لقب دیا گیا" (۵۴)۔

علامہ ابن خلدونؒ لکھتے ہیں: "والامام ابو حنیفۃ انما قلت روايته لما شدد فی شروط الروایۃ والتحمل" (۵۵)۔

(اور امام ابوحنیفہؒ سے روایت حدیث کم ہونے کی وجہ یہ ہے کہ آپ نے تحمل و اداء (یعنی اخذ و روایت) کی شروط میں بہت سختی کی ہے)۔

## امام ابوحنیفہؒ کی شرائط

۱۔ امام ابوحنیفہؒ فرماتے ہیں: "کسی آدمی کو اس وقت تک حدیث بیان نہیں کرنی چاہیے جب تک کہ سننے کے دن سے بیان کرنے کے دن تک یاد نہ ہو" (۵۶)۔

۲۔ عبدالوہاب شعرانی کہتے ہیں: "جو حدیث حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے منقول ہو اس



کے متعلق امام ابوحنیفہ عمل سے پہلے شرط لگاتے ہیں کہ اس کو متقی لوگوں کی ایک جماعت صحابی سے مسلسل نقل کرتی چلی آئی ہو، (۵۷)۔

۳۔ امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ فرتے ہیں: ”میں کتاب اللہ سے لیتا ہوں اگر اس میں نہ ملے تو رسول اللہ ﷺ کی سنت اور آپ ﷺ کی ان صحیح حدیثوں سے جو ثقات کے ہاتھوں میں ثقات ہی کے ذریعہ شائع ہوئی ہیں۔ پھر اگر یہاں نہ مل سکے تو آپ ﷺ کے صحابہ رضی اللہ عنہم میں سے جس کا قول چاہتا ہوں اختیار کر لیتا ہوں، لیکن جب بات ابراہیم، نخعی، شععی، حسن اور عطاء تک پہنچ جاتی ہے تو پھر میں اجتہاد سے کام لیتا ہوں، جیسا کہ ان حضرات نے اجتہاد کیا“ (۵۸)۔

حاصل کلام یہ ہے کہ امام اعظم عظیمی مسائل و احکام کی تائید میں صرف ان احادیث کو روایت کرتے ہیں جو متصل اور صحیح السند ہوں، چنانچہ مولانا تقی الدین ندوی لکھتے ہیں:

۱۔ ”وہ (یعنی امام ابوحنیفہ) صرف ان احادیث سے استدلال کرتے ہیں جو صحیح ہیں اور جن کی اشاعت ثقاہت کے ذریعہ ہوتی ہے“ (۵۹)۔

۲۔ ”امام صاحب کا دستور تھا کہ وہ خبر واحد کو اس باب کی دوسری احادیث و قرآن سے ملا کر دیکھتے تھے۔ اگر اس کا مضمون ان سے مطابقت کھاتا تو اس پر عمل کر لیتے ورنہ اس کو قبول نہ کرتے اور اس کو شاذ حدیث سمجھتے ہیں“ (۶۰)۔

۳۔ ”امام صاحب کے ان شرائط و احتیاط کی وجہ سے جن روایات سے وہ استدلال کرتے ہیں وہ صحت کے لحاظ سے اعلیٰ مقام پر ہوتی ہیں“ (۶۱)۔

علی بن جعد جو ہری بیان کرتے ہیں کہ: ”ابو حنیفہ اذا جاء بالحديث جاء بمثل الدر“ (۶۲) (امام ابوحنیفہ جو حدیث استدلال کے طور پر لاتے ہیں وہ موتی کی مانند چمکتی ہے)۔  
علاوہ ازیں! امام ابوحنیفہ راویوں کی تبحر و تعدیل بھی کیا کرتے تھے، چنانچہ حافظ سخاوی لکھتے ہیں



کہ: ”جب تابعین کا آخری دور آیا یعنی ۱۵۰ھ کے قریب قریب تو ائمہ کی ایک جماعت نے توثیق و تضعیف کے لیے زبان کھولی، امام ابوحنیفہ نے فرمایا کہ: ”ما رایت اکذب من جابر الجعفی“ (۶۳)۔ (میں نے جابر جعفی سے زیادہ جھوٹا نہیں دیکھا)۔

### ۲۔ امام مالکؒ (۹۳ھ تا ۱۷۹ھ)

مولانا بدر عالم لکھتے ہیں: ”آپ رحمہ اللہ تبع تابعین کے طبقہ میں سے تھے..... سفیانؒ فرماتے تھے، رجال کی چھان بین کرنے والا مالکؒ سے بڑھ کر کوئی شخص نہیں ہے۔ امام شافعیؒ فرماتے تھے کہ مالکؒ کو جب حدیث کے کسی ٹکڑے میں شک پڑ جاتا تھا تو پوری کی پوری حدیث ترک کر دیتے تھے“ (۶۴)۔ ”محدثین کے نزدیک اصح الاسانید میں بحث ہے۔ مشہور یہ ہے کہ جس کے راوی مالکؒ نافع سے نافع ابن عمرؓ سے ہوں وہ اسناد سب سے صحیح ہے“ (۶۵)۔

حضرت شاہ ولی اللہ آپؒ کی کتاب ”الموطا“ کے متعلق فرماتے ہیں: ”اہل حدیث (محدثین) اس پر متفق ہیں کہ امام مالک اور ان کے موافقین کی رائے کے مطابق موطا کی تمام احادیث صحیح ہیں۔ اور دیگر محدثین کی رائے کے مطابق اس میں کوئی مرسل یا منقطع حدیث ایسی نہیں ہے کہ دیگر طرق سے اس کی سند متصل نہ ہو۔ پس اس لحاظ سے موطا کی تمام احادیث صحیح ہیں“ (۶۶)۔

امام مالکؒ کے نزدیک راوی کے لیے حدیث کا حافظ ہونا ضروری ہے، چنانچہ مولانا تقی الدین ندوی لکھتے ہیں: ”امام ابوحنیفہ اور امام مالک کے نزدیک ضروری ہے کہ راوی جس روایت کو بیان کرے اس کا وہ حافظ ہو.....“ (۶۷)۔

### ۳۔ امام شافعیؒ (۱۵۰ھ-۲۰۴ھ)

ڈاکٹر خالد محمود کی تحقیق کے مطابق ”شروع شروع میں تحقیق اسناد پر آپ کی توجہ زیادہ تھی۔ ان کے ہاں حدیث کی قبولیت کا معیار اس کی صحت سند تھا۔ استفاضہ عمل کو کچھ نہ سمجھتے تھے۔



لیکن آخری دور میں آپ بھی اس طرف پلٹے جو امام ابوحنیفہ اور امام مالک کا نظریہ تھا کہ تو اتر عمل کے ہوتے ہوئے اسناد کی ضرورت نہیں رہتی۔ بیس رکعت والی تراویح کے ثبوت میں ان کے پاس کوئی صحیح حدیث نہ تھی۔ آپ نے یہاں اہل مکہ کے عملی استفاضہ سے استدلال کیا“ (۶۸)۔

جہاں تک مرسل حدیث سے استدلال کرنے کا تعلق ہے تو آپ کے بارے میں اسے غیر مشروط طور پر قبول کرنے سے انکار کرنا مشہور ہے، مگر ڈاکٹر علی اصغر چشتی لکھتے ہیں کہ: ”ہماری تحقیق کے مطابق آپ رحمہ اللہ کا یہ اصول دیگر ائمہ اجتہاد کے اصول کے خلاف نہیں۔ امام ابوحنیفہؒ بھی حدیث مرسل سے غیر مشروط طور پر استدلال نہیں کرتے۔ اسی طرح محدثین کی اچھی خاصی جماعت اس اصول کی حامی نظر آتی ہے کہ مرسل کو ہر حال میں قبول نہیں کرنا چاہیے بلکہ معروف شرائط (جو کتب اصول میں مذکور ہیں) کو مدنظر رکھ کر اس سے استدلال کرنا چاہیے“ (۶۹)۔

مولانا بدر عالم لکھتے ہیں کہ: ”فقہ میں آپ رحمہ اللہ کا طریقہ یہ تھا کہ آپ صحیح احادیث کو لیتے اور ضعیف کو ترک کر دیتے تھے، کسی اور مذہب میں فقہ کی تعمیر اس معیار پر نہیں کی گئی“ (۷۰)۔

مختصر یہ کہ: ”امام شافعی رحمہ اللہ نے جمع روایات، تنقید احادیث، اصول روایت اور امتیاز مراتب کے قواعد مرتب کیے۔ انہوں نے اپنی کتاب ”الام“ اور ”الرسالة“ وغیرہ میں بکثرت روایات سے استدلال کیا ہے“ (۷۱)۔

### ۴۔ امام احمد بن حنبل (۱۶۳ھ تا ۲۴۱ھ)

ذیل میں امام احمد بن حنبلؒ کی فقہ کے پانچ زریں اصول بیان کیے جاتے ہیں جن سے احادیث کے متعلق آپ کا نقطہ نظر عیاں ہو جاتا ہے:

”۱۔ جب کسی مسئلہ کے متعلق صریح نص (یعنی صحیح حدیث) موجود ہو تو پھر کسی کے اختلاف کی پرواہ نہ کی جائے.....“



- ۲۔ جب کسی مسئلہ میں صحابی رضی اللہ عنہ کا فتویٰ معلوم ہو جائے اور اس کے مخالف کسی صحابی رضی اللہ عنہ کا قول معلوم نہ ہو سکے تو پھر وہی مختار ہونا چاہیے... آپ کے نزدیک فتاویٰ صحابہ رضی اللہ عنہم کی اہمیت حدیث مرسل سے بھی زیادہ تھی...
- ۳۔ جب کسی مسئلہ میں صحابہ رضی اللہ عنہم کا اختلاف ہو تو اس میں جس کا قول کتاب و سنت کے قریب نظر آئے اسی کو اختیار کر لینا چاہیے۔ اگر یہ ترجیح ثابت نہ ہو سکے تو پھر صحابہ رضی اللہ عنہم کے مختلف اقوال کو نقل کر دینا چاہیے اور کسی قول پر جزم نہیں کرنا چاہیے.....
- ۴۔ اگر کسی مسئلہ میں ضعیف (حسن لغیرہ) یا مرسل حدیث موجود ہو تو اس کو بھی قیاس پر مقدم رکھا جائے بشرطیکہ اس مسئلہ کے متعلق کوئی اور حدیث یا قول صحابی یا اجماع مخالف نہ ہو....
- ۵۔ قیاس اس وقت جائز ہو سکتا ہے جب کسی مسئلہ کے متعلق منقول سامان نہ مل سکے اور وہ بھی بقدر ضرورت.....“ (۷۲)۔

### ائمہ محدثین اور اصول روایت

جہاں تک محدثین حضرات کا تعلق ہے تو انہوں نے اپنی اپنی کتب میں احادیث کا اندراج کرتے وقت ان کی جانچ پرکھ کے لیے اصول روایت کا کیسے اور کس قدر استعمال کیا؟ اس امر کا اندازہ لگانے کے لیے اختصار کے پیش نظر صرف مولانا انور شاہ کشمیری کے حسب ذیل بیان کو نقل کرنے پر اکتفاء کیا جاتا ہے۔ وہ بخاری، مسلم، ابوداؤد اور ترمذی رحمہم اللہ کے بارے میں فرماتے ہیں کہ: ”راویان حدیث کے پانچ طبقات ہیں:

- ۱۔ ضبط میں کامل اور اپنے شیخ کی خدمت میں زیادہ رہنے والے۔
- ۲۔ ضبط میں تو کامل لیکن شیخ کی صحبت میں کم رہے۔



- ۳۔ شیخ کی صحبت میں زیادہ رہے لیکن تام الضبط نہیں ہیں۔
- ۴۔ شیخ کی صحبت میں رہنا بھی کم ہی نصیب ہوا اور تام الضبط بھی نہیں ہیں۔
- ۵۔ تام الضبط بھی نہیں، شیخ کی صحبت میں بھی کم رہے اور ساتھ ہی ان پر جرح بھی زیادہ ہوئی تو:

- الف۔ امام بخاری رحمہ اللہ پہلے طبقہ کی روایات بتما مہا لیتے ہیں اور دوسرے طبقہ کی روایات میں انتخاب کر کے لیتے ہیں۔ اور باقی تین طبقوں کی روایات کو بالکل نہیں لیتے۔
- ب۔ اور امام مسلم پہلے اور دوسرے طبقہ کی روایات کو بتما مہا لیتے ہیں اور تیسرے طبقہ کی روایات کا انتخاب کرتے ہیں اور چوتھے اور پانچویں طبقہ کو چھوڑ دیتے ہیں۔
- ج۔ امام ابو داؤد چوتھے طبقہ کی روایات کو بھی لیتے ہیں۔
- د۔ اور امام ترمذی پانچویں طبقہ کی روایات لینے میں حرج نہیں سمجھتے“ (۷۳)۔

پہلی دوسری اور تیسری صدی ہجری تک اصول روایت کے اس مختصر تاریخی ارتقاء کے بعد ذیل میں محدثین حضرات کے مقرر کردہ اصولوں کو تھوڑی وضاحت کے ساتھ بیان کیا جاتا ہے تاکہ کسی قسم کا ابہام باقی نہ رہے اور یہ معلوم ہو جائے کہ حدیث کی تحقیق کے لیے انہوں نے کس قدر دقت نظر سے کام لیا ہے:

### ۱۔ تحمل و ادائے حدیث کی شروط

محدثین کے نزدیک تحمل حدیث یعنی اسے سننے کے لئے یا حاصل کرنے کے لیے صرف تمیز (عقل، شعور) اور ضبط شرط ہیں نہ کہ اسلام اور بلوغ جبکہ ادائے حدیث یعنی اسے سنانے اور دوسروں تک منتقل کرنے کے لیے تمیز (عقل، بلوغ)، ضبط، عدالت اور اسلام ضروری شروط ہیں (۷۴)۔

### ۲۔ روایت میں راوی کے قیاس کی تحقیق

محدثین حضرات کے سنہری اصولوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ احادیث میں راویوں



کے قیاس اور اصل واقعہ میں تمیز کی خاطر تحقیق کی جائے کیونکہ بعض دفعہ ایسا ہوتا ہے کہ کوئی راوی جب کسی واقعہ کو بیان کرتا ہے تو اس میں وہ اپنے قیاس کو بھی شامل کر لیتا ہے اس قبیل کی متعدد امثلہ موجود ہیں جیسے صحیح مسلم کی یہ روایت جس میں یہ بیان ہوا ہے کہ: ”نبی اکرم ﷺ جب ازواج مطہرات سے ناراض ہو کر الگ ہو گئے تو یہ مشہور ہو گیا کہ آپ ﷺ نے ازواج کو طلاق دے دی۔ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے یہ خبر سنی تو مسجد نبوی میں تشریف لائے، یہاں لوگ کہہ رہے تھے کہ آپ ﷺ نے ازواج کو طلاق دے دی۔ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے خود رسول اللہ ﷺ کی خدمت میں حاضر ہو کر دریافت کیا تو آپ ﷺ نے فرمایا ”نہیں، میں نے طلاق نہیں دی“ (۷۵)۔

علامہ شبلی نعمانی لکھتے ہیں: ”غور کرو مسجد نبوی میں تمام صحابہ رضی اللہ عنہم جمع ہیں اور سب بیان کر رہے ہیں کہ آنحضرت ﷺ نے طلاق دے دی۔ صحابہ رضی اللہ عنہم عموماً ثقہ اور عادل ہیں اور ان کی کثیر تعداد اس واقعہ کو بیان کر رہی ہے، باوجود اس کے جب تحقیق کی جاتی ہے تو معلوم ہوتا ہے کہ وہ واقعہ نہیں بلکہ قیاس تھا۔“ (۷۶)۔

### ۳۔ معیار راوی بلحاظ نوعیت واقعہ

محدثین کے نزدیک تحمل (اخذ) حدیث کے عمل میں یہ دیکھا جاتا ہے کہ حدیث میں جو واقعہ بیان ہو رہا ہے وہ کس حیثیت اور کس قسم کا ہے کیونکہ واقعہ کی نوعیت و حیثیت کے لحاظ سے حدیث (روایت) کی حیثیت میں تبدیلی آ جاتی ہے، مثلاً: ثقہ راوی کسی ایسی روایت کو بیان کرے جو عام پیش آنے والے معمولی واقعہ پر مشتمل ہو تو اس کی روایت مقبول ہے۔ اس کے برعکس یہی ثقہ راوی ایسی حدیث بیان کرے جو غیر معمولی ہونے کے ساتھ ساتھ تجربہ کے خلاف ہو اور زیادہ تحقیق طلب ہو تو ایسی صورت میں راوی کو معمولی درجہ سے زیادہ عادل محتاط اور زیادہ نکتہ داں ہونا چاہیے (۷۷)۔



## تحقیق سند بلحاظ اہمیت متن

محدثین حضرات متن روایت کی حیثیت و اہمیت کی بنیاد پر اس کی سند یعنی راویوں کی تحقیق کرتے ہیں، مثلاً:

الف۔ امام بیہقی نے ابن مہدی کا یہ قول نقل کیا ہے: ”جب ہم حضور اکرم ﷺ سے حلال و حرام اور احکام کے متعلق حدیث روایت کرتے ہیں تو سند میں خوب تشدد کرتے ہیں اور راویوں کو پرکھ لیتے ہیں لیکن جب فضائل اور ثواب و عقاب کی حدیثیں آتی ہیں تو ہم سند میں تساہل (ڈھیل) سے کام لیتے ہیں اور راویوں کے متعلق چشم پوشی کرتے ہیں“ (۷۸)۔

ب۔ امام احمد بن حنبل کا مشہور قول ہے کہ: ”ابن اسحاق اس درجہ کے آدمی ہیں کہ مغازی وغیرہ کی حدیثیں ان سے روایت کی جاسکتی ہیں لیکن جب حلال و حرام کے مسائل آئیں تو ہمیں ایسے لوگ درکار ہیں جنہوں نے اپنے ہاتھ کی چاروں انگلیاں خوب زور سے بند کر لیں“ (۷۹)۔ مطلب یہ تھا کہ خوب مضبوط قسم کے راوی ہوں۔

## ۴۔ خلاف قیاس مرویات کی سند میں فقہاء کا اعتبار

اگر کوئی روایت خلاف قیاس ہو تو علماء حدیث دیکھتے ہیں کہ اس کی سند میں راوی فقیہ ہے یا نہیں اگر فقیہ ہو تو پھر قیاس کو چھوڑ دیا جاتا ہے اور فقیہ کی روایت سے استدلال کیا جاتا ہے۔ اس مسئلہ میں علماء احناف اور امام مالک کی رائے یہ ہے کہ:

”راوی اگر تفقہ اور اجتہاد میں مشہور ہے جیسے، خلفاء راشدین اور عبادلہ اربعہ

(۸۰) ہیں تو اس کی حدیث حجت ہوگی اور اس (حدیث) کے مقابلے میں قیاس

چھوڑ دیا جائے گا۔ اس بارے میں امام مالک کا اختلاف ہے۔ (ان کے

نزدیک) اگر راوی ثقہ اور عادل ہے لیکن فقیہ نہیں، جیسے حضرت انس رضی اللہ عنہ اور



حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ۔ اس صورت میں اگر روایت قیاس کے موافق ہو تو اسی پر عمل ہوگا ورنہ قیاس کو ضرورت کے بغیر ترک نہ کیا جائے گا“ (۸۱)۔

## تحقیق رواۃ کے دیگر ثمرات

سند، علم جرح و تعدیل اور علم اسماء الرجال کے علاوہ راویوں کے احوال کی تحقیق کے ثمرات میں سے یہ بھی ہے کہ احادیث مختلف انواع میں منقسم ہو گئیں، جیسے مقبول و مردود یعنی صحیح، حسن اور ضعیف وغیرہ۔ اصول حدیث کی کتب اس ثمرہ کا منہ بولتا ثبوت ہیں۔

## صحیح حدیث

محدثین کے نزدیک صحیح حدیث اسے کہتے ہیں ”جس کی اسناد اول سے لے کر آخر تک متصل ہو، جسے عادل اور ضابط راوی اپنے ہی جیسے عادل اور ضابط راوی سے نقل کرتے ہوئے آئیں اور اس روایت میں کوئی علت نہ ہو اور نہ وہ شاذ ہو“ (۸۲)۔ ذیل میں صرف عدالت، علت اور شد و ذکا تعارف پیش کیا جاتا ہے:

## ۵۔ عدالت

محدثین حضرات راویوں کی جانچ پرکھ میں ان کی صفت عدالت پر خوب توجہ دیتے ہیں۔ کسی راوی کے عادل ہونے سے مراد یہ ہے کہ: ”وہ مسلمان ہو، عاقل و بالغ ہو، اور ایسے ملکہ اور ایسی قوتِ رائخہ کا مالک ہو جو اسے متقی اور صاحب مروت بنا دے۔ متقی ہونے سے مراد یہ ہے کہ وہ جلی و خفی شرک اور فسق و بدعات سے مجتنب ہو اور صاحب مروت ہونے کا مطلب یہ ہے کہ وہ غیر متعصب، غیر ضدی نہ ہونے کے ساتھ ساتھ چھپورے پن اور بے حیائی کے عیوب سے پاک ہو، اور ایک پر وقار شخصیت کا مالک ہو“ (۸۳)۔

مولانا سعید احمد اکبر آبادی نجم الدین سلیمان الطوفی کی کتاب ”شرح الاربعین“

کے حوالے سے لکھتے ہیں کہ:



”روایت کا دار و مدار راوی کے عدل و ضبط پر ہے۔ پس جو حضرات ان دونوں وصفوں میں اعلیٰ مرتبہ پر ہوں گے جیسے حضرت شعبہ، سفیان اور یحییٰ بن سعید القطان رحمہم اللہ وغیرہ، ان کی حدیث صحیح ہوگی۔ اور اگر راوی عادل و ضابط ہو لیکن اعلیٰ مرتبہ پر نہیں (تو) اس کی روایت حسن ہوگی۔ عدالت اور ضبط کے تفاوت کے اعتبار سے رواۃ کو نو طبقات پر تقسیم کیا گیا ہے“ (۸۴)۔

محدثین کی اس دقت نظر سے اندازہ لگایا جاسکتا ہے کہ ان کے نزدیک عدالت کا جو معیار ہے وہ کس قدر سخت اور اونچا ہے۔

## ۶۔ علت

روایت کی قبولیت میں محدثین یہ بھی دیکھتے ہیں کہ حدیث میں کوئی ایسا پوشیدہ نقص یا عیب تو نہیں ہے جو اس کی صحت کو مجروح کر دے۔ علت (نقص) کے متعلق سعید احمد اکبر آبادی لکھتے ہیں: ”اس سے مراد یہ ہے کہ کوئی ایسا (سبب) نہ پایا جائے جو صحت حدیث میں قاذح ہو مثلاً:

☆ ارسال خفی یعنی راوی کا اپنے معاصر سے لفظ ”عن“ سے روایت کرنا۔ جس سے یہ شبہ ہو کہ راوی نے اس سے سماع کیا ہے۔ حالانکہ اسے اپنے معاصر مروی عنہ سے بالکل سماع حاصل نہ ہو۔

☆ یا تالیس یعنی راوی روایت تو کرتا ہے اس شخص سے جس سے اس کو سماع حاصل ہے لیکن نقل وہ روایت کرتا ہے جو اس نے اس سے نہیں سنی اور اس انداز سے بیان کرتا ہے کہ گویا اس نے اس روایت کو خود مروی عنہ سے سنا ہے۔

☆ علت کی دو قسمیں ہیں خفیہ اور ظاہرہ، خفیہ کی مثال اوپر گزر چکی ہے، ظاہرہ کی مثال فسق اور سوء حفظ ہے“ (۸۵)۔



## ۷۔ شذوذ

محدثین تحقیق کرتے وقت دیکھتے ہیں کہ روایت میں شذوذ تو واقع نہیں ہوا ہے۔ شاذ روایت اسے کہتے ہیں جس میں ایک مقبول راوی اپنے سے افضل راوی کی مخالفت کر رہا ہو (۸۶)۔

## ۸۔ روایت بالمعنی

امام نوویؒ لکھتے ہیں کہ: ”جو شخص روایت بالمعنی یعنی حدیث کا مطلب بیان کرنا چاہتا ہو، اگر وہ الفاظ اور مطالب کا ماہر نہیں ہے۔ اور مطلب میں جو باتیں خلل انداز ہوتی ہیں ان کو نہیں جانتا تو اہل علم کے نزدیک بالاتفاق اس کی روایت جائز نہیں بلکہ اس کے لیے ضروری ہے کہ لفظ کا تعین کرے“ (۸۷)۔

## ثانیاً۔ اصول درایت

اصول درایت سے مراد محدثین حضرات کے وضع کردہ وہ سنہری قواعد و ضوابط ہیں جن کے ذریعہ متن حدیث کے متعلق تحقیق کی جاتی ہے کہ واقعی وہ حدیث رسول ﷺ ہے یا کہ نہیں؟ دوسرے الفاظ میں یوں سمجھئے کہ ان اصولوں کی روشنی میں حدیث کے متن کی چھان بین کی جاتی ہے۔ اس چھان بین کو ”داخلی نقد“ یا ”نقد متن“ بھی کہتے ہیں۔ اس سے قبل کہ اصول درایت کے مآخذ اور تاریخی پس منظر پر بحث کی جائے بہتر ہے کہ لفظ ”درایت“ کے مفہوم کو بیان کیا جائے تاکہ کسی قسم کا ابہام نہ رہے:

## درایت کا مفہوم

## الف۔ لغوی مفہوم

لغت میں درایت کے معنی ہیں معرفت۔ علامہ اصفہانی لکھتے ہیں ”الدراية المعر



فہ“ (۸۸)۔ اس لغوی معنی کی بنیاد پر درایت حدیث کا معنی ہوگا، حدیث کی معرفت۔ یہاں سوال پیدا ہوتا ہے کہ حدیث کی معرفت سے کیا مراد ہے اور اسے کس طرح حاصل کیا جاسکتا ہے؟ اس سوال کا جواب مولانا تقی امینی نے یوں دیا ہے:

”حدیث کی صحیح معرفت اسی صورت میں ممکن ہے کہ جب راوی (حدیث نقل کرنے والے) اور مروی (حدیث) دونوں کے متعلق پوری معلومات ہوں یعنی راوی کے بارے میں معلوم ہو کہ وہ کہاں اور کب پیدا ہوا، اس کا حافظہ قوی تھا یا کمزور، نظر سطحی تھی یا گہری، فقیہ تھا یا غیر فقیہ، جاہل تھا یا عالم، اخلاق و کردار کیسے تھے، ذرائع معاش کیا تھے، روایت کرنے میں اس نے مقررہ شرطوں کا لحاظ کیا ہے یا نہیں (ان امور کا تعلق اصول روایت سے ہے)؟ اسی طرح مروی (حدیث) کے بارے میں معلوم ہو کہ اس کے الفاظ و جملوں میں کسی قسم کی خامی و کمزوری یا مقررہ قواعد کی خلاف ورزی تو نہیں پائی جاتی، معانی و مفہوم میں عقل، مشاہدہ، تجربہ، زمانہ کے طبعی تقاضا، کسی مسلمہ اصول اور قرآنی تصریحات کی خلاف ورزی تو لازم نہیں آتی، جن سے کسی طرح بھی شان نبوت پر حرف آئے، یا فرمودات نبوی میں سطحیت ظاہر ہونے کا اندیشہ ہو“ (۸۹)۔

### ب۔ اصطلاحی مفہوم

جہاں تک درایت کے اصطلاحی مفہوم کا تعلق ہے تو اس کا مفہوم علماء نے عموم و خصوص کے اعتبار سے بیان کیا ہے:

### ۱۔ درایت کا عام اصطلاحی مفہوم

علامہ سیوطی (متوفی ۹۱۱ھ) لکھتے ہیں: ”علم الحدیث جو درایت سے مختص ہے وہ ایک ایسا علم ہے جس کے ذریعے روایت کی حقیقت، اس کی شرائط، اس کی انواع، اس کے احکام، راویوں کے احوال اور ان کی شرائط، مرویات کی اقسام اور ان کے متعلقات کی معرفت حاصل ہوتی ہے“ (۹۰)۔



عزالدین ابن جماعہ لکھتے ہیں: ”درایتی علم حدیث ان قوانین کے جاننے کو کہتے ہیں جن کے ذریعہ سند اور متن کے احوال کی معرفت حاصل ہوتی ہے“ (۹۱)۔

یہ عام اصطلاحی مفہوم ہے یعنی سند اور متن دونوں کو شامل ہے۔ اس عمومیت کی وجہ یہ ہے کہ اصول روایت (یعنی خارجی نقد حدیث کے اصولوں) میں سے بعض ایسے اصول بھی ہیں جو اصول درایت (یعنی داخلی نقد حدیث کے اصولوں) میں بھی شامل ہے۔ اسی اشتراک کے پیش نظر ”محدثین نے درایت کی ایسی تعریف کی ہے جو دونوں (یعنی سند و متن) پر صادق آتی ہے“ (۹۲)، جیسا کہ اوپر والی دو تعریفیں۔ داخلی و خارجی نقد کے مشترک اصول یہ ہیں: شاذ، معطل، منکر، مضطرب، مصحف، مقلوب، مدرج وغیرہ (۹۳)۔

خارجی نقد (اصول روایت) کے بعض اصولوں کا تعلق داخلی نقد (اصول درایت) سے بھی ہے، چنانچہ صحیحی صالح لکھتے ہیں:

”فن اصول حدیث کی تعریف سے یہ حقیقت واضح ہوتی ہے کہ یہ فن صرف اسناد ہی کے مباحث تک محدود نہیں ہے بلکہ متن سے متعلق مسائل بھی اس میں شامل ہیں“ (۹۴)۔

جو اصول داخلی نقد کے لیے خاص ہیں ان میں سے چند یہ ہیں: مرفوع، موقوف، مقطوع، مختلف الحدیث اور ناسخ و منسوخ وغیرہ (۹۵)۔

اصل میں یہی وہ اشتراک و اختصاص ہے جس کی بنیاد پر محدثین نے علم درایت کی ایسی تعریفیں کی ہیں جن میں علم روایت بھی شامل ہے۔ یہاں تک درایت کا عام اصطلاحی مفہوم بیان ہوا ہے۔ اب ذیل میں خاص اصطلاحی مفہوم بیان کیا جاتا ہے:

## ۲۔ درایت کا خاص اصطلاحی مفہوم

درایت صرف متن حدیث تک محدود ہے اور سند کی تحقیق اس میں شامل نہیں ہے۔



چنانچہ طاش کبریٰ زادہ لکھتے ہیں: ”درایت حدیث وہ علم ہے جس میں الفاظ حدیث سے سمجھے گئے مفہوم و مراد سے بحث ہوتی ہے، جبکہ وہ عربی قواعد و شرعی ضوابط پر مبنی اور رسول ﷺ کے احوال کے مطابق ہو“ (۹۶)۔

- درایت کے اس مفہوم کو عبد اللہ العمادی نے ان الفاظ میں بیان کیا ہے وہ لکھتے ہیں:
- ”درایت کا مطلب یہ ہے کہ حدیث میں جو واقعہ مذکور ہو اس کی نسبت پہلے یہ تنقیح کر لینی چاہیے کہ:
- ۱۔ یہ بات انسانی فطرت کے موافق ہے یا نہیں؟
  - ۲۔ جس زمانہ کا یہ واقعہ ہے اس زمانہ کی خصوصیتیں اس میں کہاں تک موجود ہیں؟
  - ۳۔ عقلی قرینہ اس کی نسبت کیا کہہ رہا ہے؟
  - ۴۔ جس شخص سے واقعہ منسوب ہے وہ عادتاً اس قسم کی باتوں کا خوگر بھی تھا یا نہیں؟ اگر نہیں تھا تو پھر خاص واقعہ کے اسباب کیا ہیں“ (۹۷)۔

## اصول درایت کا ماخذ

اصول روایت کی طرح اصول درایت کا ماخذ و مصدر قرآن مجید اور حدیث رسول ﷺ ہے۔

## قرآن مجید اور اصول درایت

قرآن مجید کی درج ذیل آیات اصول درایت کا ماخذ و مصدر ہیں:

- ۱۔ بعض منافقین نے حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا پر تہمت لگائی پھر اس خبر کو اس طرح مشہور کیا کہ بعض مسلمان بھی تردد و تذبذب کا شکار ہو گئے تو اللہ تعالیٰ نے حضرت عائشہ کی برأت و طہارت کے ثبوت میں چند آیات کو نازل فرمایا، ایک ان میں سے یہ ہے:

«وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا سُبْحَانَكَ

هَذَا بَهْتَانٌ عَظِيمٌ» (۹۸)۔ (اور جب تم نے اس خبر کو سنا تو کیوں نہیں کہہ دیا کہ ہمارے لیے



ایسی بات کہنا مناسب نہیں، سبحان اللہ یہ بڑا بہتان ہے۔

اس آیت میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ اس بے بنیاد خبر کو سننے کے بعد تمہیں اس کا ذکر بھی نہیں کرنا چاہیے تھا کیونکہ یہ انتہائی نامعقول بات ہونے کے باعث درایۃً بالکل ساقط الا اعتبار تھی (۹۹)۔

علامہ شبلی نعمانی لکھتے ہیں کہ: ”عام اصول کی بناء پر اس چیز کی تحقیق کا یہ طریقہ تھا کہ پہلے راویوں کے نام دریافت کیے جاتے پھر دیکھا جاتا کہ وہ ثقہ اور صحیح الروایہ ہیں یا نہیں؟ پھر ان کی شہادت لی جاتی لیکن اللہ تعالیٰ نے اس آیت میں فرمایا کہ سنیے! تم نے کیوں نہیں کہہ دیا کہ یہ بہتان ہے“ (۱۰۰)۔

پھر لکھتے ہیں: ”اس سے قطعاً ثابت ہوتا ہے کہ اس قسم کا خلاف قیاس جو واقعہ بیان کیا جائے قطعاً سمجھ لینا چاہیے کہ غلط ہے“ (۱۰۱)۔

۲۔ حضور اکرم ﷺ نے درایت پر زور دیتے ہوئے مخاطبین کے سامنے اپنی صفائی ان الفاظ میں پیش فرمائی: ﴿فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ﴾ (۱۰۲)۔  
(آخر اپنے دعویٰ نبوت سے قبل بھی) میں نے اپنی عمر کا بڑا حصہ تمہارے درمیان ہی گزارا ہے (پھر کبھی جھوٹ بولا؟) تو کیا تم اتنی بات بھی نہیں سمجھتے۔

اس ”آیت میں صحت کی ضمانت زندگی کے اس حصہ کے لیے پیش کی گئی ہے جو قبل نبوت ہے تو بعد نبوت کی زندگی اور اس کے فرمودات میں کیونکر ایسا نقص پایا جائے گا جس سے علم و عقل کی خلاف ورزی لازم آئے“ (۱۰۳)۔

۳۔ ﴿وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ﴾ (۱۰۴)۔  
(جب ان کے پاس کوئی امن یا ڈر کی خبر آتی ہے تو اس کو مشہور کر دیتے ہیں۔ اگر اس کو



رسول یا اپنے اولوالامر (علماء و حکام) تک پہنچا دیتے تو جوان میں ملکہ استنباط رکھنے والے ہیں وہ اس کو پوری طرح معلوم کر لیتے۔

اس آیت میں یہ بتایا کہ ہر خبر کی تحقیق کا ہر انسان اہل نہیں ہوتا۔ بعض خبریں ایسی ہوتی ہیں کہ ان کی تحقیق خاص تحقیقی اہلیت کے مالک افراد ہی کر سکتے ہیں اور وہ ہیں ”اولو الامر“ یعنی علماء و فقہاء جو تحقیق و تنقید کے ذریعے احکام و مسائل کے استنباط کا ملکہ رکھتے ہوں۔ اور آیت میں ”یستنبطونہ“ کا اضافہ اسی پر دلالت کرتا ہے کہ اس داخلی نقد و تحقیق کا زیادہ استحقاق ایسوں ہی کا ہوتا ہے جو استنباط کی پوری اہلیت رکھتے ہوں۔ علامہ تقی امینی لکھتے ہیں:

”اس آیت میں خبر کی حیثیت متعین کرنے کی جس انداز میں تاکید ہے، اس سے ظاہر ہے کہ صرف راوی کی ثقاہت ہی خبر پر اعتماد کے لیے کافی نہیں ہے، پھر جس خبر سے شان نبوت پر حرف آئے یا معیار نبوت برقرار نہ رہ سکے، اس میں راوی کی ثقاہت کو بدرجہ اولیٰ تا کافی قرار دے کر اصل زور نفس خبر (داخلی نقد) پر ہوگا، جس کو بنیاد بنا کر فیصلہ کیا جائے گا“ (۱۰۵)۔

۴۔ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ﴾ (۱۰۶)۔

یہ آیت مبارکہ جس طرح اصول روایت کا مآخذ و مصدر ہے اسی طرح اصول درایت کے لیے بھی مآخذ و مصدر ہے، چنانچہ اردو دائرہ معارف اسلامیہ میں ”حدیث“ کا مقالہ نگار لکھتا ہے کہ: ”اصول روایت و درایت کی بنیاد خود قرآن مجید نے قائم کی ہے اور حکم دیا ہے کہ روایت کی چھان بین کر لیا کرو“ مذکورہ آیت“ اس میں روایت و درایت دونوں جہتوں سے اچھی طرح تحقیق کرنے کی ہدایت موجود ہے“ (۱۰۷)۔

ان آیات سے ثابت ہوا ہے کہ اصول درایت یوں ہی مرتب نہیں ہو گئے بلکہ ان میں قرآن مجید پوری طرح کار فرما ہے۔



## حدیث رسول ﷺ اور اصول درایت

حضور اکرم ﷺ کی درج ذیل احادیث اصول درایت کا مآخذ و مصدر ہیں:

۱۔ ”ابو اسید الساعدی کی یہ حدیث: ”جب تم کوئی ایسی حدیث سنو جو آپ کے دل کو لگے اور آپ کے رونگٹے کھڑے ہو جائیں اور اس کو اپنے سے قریب سمجھو تو میں اس کا آپ سے زیادہ حقدار ہوں، اور جب آپ کوئی ایسی حدیث سنیں جسے آپ کے دل قبول نہ کریں اور آپ کے بدن کے بال و کھال اس سے نفرت کریں اور اپنے سے اسے دور تصور کرو تو میں اس سے آپ کے مقابلہ میں زیادہ دور ہوں“ (۱۰۸)۔

۲۔ ”جب آپ کے سامنے ایسی حدیث بیان کی جائے جس سے آپ کے دل کو نفرت ہو تو اسے حاصل نہ کرو (یعنی قبول نہ کرو) کیونکہ میں نہ تو منکر (نامناسب) بات کہتا ہوں اور نہ ہی میرے اندر اس کی اہلیت ہے“ (۱۰۹)۔

درایت (یعنی داخلی نقد) کے اصولوں کے ان ہی دونوں مآخذوں کی بنیاد پر صحابہ کرام احادیث کے متون کی جانچ پرکھ کیا کرتے تھے۔ ذیل میں ان اصولوں کے تاریخی پس منظر کو مختصراً پیش کیا جاتا ہے تاکہ معلوم ہو جائے کہ تحقیق متون حدیث میں کس طرح انہیں استعمال کیا گیا:

## صحابہ کرام رضی اللہ عنہم اور اصول درایت

حضور اکرم ﷺ کے ہوتے ہوئے صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کو خود تحقیق احادیث کی ضرورت نہیں پڑتی تھی۔ جب انہیں کوئی شک پڑتا یا کوئی مشکل پیش آتی تو براہ راست آپ سے پوچھ لیتے تھے۔ لیکن آپ ﷺ کے رخصت ہو جانے کے بعد احادیث کی تعلیم و تدریس اور انہیں آگے منتقل کرنے کی تمام تر ذمہ داری صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے کندھوں پر آن پڑی۔ اب دینی تقاضا کے پیش نظر ضروری تھا کہ احادیث بیان کرنے والوں کے ساتھ ساتھ ان کے مضامین (متون) پر بھی گہری نظر رکھی جائے اور قرآن و حدیث کے قائم کردہ اصول درایت کی روشنی میں



پر کہتے ہوئے ان کی قبولیت یا عدم قبولیت کا فیصلہ صادر کیا جاتا۔ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے عملاً اس طرز تحقیق (یعنی روایت کو درایت پر پرکھنے) کا بھرپور مظاہرہ کیا۔ ذیل میں اختصار کے پیش نظر اس سلسلہ کی صرف دو مثالیں پیش کی جاتی ہیں:

۱۔ محمود بن ربیع رضی اللہ عنہ نے جب یہ حدیث بیان کی کہ: ”جس شخص نے صرف اللہ کی خوشنودی کے لیے ”لا الہ الا اللہ“ کہا تو اللہ تعالیٰ نے اس پر آگ حرام کر دی، تو حضرت ابو ایوب انصاری رضی اللہ عنہ نے سن کر فرمایا: اللہ کی قسم میرا خیال ہے کہ جو تم نے کہا رسول اللہ ﷺ نے کبھی نہ فرمایا ہوگا“ (۱۱۰)۔

علامہ تقی امینی لکھتے ہیں: ”اس حدیث کے ظاہری الفاظ سے چونکہ عمل کی اہمیت گھٹی ہے جو درایت کے خلاف ہے۔ اس بناء پر ابتدائی مرحلہ میں حضرت ابو ایوب انصاری رضی اللہ عنہ کو اس کو قبول کرنے میں تامل ہوا لیکن حدیث کا محمل متعین ہونے کے بعد تامل کی گنجائش نہیں رہتی، وہ یہ کہ لا الہ الا اللہ کہنے کا مقصد یہ ہے کہ اس کے تقاضے پر عمل بھی کیا ہو جو خالص رضائے الہی کے لیے کہنے کا لازمی نتیجہ ہے“ (۱۱۱)۔

۲۔ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے جب حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما کے سامنے فرمایا کہ: ”آگ پر پکی ہوئی چیز کھانے سے وضو ٹوٹ جاتا ہے“ تو ابن عباس رضی اللہ عنہما نے فرمایا کہ ”اگر یہ صحیح ہو تو اس پانی کے پینے سے بھی وضو ٹوٹ جائے گا جو آگ پر گرم کیا گیا ہو“ (۱۱۲)۔

علامہ شبلی نعمانی نے ابن عباس رضی اللہ عنہما کی جانب سے اس حدیث کو تسلیم نہ کرنے کی وجہ یہ بیان کی ہے کہ: ”حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہما حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کو ضعیف الرواۃ نہیں سمجھتے تھے۔ لیکن چونکہ ان کے نزدیک یہ روایت درایت کے خلاف تھی۔ اس لیے انہوں نے (اس کو) تسلیم نہیں کیا اور یہ خیال کیا کہ (حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کو) سمجھنے میں غلطی ہوگئی ہوگی“ (۱۱۳)۔



یہ دو مثالیں اور جوان کے علاوہ اس قبیل سے متعلق ہیں (۱۱۴) واضح طور پر دلالت کرتی ہیں کہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے ابتدائی دور ہی سے متون احادیث کو تحقیق و تنقید میں درایت (داخلی نقد) کے اصولوں کا عمل استعمال کیا گیا۔ گویا درایت (داخلی نقد) کے اصولوں کا استعمال روایت (خارجی نقد) کے اصولوں سے بہت پہلے ہوا ہے، چنانچہ مولانا تقی امینی لکھتے ہیں:

”علوم حدیث میں سب سے پہلے داخلی نقد کا وجود ہوا، جیسا کہ دور

صحابہ رضی اللہ عنہم کی بعض مثالیں گزر چکی ہیں، خارجی نقد کا وجود بہت بعد

میں ہوا.....“ (۱۱۵)۔

صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے اس اہتمام و التزام سے بعد میں آنے والے محدثین و فقہاء حضرات کے لیے راہیں ہموار ہو گئیں۔

یہاں ہم اختصار کے پیش نظر اس بحث میں نہیں پڑنا چاہتے کہ اصول درایت کا استعمال محدثین نے زیادہ کیا یا فقہاء نے؟ لیکن اتنا بتانا ضروری ہے کہ جب اور جہاں کہیں بھی احادیث وضع کر کے حضور اکرم ﷺ کی جانب منسوب کی گئیں تو ان حضرات نے خوب تعاقب کیا اور اصول درایت کی روشنی میں اصلی و جعلی احادیث میں حد فاصل قائم کرنے میں کوئی کسر باقی نہ چھوڑی۔

محدثین اور فقہاء حضرات کے اس بے مثل اہتمام کا منہ بولتا ثبوت وہ ضخیم و قیم کتب ہیں جو اس وقت اسلامی امت کے پاس احادیث کی انواع پر الگ الگ مدونہ صورت میں موجود ہیں۔ چنانچہ مولانا سعید احمد اکبر آبادی اپنی اہتمام کے متعلق لکھتے ہیں کہ:

”متن حدیث کی صحت معلوم کرنے کی غرض سے محدثین نے درایت کے

اصول متعین کیے۔ لفظ، معنی، عبارت اور طرز بیان ہر لحاظ سے اس کو تنقید کی

کسوٹی پر پرکھا۔ صحیح، ضعیف اور موضوع کے الگ الگ خصائص بیان کیے، ان



کے اوصاف متعین کیے اور تمام ذخیرہ ہائے حدیث کو کھنگال کر ہر حدیث پر حکم لگایا اور ایک نوع کو دوسرے سے الگ کر دیا“ (۱۱۶)۔

اس کے بعد لکھتے ہیں:

”امام بخاری، امام مسلم، ابوداؤد، نسائی، ترمذی اور ابن ماجہ رحمہم اللہ نے جس طرح ڈھونڈ ڈھونڈ کر صحیح احادیث جمع کیں اور ان کو مرتب کیا۔ اسی طرح بعض محدثین نے موضوع حدیثوں کو جمع کیا اور ان کو کتاب کی شکل میں ترتیب دیا تاکہ..... رات کو دیکھ کر لوگوں کو دن کی پہچان ہو جائے.....“ (۱۱۷)۔ ”چنانچہ امام بخاری، امام نسائی، امام صنعانی، امام مسلم، علامہ ابن جوزی رحمہم اللہ اجمعین نے کتاب الضعفاء یا موضوعات کے نام سے کتابیں لکھیں (۱۱۸)۔ ان کے علاوہ ملا علی قاری نے موضوعات اور علامہ محمد طاہر بن علی نے تذکرۃ الموضوعات لکھی ہے جس کے ذیل میں قانون الموضوعات والضعفاء بھی ہے“ (۱۱۹)۔

## درایت کے اصول

درایت کے اصولوں کو داخلی نقد حدیث کے اصول بھی کہتے ہیں۔ ذیل میں محدثین حضرات کے متعین کردہ درایت کے ان اصولوں کو بیان کیا جاتا ہے جن سے قبولیت احادیث کے بلند معیار کے ساتھ ساتھ ان کی اصلی صورت معلوم کرنے میں مدد ملتی ہے۔ اختصار کے پیش نظر اصولوں کے ساتھ وضاحت کے لیے مسئلہ ذکر نہیں کی جا رہی ہیں، اصول یہ ہیں:

- ۱۔ حدیث میں لفظی و معنوی رکاکت (سطحیت) نہ ہو۔
- ۲۔ حدیث میں خوبصورت چہروں کی تعریف، ان کی طرف دیکھنے اور ان سے حاجت طلب کرنے کا حکم یا آگ کا عذاب ان کو نہ ہونے کی خبر ہو۔
- ۳۔ حدیث میں مختلف پیشوں اور ان کے اختیار کرنے والوں کی برائی بیان کی گئی ہو۔



- ۴۔ حدیث میں خاندان یا قوم یا شہر کی برائی ہو۔
- ۵۔ حدیث میں ایسی بے ڈھنگی اور اوٹ پٹانگ باتیں پائی جاتی ہوں جو حضور اکرم ﷺ کی شان سے بعید ہوں۔
- ۶۔ حدیث میں لغویت، تمسخر اور کم عقلی و بے وقوفی کی بات پائی جائے جس سے ذمہ دار لوگ پرہیز کرتے ہیں۔
- ۷۔ حدیث میں حضور اکرم ﷺ کی پیدائش کے واقعہ کی تشریح ایسے اسلوب سے ہو کہ نبوت پر حرف آئے اور معیار نبوت برقرار نہ رہے۔
- ۸۔ حدیث میں کلام، انبیاء علیہم السلام کے کلام کے مشابہ نہ ہو چہ جائیکہ رسول ﷺ کا کلام جس کو مختلف وجوہ سے فوقیت حاصل ہو۔
- ۹۔ حدیث میں ایسا کھلا بطلان ہو جو خود دلالت کرتا ہو کہ یہ اللہ کے رسول ﷺ کا کلام نہیں ہو سکتا۔
- ۱۰۔ حدیث محسوس، عام مشاہدہ اور عادت کے خلاف ہو۔
- ۱۱۔ حدیث عقل عام کے خلاف ہو یعنی فرد واحد یا کسی طبقہ کی عقل کے خلاف نہیں، بلکہ عام طور پر لوگ اس کو قبول کرنے کے لیے تیار نہ ہوں۔
- ۱۲۔ حدیث شہوت و فساد کی رغبت دلاتی ہو۔
- ۱۳۔ حدیث حکمت و اخلاق کے عام اصول کے خلاف ہو۔
- ۱۴۔ حدیث قواعد طب (جن پر اتفاق کیا گیا ہو) کے خلاف ہو۔
- ۱۵۔ حدیث تاریخی حقائق کے خلاف ہو۔
- ۱۶۔ حدیث کے خلاف ایسے صحیح شواہد موجود ہوں جن سے اس کا باطل ہونا ظاہر ہوتا ہو۔
- ۱۷۔ حدیث اللہ تعالیٰ کی تنزیہ و کمال کے خلاف ہو۔



- ۱۸۔ حدیث صداقت قرآن کے خلاف ہو۔
- ۱۹۔ حدیث سنت صریحہ کو واضح طور پر توڑنے والی ہو۔
- ۲۰۔ حدیث ان تمام قواعد کے خلاف ہو جو قرآن و سنت سے مستنبط کیے گئے ہوں۔
- ۲۱۔ حدیث میں آئینہ واقعات کی ایسی پیشن گوئی ہو جو ماہ اور سال (سن) کے تعین کے ساتھ ہو۔
- ۲۲۔ حدیث میں چھوٹے کام پر بھاری ثواب کی بشارت ہو۔
- ۲۳۔ حدیث میں چھوٹی بات پر سخت وعید کا مبالغہ ہو۔
- ۲۴۔ حدیث روایت کرنے میں کسی مفاد، گروہی تعصب، اور دین و مسلک کے اختلاف کو دخل ہو۔
- ان اصولوں سے اندازہ ہوتا ہے کہ اہل علم نے حدیثوں کے چانچنے کے لئے کس قدر بلند معیار قائم کیا (۱۲۰)۔

### مغربی فکر تحقیق

مسلمانوں کے اصول تحقیق اوپر بیان ہو چکے ہیں، قریب قریب یہی اصول اب مغرب کی کتابوں میں بھی بیان ہونے لگے ہیں

Carter V. Good The Methodology of Educational Research

کی مشہور کتاب میں جو اصول بیان کیے گئے ہیں، ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان نے ان کا خلاصہ یوں بیان کیا ہے:

”کسی واقعے کو پرکھنے کے لیے خارجی اور داخلی شہادتوں کی ضرورت ہوا کرتی ہے۔“

مواد کہاں سے حاصل ہوا؟ راوی کون تھا؟ اس کے ذاتی حالات یعنی مزاج، مذاق، کردار و گفتار کی نوعیت کیا تھی؟ اس کا تعلق ان واقعات سے کیا تھا؟ واقعہ نگاری کی نوعیت کیا ہے؟ پھر اس خاص



واقعے کے کتنے عرصے کے بعد راوی نے اسے نقل کیا؟ وہ روایت محض حافظے کی بنیاد پر بیان کی گئی ہے یا کسی اور راوی نے بھی اس کی تصدیق کی ہے؟ اصل واقعہ کتنا ہے اور تحریف یا اضافہ کسی حد تک ہے؟“۔

یہ اصول Carter V. Good نے فراہم کیے ہوں یا Dr. Hollis نے جمع کر لیے ہوں لیکن یہ حقیقت ہے کہ وہ سب کے سب اور قطعی طور پر مسلمانوں کے اصول حدیث سے ماخوذ ہیں اور ایسے ہیں کہ ان پر خود مغربی مستشرقین کما حقہ عمل نہیں کر سکتے۔ چنانچہ یہ اصول ”فکری تحقیق“ یا ”نظریاتی تحقیق“ کے ذیل میں تو آ سکتے ہیں لیکن ”عملی تحقیق“ کے دائرہ عمل سے باہر ہیں اور یہ محض اس لیے ہے کہ ان کے یہاں بلکہ اب تو کسی کے یہاں بھی وہ احتیاط نہیں برتی جاتی جو مسلمانوں کے قرون اولیٰ میں تھی۔ موجودہ دور کا محقق صرف اس بات سے خوش ہو جاتا ہے کہ اس نے اپنے موضوع سے متعلق کوئی معاصر شہادت ڈھونڈ نکالی۔ اب اسے مزید تحقیق و تنقیح سے سروکار نہیں اور اس کے لیے اس کے پاس کوئی گنجائش بھی تو نہیں۔ وہ کہاں سے اور کس طرح معلوم کر سکتا ہے کہ معاصر راوی، ثقہ ہے یا غیر ثقہ؟ نکتہ رس ہے یا سطحی الذہن؟ حافظے میں پختہ ہے یا نسیان کا شکار؟ بے جا عقیدت رکھتا ہے یا بغض پرور ہے؟ ملازمت یا خدمت گزاری کی وجہ سے خوشامدی اور ذہنی پستی میں گرفتار ہے یا حق گو اور بے خوف ہے؟ یہ اور اسی قسم کے دوسرے سوالات اگر اٹھائے بھی جائیں تو ان کا حل کہاں اور کیونکر مل سکے گا؟ بالآخر اس بات پر اکتفا کرنا پڑتا ہے کہ جس شخصیت پر کام کیا جائے، اس کے ماحول اور معاشرے کا جائزہ لے لیا جائے اور اس کی ”باقیات“ کا بغور مطالعہ کر لیا جائے (۱۲۱)۔

## نتائج

اصول روایت و درایت کا جائزہ لینے کے بعد جو نتائج سامنے آتے ہیں ان میں سے

چند ایک یہ ہیں:



- ۱- حضور ﷺ کی احادیث مبارکہ کا تمام تر ذخیرہ (ابتداء سے لے کر تکمیل تدوین تک) تحقیق و تدقیق کے ساتھ نہایت ہی موثق و متین انداز سے منتقل ہوا اور اس انتقال میں خوب احتیاط سے کام لیا جاتا رہا۔
- ۲- مسلمانوں نے اصول روایت و درایت کو حفاظتی انتظامات کے طور پر ایجاد کیا تاکہ احادیث نبویہ کی صحت و حجیت میں شکوک و شبہات کی راہیں بند ہو جائیں۔
- ۳- تحقیق کے بغیر باتوں کو بیان نہیں کرنا چاہیے اور باتیں بیان کرنے والوں کے متعلق بھی تحقیق کر لینی چاہیے۔
- ۴- فقہاء نے احادیث کے تنقیدی مطالعہ سے استفادہ کر کے اپنے اپنے فقہی مذاہب کی بنیاد رکھی۔
- ۵- راوی کتنا ہی ثقہ کیوں نہ ہو، اگر اس کی روایت خلاف قیاس ہو، تو ثقاہت اس کو صحیح نہیں بنا سکتی۔
- ۶- اسلام کی ترقی کے ساتھ ساتھ روایت و درایت کے اصولوں میں بھی ترقی ہوتی رہی، حتیٰ کہ اسناد، جرح و تعدیل، احوال رواۃ، ہر ایک کے لیے الگ الگ مستقل فن مرتب ہوئے۔
- ۷- حدیث کی جانچ پرکھ کے نتیجے میں صحاح ستہ، جو کہ اسلام کا نہایت ہی قیمتی اثاثہ ہے، مرتب ہوئیں۔
- ۸- حدیث کی تحقیق و تنقید کے لیے ہر کس و ناکس مجاز نہیں ہو سکتا۔ اس عمل کے وہی لوگ حقدار ہیں جو مکمل اہلیت رکھتے ہوں۔
- ۹- محدثین نے احادیث کی صحت و عدم صحت دریافت کرنے میں تحقیق کے دونوں یعنی روایتی و درایتی اصولوں کا مساویانہ طور پر استعمال کیا۔



۱۰۔ محققین نے صرف ثقہ راویوں کے حالات دنیا کے سامنے بیان نہیں کیے بلکہ

ضعفاء، وصناعین اور کذابین کو بھی سامنے لائے۔

۱۱۔ روایت و درایت کے اصولوں کو جن کتب میں بیان کیا جاتا ہے انہیں ”کتب اصول

حدیث“ کہا جاتا ہے۔

۱۲۔ جہاں تک مستشرقین اور منکرین حدیث کا تعلق ہے تو ان کے شبہات و اعتراضات کا

جائزہ لینے کے بعد ظاہر ہوتا ہے کہ انہوں نے نقل حدیث کے عمل میں مسلمانوں کے

وضع کردہ روایت و درایت کے محیر العقول اصولوں کو ملحوظ خاطر نہیں رکھا، جس کی وجہ

سے نا انصافیوں اور بے اعتدالیوں کا شکار ہوئے۔ خود بھی گمراہ ہوئے اور دوسروں کی

گمراہی کا سبب بھی بنے۔ اگر وہ انہیں ملحوظ خاطر رکھتے تو احادیث نبویہ کے متعلق

شکوہ و شبہات میں معاندانہ رویوں سے کام نہ لیتے۔



## حوالہ جات و حواشی

- ۱- تدوین حدیث، مناظر احسن گیلانی، مقدمہ از سید سلیمان ندوی، (کراچی، مکتبہ اسحاقیہ، سن۔ ن۔ ص ۷۔)
- ۲- ایضاً۔
- ۳- ایضاً۔
- ۴- ایضاً۔
- ۵- الرسالة المستطرفة، محمد جعفر الکتانی، (کراچی، اصح المطابع، سن۔ ن۔ مقدمہ۔)
- ۶- ایضاً۔
- ۷- امام اعظم اور علم الحدیث، محمد علی صدیقی کاندھلوی، ص ۵۳۶، (سیالکوٹ، انجمن دارالعلوم الشہابیہ، ۱۹۸۱)۔
- ۸- فن تحقیق، ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان، در "اردو میں اصول تحقیق" مرتبہ: ڈاکٹر ایم۔ سلطانہ بخش، ص ۳۹، ج ۱۔
- ۹- خطبات مدراس، علامہ سید سلیمان ندوی، (ملتان، فرینڈز پبلی کیشنز، سن۔ ن۔ ص ۶۵۔)
- ۱۰- ایضاً۔
- ۱۱- دیکھئے، دائرہ معارف اسلامیہ پنجاب یونیورسٹی، لاہور، (۱۹۷۱، ط اول) ج ۷، ص ۹۷۵۔
- ۱۲- سورة الحجرات ۶:۴۹۔
- ۱۳- امام مسلم بن الحجاج القشیری (متوفی ۵۲۶ھ)، صحیح مسلم (الجامع الصحیح) مقدمہ، شارح: امام یحییٰ بن شرف النودی، (مکتبۃ الغزالی، دمشق، مؤسسة مناهل العرفان، بیروت، سن۔ ن۔ ج ۱، ص ۷۳۔)
- ۱۴- مثلاً دیکھئے: الرحلة فی طلب العلم، علامہ خطیب بغدادی، تحقیق: ڈاکٹر نور الدین عشر، (دارالکتب العلمیہ، بیروت، ۱۹۷۵، ط اولی)، جامع بیان العلم وفضله، علامہ ابن عبدالبر الاندلسی، مترجم: عبدالرزاق بلخ آبادی، (ادارہ اسلامیات، لاہور، ۱۹۷۷، ط اول)



باب طلب علم میں سفر۔

- ۱۵۔ تذکرۃ الحفاظ امام ابو عبد اللہ شمس الدین الذہبی، (حیدرآباد، دکن ۱۹۵۵) ج ۱ ص ۲۔
- ۱۶۔ الموطا، امام مالک (متوفی ۱۷۹ھ)، کتاب الفرائض، باب میراث الجدة۔
- ۱۷۔ توابع: تابع کی جمع ہے۔ تابع ہی کا دوسرا نام ”متابع“ بھی ہے اور یہ تابع کا اسم فاعل ہے بمعنی موافقت۔ اصطلاح میں متابع کے معنی ہیں کسی راوی کا دوسرے کے ساتھ کسی حدیث کی روایت میں شریک ہونا، خواہ یہ مشارکت لفظی اور معنوی ہو، یا صرف لفظی ہو۔ شواہد: شاہد کی جمع ہے شاہد شہادت کا اسم فاعل ہے۔ شاہد نام اس لیے دیا گیا ہے کہ یہ اس بات کی شہادت دیتا ہے کہ اس حدیث فرد کی اصلیت ہے۔ اصطلاح اصول حدیث میں شاہد اس حدیث کو کہتے ہیں جس میں اسے راویوں کی حدیث فرد کے راویوں کے ساتھ لفظی اور معنوی یا صرف معنوی طور پر مشارکت ہو جائے لیکن صحابی میں اختلاف ہو یعنی ان راویوں نے الگ الگ صحابیوں سے روایتیں کی ہوں۔ (تیسیر مصطلح الحدیث، ڈاکٹر محمود الطحان، دارالکتب العربیہ، پشاور، سن ۱۴۰۰)۔
- ۱۸۔ حفاظت و حجت حدیث مولانا محمد محترم فہیم عثمانی، (دارالکتب لاہور، ۱۹۸۹ء، ط دوم) ص ۲۳۸، ۲۳۹۔
- ۱۹۔ تدوین حدیث، مولانا مناظر احسن گیلانی، مجلہ بالا، ص ۳۶۔
- ۲۰۔ تذکرۃ الحفاظ، الذہبی، مجلہ بالا، ج ۱، ص ۶۔
- ۲۱۔ الموطا، امام مالک، کتاب الجامع، باب الاستئذان۔
- ۲۲۔ تذکرۃ الحفاظ، الذہبی، مجلہ بالا، ج ۱، ص ۱۰۔
- ۲۳۔ ایضاً ج ۱، ص ۷۔
- ۲۴۔ ایضاً، ج ۱، تذکرۃ علی رضی اللہ عنہ۔
- ۲۵۔ اس نوعیت کی مثالوں کے لیے دیکھئے: سنن ابن ماجہ، امام محمد بن یزید قزوینی، تحقیق محمد فواد عبدالباقی (عیسیٰ البابی الحلبی، مصر ۱۹۵۲ء) ج ۱، ص ۸، المسند، امام احمد ابن حنبل شیبانی، تحقیق: احمد شاکر (دارالمعارف، قاہرہ) ج ۶، ص ۳۶،



- الحديث والمحدثون، محمد ابوزهو (مصر، ۱۹۵۸، ط اولی) ص ۷۰-۷۲۔
- ۲۶۔ تذكرة الحفاظ، الذهبی، ج ۱، ص ۱۵۔
- ۲۷۔ فہم قرآن، سعید احمد اکبر آبادی، (ادارہ اسلامیات، لاہور ۱۹۸۲، ط اول) ص ۱۱۸، ۱۱۹۔
- ۲۸۔ الجامع الصحیح، امام محمد بن اسماعیل البخاری (متوفی ۲۵۶ھ)، (دار الفکر بیروت، سن .ن) کتاب العلم، ج ۱، ص ۳۵، صحیح مسلم، امام مسلم، مجولہ بالا، باب تغلیظ الکذب علی رسول اللہ ﷺ۔
- ۲۹۔ منہاج البخاری، محمد معراج الاسلام، (عرفان القرآن، اعوان ٹاؤن لاہور، سن .ن) ج ۱، ص ۱۵۵۔
- ۳۰۔ ایضاً۔
- ۳۱۔ حدیث کا درایتی معیار، مولانا تقی امینی، (قدیمی کتب خانہ، کراچی ۱۹۸۶) ص ۱۷۸۔
- ۳۲۔ امام مسلم، صحیح مسلم، مجولہ بالا، ج ۱ (مقدمہ) باب بیان ان الاسناد من الدین۔
- ۳۳۔ نعمة المنعم، مولانا نعمت اللہ، اردو شرح مقدمہ مسلم (قدیمی کتب خانہ، کراچی، سن .ن) ص ۸۸۔
- ۳۴۔ دیکھئے: معراج الاسلام، منہاج البخاری، مجولہ بالا ج ۱، ص ۱۵۵، ۱۵۶، تھوڑی تلخیص و تبدیلی کے ساتھ۔
- ۳۵۔ امام مسلم، صحیح مسلم (مقدمہ)، باب الاسناد من الدین۔
- ۳۶۔ فہم قرآن، اکبر آبادی، مجولہ بالا، ص ۱۳۵۔
- ۳۷۔ سیرت النبی ﷺ، مولانا شبلی نعمانی، (مکتبہ تعمیر انسانیت لاہور، سن .ن، ط اول) ج ۱، ص ۶۳، ۶۴۔
- ۳۸۔ ایضاً، ج ۱، ص ۶۴۔
- ۳۹۔ الثقافة الاسلامیة، علامہ راغب الطباخ، کارڈو ترجمہ، نام "تاریخ افکار و علوم اسلامی" مترجم: افتخار احمد بلخی (اسلامک پبلی کیشنز، لاہور ۱۹۸۷، ط ۴) ص ۳۳۸ (حاشیہ)۔
- ۴۰۔ سیرت النبی، شبلی نعمانی، مجولہ بالا ج ۱، ص ۶۳ (حاشیہ)۔
- ۴۱۔ کتب کے لیے دیکھئے: الدكتور، علم رجال الحدیث، تقی الدین ندوی، (مکتبہ الفردوس، لکھنؤ، ۱۹۸۵) ص ۱۳۸-۱۵۵، اکبر آبادی، فہم قرآن، مجولہ بالا ص ۱۵۲، ۱۵۳۔
- ۴۲۔ فہم قرآن، اکبر آبادی، ص ۱۵۲، ۱۵۳۔
- ۴۳۔ السنة و مکانتها فی التشريع الاسلامی، ذاکر مصطفی السباعی، کارڈو ترجمہ، نام "حدیث رسول کا



- تشریحی مقام“ مترجم: غلام احمد حریری (ملک سنز پبلیشر فیصل آباد، سن۔ن) ص ۱۸۱، ۱۸۲۔
- ۳۳۔ قواعد التحديث في فنون مصطلح الحديث، محمد جمال الدين القاسمي، (دارالكتب العلمية، بيروت ۱۹۷۹، ط: اولی) ص ۱۲۷۔
- ۳۵۔ تيسير مصطلح الحديث، ڈاکٹر محمود الطحان، (دارالكتب العربية پشاور، سن۔ن) ص ۱۸۰۔
- ۳۶۔ تحقیق کے روایتی اسلوب، ڈاکٹر نجم الاسلام، در تحقیق اور اصول وضع مصطلحات، مرتب: اعجاز راہی، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۸۶، ط اول) ص ۱۵۱۔
- ۳۷۔ ایضاً۔
- ۳۸۔ نعمة المنعم، نعمت اللہ، محولہ بالا، ص ۸۹۔
- ۳۹۔ دراسات في الحديث النبوي و تاريخ تدوينه، ڈاکٹر مصطفیٰ اعظمی، (المکتب الاسلامی، ۱۹۹۲)، ج ۱، ص ۳۹۱، بحوالہ: MISHNA, p.446۔
- ۵۰۔ ایضاً..... نیز تفصیل کے لیے دیکھئے: ناصر الدین الاسد، مصادر الشعر الجاهلی (دار الجلیل، بیروت ۱۹۸۸ ط ۷) ص ۲۶۷ تا ۲۵۵۔
- ۵۱۔ علامہ عبدالرحمن بن محمد بن خلدون، مقدمہ (مؤسسة الأعلمی، بیروت، سن۔ن) ص ۴۴۴، ۴۴۵۔
- ۵۲۔ مولانا تقی الدین ندوی، محدثین عظام اور ان کے علمی کارنامے (مجلس نشریات، کراچی سن۔ن) ص ۷۸، بحوالہ خطیب بغدادی، تاریخ بغداد ج ۱، ص ۴۱۹۔
- ۵۳۔ ایضاً، بحوالہ موفق، مناقب الامام ابی حنیفہ ج ۲ ص ۱۹۷۔
- ۵۴۔ ایضاً، بحوالہ، اصول السر خسی ج ۱ ص ۲۶۴۔
- ۵۵۔ مقدمہ ابن خلدون محولہ بالا ص ۴۴۵۔
- ۵۶۔ محدثین عظام، تقی الدین ندوی، محولہ بالا ص ۷۹، بحوالہ الجواهر المصیئہ، امام ابوحنیفہ ص ۲۔
- ۵۷۔ ایضاً، ص ۷۹، بحوالہ المیزان الکبری، ج ۱ ص ۶۲۔



- ۵۸۔ ایضاً، ص ۷۹، ۸۰، بحوالہ امام ذہبی مناقب ابی حنیفہ، ص ۲۰۔
- ۵۹۔ ایضاً، ص ۸۰۔
- ۵۰۔ ایضاً، ص ۸۰، ۸۱۔
- ۶۱۔ ایضاً۔
- ۶۲۔ ایضاً۔
- ۶۳۔ ایضاً، بحوالہ علامہ سخاوی، فتح المغیث ص ۳۷۹۔
- ۶۴۔ ترجمان السنۃ، مولانا بدر عالم، (سعید کمپنی، کراچی، سن۔ ن۔ ج ۱ ص ۲۴۱۔
- ۶۵۔ ایضاً، ص ۲۳۲، بحوالہ، تہذیب الاسماء للنووی ص ۲۔
- ۶۶۔ حجة الله البالغة، شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، مترجم: مولانا عبدالحق حقانی (حامد اینڈ کمپنی، لاہور، سن۔ ن۔ ص ۲۵۰۔
- ۶۷۔ محدثین عظام ندوی، محولہ بالا، ص ۱۰۳۔
- ۶۸۔ آثار الحدیث ڈاکٹر علامہ خالد محمود، (دارالمعارف، لاہور ۱۹۸۸، ط اول) ج ۲ ص ۲۸۹، ۲۹۰۔
- ۶۹۔ تدوین حدیث اور اصول روایت، ڈاکٹر علی اصغر چشتی، سہ ماہی فکر و نظر، ادارہ تحقیقات اسلامی، بین الاقوامی اسلامی یونیورسٹی اسلام آباد، ج ۲۸، ش ۱ ستمبر ۱۹۹۰، ص ۲۹۔
- ۷۰۔ ترجمان السنۃ، بدر عالم، محولہ بالا، ج ۱ ص ۲۳۵۔
- ۷۱۔ محدثین عظام تقی الدین ندوی، محولہ بالا، ص ۱۲۱۔
- ۷۲۔ ترجمان السنۃ، بدر عالم، محولہ بالا، ج ۱، ص ۲۳۸، بتلخیص۔
- ۷۳۔ الثقافة الاسلامیة، راغب الطباخ، مترجم: افتخار احمد بلخی، محولہ بالا، ج ۱، ص ۴۱۶، (حاشیہ)، بحوالہ فیض الباری ج ۱ ص ۲۳، ۲۵۔
- ۷۴۔ ان شروط کی تفصیل کے لیے دیکھئے: تخیل حدیث کے اسالیب و مناہج، عبدالحمید خان عباسی، سہ ماہی فکر و نظر، ادارہ تحقیقات اسلامی، بین الاقوامی اسلامی یونیورسٹی اسلام آباد، ج ۳۳، ش ۳، ص ۱۶۵۹۔



- ۷۵۔ الجامع الصحیح، امام مسلم، باب الایلاء۔
- ۷۶۔ سیرت النبی ﷺ، شبلی نعمانی، محولہ بالا، ج ۱، ص ۸۶۔
- ۷۷۔ دیکھئے: سابق حوالہ، ج ۱، ص ۸۰، ۸۱۔
- ۷۸۔ فتح المغیث، شمس الدین محمد بن عبدالرحمن السنخاوی، (ناشر احمد نشات محمود شکر، الازھر الشریف) ص ۱۲۰۔
- ۷۹۔ ایضاً، ۱۲۱۔
- ۸۰۔ عبادلہ اربعہ سے مراد عبداللہ بن عباس، عبداللہ بن عمر، عبداللہ ابن زبیر اور عبداللہ بن عمرو بن العاص رضی اللہ عنہم ہیں (عبداللہ بن مسعود کی وفات پہلے ہو چکی تھی)۔ یہ چاروں اگر کسی امر پر متفق ہوں تو کہا جاتا ہے کہ یہ عبادلہ کا قول ہے (علم رجال الحدیث، الدکتور تقی الدین ندوی مظاہری، ص ۵۸)۔
- ۸۱۔ سیرت النبی ﷺ، شبلی نعمانی، محولہ بالا، ج ۱، ص ۸۳، ۸۵، بحوالہ نور الانوار ص ۱۷۶۔
- ۸۲۔ الثقافة الاسلامیة، راغب الطباخ، مترجم: افتخار احمد بلخی (تاریخ افکار و علوم اسلامی) محولہ بالا، ج ۱، ص ۲۰۷۔
- ۸۳۔ دیکھئے، حوالہ سابق، ج ۱، ص ۲۰۹ (حاشیہ) بتغییر بسیر۔
- ۸۴۔ فہم قرآن، اکبر آبادی، محولہ بالا، ص ۱۵۸، بحوالہ توجیہ النظر ص ۳۰۔
- ۸۵۔ ایضاً ص ۱۵۹۔
- ۸۶۔ علوم الحدیث و مصطلحہ، صبحی صالح، مترجم: غلام احمد حریری (تاجران کتب، فیصل آباد ۱۹۸۱، ۳ ط) ص ۲۵۳۔
- ۸۷۔ مقدمہ شرح صحیح مسلم، یحییٰ بن شرف النووی، محولہ بالا ج ۱ ص ۳۶۔
- ۸۸۔ المفردات فی غریب القرآن، تحقیق و ضبط: علامہ راغب اصفہانی، حسن بن محمد بن المفصل (۵۰۲ھ)، محمد سید کیلانی (اصح المطابع) کراچی، سن۔ ن) کتاب الدال، ص ۱۶۸۔
- ۸۹۔ حدیث کا دارتی معیار، تقی امینی، محولہ بالا، ص ۱۵۔



۹۰۔ تدریب الراوی فی شرح تقریب النوای، علامہ جلال الدین سیوطی، (میر محمد کتب خانہ، کراچی ۱۹۷۲ء، ط ۸) ج ۱، ص ۳۰، بحوالہ، ارشاد المقاصد الی اسنی المطالب فی موضوعات العلوم، ابن الاکفانی (متوفی ۹۳ھ)۔

۹۱۔ حدیث کا درایتی معیار، تقی امینی، مجولہ بالا، ص ۱۶۔

۹۲۔ ایضاً ص ۲۶۶۔

۹۳۔ ان اصولوں کی تفصیل کے لیے دیکھئے: سابق حوالہ ص ۲۶۲ تا ۲۶۵۔

۹۴۔ علوم الحدیث و مصطلحہ، سحی صالح، مجولہ بالا، ص ۲۵۶۔

۹۵۔ ان اصولوں کے تعارف کے لیے دیکھئے: حدیث کا درایتی معیار، تقی امینی، مجولہ بالا، ص ۲۶۳ تا ۲۵۹۔

۹۶۔ درایتی معیار، تقی امینی، مجولہ بالا، ص ۱۷، بحوالہ طاش کبریٰ زادہ، مفتاح السعادة و مصباح السیادة،

درایة الحدیث، حاجی خلیفہ، کشف الظنون، ج ۱، علم الحدیث، نواب صدیق حسن خان، ابجد العلوم، ج ۲، علم الحدیث الشریف۔

۹۷۔ علم الحدیث، عبداللہ العمادی، (مکتبہ نشاۃ ثانیہ، معظم جاہی مارکیٹ حیدرآباد (اے پی) سن - ن) ص ۳۵۔

۹۸۔ سورۃ النور (۲۴)، ۱۶۔

۹۹۔ فہم قرآن، اکبر آبادی، مجولہ بالا، ص ۱۷۱۔

۱۰۰۔ سیرت النبی ﷺ، شبلی نعمانی، مجولہ بالا، ج ۱، ص ۶۷۔

۱۰۱۔ ایضاً۔

۱۰۲۔ سورۃ یونس (۱۰)، ۱۶۔

۱۰۳۔ حدیث کا درایتی معیار، تقی امینی، مجولہ بالا، ص ۱۸۰۔

۱۰۴۔ سورۃ النساء (۴)، ۸۳۔

۱۰۵۔ حدیث کا درایتی معیار، تقی امینی، مجولہ بالا، ص ۲۷۶۔



- ۱۰۶۔ سورۃ الحجرات (۳۹)، ۶۰۔
- ۱۰۷۔ اردو دائرہ معارف اسلامیہ، پنجاب یونیورسٹی، ج ۷، ص ۹۷۱، ۹۷۲، ط اول۔
- ۱۰۸۔ المسند، امام احمد بن حنبل شیبانی، (متوفی ۲۴۱ھ)، حدیث ابی اسید الساعدی۔
- ۱۰۹۔ حدیث کادرایتی معیار، تقی امینی، مجولہ بالا، ص ۱۸۲، بحوالہ تنزیہ الشریعۃ المرفوعۃ عن الاخبار الشنیعۃ الموضوعۃ، ابوالحسن علی بن محمد کنانی ابن العزاق، فصل فی حقیقۃ الموضوع۔
- ۱۱۰۔ محمد بن اسماعیل البخاری، (متوفی ۲۵۶ھ) الجامع الصحیح، کتاب الصلاة، ابواب التہجد، باب صلاة النوافل جماعة۔
- ۱۱۱۔ حدیث کادرایتی معیار، تقی امینی، مجولہ بالا، ص ۱۸۳۔
- ۱۱۲۔ باب الوضوء مما غیرت النار، رواہ الامام الترمذی فی جامعہ، .
- ۱۱۳۔ سیرت النبی ﷺ، شبلی نعمانی، مجولہ بالا، ج ۱، ص ۶۷۔
- ۱۱۴۔ مثلاً دیکھئے: مشکاة، باب البكاء علی الامیت، المسند، امام ابن جنبل، ص ۳۱، ۳۸۔
- ۱۱۵۔ حدیث کادرایتی معیار، تقی امینی، مجولہ بالا، ص ۲۷۶، ۲۷۷۔
- ۱۱۶۔ فہم قرآن، اکبر آبادی، مجولہ بالا، ص ۱۷۹۔
- ۱۱۷۔ ایضاً ص ۱۷۹، ۱۸۰۔
- ۱۱۸۔ کشف الظنون، حاجی خلیفہ، ج ۲، ص ۱۸۳۔
- ۱۱۹۔ ایضاً، (حاشیہ)۔
- ۱۲۰۔ مزید تفصیل اور مثالوں کیلئے دیکھئے:
- ۱۔ حدیث کادرایتی معیار، تقی امینی، مجولہ بالا، ص ۱۹۱، ۲۵۹۔
- ۲۔ السنۃ ومکانتہا فی التشریح الاسلامی ڈاکٹر مصطفی السباعی، کارڈو ترجمہ بنام ”حدیث رسول کاتشریحی مقام، مجولہ بالا، ص ۱۵۸، ۱۶۹، ۳۳۷، وما بعدھا۔
- ۳۔ سیرت النبی، شبلی نعمانی، مجولہ بالا، ج ۱، ص ۱۷۶، ۱۷۷۔



- ۴۔ علوم الحدیث، صحیحی صالح، مترجم غلام احمد حریری، محولہ بالا، ص ۳۵۳ تا ۳۷۰
- ۵۔ فہم قرآن، اکبر آبادی، محولہ بالا، ص ۱۸۳ تا ۱۷۳
- ۶۔ علم الحدیث، عبداللہ العمادی، محولہ بالا، ص ۳۶ تا ۳۸
- ۷۔ حفاظت و حجیت حدیث، محمد محترم فہیم عثمانی، ص ۳۹۸، ۳۹۹، دارالکتب، لاہور ۱۹۸۹ء۔
- ۸۔ تحقیق کے اصول و ضوابط، کرنل (ر) ڈاکٹر عمر فاروق غازی، احادیث نبویہ کی دروشتی میں، ص ۶۳ تا ۶۷، فاران کیونٹی کیشنز، لاہور، ط اول: اگست ۱۹۹۸ء۔
- ۱۲۱۔ فن تحقیق، ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان، مشمولہ ”اردو میں اصول تحقیق“، محولہ بالا، ج ۱، ص ۳۵، ۳۶۔



باب ۲

تحقیق و تنقید کا مفہوم اور دونوں کا باہمی تعلق



## تحقیق و تنقید کا مفہوم اور دونوں کا باہمی تعلق

### تحقیق کا مفہوم

#### الف۔ لغوی مفہوم

تحقیق عربی زبان کا لفظ ہے، جو باب تفعیل سے مصدر ہے: حَقَّقَ، يُحَقِّقُ، تَحْقِيقًا، مُحَقِّقٌ (تحقیق کرنے والا)، مُحَقَّقٌ (تحقیق شدہ)۔ جب کہتے ہیں: ”حَقَّقَ فُلَانٌ“ تو اس کے معنی ہیں فلاں نے تحقیق کی یعنی ”اصلیت کو معلوم کیا، دریافت کیا، کھوج لگایا، تفتیش کی، حقیقت کو ثابت کیا، (۱)۔

#### ب۔ اصطلاحی مفہوم

اصطلاح میں تحقیق کے معنی ہیں کسی تعلیمی مسئلہ (موضوع) کے بارے میں ایسے اسلوب سے کھوج لگانا کہ اس کی اصلی شکل، خواہ معلوم ہو یا غیر معلوم، اس طرح نمایاں ہو جائے کہ کسی قسم کا ابہام نہ رہے۔ فن تحقیق کے ماہرین نے تحقیق کے اصطلاحی مفہوم کو اپنے ذوق و اسالیب میں بیان کیا ہے، جس سے اندازہ ہوتا ہے کہ ان کے ہاں تحقیق کس چیز کا نام ہے۔ ذیل میں اس سلسلہ کی چند ایک جامع تعریفیں ذکر کی جاتی ہیں:

۱۔ رسک (Rusk): تحقیق کیا ہے؟ ایک نقطہ، نظر، اور تفتیش کا انداز یا ذہن کا ایک طریق کار۔ یہ وہ سوالات اٹھاتی ہے جو ابھی تک اٹھائے نہ گئے ہوں، اور ایک خاص متعین طریق کار کے ساتھ ان کا جواب دینے کی کوشش کرتی ہے۔ یہ صرف نظریہ سازی نہیں



بلکہ ایک کوشش ہے حقائق کے استخراج کی، اور جب وہ یکجا کر لیے گئے ہوں تو مجتمع شکل میں ان کا سامنا کرنے کی۔

۲۔ اسمتھ (Smith): تحقیق شامل ہے محتاط اور ناقدانہ تلاش و تفتیش اور جانچ پرکھ کو، جو حقائق یا اصولوں کی تلاش میں کی جائے، نیز محنت اور تسلسل کے ساتھ کی ہوئی کھوج کو، جو سچائی کو پالینے کی تلاش میں کی جائے۔

۳۔ وینے (Whitney): تحقیق سوچ بچار کا ایک منظم اور شستہ طریق کار ہے جو مخصوص آلات یا طریق عمل سے کام لے کر کسی مسئلے کا ایسا مناسب حل نکالتی ہے جو معمولی ذریعوں سے حاصل نہ ہو پاتا۔ یہ کسی مسئلے سے آغاز کرتی ہے، حقائق جمع کرتی ہے، ناقدانہ طور پر ان کا تجزیہ کرتی ہے اور اصل شہادت کی بنیاد پر فیصلوں تک پہنچتی ہے۔ یہ شامل ہے اصل کام کو، بجائے اس کے کہ محض شخصی رائے کا بوجھ ڈالا جائے۔ یہ جاننے کی حقیقی خواہش سے پھوٹی ہے نہ کہ ثابت کر ڈالنے کی خواہش سے۔ تحقیق ایمانداری، جامعیت، اور ذہانت کے ساتھ کی جانے والی کھوج ہے جو حقائق کے لیے، اور کسی پیش نظر مسئلے کے حوالے سے، ان حقائق کے مفاہیم و معانی یا اثر انداز ہونے والے نتائج کے لیے کی جاتی ہے۔ کسی تحقیقی کام کے نتائج کو اس مطالعاتی میدان میں مستند، قابل توثیق اضافہ ہونا چاہیے۔

۴۔ گڈ اور اسکیتس (Good & Scates): تحقیق شامل ہے مسئلے کے تعین میں قابل لحاظ حد تک احتیاط کو، اور مسئلے کا حل تلاش کرنے کے لیے بہترین طریقوں کے طے کرنے کو۔ اور اس میں ہمیشہ ندرت یا نئے پن کا ایک عنصر ہوتا ہے۔

۵۔ کرافورڈ (Crawford): تحقیق کی تعریف اس طرح کی جاسکتی ہے کہ یہ ایسے مسائل کے مطالعے کا ایک طریقہ ہے جن کے حلوں کا استخراج، جزوی طور پر یا کلی طور پر،



حقائق سے کیا جاتا ہو۔

- ۶۔ پال (Paul): تحقیق کیا ہے؟ غیر منکشف حقائق کی ایک منظم و مربوط تلاش ہے۔ ایک انداز کار جس کے ذریعے لوگ مسائل کی گتھیاں سلجھاتے ہیں اور کوشاں رہتے ہیں کہ انسانی جہل و ناواقفیت کی سرحدیں پیچھے دھکیل دیں (۲)۔
- ۷۔ ڈاکٹر تلک سنگھ لکھتے ہیں: ”تحقیق علم کا وہ شعبہ ہے جس میں منظم لائحہ عمل کے تحت سائنسی اسلوب میں نامعلوم و ناموجود حقائق کی کھوج اور معلوم و موجود حقائق کی نئی تشریح اس طرح کرتے ہیں کہ علم کے علاقے کی توسیع ہوتی ہے“ (۳)۔
- ۸۔ ڈاکٹر گیان چند متعدد تعریفات بیان کرنے کے بعد استنباطاً لکھتے ہیں: ”گویا ریسرچ (تحقیق) ایک حقیقت پنہاں یا حقیقت مبہم کو افشا کرنے کا باضابطہ عمل ہے۔ اس کے بعد لکھتے ہیں: اور اسی تعریف سے تحقیق کا مقصد بھی صاف ہو جاتا ہے۔ ”نامعلوم یا کم معلوم کو جاننا، یعنی جو حقائق ہماری نظروں کے سامنے نہیں ہیں انھیں کھوجنا، جو سامنے تو ہیں لیکن دھندلے ہیں، ان کی دھند دور کر کے انھیں آئینہ کر دینا“ (۴)۔
- ۹۔ ڈاکٹر نجم الاسلام کہتے ہیں: ”تحقیق ایک انداز فکر کے اثر سے پروان چڑھتی ہے جو ہمیں چیز کی حقیقت و حکمت جاننے کی طرف مائل کرتا ہے اور بیانات یا امور کی اصلیت کا کھوج لگانے پر آمادہ کرتا ہے۔ یہی علم کا منبع ہے۔ یہی اس کی توسیع یا اضافے کا وسیلہ ہے“ (۵)۔
- ۱۰۔ ڈاکٹر احسان اللہ کہتے ہیں: ”یہ (یعنی تحقیق) سائنسی طریق کار کو اپناتے ہوئے تعلیمی مسائل کے حل تلاش کرنے کا ذریعہ ہے اور خاص طور پر یہ کہ تعلیمی تحقیق ایک باضابطہ، عقلی اور تجربی طریقہ تفتیش ہے جس کے ذریعہ تعلیم کے مسائل کو حل کرنے اور اس میں نئے علوم اور طریقوں کو شامل کرنے کی ارادۂ کوشش کی جاتی ہے تاکہ جستجو اور تجسس کا مقصد پورا ہو جائے“ (۶)۔



## تنقید کا مفہوم

## الف۔ لغوی مفہوم

تنقید عربی زبان کے لفظ ”نقد“ سے ماخذ ہے۔ اردو لغت میں ”تنقید“ کے معنی ہیں: ”جانچ، پرکھ اور تمیز۔ ایسی جانچ جو اچھے برے اور کھرے کھوٹے میں تمیز کرے“ (۷)۔

## ب۔ اصطلاحی مفہوم

اصطلاح میں تنقید کا مفہوم یہ ہے کہ کسی تعلیمی یا علمی مسئلہ (موضوع) کی اصلی شکل و صورت (مواد) جو پہلے محقق کی تحقیق کے ذریعہ سے سامنے آتی ہے اس میں یہی پہلا محقق یا کوئی دوسرا محقق ایسے انداز سے غور و فکر اور جانچ پرکھ کرے کہ اس (مواد) کے قوی و ضعیف پہلو، یا اس کی خوبیاں و خامیاں اس طرح نمایاں ہو جائیں کہ قاری یہ اقرار کرے بغیر نہ رہ سکے کہ واقعی موجود مواد فلٹر کر کے پیش کیا گیا ہے، اور یہ اس کی خوبیاں ہیں اور یہ خامیاں۔ ذیل میں چند اصطلاحی تعریفات نقل کی جاتی ہیں جن سے تنقید کا مفہوم مزید واضح ہو جائے گا:

- ۱۔ ڈاکٹر سید عبداللہ کہتے ہیں: ”کسی موجود مواد کی خوبی یا برائی، حسن و قبح اور جمال و بد صورتی کے متعلق چھان بین کرنا اور اس پر فیصلہ دینا نقاد کا کام ہے“ (۸)۔
- ۲۔ پروفیسر رشید امجد کہتے ہیں: ”تنقید سیدھے سادھے معنوں میں کسی ادب پارے کی خوبیوں اور کمزوریوں کا مطالعہ ہے۔ وسیع تر معنوں میں چند اصول قائم کرنا اور ان اصولوں کو تنقید میں استعمال کرنا ہے۔ گویا اس میں کچھ نہ کچھ فلسفہ بھی داخل ہو جاتا ہے کیونکہ اصول بندی فلسفیانہ عمل ہے“ (۹)۔
- ۳۔ پروفیسر ڈاکٹر نکلیندر: ”الوچنا (تنقید) کے لفظی معنی ہیں ہمہ گیر مشاہدہ۔ ادب میں تنقید کا مطلب ہے کسی ادبی تخلیق [پیدائش، طبع زادہ فن پارہ] کا ہمہ گیر جائزہ“ (۱۰)۔  
مختصر یہ کہ ”... تحقیق ایک محتاط، سرگرم جستجو اور مسلسل کاوش اظہار ہے، جس میں مروجہ



حقیقتوں کی تصدیق، نئی حقیقتوں کی تلاش اور سچائی کی کھوج مضمحل ہے، جس کے منطقی نتائج تمام علوم کے لیے مفید ثابت ہوتے ہیں۔ اس سے علم و فن کی نئی راہیں دریافت ہوتی ہیں، نئی حقیقتیں ابھرتی ہیں اور نئے انکشافات جنم لیتے ہیں۔ ان نئی دریافتوں، نئے حقائق اور نئے انکشافات کی روشنی میں مروجہ نتائج یا نظریات پر نظر ثانی کی جاتی ہے۔ بااثر ہر انسان ہر امر کا ثبوت چاہتا ہے، تحقیق یہ ثبوت مہیا کرتی ہے۔ اس کی ابتدا کسی مسئلے یا موضوع سے ہوتی ہے؛ پھر حقائق کی کھوج کا عمل شروع ہوتا ہے اور مواد جمع کیا جاتا ہے۔ مواد کو تنقیدی تجزیے کی کسوٹی پر پرکھا جاتا ہے اور شہادت کی بنیاد پر نتیجہ اخذ کیا جاتا ہے، کیونکہ حقائق کی ضروری تصدیق اور دریافت کے بغیر تنقیدی یا فنی تاثر ممکن نہیں“ (۱۱)۔

### تحقیق و تنقید کا باہمی تعلق

اس سے قبل کہ ان دونوں کے باہمی تعلق کو بیان کیا جائے مناسب ہے کہ ”تخلیق“ سے ان کے ربط کو بیان کیا جائے تاکہ معلوم ہو جائے کہ ان دونوں کے لیے پہلے سے موجود تخلیقی مواد کی کس قدر اہمیت ہے۔

### تحقیق و تنقید اور تخلیق میں ربط

حقیقت یہ ہے کہ تحقیق و تنقید کا دار و مدار ہی تخلیق پر ہے یعنی اصل چیز تخلیق ہے۔ اس کے بغیر دونوں کا وجود میں آنا محال ہوتا ہے، مگر صلاحیت کا اعتبار کرتے ہوئے دیکھا جائے تو تنقیدی صلاحیت تخلیق سے قبل بھی اور ساتھ ساتھ بھی وجود اختیار کرتی ہے، چنانچہ ایلٹ نے اپنے مضمون ”The Function of Criticism“ میں تخلیقی و تنقیدی صلاحیت کے تعلق کو یوں بیان کیا ہے:

”شاید درحقیقت ایک مصنف کی اپنی تصنیف کے سلسلے میں محنت شاقہ کا بڑا حصہ

تنقیدی محنت کا ہوتا ہے یعنی چھاننے، جوڑنے، تعمیر کرنے، خارج کرنے، صحیح

کرنے، جانچنے کی محنت۔ یہ اذیت ناک محنت جتنی تنقیدی ہوتی ہے اتنی ہی

تخلیقی ہوتی ہے“ (۱۲)۔



جب کوئی تخلیق وجود میں آجاتی ہے تو اسے دیکھ کر اقداری پیمانے اور راہ نما اصول بنائے جاتے ہیں۔ اس کے بعد جب فنکار کی جانب سے کوئی اور تخلیق وجود میں آتی ہے تو نقادوں کے بنائے ہوئے اصولوں کی بنیاد پر وہ اپنی تخلیق میں مزید بہتری پیدا کرتا ہے۔ یہاں ضروری نہیں ہے کہ وہ نقادوں کے وضع کردہ معیاروں و اصولوں کی مکمل طور پر پابندی کرے۔ ممکن ہے کہ وہ ان سے آگے نکل جائے اور نئے نئے تجارب کرے، نئے نئے پیمانے دیتا چلا جائے۔ اگر ایسا ہی ہو تو یہ فنکار تخلیق کار ہوگا پھر تخلیق کار سے نقاد بن جائے گا۔ لیکن اس کی تنقید اور نقاد کی تنقید میں یہ فرق ہوگا کہ: تخلیق کار کی تنقید اس کے ذہن میں مخفی رہتی ہے جبکہ نقاد کے تنقیدی پیمانے ظاہر ہوتے ہیں۔ اس طرح ان دونوں کے عمل سے بعد والے تخلیق کار اور قاری استفادہ کرتے ہیں اور راہ نمائی حاصل کرتے ہیں (۱۳)۔

یہ ہے تنقید اور تخلیق کا آپس میں تعلق مگر جہاں تک تحقیق اور تنقید کے باہمی ربط کا معاملہ ہے تو اس میں دو طرح کے رجحان پائے جاتے ہیں:

### پہلا رجحان

اس پہلے رجحان کے مطابق تحقیق و تنقید ایک دوسرے کے لئے لازم و ملزوم ہیں یعنی جہاں تحقیق ہے وہاں تنقید ہے اور جہاں تنقید ہے وہاں تحقیق ہے۔ یہ اکثریت کا رجحان ہے۔ ذیل میں اس کے نمائندوں کی چند مثالیں دلایا بیان کی جاتی ہیں:

1- بیٹسن (Bateson) کہتا ہے:

الف- ”ادبی تنقید اور ادبی اے کارشپ (تحقیقی علم و فضل) کو ایک دوسرے کی ضد سمجھنا غلط ہے۔ دونوں ایک دوسرے کی تکمیل کرتے ہیں۔“

ب- اگر کوئی نقاد محض صحافی یا مبصر ہونے پر قانع نہ ہو تو اسے ساتھ ہی ساتھ محقق بھی بننا پڑے گا۔۔۔ محقق سے تنقیدی غلطی ہو سکتی ہے۔۔۔ خالص محقق ہونا بھی اسی طرح







- ۱- اثر قبول کرنا
- ۲- تشریح و تجزیہ
- ۳- اور قدر و قیمت کا یقین یا فیصلہ۔
- ☆ تنقید میں فنی تحقیق کے مطالعہ سے دل میں پیدا ہونے والے تاثرات کا اظہار کیا جاتا ہے۔
- ☆ اس کے بعد تنقید رد عمل کے دلکش یا غیر دلکش ہونے کے اسباب کا تجزیہ کرتی ہے۔ وہ اس طرح کہ:
- الف- جمالیات کے مطابق ہیئت کا،
- ب- نفسیات کی روشنی میں فن کار اور قاری کی ذہنی کیفیات کا،
- ج- اور سماجی علوم کی روشنی میں دونوں کی سماجی حالت کا تجزیہ کر کے یہ واضح کرتی ہے کہ کوئی فنی تخلیق قاری کو اچھی یا بری کیوں لگتی ہے۔
- ☆ آخر میں دونوں طریق عمل کی مدد سے فنی تخلیق کی قدر و قیمت متعین کی جاتی ہے۔ تنقید کی یہ تین منزلیں ہیں جن سے نقاد کو گزرنا ہی پڑتا ہے۔ نتائج میں اختلاف ہو سکتا ہے لیکن اچھی تنقید میں ان تینوں میں سے کسی کو بھی نظر انداز کرنا مشکل ہے“ (۱۸)۔
- اس بنیاد پر نگیند تحقیق و تنقید میں مماثلت کی وجوہات کو بیان کرتے ہیں اور آگے چل کر نتیجہ کے طور پر کہتے ہیں کہ:
- ۱- دونوں ادب کی ذیلی شاخیں ہیں۔
- ۲- دونوں کا عمل بہت کچھ مماثل ہے۔ یعنی حقائق کو پرکھنا، ترک و اختیار اور استخراج نتائج“ (۱۹)۔
- 6- ڈاکٹر بیج ناتھ سنگھ تحقیق و تنقید میں یوں مماثلت دکھاتے ہیں:



- ۱۔ دونوں ادب کے شعبے ہیں۔
  - ۲۔ تنقید تخلیق کے جذبہ حیات کا انکشاف کرتی ہے۔ تحقیق اسی جذبے کے پس پشت کام کرنے والے حقائق کا انکشاف کرتی ہے۔
  - ۳۔ تنقید ان عوامل کو بھی تلاش کرتی ہے جن کے زیر اثر تخلیق ہوتی ہے اور اس طرح تحقیق کے نزدیک پہنچ جاتی ہے۔
  - ۴۔ دونوں حقائق پر نظر رکھتی ہیں۔
  - ۵۔ دونوں میں تشریح، تعبیر، تاویل، جانچ پرکھ وغیرہ مشترک ہیں۔
  - ۶۔ دونوں کا آخری مقصد ادب کو سماج کے لیے مفید ثابت کرنا ہے“ (۲۰)۔
  - ۷۔ مشہور نقاد ڈاکٹر سید عبداللہ کہتے ہیں:
- الف۔ ”اب عام طور پر تحقیق کو (غلط طور پر) تنقید کی ضد سمجھ لیا گیا ہے۔۔۔۔۔ ایک خاص حد تک تنقید و تحقیق کے دائرہ ہائے عمل الگ الگ ہیں مگر کچھ ایسے دائرے بھی ہیں جن میں یہ دونوں ہم قدم و ہم رکاب ہیں“ (۲۱)۔
- ب۔ پھر لکھتے ہیں: ”ما حاصل یہ ہے کہ تنقید میں بھی تحقیق کے لیے کئی پہلو نکلتے ہیں اور تنقید کے لیے بھی تحقیق ایک لازمی سائل ہے“ (۲۲)۔
- ج۔ مضمون کے آخر میں رقمطراز ہیں: ”۔۔۔۔۔ کوئی سچی تنقید تحقیق سے آنکھ نہیں چرا سکتی اور صرف تاریخ ہی نہیں حیات انسانی کی پوری تاریخ اس لپیٹ میں آتی ہے، یہیں پہنچ کر تحقیق و تنقید ہم معنی سے الفاظ بن جاتے ہیں۔ کم از کم دونوں کی باہمی بے تعلقی کا دعویٰ غلط ہی ثابت ہوتا ہے“ (۲۳)۔
- د۔ اپنی جانب سے دونوں کی ہم رکابی و ہم آہنگی پر زور دینے کی وجہ بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں: ”میں نے تنقید و تحقیق کی ہم آہنگی و ہم رکابی پر زیادہ زور اس لیے دیا ہے کہ



ہماری تنقید میں تحقیق کی کمی کی وجہ سے بڑا نقصان ہو رہا ہے۔ نقاد اگرچہ اس سے بے نیاز نہیں ہو سکتے، مگر اس سے پہلو بچانے کے مرتکب ضرور ہوتے ہیں۔ جس کی وجہ سے تن آسانی کی عادت بڑھ رہی ہے۔۔۔۔۔“ (۲۴)۔

8۔ ڈاکٹر وزیر آغا خان تحقیق و تنقید کے باہمی ربط کو یوں بیان کرتے ہیں:

الف۔ ”در اصل تحقیق کا کام محض یہی نہیں کہ نئے مواد کو سامنے لائے بلکہ یہ بھی ہے کہ وہ مواد کی لسانی یا ادبی اہمیت کو بنیاد بنا کر ایسا کرے۔ دوسرے لفظوں میں محقق کے لیے پہلے نقاد ہونا بہت ضروری ہے۔۔۔۔۔“ (۲۵)۔

ب۔ ”۔۔۔۔۔ تحقیق جس مواد کو دریافت کرتی ہے وہ اصلاً تنقید کے لیے کچے مواد (Raw

Material) کی حیثیت رکھتا ہے۔ لہذا ضروری ہے کہ محقق اس مواد پر ایک تنقیدی نظر بھی ڈالے۔ محض اس کی پیشکش تک ہی خود کو محدود نہ رکھے۔ مراد یہ ہے کہ ”تحقیق برائے تحقیق“ کی اہمیت اپنی جگہ لیکن ”تحقیق برائے تنقید“ سے بے اعتنائی کی روش ناقابل فہم ہے“ (۲۶)۔

ج۔ اعتراضاً کہتے ہیں: ”ہمارے ہاں تحقیق اور تنقید کو بالعموم الگ الگ خانوں میں رکھا گیا ہے۔ اور جب کبھی ان کا آمنہ سامنا ہوا ہے، تو ایک دوسرے پر بلا وجہ غرانے (غصے کی آواز نکالنے) لگی ہیں۔ یہ کوئی اچھی بات نہیں ہے۔ ان دونوں کو ایک دوسرے کی طرف دوستی کا ہاتھ بڑھانا چاہیے“ (۲۷)۔

د۔ اس کے بعد لکھتے ہیں: ”بلکہ میرا تو یہ خیال ہے کہ ہر اچھی تحقیق میں تنقید مضمحل ہوتی ہے اور اسی طرح ہر عمدہ تنقید میں تحقیق کے عناصر موجود ہوتے ہیں۔ تحقیق کا کام ہے جستجو اور تنقید کا کام ہے استخراج اور انکشاف: ہر اچھا محقق یا نقاد بیک وقت جستجو اور انکشاف کے مراحل سے گزرتا ہے اور ان دونوں کی یکجائی کا منظر دکھاتا ہے۔ جس تحریر میں یہ



دونوں لخت لخت حالت میں موجود ہوں، یا ایک نظر آئے مگر دوسری غائب ہو، تو اس کی تنقیدی یا تحقیقی حیثیت مشکوک قرار پائے گی“ (۲۸)۔

پھر لکھتے ہیں: ”... تحقیق کا مطلب محض نئے مواد کی تلاش، متن کی تصحیح یا سنین کی درستی نہیں ہے۔ اس سے مراد محرکات کی تلاش اور تناظر کو نئی نئی شرح لائینوں کی مدد سے منور کرنا بھی ہے، مثلاً: جب کوئی نقاد کسی مصنف یا صنفِ ادب کو اس کے زمانے کے تناظر میں رکھ کر دیکھتا ہے، یا اس میں زمانے کی کروٹوں کو تلاش کرتا ہے، تو وہ بھی محقق ہی کا فریضہ انجام دیتا ہے“ (۲۹)۔

انتظار حسین کہتے ہیں: ”تحقیق کے ساتھ تنقیدی شعور پیدا نہ ہو تو اس تحقیق کا کوئی فائدہ نہیں ہوتا“ (۳۰)۔

مظہر علی سید رقمطراز ہیں: ”تحقیق اور تنقید کا رابطہ محض اتنا نہیں کہ تحقیق، تنقید کے لیے مصالح فراہم کرتی ہے۔ یہ تو خادم و مخدوم کا رشتہ ہے... دونوں ایک دوسرے کے لیے لازم و ملزوم ہیں... ہر محقق میں ایک جزوی نقاد اور ہر نقاد میں ایک جزوی محقق کا وجود لازم ہے... تحقیق اور تنقید کو اپنا تخصص اور تشخص قربان کیے بغیر ہمارے دور میں پہلے سے زیادہ باہم مربوط ہونا پڑے گا، ورنہ دونوں کے لیے اپنے وجود کو برقرار رکھنا دشوار ہو جائے گا“ (۳۱)۔

ڈاکٹر گیان چند دونوں کی ہم آہنگی کی وضاحت یوں کرتے ہیں: ”... تحقیق اور تنقید کا آخری مقصد ایک ہے: ادب کی معتبر تفہیم۔ دونوں ادبی تخلیقات کا مطالعہ کرتی ہیں۔ دونوں قارئین کی رہبری کرتی ہیں۔ دونوں ادیب اور ادب پارے سے متعلق خارجی معلومات سے استفادہ کرتی ہیں۔ تحقیق کا مقصد کسی ادیب یا اس کی تخلیقات کو صحت کے ساتھ جاننا ہے۔ اس طرح وہ تنقید کی حریف نہیں، معاون رفیق ہے...“ (۳۲)۔



مغربی، ہندی اور مسلمان علماء کی آراء سے واضح طور پر پتہ چلتا ہے کہ:

- ۱- تحقیق و تنقید ہم آہنگ ہیں۔
- ۲- دونوں لازم و ملزوم ہیں۔
- ۳- دونوں تشریحیاتی و تجزیاتی کام انجام دیتی ہیں۔
- ۴- دونوں میں حقیقتوں، صداقتوں، علتوں، اسبابوں اور نتیجوں کو تلاش کیا جاتا ہے۔
- ۵- دونوں میں اظہار رائے کا عمل مسلم ہے۔
- ۶- دونوں کی عمدہ صلاحیت و بصیرت سے عمدہ تخلیقات وجود میں آتی ہیں۔
- ۷- دونوں کے عمل کے لیے پہلے سے تخلیقات کا ہونا ضروری ہے۔
- ۸- دونوں کا عمل مساویانہ طور پر راہ نمائی کرنا ہے۔

اس رجحان کے نمائندوں کی آراء کو سمیٹتے ہوئے ڈاکٹر وزیر آغا خان کے حسب ذیل اقتباس کو نقل کیا جاتا ہے تاکہ ڈاکٹر نگیندر کے مذکور اقتباس نمبر ۵ کو سمجھنے میں مزید آسانی پیدا ہو جائے: ”اصلاً تنقید کے تین مراحل ہیں: تلاش، تجزیہ، اور انکشاف:

- ۱- تلاش کا حصہ تحقیق کے زمرے میں آتا ہے۔
- ۲- تجزیہ میں تحقیق اور تنقید دونوں حصہ لیتی ہیں۔
- ۳- اور انکشاف یا استخراج ایک خالص تنقیدی عمل ہے۔

جب کوئی ان تینوں مراحل سے گزرنے میں کامیابی حاصل کرتا ہے تو اس کی تحریر مثالی حیثیت اختیار کرتی ہے، لیکن اگر وہ پہلے مرحلے پر رک جائے اور محض آخری مرحلے تک خود کو محدود کر لے، تو اسی نسبت سے اس پر محض محقق یا محض نقاد ہونے کا لیبل لگے گا“ (۳۳)۔

مختصر یہ کہ ”تنقیدی شعور کے بغیر تحقیق کا کام ادھورا اور تحقیقی تجربے کے بغیر تنقید یا فنی تاثر کے ساتھ انصاف ممکن نہیں“ (۳۴)۔



## دوسرا رجحان

پہلے رجحان کے مطابق ثابت ہوا کہ تحقیق و تنقید دونوں ہم آہنگ ہیں اور دونوں ایک دوسرے کے لیے لازم و ملزوم ہیں جبکہ اس دوسرے رجحان کے مطابق تحقیق و تنقید میں اختلاف پایا جاتا ہے یعنی یہ دونوں ہم آہنگ، ہم رکاب اور ایک دوسرے کے لیے لازم ملزوم نہیں ہیں۔ ذیل میں اس رجحان کے نمائندوں کی چند مثالیں دلیل کے طور پر پیش کی جاتی ہیں:

1- ڈاکٹر نگیندر نے جہاں تحقیق و تنقید میں مماثلت کا اقرار کیا ہے وہاں انہوں نے دونوں میں اختلاف کا اظہار بھی کیا ہے اور یہ دلیلیں دی ہیں:

1- دونوں ہم معنی الفاظ نہیں ہیں۔ تحقیق میں کھوج پر زیادہ زور دیا جاتا ہے اور تنقید میں جانچنے اور پرکھنے پر۔ (یہاں انہوں نے مادہ کے اختلاف کو بنیاد بنایا ہے)۔

2- تحقیق کا مقصد علم میں اضافہ ہے۔ تنقید کا مقصد علم سے واقف کرانا ہے۔

3- تحقیق میں دریافت پر زور دیا جاتا ہے۔ تنقید میں پرکھ پر۔

4- تحقیق کی بہت سی شکلیں (نمونے) تنقید کے تحت نہیں آتیں۔ تنقید کی بہت سی شکلیں تحقیق میں شمار نہیں کی جاسکتیں۔

5- روح (آتما) کی تلاش اور آرٹ تنقید کے خواص ہیں، تحقیق میں ان کی اہمیت ثانوی ہے۔

6- تحقیق کا عمل سائنس کی طرح ہوتا ہے اور اس میں سائنسی معروضیت ہوتی ہے، تنقید میں ان کی اہمیت ضمنی ہے (۳۵)۔

اس کے بعد کہتے ہیں: ”میری رائے میں اعلیٰ تحقیق اعلیٰ تنقید سے مختلف نہیں...“ (۳۶)۔

لیکن اس کے بعد وہ اپنی غیر جانب داری چھوڑ کر اپنی ترجیح افشا کر دیتے ہیں۔ کہتے

ہیں: ”... محض حقائق پر مبنی تحقیق، تحقیق کی ابتدائی شکل ہے۔ اس لیے پست سطح کی ہے...“



بہتر تحقیق میں تنقیدی عنصر ہونا ضروری ہے“ (۳۷)۔

2- ڈاکٹر چندر بھان راویت اور ڈاکٹر رام کمار کھنڈیوال: ان دونوں نے اپنی مشترکہ کتاب

میں تحقیق و تنقید میں درج ذیل چھ طرح سے فرق بتایا ہے:

1- نقاد اپنی ذاتی پسند تک محدود رہ کر لکھ سکتا ہے۔ محقق ذاتی پسندیدگی سے اوپر اٹھ کر ہی کامیاب ہو سکتا ہے۔

2- نقاد موضوعی (Subjective) رہ کر ہی لکھ سکتا ہے۔ محقق کو معروضی رہنا ضروری ہے۔

3- محقق ایک مسئلہ پیش کرتا ہے اور اس کا ذہنی حل فراہم کرتا ہے۔ نقاد محض حقیقت کے انکشاف پر قانع ہو سکتا ہے۔ اس کے لیے حل پیش کرنا ضروری نہیں۔

4- محقق جملہ حقائق جمع کر کے ان کا تجزیہ کرتا ہے، نقاد کو جملہ حقائق پیش نظر رکھنا ضروری نہیں۔

5- نقاد کا اصلی کام تشریح و تاویل ہے، محقق حقائق کی عملی طریقے سے تنظیم و گروہ بندی کرتا ہے۔

6- نقاد کا مقصود تخلیق کے تخلیقی عمل اور اظہار کو جمالیات پر پرکھنا ہے۔ محقق کا مقصود اب تک کے علم میں اضافہ کرنا ہے“ (۳۸)۔

3- ڈاکٹر بیج ناتھ سنگھل نے بھی دونوں میں فرق بتایا ہے اور اس فرق و اختلاف کی درج ذیل دس وجوہات بیان کی ہیں:

1- تنقید سے توقع کی جاتی ہے کہ وہ ادب کے لیے لگاؤ پیدا کرے گی۔ تحقیق سے یہ توقع نہیں۔

2- تحقیق معلوم جان کاری (حقائق) کی بنیادوں پر نئے موقف قائم کرتی ہے۔

3- تحقیق کا مقررہ سائنسی طریقہ ہے۔



- ۴- تحقیق بنیادی طور پر حقائق پر مبنی ہے۔
- ۵- تحقیق سائنس کی طرح اشیاء پر مبنی ہوتی ہے جبکہ تنقید اشخاص پر (اس سے اتفاق کرنا مشکل ہے)۔
- ۶- تحقیق تخلیق کے پس پشت اسرار کا انکشاف کرتی ہے۔ تنقید تخلیق کی ماہیت کا انکشاف کرتی ہے۔
- ۷- تحقیق کا موضوع پوشیدہ ہے یعنی مخفی کو برآمد کرنا ہے، تنقید کا موضوع منکشف ہے۔
- ۸- محقق اپنا کام شروع کرنے سے پہلے کوئی مفروضات قائم نہیں کر سکتا جبکہ تنقید میں اس کی ممانعت نہیں۔
- ۹- محقق کے سامنے پہلے سے مقررہ معیار نہیں ہوتا جبکہ تنقید کے پاس ہوتا ہے۔
- ۱۰- تحقیق کی زبان سائنسی اور غیر جذباتی ہوتی ہے (۳۹)۔
- ۴- ڈاکٹر تلک سنگھ نے جہاں دونوں میں مماثلت بتائی ہے (جیسا کہ پہلے گزر چکا ہے) وہاں فرق بھی بتایا ہے اور اس فرق کے تین سبب بیان کیے ہیں:
- ۱- سب سے پہلا فرق معنوی ہے۔ شودھ (تحقیق) کے معنی خالص کرنا، سمیکشا (تنقید) کے معنی ہیں دیکھنا۔
- ۲- دونوں کا طریقہ مختلف ہے۔ تحقیق سائنس ہے، تنقید روح دار آرٹ ہے۔
- ۳- نقاد استخراج نتائج میں آزاد ہے۔ محقق آزاد نہیں (۴۰)۔
- ۵- محقق رشید حسن خان نے دونوں کو غیر مترادف قرار دیا ہے۔ کہتے ہیں: ”تنقیدی صداقت تنقیدی تعبیرات کا نتیجہ ہوا کرتی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ ایک ہی مسئلے پر لوگ مختلف آراء رکھتے ہیں جبکہ تحقیق میں اختلاف رائے کی اس طرح گنجائش نہیں..... تنقید کے مقابلے میں تحقیق کا دائرہ کار محدود ہوتا ہے۔ تحقیق بنیادی حقائق کا تعین کرے گی



اور ان کی مدد سے ایسے نتائج نکالے جاسکیں گے جن میں شک یا قیاس یا تاویل یا ذاتی رائے کا عمل دخل نہ ہو۔ اخذ نتائج میں جہاں سے تعبیرات کی کارفرمائی شروع ہوگی اور ان پر مبنی اظہار رائے کا پھیلاؤ شروع ہوگا وہاں تحقیق کی کارفرمائی ختم ہو جائے گی۔“ (۴۱)۔

اس رجحان کے دلائل سے ظاہر ہے کہ تحقیق و تنقید میں ہم آہنگی نہیں پائی جاتی یہ دونوں ایک دوسرے کے لیے لازم و ملزوم نہیں ہیں۔

## ترجیح

دوسرے رجحان کے نمائندوں کی آراء اپنی جگہ محترم ہیں مگر ان کے مقابلے میں پہلے رجحان کے نمائندوں کی آراء ودلیلیں زیادہ قوی ہیں کیونکہ عقل کے ساتھ ساتھ عصر حاضر کا بھی تقاضا ہے کہ علمی کام کرنے والوں کو تحقیق و تنقید دونوں سے کام لینا چاہیے کیونکہ دونوں میں سے صرف ایک پہلو کو اپنانے کی نسبت دونوں کو بیک وقت اپنانے میں فوائد زیادہ ہیں جن کی معرفت کے لیے قرون اولیٰ کے مسلمانوں کی محققانہ و ناقدانہ کاوشوں کے ثمرات کو ذہن میں رکھنا چاہیے کہ انہوں نے کیسے کیسے عظیم اور ناقابل فراموش کارنامے انجام دیئے ہیں۔ ذیل میں اس سلسلہ کی چند ایک مثالیں پیش کی جاتی ہیں جن میں تحقیق و تنقید ہم آہنگ ہیں:

## تحقیق و تنقید سے مزین اسلامی کتب

۱۔ اللہ مست از محمد بن اسحاق ابن ندیم (۳۸۰ھ یا ۳۸۵ھ یا ۳۹۰ھ) (۴۲)

اس کتاب میں مؤلف نے چوتھی صدی ہجری تک کے علوم و فنون، سیر و جال اور کتب و مصنفین وغیرہ کا استیعاب مختصر مگر جامع انداز میں کیا ہے، چنانچہ کتاب کے اردو مترجم محمد اسحاق بھٹی، اس کے پیش لفظ میں لکھتے ہیں:

”کتاب کے مطالعہ سے معلوم ہوتا ہے کہ مصنف بہت وسیع النظر اور بے انتہا



معلومات کا حامل ہے۔ اس کی یہ کتاب کہنا چاہیے کہ [مسلم] دنیا کا پہلا کٹیلاگ اور فہرست کتب و مصنفین ہے اور اس کو رجال و تصنیفات کے باب میں اولیں ماخذ کا درجہ حاصل ہے۔۔۔“ (۲۳)۔

جہاں تک اس میں تحقیق و تنقید کی ہم آہنگی کا تعلق ہے تو اس ضمن میں ڈاکٹر نجم الاسلام کے مضمون ”تحقیق کے روایتی اسلوب“ سے چند ایک اقتباسات ذیل میں نقل کیے جاتے ہیں جن سے یہ حقیقت عیاں ہو جائے گی کہ یہ کتاب تحقیق و تنقید دونوں پہلوؤں پر ہے۔ وہ لکھتے ہیں:

۱۔ . . . ابن ندیم کی الفہرست تحقیقی کتابیات کا عظیم کارنامہ ہے۔ اس دور (یعنی چوتھی صدی ہجری) کے انداز تحقیق کو اس کتاب کی مدد سے بخوبی سمجھا جاسکتا ہے۔۔۔۔۔“

۲۔ . . . اس کے موضوعات و مباحث کثیر اور متنوع ہیں۔ جن میں موقع بہ موقع اس نے تحقیق سے کام لے کر اپنی کتاب کو موقع بنایا ہے۔ دوران مباحث سوال اٹھاتے جانا اور ان کا حل تلاش کرنا یا دوسرے لفظوں میں چھوٹے چھوٹے ہدف بنا کر اپنی معلومات کو زیادہ نتیجہ خیز بنانا اس کا طریقہ ہے۔“

۳۔ ”وہ تاریخیت کا لحاظ کرتا ہے۔ متعدد مباحث میں تمام قابل تنقیح مواد کا احاطہ کرتا ہے، مصنف کی لکھی ہوئی تحریر سے استناد کرتا ہے (ص ۱۱ تا ۲۷)، اپنی دیکھی ہوئی دستاویزات کی صراحت کرتا جاتا ہے (ص ۱۴، ۱۵)، نتائج اخذ کر کے پیش کرتا جاتا ہے، بنیادی ماخذ کی اہمیت سے واقف ہے (ص ۳۹)۔ تقابل اور تحقیق متن کی طرف بھی پوری طرح متوجہ ہے (ص ۶۹)، اور کیوں نہ ہو کہ وہ خود وراق ہے (یعنی کتابوں کی تصحیح و ترتیب اور نقل و فروخت اس کا پیشہ تھا) (الفہرست (اردو) پیش لفظ ص ۳)۔“

۴۔ ”وہ اختلافات متن کی نشاندہی کے ساتھ ساتھ ناقلمین کی کمزوریوں کو بھی ظاہر کرتا ہے، یہاں تک کہ خود کو بھی نہیں بخشتا، چنانچہ ایک اختلافی بحث کا خاتمہ وہ اس جملے پر کرتا ہے کہ“



ہم نے ان کا یہ قول بغیر دیکھے ہی نقل کر دیا ہے (ص ۶۹)۔ بہر کیف یہ ایک کمزوری ہے جس کا وہ خود معترف ہے گو کہ اس اعتراف میں بھی ایک احتیاط ہے اور یہی صورت ”الفہرست“ میں بعض دیگر مقامات پر بھی سامنے آتی ہے۔

۵۔ ”وہ کہیں کہیں مجہول روایت اور رائے بھی نقل کرتا ہے مگر اس صورت میں کہ مثلاً دو معروف آراء یا روایات دیں تو ان کی مزید تائید میں ایک بے نام یا مجہول راوی کی روایت یا رائے بھی“۔

۶۔ ”کہیں وہ اپنی نارسائی کا صاف اعتراف کر لیتا ہے کہ فلاں بات معلوم نہ ہو سکی، یہ قابل تحقیق بات ہے۔ یہ اعتراف خود اس کے اعلیٰ ذوق تحقیق پر دلالت ہے اور کاش یہی چیز ہمارے آج کے طالبان تحقیق میں ایک راسخ روایت بن کر ابھر آتی“۔

۷۔ ”ہم دیکھتے ہیں کہ ابن ندیم قدیم نوشتہ جات اور نادرا الوجود تخریروں (ص ۱۰۹) میں خاص دلچسپی رکھتا ہے، سماع کتاب، استدراک، متون میں خطا و تحریف کی نشاندہی (ص ۱۱۴) کی اہمیت پر زور دیتا ہے۔ اس کا محتاط انداز ہے جو قدیم انداز تحقیق کی بہتر نمائندگی کرتا ہے۔“

۸۔ ”... صاف گوئی بھی اس میں ایسی ہے جو ہر محقق کے لیے باعث تحسین قرار پائے گی۔ چنانچہ اسماعیلیہ کے ایک کثیر الکتب مصنف کے بارے میں صراحت کرتا ہے کہ اس کی تصنیفات سب سے زیادہ ہیں کیونکہ جس کسی نے بھی کوئی کتاب لکھی اس کی جانب منسوب کر دی، اس کی یہ تصنیفات احمقانہ ہیں جو موجود اور متداول ہیں۔۔۔۔۔ اسی مصنف کی ایک اور کتاب پر صاف صاف رائے ظاہر کرتا ہے کہ یہ کتاب میں نے پڑھی ہے، اس میں بڑی جسارت اور بیہودگی ہے یعنی اباحت، منظورات، شراعیع اور تبعیین شراعیع کی توہین ہے“۔



۹۔ کتابوں میں جعل سازی کی نشاندہی کے بارے میں ابن ندیم خاصا مستعد ہے۔ کون سا جزء اصل مصنف کی تصنیف ہے، کون سے حصے وراقوں کی جعل سازی ہیں، جعل سازی میں کس نے پہل کی، کون شریک تھا اور کتاب کے اجزائے ترکیبی کیا ہیں؟ اس طرح وہ سب پہلوؤں پر روشنی ڈالتا ہے (ص ۳۳۰)۔“

۱۰۔ ”وہ ایک خاص مسلک کا پیرو ہے مگر کتابوں کی چھان بین کے ذیل میں ہم مسلکوں پر بھی بھر پور تنقید اور بے لاگ رائے کا اظہار کرتا ہے (ص ۲۳۹، ۳۳۳، ۵۱۹، ۵۲۷)۔“

۱۱۔ وہ درایت اور تالیف میں مہارت اور حداقت کی تحسین کرتا ہے (ص ۳۳۱)۔“

۱۲۔ وہ مصنفوں کے ذاتی کتب خانوں کی مدد سے خود ان ہی کی تالیفات میں اخذ و نقل کا سراغ لگانے کا قائل ہے، چنانچہ لکھتا ہے کہ میں نے خود صولی (ابوبکر صول) کے کتب خانے میں اس شخص کا وہ مجموعہ دیکھا ہے کہ جس سے اس نے نقل کیا ہے اور جس کی وجہ سے یہ رسوا ہوا ہے (ص ۳۲۸) (۲۲)۔“

## 2۔ مقدمہ ابن خلدون (عبدالرحمن بن محمد بن خلدون)

علامہ ابن خلدون نے اپنی تاریخ کا جو مقدمہ لکھا ہے وہ تحقیق و تنقید دونوں کی ہم آہنگی و ہم رکابی کی انوکھی مثال ہے، وہ اس طرح کہ:

۱۔ وہ تاریخ کے حوالے سے کچھ اصول تحقیق بالوضاحت پیش کرتا ہے۔ بالخصوص اپنے مقدمے میں۔ اس کا کہنا ہے کہ ضرورت ہے متعدد مآخذوں کا پتہ لگایا جائے۔ مختلف علوم سے واقفیت حاصل کی جائے اور مورخ فکر صحیح اور گہری نظر بھی رکھتا ہو کہ اس کے ذریعے وہ حق و صداقت کی راہ پاسکے اور لغزشوں اور اغلاط سے دامن بچاسکے، کیونکہ اخبار میں اگر محض نقل پر نظر قاصر رکھی جائے اور اصول عادت، قواعد سیاست، طبیعت تمدن اور اجتماع انسانی کے حالات کو پیش نظر نہ رکھا جائے اور نہ غائب و غیر موجود کو حاضر و موجود پر قیاس کیا جائے تو غلطی، لغزش قدم



اور سچائی کے راستے سے ہٹ جانے کے خطرے سے نجات نہیں مل سکتی۔ چنانچہ اکثر و بیشتر مورخین، مفسرین اور ناقلین نقل حکایات و وقائع میں غلطیوں کے شکار ہو گئے ہیں۔ محض اس لیے کہ انھوں نے صرف نقل پر بھروسہ کیا، خواہ وہ قابل رد ہو یا قابل قبول اور ان کو نہ اصول پر کسا، نہ ان کے تشابہات پر قیاس کیا، نہ معیار حکمت اور طبائع کائنات کی واقفیت پر ان کو پرکھا اور جانچا اور نہ اخبار پر گہری نظر ڈالی۔ نتیجہ یہ ہوا کہ حق سے بہک گئے اور وہم و غلطی کے جنگل میں بھٹکتے پھرے۔ خصوصاً جبکہ حکایات میں مالوں اور فوجوں کے شمار اور گنتی کی نوبت آئی کیونکہ حکایات میں جھوٹ اور غلط بیانی کی بڑی گنجائش ہے۔ اس لیے ضرور ہے کہ ان کو اصول پر جانچیں اور قواعد پر پرکھیں (ص ۳۹)۔

۲۔ وہ کہتا ہے کہ انسان طبعاً عجیب بات کہنے کا دلدادہ ہے اور اعتراض یا تنقید سے غفلت برتتے ہوئے اس کو جلد زبان پر لے آنے کا عادی ہے۔ وہ نفس کی بھول چوک یا اس کے ارادے پر اس کی جانچ پڑتال نہیں کرتا اور وہ نقل خبر میں واسطے یا چھان بین سے سروکار نہیں رکھتا اور خبروں کو بحث و تمحیص کی کسوٹی پر نہیں کتا۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ زبان کی لگام کو ڈھیل دے دیتا ہے اور اس کو جھوٹ کے میدان میں خوب آزادی بخشتا ہے۔ اس طرح وہ اللہ کی آیات کا مذاق بناتا ہے اور لغو باتوں کی اشاعت کر کے دوسروں کو گمراہ کرتا ہے (۴۱)۔ لہذا اس قسم کی خبریں جب تم تک پہنچیں تو فوراً باور نہ کرو بلکہ غور و فکر کرو اور قوانین صحیحہ پر ان کو پرکھو اور جانچو۔ حقیقت حال تم پر روشن ہو جائے گی اور اللہ ہی راہ حق دکھانے والا ہے (۴۵)۔

۳۔ وہ صراحت کرتا ہے کہ کتب تاریخ میں بے ہودہ حکایات گھڑنے اور بنانے کا راز یہ معلوم ہوتا ہے کہ ان کے ناقلین خود ناجائز لذتوں میں پھنسے ہوئے تھے اور دوسروں کی پردہ دری کیا کرتے تھے (ص ۵۱)۔

۴۔ اس کے نزدیک مؤرخ کے لیے لابدی (ضروری) ہے کہ وہ ملکی سیاسی قواعد اور



موجودات کے طبائع سے واقفیت رکھتا ہو۔ قومیں اور زمین و زمان، عادات و اخلاق، سیرت و خصلت، مذہب و ملت اور دیگر حالات میں جن انقلابی دوروں سے گذرتی رہتی ہیں ان سے بھی وہ شناسا ہو، نیز قابلیت رکھتا ہو کہ حاضر و موجود کو غائب و غیر موجود سے ملا کر دیکھے کہ ان میں اتفاق ہے یا اختلاف۔ اتفاق کی بھی علت تلاش کرے اور اختلاف کی بھی وجہ دریافت کرے اور سلطنتوں اور قوموں کے اصول، ان کی ابتدا اور ان کے حدوث کے اسباب و دواعی کی معلومات بھی بہم پہنچائے اور جو اشخاص ان امور میں ذمے دارانہ شخصیت رکھتے ہوں ان کے حالات و اخبار سے بھی شناسانی رکھتا ہوتا کہ وہ ان معلومات کے تحت ہر خبر کے سبب کا سراغ لگا سکے اور جو خبر اس تک نقل ہو کر پہنچی ہے اگر وہ اس کے قواعد و اصول پر پوری اترتی ہے تو اس کو صحیح جانے ورنہ اس کو کھوٹی اور جھوٹی جان کر نظر انداز کر دے (ص ۵۸)۔

۵۔ وہ اس امر پر بہت زور دیتا ہے کہ اہل عالم اور قوموں کے حالات و عادات اور مذہب ایک نہج و وطیرہ پر نہیں چلتے رہتے بلکہ اختلاف ایام و زمانہ کے ساتھ ساتھ وہ بھی ایک حالت سے دوسری حالت کی طرف بدلتے رہتے ہیں۔ جس طرح لوگ اور آبادیاں ایک حالت پر برقرار نہیں رہتیں، اسی طرح سطح زمین، زمانہ اور سلطنتوں کو بھی ثبات و قرار نہیں۔ اللہ کی یہی عادت اپنے بندوں میں جاری ہے (ص ۵۹)۔ جو اس کا لحاظ رکھے گا تاریخی تحقیق میں ایک غلطی کے سرزد ہونے سے بچ جائے گا۔

یہ بھی اسی کا قول ہے کہ جس چیز کو لوگوں نے نہ دیکھا ہو اس کی خبر کو بے دھڑک جھٹلا بیٹھتے ہیں، بالکل جس طرح عجوبہ پسندی کی وجہ سے اکثر ناممکن باتوں کو لوگ مان لیا کرتے ہیں۔ پس انسان کے لیے مناسب یہی ہے کہ ہر خبر و روایت کو اصول پر پرکھے اور جانچے اور بے لوث ہو کر عقل سلیم و طبع مستقیم سے ممکن و ممتنع میں صحیح فرق و تمیز کرے، جو دائرہ امکان میں ہو اس کو قبولیت کا درجہ دے اور جو اس سے خارج ہو، اس کو رد کر دے۔ مگر یہاں امکان سے مراد امکان



عقلی نہیں جس کا دائرہ بہت وسیع ہے۔ کیونکہ وہ واقعات میں کوئی حد قائم نہیں کر سکتا۔ بلکہ اس سے مراد امکان مادی ہے یعنی جب ہم کسی شے کی جنس و صفت، مقدار عظمت و قوت کا پتا لگالیں تو پھر اسی نسبت سے اس کے حالات پر حکم لگائیں اور جو مذکورہ بالا امور سے خارج و زائد معلوم ہو اس کو ممتنع جانیں (ص ۲۰۹) (۲۳)۔

### 3- تاریخ التراث العربی از پروفیسر فواد سزگین

عالم اسلام کے معروف سکالر ہیں۔ ان کی یہ کتاب اصل میں جرمن زبان میں ہے، جسے عربی میں ترجمہ کر کے اس نام سے شائع کیا گیا ہے۔ ”ان کی یہ تالیف بلاشبہ علوم و ادب اسلامی کی تاریخ کے لیے ایک نہایت مبسوط و مستند ماخذ کی حیثیت رکھتی ہے مگر پہلی جلد میں علم حدیث پر ان کا مقدمہ اس لیے خصوصی اہمیت رکھتا ہے کہ اس میں حدیث بالخصوص تاریخ تدوین حدیث کے بارے میں Goldziher کے نظریات کا مدلل تحقیقی و تنقیدی جائزہ لیا گیا ہے۔“ (۳۶)۔

### 4- سیرت النبی صلی اللہ علیہ وسلم از شبلی نعمانی

اردو میں یہ کتاب اور بالخصوص اس کی پہلی جلد میں علامہ کا مقدمہ سیرت نگاری پر تحقیق و تنقید کا ایک عظیم و بے مثل شاہکار ہے۔ ”اس مقدمے میں انہوں نے سلسلہ روایات کو اسلامی تاریخ کے تناظر میں علمائے سلف کے مقرر کردہ اصول کے مطابق پیش کیا، بے اعتدالی اور قیاس آرائی سے پرہیز کیا اور عقلی اصولوں سے کام لیتے ہوئے حقائق کا سراغ لگانے کی تلقین کی، سلسلہ روایات کی تنقید کی اور ان اصولوں کی توضیحات پیش کیں جو محققین کے لیے آج تک مشعل راہ ہیں۔ مولانا کے پیش نظر وہ اصول تحقیق ہیں جن کا بہترین نمونہ احادیث کی تدوین میں نظر آتا ہے۔ انہوں نے مقدمے میں محدثین کے اصول روایت و درایت کی توضیح کی ہے اور اس کے ساتھ ہی موضوعات کے مسئلے کو بھی مناسب اہمیت دی ہے، اور ملا علی قاری کے اصول موضوعات کی نہ صرف نکتہ بہ نکتہ توضیح کی ہے بلکہ مثالیں دے کر ان تحقیقی اصولوں کے انطباق کی تشریح بھی کی ہے جس سے ہمارے آج کے نوجوان محققین بیانات کی تحقیق کا فن



سیکھ سکتے ہیں۔ مولانا شبلی نے نقد و جرح اور روایت و درایت کے تمام محدثانہ تحقیقی اصولوں سے کام لیتے ہوئے سیرۃ النبی ﷺ مرتب کی ہے۔

مولانا شبلی واقعات میں سلسلہء علت و معلول قائم کرتے ہیں اور واقعے کی نوعیت کے لحاظ سے شہادت کے معیار کو قائم کرتے ہیں۔ جرح و تعدیل کے وضع کردہ اصولوں پر زور دیتے ہیں اور تاریخ و روایت میں حوالہء اسناد کو مقدم سمجھتے ہیں۔ مولانا نے آئندہ کام کرنے والوں کے لیے واقعات کی تحقیق، ترتیب، اور اخذ نتائج کا نہایت اعلیٰ معیار قائم کیا ہے۔ ان سب باتوں پر مستزاد مولانا کا طرز تحریر ہے۔ ان کا اسلوب بیان نہایت شگفتہ اور دلکش ہے۔ وہ فصاحت و بلاغت کے اصول جانتے ہیں اور تحقیقی مسائل پر اس فن کی مناسبت سے زبان استعمال کرتے ہیں۔ غرض کہ یہ مقدمہ معلومات و مباحث کے لحاظ سے تحقیقی اصول و طریق کار پر ایک سند کی حیثیت رکھتا ہے (۴۷)۔



## حوالہ جات و حواشی

- ۱- دیکھئے: لسان العرب، مادہ ق، ابن منظور افریقی (ابو الفضل جمال الدین محمد ابن مکرم، متوفی ۵۱۱ھ)، بیروت دار الصادر، سن ۱۹۸۱ء، نیز دیکھئے: فیروز لغات (اردو) مادہ ت، خ۔
- ۲- نجم الاسلام، مترجم: تحقیق کی چند تعریفات (اخذ و ترجمہ)، در مجلہ تحقیق ص ۳۷۳ تا ۳۷۷ دوسرا شمارہ، شعبہ، اردو، سندھ یونیورسٹی ۱۹۸۸ء۔
- ۳- تحقیق کافن، ڈاکٹر گیان چند، ص ۱۲ (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ط اول، ۱۹۹۳ء)، بحوالہ نوین شोध و گیان از ڈاکٹر تلک سنگھ ص ۲۰ پرکاش سنسٹھان، دلی، ۱۹۸۲ء۔
- ۴- ایضاً، ص ۱۳۔
- ۵- تحقیق کے روایتی اسلوب، ڈاکٹر نجم اسلام، در تحقیق اور اصول وضع اصطلاحات، مرتب: اعجاز راہی ص ۱۳۷ (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد ط اول، ۱۹۸۶ء)۔
- ۶- تعلیمی تحقیق اور اس کے اصول و مبادی، ڈاکٹر احسان اللہ، (نگارشات میاں چیمبرز، لاہور، ۱۹۹۱ء) ص ۱۲۵۔
- ۷- فیروز اللغات (اردو) مادہ ت ن۔
- ۸- تحقیق و تنقید، سید عبداللہ، در "اردو میں اصول تحقیق" مرتبہ: ایم سلطانہ بخش ج ۱ ص ۲۹، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ط اول، ۱۹۸۶ء۔
- ۹- اصول تحقیق، اعجاز راہی، مرتب: (روداد سیمینار)، ص ۱۵، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ط اول، ۱۹۸۶ء۔
- ۱۰- سابق حوالہ۔
- ۱۱- اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، (مقدمہ)، محولہ بالا، ج ۱، ص ۱۔
- ۱۲- تحقیق کافن، گیان چند، محولہ بالا ص ۲۱، بحوالہ ڈاکٹر چندر بھان راوت و ڈاکٹر رام کمار کھنڈیلوال شोध



- پروردہی اور پرکریا، جواہر پستکالے، متھر ۱۹۷۹ء۔
- ۱۳۔ سابق حوالہ، ص ۲۱۔
- ۱۴۔ تحقیق کافن، گیان چند، محولہ بالا، ص ۲۲۔
- ۱۵۔ ایضاً۔
- ۱۶۔ ایضاً۔
- ۱۷۔ ایضاً، ص ۲۲، ۲۳۔
- ۱۸۔ تحقیق و تنقید، نکیندر، اردو میں اصول تحقیق، محولہ بالا، ج ۲، ص ۶۷۔
- ۱۹۔ تحقیق کافن، گیان چند، محولہ بالا، ص ۲۳۔
- ۲۰۔ ایضاً، ص ۲۵، ۲۶۔
- ۲۱۔ تحقیق و تنقید، سید عبداللہ، در ”اردو میں اصول تحقیق“، محولہ بالا، ج ۱، ص ۳۰۔
- ۲۲۔ ایضاً، ص ۳۷۔
- ۲۳۔ ایضاً، ص ۳۸۔
- ۲۴۔ ایضاً، ص ۳۷۔
- ۲۵۔ اصول تحقیق، وزیر آغا خان، (اردو سیمینار)، مرتب: اعجاز راہی، سابق حوالہ، ص ۱۴۱۔
- ۲۶۔ ایضاً۔
- ۲۷۔ سابق حوالہ، ص ۱۴۱۔
- ۲۸۔ ایضاً، ص ۱۴۱، ۱۴۲۔
- ۲۹۔ ایضاً، ص ۱۴۲۔
- ۳۰۔ ایضاً، ص ۱۱۲۔
- ۳۱۔ تحقیق اور اصول وضع اصطلاحات، اعجاز راہی، مرتب: پر منتخب مقالات، محولہ بالا، ص ۱۷۳، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، بتلخیص۔



- ۳۲۔ تحقیق کافن، گیان چند، سابق حوالہ، ص ۳۵۔
- ۳۳۔ اصول تحقیق، وزیر آغا خان، (اردو سیمینار) محولہ بالا، ص ۱۲۲۔
- ۳۴۔ اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، (مطالعاتی راہ نما) ص ۳۵، علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد، س۔ ن۔
- ۳۵۔ تحقیق کافن، گیان چند، محولہ بالا، ص ۲۳، ۲۴۔
- ۳۶۔ ایضاً، ص ۲۳۔
- ۳۷۔ ایضاً۔
- ۳۸۔ ایضاً، ص ۲۳، ۲۵۔
- ۳۹۔ ایضاً، ص ۲۶۔
- ۴۰۔ ایضاً، ص ۲۶۔
- ۴۱۔ ایضاً، ص ۲۷، ۲۸، بحوالہ ”کچھ اصول تحقیق کے بارے میں“ مشمولہ ادبی تحقیق، مسائل اور تجزیہ ص ۲۱، علی گڑھ، ۱۹۷۸ء۔
- ۴۲۔ الفہرست، ابن ندیم (محمد بن اسحاق متوفی ۳۸۵ھ)، اردو ترجمہ از محمد اسحاق بھٹی ص ۶، ۷، ۸، ادارہ ثقافت اسلامیہ، لاہور، ط دوم ۱۹۹۰ء۔
- ۴۳۔ سابق حوالہ ص ۵۔
- ۴۴۔ نمبر ۱۲، تحقیق کے روایتی اسلوب، نجم الاسلام، در وضع اصطلاحات، محولہ بالا، ص ۱۵۲ تا ۱۵۶، چنناؤ کے ساتھ۔
- ۴۵۔ تفصیلات کے لیے دیکھئے: سابق حوالہ، ص ۱۵۸ تا ۱۶۱۔
- ۴۶۔ تاریخ التراث العربی، ڈاکٹر فواد سزگین، جلد اول میں سے مقدمہ علوم الحدیث کا اردو ترجمہ بنام ”مقدمہ تاریخ تدوین حدیث“ مترجم: سعید احمد، پیش لفظ از ڈاکٹر شیر محمد زمان، ص ۱۱، ادارہ تحقیقات بین الاقوامی اسلامی یونیورسٹی اسلام آباد، س۔ ن۔
- ۴۷۔ اردو میں تحقیقی اصول و طریق کار سے متعلق توثیقی سرمایہ، رابعہ اقبال، مجلہ ”تحقیق“ چوتھا شمارہ، ص ۳۱۹، ۳۲۰، شعبہ اردو، سندھ یونیورسٹی، ۱۹۹۰ء۔



باب ۳

تحقیق کی خصوصیات اور

اس کے بنیادی لوازم



## تحقیق کی خصوصیات اور اس کے بنیادی لوازم

### اولاً: تحقیق کی خصوصیات

خصوصیات سے مراد وہ معیارات ہیں جن کی بنیاد پر کوئی بھی تحقیق مقبول ہوتی ہے اور اسے اچھا کہا جاتا ہے۔ فن تحقیق کے ماہرین نے ایک اچھی تحقیق کے لیے جن خصوصیات و اوصاف کو بیان کیا ہے، اجمالاً انھیں درج ذیل نکات کی صورت میں بیان کیا جاتا ہے:

#### ۱۔ مسئلہ (موضوع)

تحقیق کا سب سے پہلا قدم مسئلہ کا انتخاب ہے۔ اس کے بغیر تحقیق کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ تحقیق کی افادیت کا دار و مدار ہی منتخب مسئلہ پر ہوتا ہے۔ مسئلہ جس قدر اہم ہوگا تحقیق اسی قدر مفید ہوگی۔ اس مقصد کے حصول کے لیے محقق کو چاہیے کہ مسئلہ کا مطالعہ اچھی طرح سے کرے کیونکہ مطالعہ ہی کسی مسئلہ کے انتخاب میں مدد و معاون ثابت ہوتا ہے۔ چونکہ مطالعہ ہی سے کسی مسئلہ کے متعلق پتہ لگایا جاسکتا ہے کہ اس پر کام کرنے کی ضرورت بھی ہے یا کہ نہیں؟ لہذا محقق کو چاہیے کہ وہ درج ذیل امور کی تصدیق اچھی طرح سے کر لے تاکہ بعد میں پیدا ہونے والی پیچیدگیوں اور پریشانیوں پر ابتداء ہی میں قابو پایا جاسکے:

۱۔ مسئلہ کے بارے میں وہ کتنا اور کیا جانتا ہے؟

۲۔ زیر غور مسئلہ پر اس سے بیشتر ہونے والے کام کی نوعیت و کیفیت اور کمیت کیسی ہے؟

۳۔ کیا موجودہ مسئلہ کی نوعیت دوامی قسم کی ہے؟

۴۔ دوسرے لوگوں نے اس مسئلہ کے بارے میں کن خیالات کا اظہار کیا ہے اور اس مسئلہ



کے بارے میں ان کا رد عمل کیا رہا ہے؟

۵۔ کیا دوسرے لوگوں نے اس مسئلہ پر تحقیق کی (ہے) اور حل دریافت کیا ہے؟ اگر کیا ہے تو نتائج کیا نکلے؟

۶۔ ان نتائج کی روشنی میں یا ان لوگوں کی تجاویز کو سامنے رکھتے ہوئے آیا اسی مسئلہ پر مزید تحقیق کی گنجائش موجود ہے؟،، (۱)۔

۷۔ محقق کو اس امر کی تصدیق بھی کر لینی چاہیے کہ موضوع سے متعلقہ مواد ”اپنے مستند ماخذوں سے اخذ کیا گیا ہے یا محض روایات اور تاریخی تسلسل کے بغیر پیش کیا گیا ہے؟ اگر ماخذ مواد کی صداقت کے ذمہ دار نہیں ہیں اور مواد دستاویزی تسلسل کے بغیر سامنے لایا گیا ہے تو پھر اس کی صداقت مشتبہ ہو جائے گی،، (۲)۔

مقالہ کے دوران ان امور کی معرفت ہی کسی محقق کے لیے انتخاب موضوع کے مرحلہ میں آسانی پیدا کر سکتی ہے اور اس معرفت سے وہ موضوع کی جدت و ندرت اور اہمیت و افادیت کا اندازہ لگا سکتا ہے، چنانچہ عبدالرزاق قریشی C. ALMACK کے حوالے سے لکھتے ہیں کہ:

”دوسروں کے کام کے جائزہ کے بعد ہی محقق اپنی تحقیق کی جدت کا اندازہ کر سکتا ہے“ (۳)۔

اس کے بعد مشہور انگریزی شاعر بائرن کے حوالے سے لکھتے ہیں کہ: ”جدت کے لیے یہ ضروری ہے کہ ادیب (یا محقق) سوچے زیادہ اور پڑھے کم لیکن یہ ناممکن ہے۔ سوچنے سے پہلے اس نے بہت کافی پڑھ لیا ہوگا“ (۴)۔

### مسئلے کے انتخاب میں معاون ذرائع

مسئلے کے انتخاب کے سلسلہ میں محققین نے درج ذیل ذرائع کے التزام کی سفارش کی ہے:

۱۔ محقق کو پہلے تحریر شدہ مطبوعہ و غیر مطبوعہ تحقیقی مقالہ جات کا مطالعہ کرنا چاہیے، چنانچہ

عبدالرزاق قریشی لکھتے ہیں کہ: ”جائزہ لینے کے علاوہ نئے محققین کو ماہر محققین کی



تصانیف کو نمونہ کے لیے بھی سامنے رکھنا چاہیے۔ اچھی تحقیق کا صحیح تصور پیدا کرنے کے لیے یہ بہترین طریقہ ہے“ (۵)۔ اسی طرح ”اگر ماہر محققین کے ذاتی تجربے اور تجویزیں، ان کا مضمون چاہے کچھ بھی رہا ہو، تحریری شکل میں مل سکیں تو ان سے بھی استفادہ کرنا چاہیے۔ یہ تجربے نئے محققین کے لیے چراغِ راہ کا کام دے سکتے ہیں“ (۶)۔

۲۔ مختلف نوعیت کے مضامین کے مطالعہ کے دوران متعلقہ امور کو نوٹس کی صورت میں محفوظ کرنا۔

۳۔ فن تحقیق سے وابستہ افراد سے مسئلہ کے متعلق گفتگو کرنا۔

۴۔ حوالہ جاتی کتب کا مطالعہ کرنا۔

۵۔ موضوع سے متعلقہ افلام، ٹی۔ وی پروگرام اور تحریری و تقریری تبصروں کا تنقیدی نگاہ سے جائزہ لینا۔

۶۔ متعلقہ اداروں کے سربراہان اور دیگر ارکان سے تبادلہ خیال کرنا۔

۷۔ اساتذہ کرام اور پہلے سے تحقیقی کام میں مشغول طلباء سے مسئلہ کے بارے میں ملاقاتیں اور تبادلہ خیالات کرنا (۷)۔

## ۲۔ طریق کار

فن تحقیق کے ماہرین کے ہاں اچھی اور معیاری تحقیق وہ ہوتی ہے جس کا طریق کار واضح اور سادہ ہو، یہ صرف اسی صورت میں ممکن ہے کہ محقق اپنے تحقیقی عمل کی بنیاد منطقی و معروضی معیارات پر رکھے، اور ذاتی جذبات و تعصبات کو تحقیقی عمل میں کسی بھی سطح پر داخل نہ ہونے دے۔ ”اگر تحقیق میں ذرہ برابر بھی شائبہ ہو کہ محقق تعصب سے کام لے رہا ہے یا اپنی پسند کے نظریے کو آگے بڑھا رہا ہے تو اس کی ساری تحقیقی محنت اکارت جائے گی۔ کیونکہ اس کی نیت ہی مشکوک ہو چکی ہے اور وہ ایک سچے محقق کے منطقی اور معروضی معیار پر پورا نہیں اتر رہا ہے۔ تحقیقی کام خالصتاً



معروضی عمل ہے۔ اس میں کسی نوعیت کے جذبات کا دخل بالکل قبول نہیں کیا جاسکتا“ (۸)۔  
 تحقیقی عمل میں محقق کا طریق کار سائنسی ہونا چاہیے کیونکہ تحقیق: ”ایک سائنسی عمل ہوتا ہے جس میں معروضات پر تجربے و مشاہدے کے بعد حاصل ہونے والے نتائج کو محقق قلم بند کرتا چلا جاتا ہے۔ اس عمل میں اس کی ذات بالکل الگ ہوتی ہے۔ محقق حقائق و واقعات کو معتبر ذرائع سے حاصل کر کے ان کا معروضی طور پر تجزیہ کرتا چلا جاتا ہے اور جو نتائج ہوتے ہیں ان کو یکجا کر کے بالآخر ایک نقطہ نظر قائم کرتا ہے۔ یوں اس کی تحقیق کی بنیاد منطقی و معروضی معیارات پر استوار ہوتی ہے“ (۹)۔

اسی اساس پر محققین نے سائنسی طریقہ کار کو اختیار کرنے کا مشورہ دیا ہے کیونکہ ”یہ طریقہ اختیار کرنے سے کام نہ صرف منظم و مرتب ہوگا بلکہ جو نتیجہ اخذ کیا جائے گا وہ محقق کے ذاتی رجحان یا روایتی اثر سے آزاد ہوگا۔ اس کی ابتداء ہی صحیح نتیجہ حاصل کرنے کے عزم سے ہوتی ہے۔ اس لیے جہاں تحقیق ہے وہاں سائنس ہے اور جہاں مظاہر فطرت ہیں وہاں تحقیق ہے“ (۱۰)۔  
 حاصل کلام یہ ہے کہ اسلوب کے اعتبار سے تحقیق کی خصوصیت یہ ہے کہ وہ بہتر، مستند اور واضح ہو اور اس میں ذاتی دلچسپیوں اور تعلقات و مراسم کا عمل دخل نہ ہو۔

### تحقیق میں قیاس و تخیل کا عمل دخل

اوپر کی سطور میں بتایا جا چکا ہے کہ تحقیقی عمل میں معروضی اسلوب اختیار کرنے کی بنیاد پر حقائق و واقعات یکجا کیے جاتے ہیں لیکن بعض اوقات مسئلہ سے متعلق حقائق و واقعات نہیں مل سکتے، تو ایسی صورت میں مجبوراً محقق کو قیاس یا تخیل سے کام چلانا پڑے گا، چنانچہ ڈاکٹر تبسم کاشمیری لکھتے ہیں:

۱۔ ”..... تاریخ ادب کے کسی مرحلے پر جب مواد دستیاب نہیں ہوتا تو مواد نہ ملنے کی صورت میں قیاس سے کام لیا جاتا ہے، کیونکہ اس کے بغیر ادبی تاریخ کا تسلسل قائم نہیں رہ



سکتا، ماضی کی دھند لکوں کو محقق قیاس آرائی سے روشنی عطا کرتا ہے“ (۱۱)۔

۲۔ ”ادبی تاریخ میں قیاس ہوائی نہیں ہوتا بلکہ قیاس بھی دلائل کی روشنی میں مرتب کیا جاتا ہے اور ان دلیلوں سے جو استنباط ہوتا ہے اسے منطقی طور پر ثابت کیا جاسکتا ہے۔ قیاسی تحقیق میں یہ بات ضروری ہے کہ محقق منطقی دلائل دے، اس کا قیاس منطقی طور پر جتنی مضبوط بنیادوں پر قائم ہوگا، اتنا ہی قابل قبول سمجھا جائے گا“ (۱۲)۔

اور جہاں تک تحقیق میں تخیل کی کارفرمائی کا تعلق ہے تو محققین نے اسے ضروری قرار دیا

ہے کیونکہ:

۱۔ ”..... اسی کی مدد سے وہ (یعنی محقق) نئی نئی باتیں سوچ سکتا ہے، یہاں تک کہ مستقبل کو بھی دیکھ سکتا ہے۔ لیکن یہ تخیل منظم ہونا چاہیے۔ یہی منظم تخیل ہے جو تمام عظیم سائنسی اکتشافات میں کام کرتا ہے۔ جس شخص کے پاس تخیل نہیں وہ حقائق کو جمع تو کر سکتا ہے لیکن اکتشافات نہیں کر سکتا.....“ (۱۳)۔

۲۔ ”حقیقت کا سراغ، حقیقت کی مناسب توضیح، تفتیش و تصدیق کے لیے متعلقہ اور اہم حقائق کا انتخاب، ان سب کاموں میں تحقیق کو تخیل کا سہارا لینا پڑتا ہے جو انتخابی یا تحقیقی شعور کی شکل میں ظاہر ہوتا ہے“ (۱۴)۔

۳۔ ”اس کے علاوہ مختلف شواہد و روایات کی تطبیق، تفتیش اور ترتیب کی مدد سے کسی نتیجہ تک پہنچنا اور ان میں کسی ایک روایت کو صحیح اور دوسری کو غلط یا غیر مستند قرار دینے کے لیے بھی ضروری ہے کہ حقائق کے مختلف ٹکڑوں کو ایک پیکر میں ڈھالا جائے اور ان کی مدد سے ایک تصویر یا ایک خیال تک رسائی حاصل کی جائے۔ یہ کام تخیل کی مدد کے بغیر سر انجام نہیں پاسکتا“ (۱۵)۔

یہی وہ وجوہات ہیں جن کی بنیاد پر تحقیق میں قیاس و تخیل کے عمل دخل کو تسلیم کیا گیا



ہے ”اس لیے یہ خیال کہ قیاس اور تخیل کی تحقیق میں کوئی گنجائش نہیں ہے حقیقت سے بعید ہے۔ البتہ یہ تسلیم کرنا چاہیے کہ تخلیق میں جس طرح تخیل کا عمل غالب ہوتا ہے، اسی طرح تحقیق میں عمل غالب نہیں ہوتا بلکہ سائنٹیفک ذریعہ تفتیش اور حقائق کے تابع ہوتا ہے۔ تخیل صرف حقائق کی سنگین حد بندی ہی میں عمل پذیر ہو سکتا ہے اور ان حد بندیوں سے وہ زیادہ دور تک تجاوز نہیں کر سکتا“ (۱۶)۔

### ۳۔ مواد کا تجزیہ

معیاری تحقیق کی خصوصیات میں سے ایک یہ بھی ہے کہ اس سے متعلقہ مواد کا تجزیہ کیا جائے اور چھان پھٹک کے بعد صرف اسی مواد کو اختیار کیا جائے جو زیادہ مفید ہونے کے ساتھ ساتھ مستند بھی ہو، کیونکہ ”تحقیق میں کسی واقعہ، کسی حقیقت یا کسی بھی تصور کو جوں کا توں قبول نہیں کیا جاتا ہے۔ تحقیق کا بنیادی اصول یہ ہے کہ ہر قسم کے حقائق اور واقعات کا پورے طور پر تجزیہ کر کے، اور ان کی اچھی طرح چھان بین کر کے، انہیں تسلیم کیا جائے۔ اس لیے یہ کہا جاتا ہے کہ شک و شبہ ہی سے تحقیقی کام کی ابتداء ہوتی ہے۔ یا ہم یوں کہہ سکتے ہیں کہ کسی مسئلہ پر شک کا پہلو ہی تحقیقی مسئلہ کا نقطہ آغاز ہے۔ یہ محقق کا مسلک ہے کہ وہ ہر مسئلہ پر پہلے شک و شبہ کرتا ہے اور تحقیقی طریق کار سے اس مسئلے کی صداقت یا تکذیب کا اعلان کرتا ہے۔ اپنے اس مسلک کے باعث وہ جعل سازی اور فریب کاری سے محفوظ رہتا ہے“ (۱۷)۔

### فائدہ

اگر محقق اس طریقہ کار کا التزام کرے تو معیار کے اعتبار سے اس کے تحقیقی عمل کی قدر و قیمت بڑھ جائے گی، چنانچہ ڈاکٹر تبسم کاشمیری لکھتے ہیں: ”تحقیق کے اس طریق کار سے کام کا معیار بلند ہوتا ہے کیونکہ اس طرح ہر بیان کے بارے میں مستند حوالے طلب کیے جاتے ہیں۔ ان کے بغیر کسی بات کو قبول نہیں کیا جاتا“ (۱۸)۔



فن تحقیق کے ماہرین نے مواد کے تجزیہ کے سلسلے میں درج ذیل باتوں کا خیال رکھنا

ضروری قرار دیا ہے:

- ۱۔ تجزیہ کے وقت اپنے موضوع کو واضح صورت میں سامنے رکھا جائے۔
- ۲۔ موضوع کے مختلف حصوں سے مواد کے تعلق کا لحاظ رکھا جائے۔
- ۳۔ یہ بھی ذہن میں رکھا جائے کہ ہر باب اور فصل کے لیے مواد مساویانہ طور پر موجود ہے یا کہ نہیں؟ اگر پتہ چل جائے کہ فلاں حصہ کے لیے مواد کمزور ہے تو حتی المقدور اس کمی کو دور کرنے کی کوشش کی جائے (۱۹)۔

مختصر یہ کہ معیاری تحقیق صرف وہی ہو سکتی ہے جس میں مواد کو تجزیہ کے مرحلہ سے گزار

کر پیش کیا گیا ہو اور غیر ضروری مواد، جو کہ ایک بوجھ ہوتا ہے، سے بچایا گیا ہو۔

### ۴۔ متوقع نتائج

تحقیق کی خصوصیات میں سے ایک اس کے متوقع نتائج و ثمرات کا اظہار ہے۔ یہ عمل تحقیق کا لازمی جزء ہے، کیونکہ ”تحقیق نئے حقائق اور نتائج دریافت کرنے کا نام ہے جس میں تصورات کی نئی تعبیر کی جاتی ہے، نئے افق سامنے لائے جاتے ہیں، تحقیق جس قدر اصل ہوگی اور اس میں دریافتوں کی مقدار جس قدر زیادہ ہوگی، تحقیق اتنی زیادہ معیاری سمجھی جائے گی“ (۲۰)۔ حقیقت یہ ہے کہ حقائق کی تلاش تو تحقیق کا اولین مرحلہ ہے۔ حقائق معلوم کرنے کے بعد جب تک محقق ان کی تعبیر۔ نتائج کی صورت میں۔ پیش نہیں کرتا، تحقیق کا کردار ادھورا رہتا ہے۔ تحقیق کی صحیح جہت یہ ہے کہ تحقیق حقائق سے نظریے کی طرف سفر کرے (۲۱)۔ حقائق کے تجزیاتی اور تنقیدی جائزے سے نتائج کا اخذ کرنا ضروری ہے۔ نتائج کے بغیر تحقیق کا تصور بھی نہیں کیا جاسکتا۔ لہذا تحقیق کا تنقیدی ہونا ضروری ہے۔ تحقیق پر اس سے زیادہ جبر اور کوئی نہیں ہو سکتا کہ اسے تنقیدی توضیح و تشریح، تعبیر اور نتائج کی جہت سے یکسر محروم کر دیا جائے۔ (۲۲)۔



## ۵۔ خاکہ تحقیق

مذکورہ بالا چاروں خصائص کو کسی بھی تحقیق کے خاکہ کے ذریعہ بطریق احسن واضح کیا جا سکتا ہے۔ محققین کے نزدیک معیاری تحقیق وہ ہے جس کی عمارت بنانے سے قبل اس کا خاکہ یعنی ڈیزائن تیار کیا جائے۔ تحقیقی عمل کا خاکہ کسی مکان کے نقشہ کی مانند ہوتا ہے، جسے ایک انجینئر کاغذ پر تیار کرتا ہے۔ یونیورسٹیوں میں اعلیٰ تعلیمی ڈگریوں کے حصول کے لیے طلبہ کو کسی موضوع پر مقالہ لکھنے کے لیے اس کا خاکہ تیار کرنا ہوتا ہے، جس میں عموماً درج ذیل امور بیان کرنے ہوتے ہیں:

۱۔ موضوع کو اختیار کرنے کے اسباب و محرکات۔

۲۔ متعلقہ مواد کے مطالعہ کے بعد نتائج کا بیان۔ یہاں طالب علم کو ثابت کرنا ہوتا ہے کہ موضوع پر پہلے کام کی نوعیت کیا ہے اور وہ خود کیا کرے گا۔

۳۔ موضوع کی اہمیت

۴۔ مقالہ کی تکمیل کے بعد علمی و تحقیقی دنیا میں اس کی افادیت۔

۵۔ مقالہ کی ترتیب و تالیف کا اسلوب۔

ان امور کے بعد موضوع کے خاکہ کو تمہید، ابواب، فصول و مباحث وغیرہ اور خاتمہ (نتائج) کی صورت میں منظم و مرتب طور پر تیار کیا جاتا ہے۔ خاکہ کے آخر میں بھلیوگرانی (مصادر و مراجع کی فہرست) بھی تیار کر کے منسلک کرنا پڑتی ہے۔

نا تجربہ کار افراد کو کسی موضوع پر تحقیق کے لیے اس کا خاکہ بنانے میں کافی دشواریوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔ مگر انھیں ہر صورت میں یہ کام کرنا پڑتا ہے کیونکہ اسی کے ذریعہ ان کی تحقیق کی افادیت کو باسانی معلوم کیا جاسکتا ہے۔ اگر طالب علم محنتی اور تسلسل کے ساتھ کام کرنے کا عادی ہو تو مشکل پر کسی نہ کسی طرح قابو پا ہی لیتا ہے (۲۳)۔

ان پانچ خصوصیات کے علاوہ بھی فن تحقیق کے ماہرین نے تحقیق کی کچھ اور خصوصیات

اس کی افادیت و اہمیت کے اعتبار سے بیان کی ہیں، ان میں سے چند ایک یہ ہیں:



## ۶۔ حیات انسانی کا جزو لاینفک

تحقیق کی ایک خوبی یہ ہے کہ یہ انسانی زندگی کا جزو لاینفک ہے کیونکہ ”تحقیق کی ابتداء انسانی مسائل کی ابتداء کے ساتھ ہی ہوتی ہے جوں جوں انسانی مسائل بڑھے، تحقیق آگے بڑھی۔ تحقیق کے عمل سے انسان نے ان مسائل کو حل کر کے زندگی کو آسان بنا دیا“ (۲۴)۔

## ۷۔ ماضی، حال و مستقبل میں ربط

تحقیق ہی سے انسان اپنے حال کو بہتر بناتا ہے اور ماضی کی تاریکیوں کو دور کر کے اسے روشنی عطا کرتا ہے۔ اسی کے ذریعہ سے انسان ماضی کی گمشدہ کڑیاں دریافت کرتا ہے۔ تاریخی تسلسل کو بحال کرتا ہے اور ادب کو اس کے ارتقاء کی صورت میں مربوط کرتا ہے (۲۵)۔

## ۸۔ موجودہ مواد کی ترتیب

تحقیق کے ذریعہ انسان موجودہ مواد کو مرتب کرتا ہے، اس کا تجزیہ کرتا ہے، اس پر تنقید کرتا ہے، پھر اس سے حاصل ہونے والے نتائج سے دوسروں کو آگاہ کرتا ہے۔

## ۹۔ انسانی ترقی

تحقیق ہی کی بدولت انسان ہر نوعیت کی ترقی کی راہوں پر گامزن ہوتا ہے، ”اگر تحقیق نہ ہو تو ہر قسم کی ترقی ختم ہو جائے گی اور انسانی تہذیب کا ارتقاء رک جائے گا“ (۲۶)۔ عبدالرزاق قریشی نے Method of research کے مصنفین کے حوالے سے لکھا ہے کہ انھیں ”تحقیق پر اس قدر اعتماد ہے کہ وہ کہتے ہیں: جب تک تحقیق کا وجود ہے، مغربی تہذیب کو زوال نہیں آسکتا، (۲۷)۔ پھر ان کی تائید کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

”انہوں نے صحیح کہا ہے کہ مختلف شعبوں میں تحقیق کی بناء پر ہم اپنے خیالات کو وسعت دے سکتے ہیں، یہاں تک کہ عہد رفتہ کا نقشہ ہماری نگاہوں کے سامنے آسکتا ہے۔ اسی کی بدولت ہم دنیا کی



گونا گوں تہذیبوں کو اپنا سکتے ہیں، غیر مرئی چیزوں کو دیکھ سکتے ہیں۔ اسی طرح تحقیق آدمی کو پوری کائنات سے رشتہ جوڑنے میں مدد دیتی ہے،، (۲۸)۔

### ۱۰۔ بے کنار سمندر و ترقی پسند قوت

تحقیق کی ایک خصوصیت یہ بھی ہے کہ یہ ایک بے کنار سمندر کی مانند ہے۔ ”محقق ایک وقت میں دھوکہ کھا کر کسی چیز کو کنارہ سمجھ بیٹھتا ہے مگر درحقیقت یہ کنارہ نہیں ہوتا..... گویا تحقیق ایک ترقی پسند قوت ہے اور یہ سماجی عمل کے ساتھ ساتھ پورے معاشرتی عمل میں ترقی کرتی ہے.....“ (۲۹)۔

### ۱۱۔ نظریات میں تغیر و تبدل کا سبب

تحقیق انسانی نظریات و افکار میں، مرور زمانہ کے ساتھ ساتھ، تغیر و تبدل کا سبب بنتی ہے۔ اس بنیاد پر کسی بھی نظریہ کو حرف آخر نہیں کہا جاسکتا، چنانچہ ڈاکٹر تبسم کاشمیری لکھتے ہیں:

”چونکہ تحقیق ایک ترقی پسند قوت ہے اس لیے اس میں کوئی بھی نظریہ حتمی، قطعی اور آخری نہیں ہوتا ہے۔ تلاش و جستجو اور ایک مسلسل جاری رہنے والے عمل کے باعث نظریات بدلتے رہتے ہیں۔ اس طرح ادبی نظریات معاشرے کے ساتھ ساتھ آگے بڑھتے رہتے ہیں۔ ان میں ایک حرکی عمل جاری و ساری ملتا ہے۔ عمل کی یہی صورت ادبی نظریات میں بھی ملتی ہے، یہ صورت صرف ادب تک محدود نہیں، انسانی نظریات بھی ان مسلسل تبدیلیوں کے باعث اپنے اپنے قالب میں بدلتے رہتے ہیں.....“ (۳۰)۔

مختصر یہ کہ ”تحقیق آدمی کے لیے نئی نئی رائیں کھولتی ہے۔ وہ مسائل کو حل کرتی ہے اور گتھیوں کو سلجھاتی ہے، وہ خامیوں کو دور کرتی ہے اور خوب کو خوب تر بناتی ہے..... وہ انسان کے مقاصد کی تکمیل میں معین ثابت ہوتی ہے،، (۳۱)۔

علاوہ ازیں ”علوم و فنون کی ترقی، تعلیم و تربیت کے ماہرانہ طریقے، زندگی کی راحت



کے سامان کی فراوانی، انسانی دکھوں کا علاج اور مشکلات کا حل تحقیق ہی کی بدولت ہے۔ اس طرح کہا جاسکتا ہے کہ تحقیق کا مقصد انسانیت کی خدمت ہے،، (۳۲)۔

آخر میں، اس بحث کو سمیٹتے ہوئے، کرافورڈ کی بیان کردہ تعلیمی تحقیق کی خصوصیات کو

بیان کیا جاتا ہے، جو کہ یہ ہیں:

- ۱۔ اس کا مرکز کوئی مسئلہ ہوتا ہے۔
- ۲۔ اس میں کوئی نئی بات کہی جاتی ہے۔
- ۳۔ اس کا دار و مدار جستجو پسند دل اور دماغی رجحان پر ہے۔
- ۴۔ اس کے لیے کھلے دل و دماغ کی ضرورت ہے۔
- ۵۔ اس کا انحصار اس مفروضہ پر ہے کہ دنیا کی ہر چیز میں تبدیلی ممکن ہے۔
- ۶۔ اس کا مقصد قوانین کا انکشاف کرنا اور پھر انہیں عام بنانا ہے۔
- ۷۔ یہ سبب اور اثر کا مطالعہ ہے۔
- ۸۔ اس کی بنیاد پیمانہ پر ہے۔
- ۹۔ اس کے لیے بیدار فنی طریقہ کار لازمی ہے (۳۳)۔

### ثانیاً: تحقیق کے لوازم

لوازم سے مراد وہ امور ہیں جن کا اہتمام کرنا ایک محقق کے لیے ضروری ہے یا یوں سمجھئے کہ وہ بنیادیں جن پر تحقیقی عمل کی عمارت استوار ہوتی ہے یا وہ لازمی شرائط جن کے التزام سے تحقیقی کام میں کامیابی نصیب ہوتی ہے۔ فن تحقیق کے ماہرین نے درج ذیل لوازمات کو تحقیق کے لیے ضروری قرار دیا ہے:

### ۱۔ تحقیق کو بطور طرز زندگی اپنانا

ایک بہترین، معیاری اور سچا محقق صرف وہی ہو سکتا ہے جو تحقیق کو ایک طرز زندگی اور



لائف اسٹائل کے طور پر اپنائے، اور اسے ایک اضافی خوبی تصور نہ کرے کیونکہ ”ہمارے اعلیٰ پائے کے محققوں نے ہمارے اپنے زمانے میں اور محقق محدثین نے گذشتہ زمانوں میں زندگیوں میں اسی طرز پر گزاری ہیں۔ وہ تلاش حقیقت یا تلاش حقائق کے بڑے بڑے جو یا تھے، اس کے لیے۔۔۔، سفر کرنے والے اور آرام کو تجننے والے تھے۔ انہوں نے اپنی عملی زندگی کے آغاز ہی سے علمی میدان میں محنت اور سخت کوشی اختیار کر لی۔ اپنی بہت سی جائز ضرورتوں اور سہولتوں پر علمی اسفار و کتب کو مقدم جانا اور ایک ایسے طریقے پر زندگی بسر کی جو تحقیقی کاموں کے لیے موزوں و مناسب تھا،..... انہوں نے تحقیق کو چند روزہ شغل..... یا فیشن نہیں بنایا، اپنا طرز زندگی بنایا،، (۳۴)۔

## ۲۔ سچی لگن

تحقیق کو بطور طرز زندگی اپنانے کے لیے سچی لگن کا ہونا ضروری ہے۔ یہ اس راستے کا پہلا قدم ہے۔ اس کے بغیر تحقیقی لائف سٹائل کا تصور ہی نہیں کیا جاسکتا۔ کیونکہ تحقیقی میدان میں ڈٹ کر محنت کرنے کی ضرورت ہوتی ہے اور محنت کرنے کا مادہ سچی لگن ہی سے میسر آسکتا ہے۔ اگر کسی عمل، خواہ وہ تحقیقی ہو یا غیر تحقیقی ہو، میں عامل کی سچی لگن و ذاتی دلچسپی نہ ہو تو وہ ادھورا ہی رہتا ہے یا پھر ہو ہی نہیں سکتا۔ سچی لگن پیدا کرنے میں راہنما اور ماحول اچھا کردار ادا کر سکتے ہیں، چنانچہ ڈاکٹر غلام مصطفیٰ ملک لکھتے ہیں کہ: ”جس کو اپنی علمی زندگی کے آغاز میں ایسا راہ نما اور ایسا ماحول مل جاتا ہے کہ وہ سچی لگن میں سازگار ہو، اس کے لیے تحقیق کی دشواریاں نسبتاً آسان ہو جاتی ہے،، (۳۵)۔

## ۳۔ مختلف علوم سے واقفیت

تحقیق کے لیے منتخب شدہ موضوع کے بارے میں وافر معلومات کا ہونا تو بنیادی شرط ہے مگر اس کے ساتھ ساتھ دیگر علوم و فنون کے بارے میں آگاہ ہونا بھی ضروری ہے تاکہ بوقت ضرورت ان کی طرف رجوع کر کے مطلوبہ مواد کو حاصل کیا جاسکے، مثلاً: علوم القرآن کی کسی صنف



پر تحقیقی کام کرنے والے کے لیے ضروری ہے کہ وہ علوم القرآن کے علاوہ علوم حدیث، اصول فقہ وغیرہ سے واقف ہو۔ تحقیقی میدان میں اس شرط کی افادیت سے انکار محال ہے۔

### ۴۔ اہم مصادر و مراجع سے واقفیت

محقق کے لیے ضروری ہے کہ وہ اپنے تحقیقی عمل سے متعلقہ اہم، مستند اور بنیادی نوعیت کے ماخذ و منابع سے بخوبی آشنا ہو اور ان تک اس کی رسائی آسان ہو۔ اس شرط کے بغیر تحقیق کا تصور بالکل نہیں کیا جاسکتا۔ ماخذ دو طرح کے ہوتے ہیں: ایک بنیادی ماخذ، جن میں ابتدائی معلومات درج ہوتی ہیں جیسے مخطوطات، خودنوشت سوانح عمریاں اور خطوط وغیرہ۔ اور دوسرے ثانوی ماخذ، جن کی تیاری میں بنیادی ماخذوں پر اعتماد کیا جاتا ہے، جیسے یونیورسٹیوں میں لکھے جانے والے مقالات کہ انھیں طلبہ اکثر و بیشتر بنیادی ماخذوں تک رسائی حاصل کر کے تیار کرتے ہیں۔ تحقیقی و علمی دنیا میں شرف قبولیت ان ہی مقالات کو حاصل ہوتا ہے اور قدر و قیمت ان ہی کی بڑھ جاتی ہے جن کی تیاری میں بنیادی مصادر و منابع کو استعمال کیا گیا ہو۔ اس لیے محقق طالب علم کو بنیادی ماخذ تک رسائی حاصل کرنے میں خوب کوشش کرنی چاہیے۔

### ۵۔ زبانوں سے واقفیت

جس زبان میں تحقیق کرنا ہو اس پر مکمل دسترس ضروری ہے، تھوڑی بہت واقفیت سے کام نہیں چل سکتا۔ محقق جس زبان میں زیادہ ماہر ہو اسے اسی زبان میں تحقیقی کام کرنا چاہیے۔ متعلقہ زبان کے علاوہ دیگر زبانوں، جیسے عربی، فارسی اور انگریزی وغیرہ سے بھی محقق آشنا ہو۔ یہاں آشنا ہی سے مراد صرف بول چال نہیں ہے بلکہ ادبی زبان مراد ہے، مثلاً: اردو زبان میں تفسیر و حدیث یافتہ و اصول فقہ پر تحقیقی کام کرنے والے کے لیے ضروری ہے کہ وہ عربی زبان سے اس قدر واقف ہو کہ بنیادی ماخذ، جو کہ صرف عربی میں ہیں، سے موضوع سے متعلقہ مواد اقتباسات کی صورت میں حاصل کر سکے اور ضرورت کے مطابق ان کی بالمعنی تعبیر کر سکے اور اردو میں ان کا ترجمہ بھی کر سکے۔



## ۶۔ حصول مواد کے ذرائع سے واقفیت

مواد کی فراہمی چونکہ تحقیق کی ایک اہم منزل ہے اور اس کی تلاش اس کے ذرائع سے ہوتی ہے۔ یہاں ذرائع سے مراد مصادر اور مراجع نہیں ہیں بلکہ لائبریریاں اور افراد ہیں، جن سے متعلقہ مواد کو حاصل کیا جاتا ہے۔ حصول مواد کے ذرائع سے واقفیت اور پھر ان تک رسائی تحقیقی عمل میں بہت ضروری ہے۔ محقق کو لائبریریوں کو استعمال کرنے کے اسالیب سے بخوبی واقف ہونا چاہیے اور لائبریریوں کے عملہ سے اچھے تعلقات رکھنے چاہیے۔ اس کے علاوہ علوم و فنون کے ماہرین سے آگاہی کے علاوہ ان سے ملاقاتیں اور مشورے بھی حصول مواد کے سلسلہ میں اہم کردار ادا کرتے ہیں۔ ایک فائدہ یہ بھی ہوتا ہے کہ بہت جلد محقق اپنی منزل کی طرف جانے والے طریق پر چل پڑتا ہے اور کئی مشکلات و صعوبات پر قابو پالیتا ہے، چنانچہ ڈاکٹر غلام مصطفیٰ لکھتے ہیں:

”الجھنیں اور دشواریاں تو اس راہ میں بہت سی آتی ہیں..... اس حالت سے نکلنے کا آسان ترین وہی [راستہ] ہے جس پر ہم نے اپنے زمانہ کے بڑے بڑے فضلاء کو کار بند پایا ہے یعنی یہ کہ جو بات سمجھ میں نہ آئے زیادہ جاننے والے سے پوچھ لیں۔ مشورہ اچھی چیز ہے۔ اس سے تحقیق کی اکثر مشکلات حل ہو جاتی ہیں.....“ (۳۶)۔

## ۷۔ حقائق کی تلاش اور چھان پھٹک

تحقیق کا مقصد ہی چونکہ ”حقائق کی تلاش، امتیاز حق و باطل، سچائیوں کی دریافت اور نظریات کی تصدیق و تکذیب ہے“، (۳۷)۔ یہ مقاصد صرف اسی صورت میں حاصل ہو سکتے ہیں کہ محقق جمع شدہ مواد کو خوب چھان پھٹک کے بعد مقالہ میں درج کرے۔ یہ نہ ہو کہ ہر رطب و یابس کو بس یوں ہی لکھتا چلا جائے اور کتب سے صرف اقتباسات کو ترتیب دیتا چلا جائے۔ تحقیق اس چیز کا نام نہیں ہے۔ تحقیق میں محقق کی شخصیت غیر جانبدارانہ طور پر نمایاں ہونی چاہیے۔ اسے ہر کسی کی بات کو شک کی نظر سے دیکھنا چاہیے۔ اس کے بغیر چھان پھٹک نہیں ہو سکتی۔ ڈاکٹر گیان



چند ایٹک کے حوالے سے لکھتے ہیں کہ اس نے کہا:

”اچھا محقق ہونے کے لیے اچھا مشکلگ ہونا ضروری ہے۔ اسے انسانوں کی حق گوئی اور ان کے اقوال کی صحت کے بارے میں خراب رائے رکھنی چاہیے..... ہم گوشت پوست کے بنے ہوئے فانی انسان ہیں۔ ہم سے غلطی ہونی لازمی ہے،“ (۳۸)۔

محقق کو پہلے سے موجود مواد کی چھان بین ہر صورت میں کرنی چاہیے اور اس کی صحت کو معلوم کرنے کے لیے دیکھنا چاہیے کہ لکھنے والا یا بیان کرنے والا کس نوعیت کا ہے۔ قرون اولیٰ میں مسلمانوں نے احادیث رسول ﷺ کی روایت و درایت جانچ پرکھ کے لیے جن اصول و ضوابط کو وضع کیا وہ کسی بھی تحقیقی مواد کی صحت کو متعین کرنے کے لیے بے مثال معیار ہیں، چنانچہ ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان لکھتے ہیں:

”..... روایت کے بارے میں ان کے حزم و احتیاط کا عالم یہ تھا کہ سیر و مغازی تو بہت بڑی چیز ہے۔ وہ عام خلفاء یا سلاطین کے حالات اس وقت تک بیان نہیں کرتے جب تک کہ ان کے پاس آخری روای سے لے کر چشم دید گواہ تک تسلسل کے ساتھ روایت موجود نہ ہو۔ یعنی جو واقعہ لیا جائے وہ اس شخص کی زبانی ہو جو خود شریک واقعہ رہا ہو اور اگر وہ خود شریک واقعہ نہیں تھا تو اس واقعہ تک تمام درمیانی راویوں کے نام ترتیب کے ساتھ بیان کیے جائیں اور ساتھ ہی یہ بھی تحقیق کی جائے کہ وہ لوگ کون تھے؟ کیسے تھے، ان کے مشاغل کیا تھے؟ ان کا کردار کیسا تھا؟ ان کی سمجھ کیسی تھی؟ ثقہ کہاں تک تھے؟ سطحی الذہن تھے یا نکتہ رس تھے؟ عالم تھے یا جاہل؟“ (۳۹)۔

مختصر یہ کہ تحقیقی عمل میں حقائق کو تلاش کیا جائے اور اچھی طرح سے ان کی چھان پھٹک کی جائے۔ اچھی بات کو اچھا اور بری بات کو برا کہا جائے یعنی تحقیق کے ساتھ ساتھ تنقید بھی کی جائے۔ اس بات کی تائید ڈاکٹر مصطفیٰ خان کے اس قول سے ہوتی ہے، کہتے ہیں: ”تحقیق کی روح اور جان تو یہی ہے کہ حقائق کی تلاش کی جائے اور اچھی طرح سے [ان کی] چھان بین کی



جائے اور وہ تحقیق بلاشبہ نامکمل ہے اگر تعبیر و تشریح کے ساتھ نہ ہو یا بالفاظ دیگر اگر اس کے ساتھ تنقید نہ ہو.....، (۴۰)۔

## ۸۔ مواد کی ترتیب و تنظیم

مواد کی فراہمی، چھان بین کے بعد اس کی ترتیب کا مرحلہ آتا ہے۔ یہ مرحلہ تحقیق کے بنیادی لوازم میں سے ہے اور اس میں محقق کو بہت احتیاط کی ضرورت ہوتی ہے، اسے غیر ضروری مواد کو الگ کر لینا چاہیے تاکہ موضوع سے متعلق مواد کی ترتیب سے تجزیہ اور دلائل کی روشنی میں نتائج اخذ کیے جاسکیں، عبدالرزاق قریشی لکھتے ہیں:

”سارا ممکن الحصول مواد اکھٹا کر لینے کے بعد اب ضرورت ہے کہ اسے ترتیب دیا جائے، یعنی آغاز کار سے اب تک جو نوٹ لیے گئے ہیں انہیں ان کے عنوانات کے تحت مرتب کیا جائے۔ ان کو مرتب کرتے وقت اس بات کا بھی خیال رکھا جائے کہ جو غیر اہم یا غیر ضروری نوٹ آگے ہیں انہیں الگ کر دیا جائے..... جس طرح نوٹ لیتے وقت باقاعدگی اور احتیاط کا خیال رکھا گیا تھا اسی طرح انہیں ترتیب دیتے وقت بھی باقاعدگی اور احتیاط ملحوظ رکھنا ضروری ہے۔ جس کام میں تنظیم و ترتیب ہوتی ہے اس کا نتیجہ خاطر خواہ و خوشگوار ہوتا ہے،، (۴۱)۔

## ۹۔ مقالہ کی تسوید و پیش کش

مواد کی ترتیب کے بعد مقالے کی تسوید یعنی اسے لکھنے کا دور شروع ہوتا ہے۔ ”اس آخری عمل کی دو منزلیں ہوتی ہیں: ایک تسوید یعنی مقالے کا پہلا مسودہ تیار کرنا اور دوسری تہیض یعنی پہلے مسودے کی ضروری ترمیم و اصلاح کے ساتھ صاف نقل۔ اس نقل کو مبیضہ کہتے ہیں۔ مقالہ کن خطوط پر لکھا جائے یہ مقالہ نگار اور موضوع پر منحصر ہوتا ہے۔ کہاوت ہے Style is the man یعنی اسلوب شخصیت ہوتا ہے،، (۴۲)۔



مقالہ کی تسوید میں بھی محقق کے لیے پہلے مراحل کی سی محنت، دیانت، دقت نظر، باقاعدگی اور احتیاط ضروری ہے۔ ان امور کے التزام میں کوتاہی سے مقالہ کی پیش کش متاثر ہو جاتی ہے اور اسے اچھے اسلوب میں پیش نہیں کیا جاسکتا، پروفیسر عبدالستار دلوئی لکھتے ہیں: ”تحقیق کا موضوع کتنا ہی اہم ہو، اگر اس کی مناسب انداز میں پیش کش نہ ہو سکے تو تحقیقی عمل نامکمل ہی رہتا ہے،، (۲۳)۔

ہر محقق چاہتا ہے کہ اس کے تحقیقی عمل کو سراہا جائے۔ اس خواہش کی تکمیل صرف اسی صورت میں ممکن ہو سکتی ہے کہ وہ اپنے علمی کام کو بہتر سے بہتر علمی اسلوب میں پیش کرے، وہ اس طرح کہ:

- ۱۔ اسلوب بیان سنجیدہ، سادہ اور موثر ہو۔
- ۲۔ الفاظ کا صحیح استعمال ہو۔
- ۳۔ اقتباسات کا بر محل اور مناسب استعمال ہو۔
- ۴۔ موضوع سے اخذ کردہ نتائج کا مختصر ا بیان ہو۔ وغیرہ وغیرہ۔

## محقق کے لیے بنیادی لوازم

تحقیق کا پورا کام چونکہ صرف محقق ہی کو انجام دینا ہوتا ہے اور اسے ہی تحقیق کے بنیادی لوازم کا اہتمام کرنا پڑتا ہے۔ اس لیے محقق کے لیے بھی کچھ بنیادی لوازم ہیں جنہیں محقق کے اوصاف یا خصائص یا اس کی صلاحیتیں بھی کہتے ہیں۔ ذیل میں انہیں بالاختصار بیان کیا جاتا ہے:

### ۱۔ حق گوئی کی صفت سے متصف ہونا

ایک اچھے محقق کے لیے ضروری ہے کہ وہ حق گوئی کی صفت سے متصف ہو کیونکہ تحقیق ”سچ کا کاروبار ہے۔ محقق کو تحریر میں، نیز روزانہ زندگی میں، سچ کو شعار بنانا چاہیے۔ فریب، ریا، تصنع، خفیف الحركات تحقیقی مزاج کے منافی ہیں، مثلاً: کسی دوسرے کی دریافت کو بغیر حوالے



کے اپنا لینا، بالفاظ دیگر سرقہ کر لینا ایک غیر محققانہ کردار کا غماز ہے“ (۴۴)۔

## ۲۔ غیر متعصب و غیر جانبدار ہونا

محقق کو غیر متعصب اور غیر جانبدار ہونا چاہیے۔ تحقیق کے دوران جو حقیقت سامنے آئے محقق اسے ضرور ظاہر کرے، خواہ وہ اس کے اپنے مذہب قوم، زبان، فرقے اور ادبی گروہ کے خلاف ہی کیوں نہ ہو۔

## ۳۔ ہٹ دہرم و ضدی نہ ہونا

محقق کے اوصاف میں یہ بھی ہے کہ وہ ہٹ دہرم اور ضدی نہ ہو۔ آغاز تحقیق میں جو مفروضہ اس نے قائم کیا ہے بعد میں تحقیق کے دوران اگر اس کے خلاف دلائل مل جائیں تو اپنا موقف تبدیل کرنے میں ہچکچاہٹ محسوس نہ کرے۔

## ۴۔ تحقیق کو دنیاوی مقاصد کے حصول کا ذریعہ نہ بنانا

محقق کے بنیادی لوازم میں یہ بات بھی شامل ہے کہ وہ تحقیق کو دنیاوی اغراض و مقاصد جیسے دولت، انعام اور ترقی عہدہ وغیرہ کے حصول کا ذریعہ نہ بنائے۔ ”تحقیق برائے علم ہونی چاہیے۔ یہ نہیں کہ پی ایچ ڈی کی ڈگری لے کر روزگار کا صلہ نکل آئے گا۔ ڈی لٹ کر لی جائے تو دوسرے رفقاء کے مقابلہ میں بڑھ کر ریڈر یا پروفیسر بننے کے امکانات بہتر ہو جائیں گے۔ کسی ادیب پر کتاب لکھ دی جائے، کسی کا دیوان مرتب کر لیا جائے تو اس پر کسی اکیڈمی سے دو تین ہزار کا انعام مل جائے گا۔ یہ سب خواہشیں فطری ہیں لیکن ان کے سائے میں کی ہوئی تحقیق اتنی بے لوٹ اور منزہ نہیں ہوگی، جتنی بے غرض تحقیق۔“ (۴۵)۔

## ۵۔ دلچسپی اور محنت کی صفت سے مزین ہونا

تحقیقی عمل دلچسپی، ولولہ اور خوب محنت کا تقاضا کرتا ہے۔ اس لیے محقق کو اس نوعیت کے اوصاف سے مزین ہونا چاہیے۔



## ۶۔ فضیلتِ صبر سے متصف ہونا

تحقیق کرنا ایک مشکل عمل ہے جسے مکمل کرنے تک کئی مشکلات سے دوچار ہونا پڑتا ہے۔ بعض اوقات خوب محنت کرنے کے باوجود بھی مطلوبہ ہدف پورا نہیں ہوتا اور کیا ہوا کام دوبارہ شروع کرنا پڑتا ہے۔ اس لیے محقق کو چاہیے کہ وہ صبر سے کام لے اور کسی بھی حال میں جلد بازی کا مظاہرہ نہ کرے لیکن اس کا یہ مقصد نہیں کہ تحقیق کو لازمی طور پر طول دیا جائے۔ بہتر یہی ہے کہ مقررہ مدت کے اندر ہی کام مکمل کر لیا جائے۔

## ۷۔ متوازن و معتدل ہونا

محقق کو توازن اور اعتدال کی صفت سے مزین ہونا چاہیے۔ یہ نہ ہو کہ جسے وہ پسند کرے اسے آسمان پر چڑھا دے اور جسے ناپسند کرے اسے بالکل کمزور قرار دے دے۔ اسے بات کو بڑھا چڑھا کر بیان کرنے کی عادت نہیں اپنانی چاہیے اور جذباتی اسلوب بیان سے احتراز کرنا چاہیے۔

## ۸۔ اخلاقی جرأت کا مظاہرہ کرنا

محقق کے لیے ضروری ہے کہ وہ تحقیقی عمل کے دوران اخلاقی جرأت کا مظاہرہ کرے۔ کسی کے خوف سے حق گوئی سے باز نہ رہے۔ یہ نہ سوچے کہ فلاں شخص پروفیسر ہے۔ اس کی علمی غلطی کی نشان دہی کی تو وہ فلاں موقعہ پر نقصان دے گا۔ اس نوعیت کے خیالات سے محقق کو اجتناب کرنا چاہیے مگر ادب و احترام کا پہلو ہاتھ سے نہ جانے دے۔ جو بھی کرے حکمت کے ساتھ کرے۔

## ۹۔ وسعت مطالعہ

محقق کو چاہیے کہ وہ مطالعہ میں وسعت پیدا کرے۔ اپنے مخصوص مضمون کے علاوہ اسے متعلقہ مضامین کا بھی مطالعہ کرنا چاہیے، مثلاً: اردو کے محقق کو فارسی لازمی طور پر جاننے کی ضرورت ہے۔ عربی جاننا بھی اس کے لیے مفید ثابت ہوگا۔ متعلقہ علوم یا مضامین کے مطالعہ کے



لیے اس وسعت یا گہرائی کی ضرورت نہیں ہوتی جو اصلی مضمون یا موضوع کے لیے ضروری ہوتی ہے۔

## ۱۰۔ نقاد ہونا

وسیع مطالعہ کے ساتھ ساتھ محقق کو کسی حد تک نقاد بلکہ تحقیق کار کی صفات سے بھی متصف ہونا چاہیے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ تحقیقی رجحان کے ساتھ ساتھ تنقیدی شعور بھی رکھتا ہو۔ تحقیقی عمل میں جہاں بھی تنقید کی ضرورت پڑے تو جانبدارانہ تنقید کرے اور خوبیوں اور خامیوں دونوں کو سامنے لیے آئے۔

## محقق طلبہ کی صلاحیتوں کو جانچنے کی شرطیں

فن تحقیق کے ماہرین نے محقق طلبہ کی صلاحیتوں کو جانچنے کے لیے درج ذیل دس شرطیں مقرر کر رکھی ہیں جن پر پورا اترنا ضروری ہے:

۱۔ قوت استدلال: مسائل کو استخراجی اور استقرائی دونوں طریقوں سے حل کرنے کی صلاحیت۔

۲۔ جدت: قوت اختراع، ذکاوت، منظم اقدام اور معقول افکار کی زرخیزی۔

۳۔ حافظہ: حقائق کا وسیع، منطقی، کارآمد اور فوری اظہار۔

۴۔ چستی: تیز اور اثر پذیر مشاہدہ، فکر اور احساس۔

۵۔ صحت: جچا تلا، تیز، متناسب اور قابل اعتماد مشاہدہ، فکر اور احساس۔

۶۔ کاوشی: قوت ارتکاز، مسلسل توجہ، استقلال اور با اصول کوشش۔

۷۔ اشتراک: ذہنی رفاقت اور مل کر کام کرنے اور راہ نمائی کی صلاحیت۔

۸۔ اخلاقی رجحان: ذہنی دیانت، صحت بخش اخلاقی معیار، مطمع نظر اور اثرات۔

۹۔ تندرستی: عضلاتی استحکام، جسمانی ساخت، قوت حیات اور قوت برداشت۔

۱۰۔ تحقیق کے لیے شوق اور سرگرمی: طبع زاد (Original) اور تخلیقی کام سے گہری دلچسپی

اور اس کی خواہش (۴۶)۔



اس بحث کو ڈاکٹر شبلی کے اس اقتباس پر ختم کیا جاتا ہے، وہ لکھتے ہیں: ”مختصر یہ کہ تحقیق کا ملکہ شہد کی مکھی کی صلاحیتوں کی طرح ہے۔ وہ بھی دوسرے پرندوں اور کیڑے مکوڑوں کی طرح پھولوں پر بیٹھتی ہے لیکن صرف وہی ان پھولوں سے رس چوس کر اسے شہد میں تبدیل کر دیتی ہے۔ اگر تم جو کچھ پڑھتے ہو، اس سے کوئی نئی چیز نکالنے کی صلاحیت رکھتے ہو تو آؤ اور تحقیق کی دنیا میں داخل ہو جاؤ اور اگر تم یہ کام نہیں کر سکتے تو تم محقق نہیں ہو۔ دوسروں کی تحریریں پڑھو اور ان سے فائدہ اٹھاؤ۔ ضروری تو نہیں کہ وہ کام کرو جو تم اچھی طرح نہیں کر سکتے“ (۴۷)۔



## حوالہ جات

- ۱- تعلیمی تحقیق اور اس کے اصول و مبادی، ڈاکٹر احسان اللہ، (نگارشات میاں چیمبرز، لاہور، ۱۹۹۱ء) ص ۴۷۔
- ۲- ادبی تحقیق کے اصول، ڈاکٹر تبسم کاشمیری، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۹۲ء) ص ۲۳۔
- ۳- فن تحقیق، عبدالرزاق قریشی، دراردو میں اصول تحقیق، مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانہ۔ بخش ج ص ۷۳ (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۸۶ء، ط اول)۔
- ۴- ایضاً۔
- ۵- ایضاً۔
- ۶- ایضاً۔
- ۷- تعلیمی تحقیق، احسان اللہ، محولہ بالا، ص ۴۷، ۴۸۔
- ۸- ادبی تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، محولہ بالا، ص ۲۶۔
- ۹- ایضاً۔
- ۱۰- فن تحقیق، قریشی، دراردو میں اصول تحقیق محولہ بالا، ج ۱، ص ۷۷۔
- ۱۱- تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، محولہ بالا، ص ۲۹۔
- ۱۲- ایضاً۔
- ۱۳- فن تحقیق، قریشی، بحوالہ: Karl person, The Grammer of Science، تعارف، ص ۳۱، دراردو میں اصول تحقیق، محولہ بالا، ج ۱، ص ۷۷۔
- ۱۴- ادبی تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، محولہ بالا، ص ۲۹، بحوالہ "ادبی تحقیق کے بعض مسائل" محمد حسن رہبر تحقیق، اردو سوسائٹی لکھنؤ، مرتب: (لکھنؤ، اردو سوسائٹی لکھنؤ، یونیورسٹی، ۱۹۷۶ء) ص ۵۶، ۵۵۔
- ۱۵- ایضاً۔
- ۱۶- ایضاً، ص ۳۰، ۲۹، بحوالہ مذکور، ص ۵۶، ۵۵۔
- ۱۷- تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، محولہ بالا، ص ۳۰۔



- ۱۸۔ ایضاً۔
- ۱۹۔ دیکھئے: تحقیقی عمل کے مراحل، پروفیسر دلوی عبدالستار، دراردو میں اصول تحقیق، مجلہ بالا، ج ۱، ص ۱۰۷، ۱۰۸۔
- ۲۰۔ تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، مجلہ بالا، ص ۲۵۔
- ۲۱۔ تحقیق کا یہ سفر یوں ہوتا ہے: اختیار موضوع، فراہمی مواد، تجزیہ (تنقیدی جانچ پرکھ) و ترتیب مواد پھر نتائج کا استنباط۔ آخر میں محقق کے ذہن میں ایک مجموعی نقطہ نظر بنتا ہے اور ایک نظریہ وجود میں آتا ہے۔
- ۲۲۔ تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، مجلہ بالا، ص ۲۵، ۲۶، بتلخیص۔
- ۲۳۔ خاکہ کے متعلق مزید تفصیلات کے لیے دیکھئے: (۱) تحقیق کا فن، گیان چند، مجلہ بالا، باب چہارم، ص ۱۰۶ او ما بعدھا (۲) موضوع کا انتخاب، ڈاکٹر ش۔ اختر، دراردو میں اصول تحقیق، مجلہ بالا، ص ۱۳۳ تا ۱۳۸۔
- ۲۴۔ تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، مجلہ بالا، ص ۱۹۔
- ۲۵۔ دیکھئے: سابق حوالہ، ص ۲۰۔
- ۲۶۔ ایضاً۔
- ۲۷۔ فن تحقیق، عبدالرزاق قریشی، دراردو میں اصول تحقیق، مجلہ بالا، ج ۱، ص ۷۸۔
- ۲۸۔ ایضاً۔
- ۲۹۔ تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، مجلہ بالا، ص ۲۱۔
- ۳۰۔ ایضاً ص ۲۱، ۲۲۔
- ۳۱۔ فن تحقیق، قریشی، درمجلہ بالا، ج ۱، ص ۷۸۔
- ۳۲۔ ایضاً ص ۷۹۔
- ۳۳۔ فن تحقیق، قریشی، درمجلہ بالا، ج ۱، ص ۷۴، بحوالہ: F.L. Whitney The Elements of Education Research The Technique of Research in باب ۱، ص ۲۳، ۲۵، بحوالہ: C.C. Crawford.
- ۳۴۔ تحقیق کے بنیادی لوازم، ڈاکٹر غلام مصطفیٰ ملک، در تحقیق اور وضع اصطلاحات، مرتب: اعجاز راہی (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۸۶، ط اول) ص ۱۲۷، ۱۲۸۔
- ۳۵۔ ایضاً، ص ۱۲۸۔
- ۳۶۔ ایضاً، ص ۱۳۲، ۱۳۳۔



- ۳۷۔ اسلام میں تحقیق کا تصور، ڈاکٹر محمد اسحاق قریشی، درماہنامہ وضیاء حرم، ج ۲۲، ش ۱۱، ص ۲۵، اگست ۱۹۹۲ء۔
- ۳۸۔ تحقیق کا فن، گیان چند، محولہ بالا، ص ۱۸۸، بحوالہ: The Art of Literary Research . P. 16.
- ۳۹۔ فن تحقیق، ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان، در اردو میں اصول تحقیق، محولہ بالا، ج ۱، ص ۴۲۔
- ۴۰۔ تحقیق کے بنیادی لوازم، مصطفیٰ خان، در وضع اصطلاحات، محولہ بالا، ص ۱۳۱۔
- ۴۱۔ مقالہ کی تسوید، عبدالرزاق قریشی، در اردو میں اصول تحقیق، محولہ بالا، ج ۱، ص ۲۶۳۔
- ۴۲۔ تحقیق کا فن، ڈاکٹر گیان چند، ص ۲۱۶، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ط اول، ۱۹۹۴ء)۔
- ۴۳۔ مقالہ کی پیش کش، عبدالستار دلوی، در اردو میں اصول تحقیق، محولہ بالا، ج ۱، ص ۲۳۷۔
- ۴۴۔ تحقیق کا فن، گیان چند، محولہ بالا، ص ۳۹۔
- ۴۵۔ تحقیق کا فن، گیان چند، محولہ بالا، ص ۴۰، بحوالہ: سہ ماہی، ساغر، پٹنہ، جولائی ۱۹۶۳ء۔
- ۴۶۔ فن تحقیق، عبدالرزاق قریشی، در ”اردو میں اصول تحقیق، محولہ بالا، ج ۱، ص ۸۳، بحوالہ: F.L. Whitney,
- The Elements of Research, باب نمبر ۱ ص ۴۷۔
- ۴۷۔ کیف تکتب بحثا او رسالة، ڈاکٹر احمد شمس، ص ۲۰، مکتبۃ النهضة المصرية بالقاهرة، ط ۱۱، ۱۹۹۰ء۔



باب ۴

موضوع تحقیق کا انتخاب اور خاکہ



## موضوع تحقیق کا انتخاب اور خاکہ

### اولاً: موضوع تحقیق کا انتخاب

تحقیقی عمل میں سب سے اہم اور مرکزی نکتہ موضوع کا انتخاب ہے۔ اگر صحیح طور پر موضوع کا انتخاب ہو جائے تو گویا آدھا کام ہو گیا۔ فن تحقیق کے ماہرین نے اس انتخابی عمل میں ایک محقق کے لئے درج ذیل امور کو پیش نظر رکھنا ضروری قرار دیا ہے:

- ۱۔ موضوع صاف اور واضح ہو، اور اس میں کسی قسم کا ابہام نہ ہو۔
- ۲۔ طالب علم موضوع پر کافی عبور رکھتا ہو اور موضوع کی تعریف اور تشریح و توضیح بخوبی طور پر کر سکتا ہو۔
- ۳۔ موضوع اتنا پھیلا ہوا نہ ہو کہ اس پر قابو نہ پایا جاسکے۔
- ۴۔ ابتدائی طور پر تحقیق کر کے اچھی طرح سے یہ دیکھ لیا جائے کہ موضوع پر وافر مقدار میں مواد موجود ہے یا کہ نہیں؟
- ۵۔ کسی ایسے موضوع پر کام نہیں کرنا چاہیے جس پر بنیادی مواد ہی دستیاب نہ ہو۔
- ۶۔ موضوع ہمیشہ نیا ہونا چاہیے، پرانے موضوعات کو دہرانا بے سود ہے۔
- ۷۔ موضوع اسی صورت میں افادیت کا حامل ہوگا کہ اس سے تاریخ ادب کے کسی گوشے پر نئی روشنی پڑتی ہو۔
- ۸۔ محقق میں تحقیق کا ذوق و شوق ہو اور جس مسئلہ (موضوع) پر وہ کام کر رہا ہے، اس کے ساتھ اس کی دلچسپی ہو۔



۹۔ محقق کا ذہن بالکل غیر جانبدار ہو۔ اس میں کسی قسم کا ہلکا سا تعصب یا جانبداری کا رویہ نہ ہو۔ کیونکہ یہ دونوں باتیں تحقیق کے لیے زہر قاتل ہیں۔

۱۰۔ مسئلے (موضوع) کے انتخاب میں محقق کا رویہ معروضی ہونا چاہیے۔ وہ پہلے سے کوئی نکتہ نظر لے کر نہ چلے بلکہ حقائق کی مدد سے کسی مسئلے کا تعین کرے۔

۱۱۔ محقق نے تحقیق کے لیے جو مسئلہ منتخب کیا ہے۔ اس مسئلے کو حل کرنے کے لیے جس فنی

مہارت، قابلیت اور استعداد کی ضرورت ہو سکتی ہے وہ محقق میں ضرور موجود ہونی چاہیے۔

۱۲۔ تحقیقی مسئلے کے انتخاب میں محقق کو اپنی صحت، وقت اور مالی وسائل کو بھی دیکھنا چاہیے تاکہ کام شروع کرتے وقت وہ یکسوئی اور اطمینان سے تحقیق کر سکے۔

۱۳۔ اگر محقق کسی دانش گاہ میں مقالہ پیش کرنے کے لیے مسئلہ کا انتخاب کر رہا ہے تو پھر یہ بھی دیکھا جائے کہ مسئلہ دانش گاہ کے معیارات پر پورا اترتا ہے یا کہ نہیں؟

۱۴۔ کسی دانش گاہ (یونیورسٹی) میں مسئلہ پیش کرنے سے قبل یہ دیکھ لیا جائے کہ اس ادارے میں راہنمائی کے لیے ماہرین موجود ہیں یا نہیں؟

۱۵۔ علاوہ ازیں! ”موضوع ایسا ہو کہ اشاعت کے بعد خاص و عام دونوں نوعیت کے قارئین کی اس میں دلچسپی ہو۔

۱۶۔ بین العلومی (Inter-disciplinary) موضوعات شاندار سمجھے جاتے ہیں۔ ان سے مراد وہ موضوعات ہیں جن میں اردو ادب کے علاوہ کسی اور مضمون، علم یا فن کی معلومات بھی درکار ہوں۔

۱۷۔ موضوع خالص تنقیدی نہ ہو۔ کیونکہ خالص تنقید کو تحقیق کا نام دینا مناسب نہیں۔

۱۸۔ موضوع پر پہلے کام نہ ہو چکا ہو بلکہ ہو بھی نہ رہا ہو۔

۱۹۔ اس موضوع کو اختیار نہیں کرنا چاہیے جس پر محقق نے خود پہلے مقالہ لکھا ہوا ہے، جیسے



ایم۔ فل کے موضوع کو پی۔ ایچ۔ ڈی کے لیے اختیار کرنا۔

۲۰۔ موضوع زیادہ عمومی نہ ہو، کسی بڑے مصنف کی پوری زندگی اور جملہ تصانیف کو لے لینا بھی عمومی جائزہ بن کر رہ جائے گا مثلاً: اقبال کو پورے کا پورا لے لیا جائے تو بہت سرسری کام ہوگا۔ اس میں گہرائی نہ ہوگی۔

۲۱۔ جن شخصیتوں یا موضوعات پر بے خوفی سے نہ لکھا جائے، ان کو نہیں لینا چاہیے۔

۲۲۔ کسی زندہ شخص پر کسی مصلحت یا مفاد کی خاطر تحقیقی کام نہیں کرنا چاہیے۔

۲۳۔ زیادہ حالیہ موضوع سے احتراز مناسب ہے کہ اس کا مواد رسالوں ہی میں مل سکتا ہے،

کتابوں میں نہیں، مثلاً: کشمیری مہاجرین کے مسائل وغیرہ۔ ایسے موضوع کو پی۔

ایچ۔ ڈی کے لیے نہیں لینا چاہیے۔ کوئی مضمون یا کتاب لکھنی ہو تو دوسری بات ہے۔

۲۴۔ زیادہ تکنیکی موضوع بھی آخر کار الجھن کا باعث ہو سکتا ہے، مثلاً: ”اردو عروض کا تاریخی و تنقیدی جائزہ“ وغیرہ۔

۲۵۔ ایسا موضوع نہیں لینا چاہیے، جس کے بارے میں خاصا مکان ہو کہ بعد میں دلچسپی برقرار نہیں رہ سکے گی۔

۲۶۔ مناظراتی موضوع بھی مناسب نہیں ہوتے، مثلاً: اردو ادب میں فرقہ پرستی وغیرہ۔

۲۷۔ اگر کوئی ایسا موضوع لینا ہے جس میں کسی دوسری زبان کی معلومات بھی درکار ہوں، تو

تا وقتیکہ اس زبان سے کما حقہ واقفیت نہ ہو، اسے نہیں لینا چاہیے جیسے ”اردو تنقید پر عربی

تنقید کا اثر“ وغیرہ۔

۲۸۔ کم از کم سندی مقالوں کے لیے ایسا موضوع اختیار نہیں کرنا چاہیے جس کی تسوید میں

فحاشی، عریانی یا جنس زدگی سے نہ بچا جاسکے مثلاً: قدیم اردو نگاری میں فحش

نگاری“ (۱)۔



بہر کیف عملی طور پر محقق کو اختیار موضوع کے سلسلہ میں اس امر کی تصدیق کر لینی چاہیے کہ وہ:

- ۱- مسئلہ (موضوع) کے بارے میں کتنا اور کیا جانتا ہے؟
- ۲- زیر غور مسئلہ پر اس سے بیشتر کتنا اور کیا کیا کام کیا گیا ہے؟
- ۳- کیا موجودہ مسئلہ کی نوعیت دوامی قسم کی ہے؟
- ۴- دوسرے لوگوں نے اس مسئلہ کے بارے میں کن خیالات کا اظہار کیا ہے اور اس مسئلہ کے بارے میں ان کا رد عمل کیا رہا ہے؟
- ۵- کیا دوسرے لوگوں نے اس مسئلہ پر تحقیق کی ہے اور اس کا حل دریافت کیا ہے۔ اگر کیا ہے تو نتائج کیا نکلے ہیں؟
- ۶- ان نتائج کی روشنی میں یا ان لوگوں کی تجاویز کو سامنے رکھتے ہوئے دیکھا جائے کہ آیا اسی مسئلہ پر مزید تحقیق کی گنجائش موجود ہے؟ (۲)۔

### انتخاب موضوع کے لیے امدادی وسائل

تحقیق کے لیے کسی بھی نوعیت کے موضوع کا انتخاب مسلسل مطالعہ اور تحقیقی غور و خوض کا محتاج ہوتا ہے۔ فن تحقیق کے ماہرین نے اس کے انتخاب کے لیے درج ذیل امدادی وسائل و ذرائع متعین کیے ہیں:

- ۱- تحقیقی مقالہ جات کا مطالعہ مسئلہ (موضوع) کے انتخاب میں کافی حد تک مدد و معاون ثابت ہوتا ہے۔
- ۲- مختلف مضامین کے مطالعہ کے دوران نوٹس تیار کرنا بھی مسئلہ کے انتخاب کے لیے اچھی عادت شمار ہوتی ہے۔
- ۳- تحقیق سے متعلقہ لوگوں سے میل جول اور تبادلہ خیالات بھی مسئلہ کے انتخاب میں معاون ثابت ہو سکتا ہے۔
- ۴- کتب برائے حوالہ جات بھی تحقیقی مسئلہ کے منتخب کرنے میں مدد دیتی ہے۔



- ۵۔ متعلقہ موضوع کے بارے میں فلموں۔ ٹی وی پروگراموں اور تحریری و تقریری تبصروں کو تنقیدی نگاہ سے دیکھنا بھی مسئلہ کے انتخاب میں آسانی پیدا کرتا ہے۔
- ۶۔ تعلیمی اداروں، تحقیقی مراکز کے سربراہوں اور اراکین سے تعلیمی مسائل کے بارے میں تبادلہ خیال بھی مسئلہ کے انتخاب میں مددگار ثابت ہو سکتا ہے۔
- ۷۔ اساتذہ اور طلباء سے ان کے مسائل کے بارے میں ملاقاتیں کرنا بھی مسئلہ کے انتخاب کا مؤثر ذریعہ ہے (۳)۔

اس بحث سے ثابت ہوا ہے کہ ”تحقیق میں ایک اچھے موضوع کا انتخاب بنیادی اہمیت کا حامل ہوتا ہے، جو موضوع مقررہ معیارات پر پورا اترتا ہو اس سے تحقیق کا اعلیٰ معیار قائم ہوتا ہے۔ ایک محقق کو کام کی ابتداء ہی سے تمام امکانات کا جائزہ لے کر کام شروع کرنا چاہیے۔ خصوصاً ہمارے نوجوان محققین اگر مندرجہ بالا معیارات کو سامنے رکھیں تو وہ یقیناً بہتر کام پیش کر سکیں گے“ (۴)۔

### ثانیاً: موضوع تحقیقی کا خاکہ

تحقیق کے مراحل میں سے پہلا مرحلہ ”موضوع کا انتخاب“ ہوتا ہے۔ اس مرحلہ کے متعلقات کو اوپر بیان کر دیا گیا ہے۔ اب ذیل میں منتخب موضوع کے خاکہ اور اس کے متعلقات کو بیان کیا جاتا ہے۔ خاکہ اصل میں تحقیقی عمل کا دوسرا اہم مرحلہ ہوتا ہے:

#### خاکہ کا مفہوم

خاکہ کو عربی میں ”خطة“ اور انگریزی میں ”Synopsis“ کہتے ہیں۔ اس لفظ کے لغوی معنی ہیں ”ایک ساتھ نظر ڈالنا“۔ Syn کے معنی ”ایک ساتھ“ اور Opsis کے معنی ”دیکھنا“ کے ہیں۔ تحقیق کے لیے کسی منتخب موضوع کو ابواب، فصول اور مباحث وغیرہ میں تقسیم کر دیا جائے تو اسے خاکہ یعنی Out line کہا جائے گا۔ ڈاکٹر گیان چند نے اسے۔ جے راتھ کے حوالے سے



خاکے کے مفہوم کو یوں بیان کیا ہے: خاکہ مختلف تصورات کی تقسیم، ترتیب اور باہمی رشتے کا نام ہے۔ کتاب ہی میں نہیں زندگی کے ہر شعبے میں کام سے پہلے جو منصوبہ بنایا جائے گا، وہی خاکہ کہلائے گا (۵)۔

## خاکہ بنانا ایک مسلسل عمل ہے

خاکہ بنانا مقالے کی تیاری کی طرح ایک مسلسل عمل ہے۔ مطالعہ شروع کرنے سے پہلے ذہن میں اس کے بارے میں کوئی تصور ہونا چاہیے۔ اگر نہیں ہے تو بیٹھ کر اپنے اخلاق اور فعال تخیل کو سرگرم عمل کیجیے اور کوئی نہ کوئی دھندلی ہی سہی، شکل متعین کیجیے۔ اس کے بعد مواد اکٹھا کیجیے، مطالعہ کیجیے اور اسے ترتیب دیجیے۔ بہت ممکن ہے کہ سامنے موجود مواد کی روشنی میں بنائے ہوئے عارضی خاکے میں رد و بدل کرنا پڑے۔ اس کے بعد جب تسوید کریں گے تو معلوم ہوگا کہ بعض عنوانات پر بہت زیادہ لکھا گیا، بعض پر بہت کم۔ پھر سے ابواب کی گروہ بندی اور ترتیب کی ضرورت پڑ سکتی ہے۔ ابواب کے اندرونی حصوں (باب میں ذیلی عنوانات والے اجزاء) کی ترتیب بدلی جاسکتی ہے۔ اس طرح تسوید کے ساتھ یا بعد میں۔ پھر خاکے کو آخری شکل دینی ہوگی۔ گویا خاکے کی تیاری اور اس کی آخری قطعی شکل میں منزلیں ہیں۔ نقش اول کام شروع کرنے پر مواد کی فراہمی سے بھی پہلے، نقش ثانی مواد کی فراہمی اور مطالعے کے بعد، نقش آخر تسوید کے بعد۔ اگر خاکے میں اس طرح ارتقاء اور ترتیب کا عمل جاری رہے گا تو آخری خاکہ بہت با ترتیب، چست اور منظم ہوگا (۶)۔

## خاکہ کی اہمیت و افادیت

تحقیقی مراحل میں سے خاکہ کا مرحلہ بہت اہم ہوتا ہے۔ اس میں پورے تحقیقی منصوبے (Research Proposal) کی تفصیلات کو درج کیا جاتا ہے۔ اس کی حیثیت وہی ہوتی ہے جو کسی عمارت کے نقشے کی ہوتی ہے۔ اگر اس کی تعمیر سے پہلے نقشے کو تیار نہ کروایا جائے تو اس کی ساخت میں بہت سے نقائص رہ جانے کا امکان ہوتا ہے، مثلاً: عملی لحاظ سے ناکارہ ثابت ہونے



کا خطرہ ہو سکتا ہے، اس کا جمالیاتی پہلو بری طرح متاثر ہونے کا امکان بھی ہوتا ہے۔ اسی طرح اگر محقق تحقیقی منصوبے کا خاکہ پہلے سے تیار نہیں کرتا، تو ممکن ہے کہ اس کے کام میں بہت سی خامیاں رہ جائیں یا اس کو بہت سی مشکلات سے دوچار ہونا پڑے۔ وہ محقق جو کسی تحقیقی صورت حال کے مسائل اور مشکلات پر محتاط طریقے سے غور و فکر نہیں کرتا، وہ نہ تو موزوں فرضیات (Hypothesis) بنا سکتا ہے اور نہ ہی معلومات کی جمع آوری کے لیے مؤثر طریقے اختیار کر سکتا ہے (۷)۔

مجوزہ موضوع کا خاکہ ایسی بنیاد فراہم کرتا ہے جس سے اس کی جانچ پرکھ آسان ہو جاتی ہے۔ محقق کے نگران کو بھی اس سے مدد ملتی ہے اور وہ واضح ذہن کے ساتھ اس کی راہنمائی کا کام کر سکتا ہے۔ اس کا ایک فائدہ یہ بھی ہوتا ہے کہ تحقیق کرنے والے کے سامنے وہ منصوبہ ہوتا ہے جس کو وہ مستقبل میں اختیار کرے گا (۸)۔

خاکہ بنانے کا ایک فائدہ یہ بھی ہوتا ہے کہ اس کے بعد ذہنی طور پر مقالے کی ہیئت (Form) متعین ہو جاتی ہے۔ اس نقشے پر عمارت بنانا آسان ہو جاتی ہے (۹)۔

## تشکیل و ہیئت

خاکے کی کوئی مسلمہ شکل اور ہیئت نہیں ہوتی۔ اس کی مختلف صورتیں نظر آتی ہیں۔ لیکن ہر خاکے میں عموماً درج ذیل معلومات شامل کی جاتی ہیں:

### ۱۔ مسئلے کا بیان

خاکہ میں مسئلے کا بیان، فرضیات اور ان سے ماخوذ نتائج درج کیے جاتے ہیں۔ فرضیے (Hypothesis) سے مراد ایسا متوقع تعلق ہے جو دو یا دو سے زیادہ متغیرات (Variables) کے درمیان پایا جاتا ہے۔ اس مرحلے پر مناسب معلوم ہوتا ہے کہ ایک بڑا فرضیہ بنایا جائے اور بہت سے چھوٹے چھوٹے فرضیات بنائے جائیں۔ یہ طریق کار واضح طور پر مسئلے کی نوعیت کو طے کرتا ہے اور اس منطق کو بھی جو تحقیق کے پس منظر میں موجود ہوتا ہے۔ اس سے یہ بھی معلوم ہو جاتا ہے کہ معلومات (Data) کی جمع آوری کے لیے کیا طریقہ اختیار کیا جائے گا (۱۰)۔



## ۲۔ لٹریچر کا جائزہ

تحقیقی خاکے میں زیر تحقیق (موضوع) سے متعلق لٹریچر کا جائزہ پیش کیا جاتا ہے۔ سابقہ تحقیق اور ماہرین کی تحریروں کا مختصر ذکر اس بات کا ثبوت فراہم کرتا ہے کہ جو تحقیق ماضی میں ہو چکی ہے، اسے محقق جانتا ہے اور اس امر سے بھی واقف ہے کہ کن پہلوؤں پر تحقیق و جستجو کا کام ہونا چاہیے۔ چونکہ مؤثر تحقیق کی بنیاد ماضی کے علم پر ہوتی ہے، اس لیے یہ قدم تکرار کے عمل کو روکتا ہے اور اہم تحقیق کے لیے مفید فرضیات اور مدتجاویز فراہم کرتا ہے۔ لٹریچر کا جائزہ لیتے ہوئے محقق کو چند اہم باتوں کو ملاحظہ کرنا چاہیے جو کہ یہ ہیں:

- ۱۔ زیر غور مسئلے سے متعلق رپورٹ کیے ہوئے مسائل جن پر پہلے ہی تحقیق ہو چکی ہے۔
- ۲۔ ایسی رپورٹوں میں مطالعے کا خاکہ جس میں استعمال کیے ہوئے طریقے اور معلومات کی جمع آوری کے لیے استعمال کیے ہوئے آلات شامل ہوتے ہیں۔
- ۳۔ مختلف قسم کی آبادی جس کا مطالعہ کیا گیا۔
- ۴۔ وہ متغیرات جو مطالعے پر اثر انداز ہو سکتے تھے۔
- ۵۔ وہ غلطیاں یا خامیاں جو ظاہر ہوئیں۔
- ۶۔ مزید تحقیق کے لیے سفارشات۔

لٹریچر کے جائزے کو اس خلاصے پر منتج ہونا چاہیے جس میں نتائج کے متعلقہ شعبوں کا ذکر ہو اور ان کا بھی جن پر اتفاق رائے نہیں پایا جاتا۔ ان مضامین کا جائزہ لینا چاہیے جو متعلقہ مطالعات کا خلاصہ پیش کرتے ہیں۔ اس سے وقت اور کوشش کے بچنے میں مدد ملتی ہے (۱۱)۔

## ۳۔ مسئلے (موضوع) کی اہمیت

محقق کو چاہیے کہ وہ خاکے میں بتائے کہ اس مسئلے (موضوع) کا حل کس طرح نظرے (Theory) اور عمل (Practice) پر اثر انداز ہوگا۔ محتاط انداز سے بیان کیے گئے اثرات یا



مکنہ علمی اطلاقات مسئلے کی اہمیت اور قدر و قیمت ظاہر کرنے میں مدد دیتے ہیں (۱۲)۔ تحقیقی کوششیں غیر اہم مسائل پر ضائع نہیں کرنی چاہئیں۔ ہمیشہ سنجیدہ مسائل اٹھا کر ان کے حل کے لیے کوشش کرنی چاہیے۔ یہ کام سخت ذہنی کوشش کا متقاضی ہوتا ہے۔ اس کے علاوہ اس پر مالی اخراجات بھی اٹھتے ہیں۔ ذہنی، جسمانی اور مالی قربانی اس امر کا تقاضا کرتی ہے کہ تحقیق کے نتائج مفید اور نفع آور ہونے چاہئیں۔ ان کو انسانی زندگی کے مسائل کے حل میں فائدہ مند ثابت ہونا چاہیے (۱۳)۔

### ۴۔ مفروضات کا بیان

خاکے میں ان مفروضات (Assumptions) کو بھی بیان کر دینا چاہیے جن پر تحقیق کے فرضیات کی بنیاد رکھی گئی ہے (۱۴)۔

### ۵۔ نمونہ بندی کا طریق کار

تحقیق کرنے والے کو چاہیے کہ وہ موضوع خاکے میں نمونہ بندی (Sampling) کا طریق کار بھی بیان کرے یعنی بتائے کہ وہ کس طرح اور کہاں سے آبادی کے تمام ارکان کی فہرست حاصل کرے گا۔ آبادی کا سائز کیا ہے اور اس کے نمایاں خصائص کیا ہیں۔ یہ بھی بتائے کہ وہ نمونہ بندی کا کون سا طریقہ اختیار کرے گا (۱۵)۔

### ۶۔ آلات کا استعمال

معلومات (Data) کی جمع آوری کے لیے محقق جن آلات (Tools) کو استعمال کرے گا، ان کو بیان کر دے (مثلاً سوالنامہ، انٹرویو وغیرہ)۔ ان کی موزونیت کے حق میں دلائل دے، یہ بھی بتائے کہ ان کے استعمال سے بیان کیے ہوئے مفروضات کے تقاضے پورے ہوں گے اور ان آلات کے استعمال سے جمع شدہ معلومات معقولیت (Validity) اور اعتبار (Reliability) کی صفات رکھیں گی (۱۶)۔



## ۷۔ تحقیق کا طریق کار

اس عنوان کا تعلق سابقہ عنوان کے ساتھ ہے۔ خاکے کے اس حصے میں محقق تحقیق کے تمام عمل کو بیان کر دیتا ہے۔ وہ بتاتا ہے کہ کیا کیا جائے گا، کیسے کیا جائے گا، کون سی معلومات مطلوب ہوں گی، ان کو کس طرح جمع کیا جائے گا، ان معلومات سے نتائج کس طرح نکالے جائیں گے (۱۷)۔ وان ڈیلن (Van Dalen) نے اس حصے کی تفصیلات کا ذکر کرتے ہوئے کہا ہے کہ اس میں یہ بھی بتانا ہوگا کہ معلومات کی جدول بندی (Tabulation) کا طریق کار کیا ہوگا۔ معلومات کی درجہ بندی کس طرح کی جائے گی۔ ان کو استعمال کس طرح کیا جائے گا اور پھر ان کے خلاصے کس طرح تیار کیے جائیں گے۔ معلومات کا تجزیہ کرنے کے لیے جو شماریاتی طریقے استعمال کیے جائیں گے، ان کا ذکر بھی کرنا ہوگا (۱۸)۔

## ۸۔ جدول اوقات

محقق کو وقت کا شیڈول تیار کرنا چاہیے تاکہ وہ اپنے وقت اور توانائی کا صحیح اور بروقت استعمال کر سکے۔ تحقیقی منصوبے کو مختلف حصوں میں تقسیم کرنے اور ہر حصے کی تکمیل کے لیے وقت مقرر کرنے سے کام کو باقاعدگی سے کرنے میں مدد ملتی ہے اور کاموں کو ملتوی کرنے کے فطری رجحان کو کم سے کم کرنے میں بھی مدد ملتی ہے (۱۹)۔

زیر تحقیق مسئلے کے بعض حصے اس وقت تک شروع نہیں کیے جاسکتے ہیں جب تک اس کے دوسرے حصے مکمل نہ کر لیے جائیں۔ رپورٹ یا مقالے کی آخری شکل کے بعض حصے، مثلاً: "متعلقہ لٹریچر کا جائزہ" اس وقت مکمل کر کے ٹائپ کرایا جاسکتا ہے جب محقق معلومات کی فراہمی اور جمع آوری کا انتظار کر رہا ہوتا ہے۔ چونکہ تعلیمی تحقیق کے منصوبوں کے لیے وقت مقرر ہوتا ہے اور ان کو ایک خاص مدت کے اندر ہی پیش کرنا ہوتا ہے۔ اس لیے اس طرح جدول اوقات، جس میں مختلف حصوں کو مکمل کرنے کے لیے تاریخ مقرر کر لی جاتی ہے، بہت اہمیت کا حامل ہوتی ہے۔

پروفیسر یا نگران تحقیق ایک خاص وقفے کے بعد رفتار کار کے بارے میں پوچھ سکتا ہے تاکہ



معلوم ہو سکے کہ کام کس رفتار سے ہو رہا ہے۔ اس طرح تحقیق کرنے والے کو تحریک ملتی ہے اور وہ کوشش کرتا ہے کہ اس انداز سے کام کرے کہ اس منصوبے کو منظم طریقے سے اختتام تک پہنچایا جائے (۲۰)۔

### ماہر اساتذہ کی کمیٹی اور خاکہ

جب خاکہ مکمل ہو جاتا ہے، تو پیش کرنے پر اساتذہ کی ایک کمیٹی اس کا جائزہ لیتی ہے۔ وہ اس کو منظور یا مسترد کر سکتی ہے یا یہ بھی تجویز کر سکتی ہے کہ اس میں بعض تبدیلیاں کی جائیں اور منظوری کے لیے دوبارہ پیش کیا جائے۔ تحقیق کا یہ مرحلہ اگرچہ بوجھل محسوس ہوتا ہے، لیکن یہ اس مرحلے سے بہت کم تکلیف دہ ہوتا ہے جب محقق نے معلومات جمع کرنے میں اپنا بہت سا وقت، رقم اور کوشش صرف کر لی ہو اور پھر اس کو معلوم ہو کہ تحقیق میں ایسی بہت سی خامیاں رہ گئی ہیں جن کا تقاضا ہے کہ یا تو تحقیقی مطالعے کو ترک کر دیا جائے یا بہت سا کام از سر نو کیا جائے۔ خاکے کی خوبی کافی حد تک تحقیق کی خوبی کو ظاہر کرتی ہے۔ تحقیقی خاکے کو ایسا کام نہیں سمجھنا چاہیے جس کو غیر ضروری مصروفیت کا نام دیا جائے، بلکہ اس کی حیثیت اس ضروری سڑک کے نقشے کی مانند ہوتی ہے جو علم کی سرحدوں میں داخل ہونے کے لیے ذہنی سفر میں راہنمائی کا کام دیتا ہے (۲۱)۔ مختصر یہ کہ ”خاکہ اس طرح بنانا چاہیے کہ وہ موضوع کی حد تک جامع و مانع ہو۔ عام قاری کا اس موضوع اور اس کی تخلیقات کے بارے میں جو دھندلا، غیر واضح، ریزہ ریزہ تصور ہوتا ہے وہ مجتمع اور کسا بندھا ہو جائے۔ اچھا خاکہ وہ ہے جسے دیکھ کر موضوع مہتمم بالشان نظر آنے لگے، تحقیق کار کے سامنے راہیں وضاحت سے کھل جائیں کہ اس نے کن خطوط پر کام کرنا ہے“ (۲۲)۔

### حوالہ جات

- ۱۔ ادبی تحقیق کے اصول، ڈاکٹر تبسم کاشمیری، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۹۲ء، ط اول) ص ۵۰-۵۱۔  
ان نکات (یعنی ۱۵-۲۸ تک) کی تفصیل کے لیے دیکھئے، تحقیق کافن، ڈاکٹر گیان چند، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۹۳ء، ط اول) ص ۷۹-۸۹۔
- ۲۔ تعلیمی تحقیق اور اس کے اصول و مبادی، ڈاکٹر احسان اللہ خان، (نگارشات میاں چیمبرز، لاہور، ۱۹۹۱ء) ص ۴۷۔



- ۳- ایضاً، ص ۴۷-۴۸۔
- ۴- تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، محولہ بالا، ص ۵۱۔
- ۵- فن تحقیق، ڈاکٹر گیان چند، ص ۱۰۶، بحوالہ۔ A.J. Roth The Research Paper, P.70۔
- ۶- ایضاً، ص ۱۰۷، ۱۰۸۔
- ۷- لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، ص ۸۴-۸۵، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ط دوم ۱۹۹۲ء) بحوالہ: Charles H. Busha and Stephen P. Harter  
Rsearch Methods in Librarianship, Techniques  
Interpretation (New York: Academic Press, 1980), p. 11.
- ۸- ایضاً، بحوالہ: John W. Best, Research in Education (3rd ed., New Jersey: Prentice-Hall, 1977), p.25.
- ۹- تحقیق کا فن، گیان چند، محولہ بالا ص ۱۰۶، ۱۰۷ بحوالہ تحقیق اور اس کا طریق کار از ڈاکٹر عندلیب شادانی مشمولہ ”ادبی اور لسانی تحقیق“، مرتب: ڈاکٹر دلوی، ص ۹۲۔
- ۱۰- ایضاً، ص ۸۶ تا ۸۵۔
- ۱۱- ایضاً، ص ۸۷، بحوالہ: Best, op. cit., pp. 27-28.
- ۱۲- ایضاً، بحوالہ: Best, op. cit. pp.27.
- ۱۳- ایضاً ص ۸۷۔
- ۱۴- ایضاً، ص ۸۸، بحوالہ: Deobold B. Van Dalen, Understandig Educational Research, an Introduction (3rd ed., New York: McGrawHill Book Company, 1973), p.123.
- ۱۵- ایضاً، ص ۸۸، بحوالہ: Van Dalen, op. cit. p.194.
- ۱۶- ایضاً، ص ۸۹، بحوالہ: Van Dalen, op. cit. p.194.
- ۱۷- ایضاً، بحوالہ: Best, op. cit. p.27.
- ۱۸- ایضاً، ص ۸۹۔
- ۱۹- ایضاً، بحوالہ: Van Dalen, op. cit. p.194.
- ۲۰- ایضاً، ص ۹۰، بحوالہ: Best, op. cit. p.27.
- ۲۱- ایضاً، بحوالہ: Van Dalen, op. cit., pp. 194-195.
- ۲۲- تحقیق کا فن، گیان چند، محولہ بالا ص ۱۳۱۔



باب ۵

اقسام تحقیق اور ان کے درمیان فرق



## اقسام تحقیق اور ان کے درمیان فرق

اقسام تحقیق اور ان کے درمیان فرق کو بیان کرنے سے قبل مناسب ہے کہ مقاصد تحقیق کو مختصراً بیان کیا جائے کیونکہ مقاصد میں تنوع کے پیش نظر ہی محققین حضرات نے تحقیق کو مختلف انواع میں منقسم کیا ہے یا یوں سمجھئے کہ مقاصد تحقیق میں تنوع ہی اصل میں تحقیق کو مختلف اقسام یا شکلوں و صورتوں میں بانٹنے کا سبب بنا ہے:

### مقاصد تحقیق

تحقیق ایک جامع عمل ہے جو اپنی نوعیت کے اعتبار سے مختلف پہلوؤں پر مشتمل ہے۔ چند پہلو ایسے ہیں جو اپنے مقاصد کے لحاظ سے اہم اور قابل توجہ ہیں۔ ان میں نظریاتی یا بنیادی پہلو، اطلاقی پہلو اور عملی پہلو نمایاں ہیں۔ مقاصد تحقیق یہ ہیں:

### پہلا مقصد

تحقیق کا پہلا مقصد نظریے کی نشوونما اور ارتقاء ہے۔ اس قسم کی تحقیق نئے خیالات کو واضح طور پر متعین کرنے اور مقاصد زندگی کو سمجھنے میں مدد و معاون ثابت ہوتی ہے۔ اس کی سب سے بڑی افادیت اشیاء کو تفصیل سے بیان کرنا ہے جو سائنسی طریقوں کی مدد ہی سے ممکن ہے۔ اس کے نتائج کا اطلاق ہمیشہ مستقبل پر ہوتا ہے۔ اس قسم کی تحقیق کو نظریاتی یا بنیادی تحقیق (Theoretical & Basic Research) کہا جاتا ہے۔

### دوسرا مقصد

تحقیق کا دوسرا مقصد حقائق کو ایک جگہ اکٹھا کرنا ہے۔ لہذا اس عمل کے لیے بکثرت



سروے یا تاریخی تحقیق سے خاص اطلاعات حاصل کی جاتی ہیں۔ علاوہ ازیں! سائنسی طریقہ تحقیق سے بھی حقائق اکٹھے کیے جاسکتے ہیں اور مسائل حل کیے جاسکتے ہیں۔ اسے اطلاقی تحقیق (Factual or Applied Research) کہتے ہیں۔

### تیسرا مقصد

تحقیق کا تیسرا مقصد یہ ہے کہ اس کا تعلق فوری اور عملی مسائل سے ہو یا وہ محقق کو سمجھنے یا حل کرنے میں مدد دے سکے۔ اس قسم کی تحقیق سے تعلق رکھنے والوں کو سائنٹیفک طریقہ تحقیق استعمال کرنا چاہیے۔ تحقیق کے اس مقصد کو انفرادی اور اجتماعی دونوں سطحوں پر حاصل کیا جاسکتا ہے۔ لیکن بالآخر ان دونوں سطح (سطحوں) پر کی جانے والی تحقیق سے تجربات کو ہر صورت بہتر بنانا مقصود ہوتا ہے۔ ایسی تحقیق عملی (Practical or Action Research) کہلاتی ہے (۱)۔

تحقیق کے مقاصد کو حاصل کرنے کے لیے ماہرین تحقیق نے بے شمار قسمیں بیان کی ہیں (۲) لیکن یہ تمام قسمیں خالص تحقیق اور اطلاقی/عملی تحقیق کے دائرے میں آتی ہیں۔ یعنی بنیادی طور پر تحقیق کو ان دو ہی حصوں میں تقسیم کیا گیا ہے اور باقی انواع یا حصے ان کے فروع ہیں۔

### خالص تحقیق

خالص تحقیق کا مقصد معلومات کا دائرہ وسیع کرنا ہے۔ اس عمل میں بہت سے سوالات اور موضوع سے متعلق گوشوں کو بے نقاب کرنے سے تقریباً ایک نئی دنیا کی تلاش کا کام پورا ہو جاتا ہے اور کام کرنے والا اپنے مقصد میں کامیاب ہو جاتا ہے۔

اس طریقہ تحقیق میں تحقیق کے نتائج کو، علوم کی جانچ پڑتال، نئے حقائق کی فراہمی اور مختلف عوامل کے نظریات کے بارے میں تصوراتی ڈھانچے ترتیب دینے ہوتے ہیں۔ خواہ ان نتائج سے سماجی زندگی پر کسی قسم کا اثر ہو یا نہ ہو۔ ان اثرات سے اسکالر بے نیاز ہوتا ہے اور صرف اس قول پر یقین رکھتا ہے کہ علم سب سے بڑا زیور اور صداقت اعلیٰ ترین قدر زندگی ہے (۳)۔



خالص تحقیق کو بنیادی تحقیق بھی کہتے ہیں۔ اس کے متعلق ڈاکٹر احسان اللہ یوں لکھتے ہیں: ”خالص تحقیق میں مظہرات کے بنیادی اصولوں کی فراہمی مقصد ہوتا ہے اور تحقیقی نتائج کو فوری طور پر کسی تعلیمی مسئلہ کے حل کا ذریعہ نہیں بننا ہوتا۔ خالص تحقیق کے نتائج کو علوم کی جانچ پڑتال، نئے حقائق کی فراہمی اور مختلف عوامل کے نظریات کے بارے میں تصوراتی ڈھانچے ترتیب دینا ہوتا ہے“ (۴)۔

اس کے بعد لکھتے ہیں: ”بعض حضرات تعلیمی تحقیق کو خالص تحقیق کے زمرے میں پیش نہیں کرتے مگر یہ ٹھیک نہیں کیونکہ جب تعلیمی محقق تعلیم کے اصولوں کو انضباطی اور تجرباتی طریقوں کے ذریعے تنقیدی مقاصد کے لیے استعمال کرتا ہے تو وہ تعلیم کی سائنس کے لیے بنیادی تحقیق میں مشغول ہوگا۔ مگر جب تعلیم کے اصولوں کی جانچ پڑتال کمرہ جماعت کی تدریس کو بہتر بنانے کے لیے کرتا ہے تو یہ اس کی اطلاقی یا عملی تحقیق کہلائے گی“ (۵)۔

## اطلاقی تحقیق

اس کا مقصد نتائج کی روشنی میں خالص تحقیق کو پرکھنا ہے۔ یہاں صرف معلومات کی حصول یا بی ہی منزل نہیں، بلکہ نتائج کو عملی شکل میں دیکھنا مقصود ہے۔ لہذا مسئلے کو سامنے رکھ کر اسے حل کرنے کے لیے اصول و ضوابط کی حدود میں رہ کر ضروری اقدامات کیے جاتے ہیں۔ گویا خالص تحقیق کا طالب علم مسائل کی نوعیت کا جائزہ لیتا ہے۔ ”کیوں اور کیونکر“ تک اس کی تحقیق کی دنیا محدود ہوتی ہے۔ لیکن اطلاقی تحقیق سے وابستہ افراد مسائل کو حل کرنے میں کوشاں رہتے ہیں۔ تحقیق کے ان دونوں طریقوں میں فرق کے باوجود ان کی دنیا ایک ہے (۶)۔

بنیادی (خالص) تحقیق اشیاء کی ماہیت سے متعلق ہوتی ہے۔ وہ نظریاتی اصولوں سے بھی گہرا تعلق رکھتی ہے۔ کسی نظام کے فکری پہلوؤں، اصولوں اور ضابطوں سے اس کا رشتہ خود بخود پیدا ہوتا ہے (۷)۔ لیکن عملی تحقیق کی دنیا قدرے محدود ہے، اس سے فوری مسائل کے حل تو مل



جاتے ہیں لیکن اس کا اطلاق مختلف جگہوں پر نہیں ہو سکتا۔ لیکن ڈیوڈ جے فاکس کے خیال کے مطابق بنیادی اور عملی تحقیق کا دائرہ عمل ایک خاص مقامی مسئلے کے حل کی تلاش ہے جبکہ بنیادی تحقیق کا دائرہ کار عمومی اور وسیع ہوتا ہے..... (۸)۔

اطلاقی تحقیق کا مقصد تعلیمی مسائل کے بارے میں حقائق کی فراہمی کے بعد ان کا اطلاق فوری طور پر ان مسائل کے حل تلاش کرنے سے ہوتا ہے۔ عام طور پر کہا جاتا ہے کہ بچوں کی نشوونما کے بارے میں تحقیقات زیادہ تر بنیادی (خالص) قسم کی تحقیق ہوتی ہے۔ اور ان نتائج کو تعلیمی منصوبہ بندی اور نصابی پروگراموں میں شامل کیا جاتا ہے۔ یہ بہت حد تک صحیح بھی ہے مگر نشوونما ہی کے بارے میں بہت ساری تحقیق خالصاً اطلاقی بھی ہوتی ہے، مثلاً: بچوں کی پختگی کے میلان یا رخ کے مطابق تدریسی سرگرمیوں میں فوری طور پر تبدیلی کرنا۔ اسی طرح مختلف درجات میں بچے کی جسمانی اور ذہنی پختگی کے ساتھ ساتھ بچوں کی اغلاط کی مختلف شرحوں کے تعین کرنے کے بارے میں تحقیق ایک عملی سرگرمی بن جائے گی (۹)۔

بہر حال ایک بڑا فرق ہم بنیادی (خالص) یا عملی (اطلاقی) تحقیق کے ضمن میں یہ بھی دیکھ سکتے ہیں کہ بنیادی تحقیق اکثر و بیشتر اوقات طبعی سائنسی تجربہ گاہوں کے انضباطی ماحول میں کی جاتی ہے اور عملی تحقیق ضرورت اور مسئلہ کی نوعیت کے مطابق فوری معاشرتی ضرورت کو سامنے رکھتے ہوئے کسی مناسب جگہ پر بھی کی جاسکتی ہے (۱۰)۔

ایک اور بڑا فرق یہ بھی پایا جاتا ہے کہ بنیادی تحقیق کرنے والے خود نتائج کا اطلاق نہیں کرتے مگر اطلاقی تحقیق کے نتائج اکثر اوقات محقق ہی استعمال میں لاتا ہے (۱۱)۔

مختصر یہ کہ: ”سائنسی یا علمی معلومات کا زیادہ ذخیرہ محض علمی نوعیت کا ہی ہوتا ہے۔ علمی معلومات کو انسانی فلاح و خدمت کے قابل بنانے کے لیے مزید تحقیق ناگزیر ہو جاتی ہے۔ ایسی تحقیق کو ”اطلاقی تحقیق“ کہتے ہیں جیسے ایٹمی تحقیق برائے امن، برائے علاج اور تشخیص وغیرہ۔



زرعی تحقیق میں بھی ہمیں اس طرح کی مثالیں ملتی ہیں تجربہ گاہوں میں جو کام ہو رہا ہے، اس کا تعلق اطلاقی تحقیق سے ہے۔ زندگی کے ہر شعبہ میں اطلاقی تحقیق کو فروغ دیا جا رہا ہے۔ اس سے معاشرتی سماجی و دیگر مسائل حل کیے جا رہے ہیں.....“ (۱۲)۔

مزید وضاحت کے حصول کی خاطر ڈاکٹر گیان چند کی کتاب ”تحقیق کا فن“ سے

حسب ذیل اقتباس پیش کیا جاتا ہے:

”تحقیق کی دو قسمیں خالص یا نظریاتی اور اطلاقی تحقیق ہیں۔ یہ فرق قدرتی (Natural) سائنسوں میں زیادہ نظر آتا ہے۔ طبیعیات میں کچھ محقق نظریاتی (Theoretical) تحقیق والے ہوتے ہیں، دوسرے عملی تحقیق والے۔ سائنس کی اطلاقی تحقیق ڈاکٹری علوم، زراعت و باغبانی، نیز انجینئری وغیرہ میں زیادہ نمایاں ہوتی ہے۔ سماجی سائنسوں کی تحقیق میں علاقائی جائزہ (فیلڈ ورک اور سروے) بہت اہم ہوتا ہے، جو سوال ناموں، انٹرویو، گھوم پھر کے اعداد و شمار (Data) اکٹھا کرنا اور ان سے استخراج نتائج پر مشتمل ہوتا ہے۔ مثال کے طور پر تیل صاف کرنے کا کارخانہ یا فولادی برتنوں کی چھوٹی فیکٹری لگانی ہے تو مختلف عوامل کا جائزہ لے کر طے کیا جائے کہ کون سا مقام موزوں ترین ہوگا۔ بازار اور مانگ کا جائزہ لینے کے لیے گھر گھر جا کر معلوم کرنا کہ کپڑے دھونے کا کون سا صابن یاٹی وی اور ریڈیو کے پروگراموں میں کون سا پروگرام مقبول ترین ہے؟ کون سا نامقبول؟ یہ سب معاشیات اور سماجیات کی اطلاقی تحقیق میں آتے ہیں“ (۱۳)۔

## تجرباتی تحقیق

تحقیق کے ضمن میں جن حقائق کا مشاہدہ مطلوب ہوتا ہے، ان کا قابل اعتماد ہونا ضروری ہے۔ ”تاریخی حقائق کی نسبت بیانیہ حقائق (۱۴) پر آسانی سے اعتماد کیا جاسکتا ہے



اور سب سے بڑھ کر ان حقائق کی صحت اور جواز پر یقین کیا جاتا ہے، جن کا عملاً اور اختیاری طریقے پر جوڑ توڑ کرنے کے بعد اس بات کی تسلی کی جا چکی ہو کہ ان کے عناصر ترکیبی کیا ہیں اور وہ کس طرح رونما ہوتے ہیں؟ ایسے جوڑ توڑ (Manipulation) کرنے کا باقاعدہ طریقہ کار ہوتا ہے..... جس میں سائنسی تجزیے کا پیش از وقت منصوبہ تیار کیا جاتا ہے اور اس کے بعد ان اقدام کا باضابطہ طریقے سے اطلاق کیا جاتا ہے جو بالکل معروضی ہوتے ہیں‘ (۱۵)۔

سائنسی تجزیہ میں حالات اور واقعات میں اختیاری طور پر اور عملاً ایسی تبدیلیاں پیدا کی جاتی ہیں جن کے ذریعہ واقعات یا حالات کی علتوں یا واقع ہونے کی وجوہات کا پتہ چل جائے۔ اس کے بعد جن نئی چیزوں کا مشاہدہ ہوتا ہے ان کی تشریح کی جاتی ہے (۱۶)۔

بامقصد جوڑ توڑ اور حالات و واقعات کو اراداً منضبط طریقے سے اس طرح تبدیل کر کے یہ مشاہدہ کرنا کہ متعلقہ واقعہ کس طرح اور کیسے ظہور پذیر ہوا ہے؟ اس سے ہم یہ مراد لیتے ہیں کہ علت اور معلول کا رشتہ قائم کرنے کی کوشش کی گئی ہے۔ کسی عمل کی علت اور معلول کے رشتے کو فرض کر لیا جاتا ہے اور اس کی شناخت پیچیدہ قسم کے تجزیہ سے کرنے کے بعد نتیجہ اخذ کیا جاتا ہے (۱۷)۔

تجرباتی تحقیق میں سائنسی تجزیہ کے اس مقصد کے بیان کے بعد تجرباتی تحقیق میں سائنسی تجزیہ کی نوعیت کو بیان کیا جاتا ہے:

### تجرباتی تحقیق میں سائنسی تجزیہ کی نوعیت

۱۔ مسئلہ زیر مطالعہ کو خصوصی طور پر اس طرح سے بیان کیا جاتا ہے کہ اس کی تعریف اور شناخت بہتر طریقے سے ہو سکے۔

۲۔ مسئلہ کے حل کو فرض کر کے اس سے استخراجی طریقے سے نتیجہ اخذ کر لینا۔

۳۔ اس کے بعد تجرباتی خاکہ تشکیل دیا جاتا ہے جس کے اندر مسئلہ کے بارے میں نتائج حاصل



کرنے تک کے تمام عناصر، شرائط اور ان کے باہمی رشتوں کو شامل کیا جاتا ہے (۱۸)۔

### تجرباتی تحقیق میں تجرباتی خاکے کے عناصر

- (i) زیر تجربہ اشیاء یا افراد کے ایسے نمونے حاصل کرنا جو ان کی آبادی کی نمائندگی کرتے ہوں۔
  - (ii) نمونے کے طور پر حاصل کیے گئے افراد کے متجانس (Homogeneity) ہونے کے لحاظ سے ان کی شناخت کرنا اور جماعت بندی کر لینا۔
  - (iii) ایسے عوامل کی نشاندہی کر کے ان کو زیر انضباط کر لینا جن کا تعلق تجربہ سے نہ ہو۔ دوسرے لفظوں میں جن عوامل کے اثر سے صحیح نتائج حاصل کرنے میں رکاوٹ پیدا ہونے کا خدشہ ہو ان کو مختلف طریقوں سے اثر انداز نہ ہونے دینا۔
  - (iv) ایسے آلات یا آزمائشوں (Tests) کا انتخاب کرنا یا تیار کرنا جن کی مدد سے تجربہ کے نتائج کی پیمائش کی جاسکے۔
  - (v) اس کے بعد اصل تجربہ کا ایک آزمائشی عمل (Trial run) کیا جاتا ہے تاکہ تجرباتی خاکہ اور اس میں استعمال کیے جانے والے آلات کی صحیح کارکردگی کا اندازہ ہو جائے۔
  - (vi) اس کے بعد اصل تجربہ کے لئے مقام، اوقات اور معیاد یا مدت کا تعین کر لیا جاتا ہے۔
- ۴۔ عملی تجربہ سے گزرنے کے اقدامات کی وضاحت خاص کرتا بلع متغیرہ (رد عمل) پر اثر انداز ہونے والے عناصر کے انضباط کے طریقے بتانا۔
- ۵۔ جو معطیات تجربہ سے حاصل ہوں ان کو اس طرح سے پیش کرنا کہ ان سے علت اور معلول کے جس رشتے کو فرض کیا گیا تھا اس کے بارے میں بے لاگ اور تعصب سے پاک ایک معروضی جائزہ حاصل کیا جاسکے۔
- مطالعہ کے نتیجے میں جو نتائج بھی سامنے آئیں انہیں معنی خیزی کی آزمائشوں (Test of significance) پر پرکھا جاتا ہے تاکہ یہ معلوم ہو سکے کہ مطالعہ کا نتیجہ محض امکانات کی وجہ



نہیں ہے۔ بلکہ اصل میں اس نتیجہ کے برآمد ہونے کی وجہ ہمارا تحقیقاتی عمل ہے۔ معنی خیزی کا ٹیسٹ یہ بتاتا ہے کہ سو میں سے کتنی دفعہ ہمارے نتائج کے برآمد ہونے کی توقع پوری ہوتی ہے تاکہ ان کے صحیح ہونے پر اعتبار کر لیا جائے (۱۹)۔

تجرباتی تحقیق کی بنیاد وہ تجسس اور تفتیش کا مادہ ہے جس کے ذریعے مسئلہ کی اصل حقیقت کو جاننے کے بعد رد عمل (وجوہات) کا تعین کیا جاسکے یعنی کسی نہ کسی فرضیے کے تحت یہ ثابت کرنے کی کوشش ہوتی ہے کہ کوئی عمل، علت یا وجہ/ وجوہات (جسے نفسیاتی سائنس میں آزاد متغیرہ کہتے ہیں) کسی خاص رد عمل، معلول یا عمل اثر پذیر (جسے نفسیاتی سائنس میں تابع متغیرہ کہا جاتا ہے) کی/ کے ذمہ دار ہے/ ہیں۔ مختصراً یہ کہ اس بات کا تعین کرنا کہ کسی خاص عمل (آزاد متغیرہ) کی وجہ سے کوئی رد عمل (یا تابع متغیرہ Variable) ظہور پذیر ہوا ہے (۲۰)۔

### تجرباتی تحقیق کی مثال

ایک محقق کے سامنے یہ مسئلہ ہو سکتا ہے کہ وہ تجربہ کر کے یہ جاننا چاہتا ہے کہ بی۔ ایڈ کے طلباء لیکچر کے طریق تدریس سے اچھی طرح سے مستفید ہوتے ہیں یا پراجیکٹ طریق تدریس سے۔ محقق یہ مفروضہ قائم کر لیتا ہے کہ پروجیکٹ طریقہ تدریس کے تحت تعلیم زیادہ ہوتا ہے اور لیکچر طریق کار سے کم۔ یہاں پر آزاد متغیرہ (عمل) طریق تدریس ہے۔ جس کو طلباء کے اوپر ان دو مخصوص طریقہ ہائے تدریس کے تحت تبدیل کیا جاتا رہے گا۔ اور تابع متغیرہ (رد عمل) تعلیم کی وہ خاص سطح ہوگی جسے کم از کم کسی طریقہ کے استعمال کی بدولت اکتساب کا معیار سمجھا گیا (۲۱)۔

### اسلامی علوم میں ہونے والی تحقیق کی اقسام

جامعات اور تحقیقی اداروں میں اسلامی علوم سے متعلق جو تحقیقی کام ہو رہا ہے، اسے علماء

نے تین بڑی قسموں میں تقسیم کر دیا ہے:



## ۱۔ میکائیلی اسلامی تحقیق

اسلامی علوم میں میکائیلی (تکنیکی) تحقیق فی نفسہ مقصود تو نہیں ہوتی مگر تحقیقی عمل میں مدد و معاون ثابت ہوتی ہے، جیسے: فہارس و قوامیس (ڈکشنریاں) تیار کرنا، اشاریے بنانا اور مخطوطات کی تحقیق کرنا وغیرہ۔ اس نوعیت کا تحقیقی کام گریجویٹ یا ایم۔ اے کی سطح تک کرانا چاہیے الا یہ کہ موضوع انتہائی اہمیت کا حامل ہو۔ اس میں اچھے مخطوطوں کی تحقیق شامل ہے۔ گویا اہم مخطوطات کی تحقیق کو صرف ایم۔ اے تک محدود نہیں رکھنا چاہیے بلکہ ایم۔ فل اور پی۔ ایچ۔ ڈی کی سطح تک کے سکالرز سے کام کرانا چاہیے کیونکہ:

۱۔ ”مخطوطات کی تحقیق و تصحیح اور تدوین اسلامی علوم میں تحقیقی منہج کا ایک نہایت اہم اور ناگزیر جزء ہے۔ شاید اسی احساس کی وجہ سے مغرب میں اسلامی تہذیب و ثقافت کے سنجیدہ مطالعہ کا آغاز ہوا تو اسلامی تراث علم میں ممتاز اور اہم کتابوں کے متون کی اشاعت کی طرف خصوصی توجہ مبذول کی گئی اور متقدمین مستشرقین میں سے متعدد فضلاء نے نہایت اہم مخطوطات جدید اسلوب کے مطابق تحقیق و تدوین اور تصحیح کے بعد فہارس اور اشاریوں سے آراستہ کر کے شائع کیے۔ یہ ایک منطقی عمل تھا۔ صدیوں پر محیط اسلامی فکری میراث کے تحقیقی مطالعہ کے لیے ان مخفی خزینوں کا سہل الاستعمال اور ثقہ شکل میں منظر عام پر آنا ضروری ہے“ (۲۲)۔

۲۔ ”مخطوطات انسان کے تہذیبی کارناموں کا ورثہ ہوتے ہیں۔

۳۔ یہ انسان کی سیاسی، معاشی، معاشرتی، ذہنی، فکری، جذباتی اور نفسیاتی حالات کے ترجمان ہوتے ہیں۔

۴۔ یہ اس ماحول اور فضا کو پیش کرتے ہیں جن میں وہ تخلیق ہوئے۔

۵۔ یہ انسانی معاشرہ کی روایات اور اقدار کے امین ہوتے ہیں، جس سے آئندہ نسلیں راہ



نمائی حاصل کرتی ہیں۔

- ۶۔ یہ ماضی کے یادگار واقعات و حالات کا ریکارڈ ہوتے ہیں جس کے مطالعہ سے انسان میں مستقبل سے نمٹنے کا حوصلہ پیدا ہوتا ہے۔
- ۷۔ یہ ماضی کی سائنسی و تکنیکی ایجادات کی پیش رفت کا دستاویزی ثبوت ہوتے ہیں اور ان کی بنیاد پر ترقی کی اگلی منزلوں کی طرف گامزن ہونا آسان ہو جاتا ہے۔
- ۸۔ یہ انسان کی انفرادی اور اجتماعی لغزشوں، فرورگزاشتوں اور خطاؤں کے عکاس ہوتے ہیں جن سے آئندہ نسلوں کے افراد اور ابھرنے والی اقوام درس عبرت حاصل کرتی ہیں اور زندگی کے لیے راہ نما اصول مرتب کرتی ہیں۔
- ۹۔ مخطوطات اپنے خالقوں، شائقوں اور سرپرستوں کے علمی، ادبی اور تخلیقی مقام و مرتبہ کے نقیب اور ان کے ذوق جمال کا پرتو بھی ہوتے ہیں۔
- ۱۰۔ نیز وہ کسی قوم کا مختلف میدانوں میں کردار کا نقشہ بھی پیش کرتے ہیں۔
- ۱۱۔ وہ ایسے حکماء، علماء، ادباء، شعراء، محققین اور فلاسفہ کے کارناموں کی داستان بھی بتاتے ہیں جن سے کسی قوم نے ترقی کی۔ نیز یہ کارنامے آئندہ زندگی کے لیے اعلیٰ بصیرت، تخلیقی صلاحیت، تحقیق شعور اور ادبی ذوق کے لئے تازیا نہ ثابت ہوتے ہیں۔
- ۱۲۔ مخطوطات (حقیقت میں) حکام، امراء اور عوام کی علم دوستی اور ان کے تعلیمی نظریات کے ترجمان بھی ہوتے ہیں۔
- ۱۳۔ مخطوطات کی مقدار و معیار سے کسی قوم کی تہذیبی سطح کا بخوبی اندازہ لگایا جاسکتا ہے۔
- ۱۴۔ اسلام میں مخطوطات کی تخلیق، ان کی تحفیظ اور آئندہ نسلوں تک منتقلی ایسے اسلامی شعائر ہیں جن کی مثال کسی دوسرے مذہب میں نہیں ملتی۔
- ۱۵۔ مخطوطات کے بارے میں ایک اہم بات یہ بھی ہے کہ یہ افراد اور اقوام کے مذہبی



رجحان اور عقیدے کے مظہر ہوتے ہیں۔

۱۶۔ مخطوطات محض ماضی کی کاروائیوں کو پیش نہیں کرتے بلکہ مستقبل کی زندگی سنوارنے اور بلندیوں کی طرف اڑنے کے لیے انسان کو پرواز بھی عطا کرتے ہیں۔ یہ انسانی تعلیم و تربیت کا بہترین ذریعہ ہوتے ہیں۔ تعلیم کو عام کرنے اور اسے آگے بڑھانے کا بہترین آلہ کار ہوتے ہیں (۲۳)۔

## ۲۔ تاریخی تحقیق

اسلامی علوم کے حوالے سے تاریخی (سوانحی) تحقیق میں مسلم شخصیات کی سوانح حیات اور ان کی علمی خدمات کو زیر بحث لایا جاتا ہے۔ اس نوعیت کے موضوعات کو صرف ان کی اہمیت و افادیت کی بنیاد پر تحقیق کے لیے منتخب کرنا چاہیے۔ موضوع اختیار کرتے وقت یہ دیکھ لینا چاہیے کہ حال اور مستقبل میں ملت اسلامیہ کے لیے وہ کن کن پہلوؤں سے سود مند ثابت ہو سکتا ہے (۲۴)۔

## ۳۔ تعمیری تحقیق

ڈاکٹر محمود احمد غازی (۲۵) نے اسے دو حصوں میں تقسیم کیا ہے: تطہیر فکر اور تعمیر فکر:

۱۔ تطہیر فکر، رائج الوقت علوم و فنون کا اسلامی نقطہ نظر سے تنقیدی جائزہ لے کر کھر اور کھوٹا لگ کر دینا اس میں شامل ہے لیکن اس کے لئے ضروری ہے کہ ہم سب سے پہلے مغرب کی فکری امامت کے وہم و طلسم کو پاش پاش کر دیں۔ انہوں نے جو نظام فکر و عمل مرتب کیا ہے اس کا باطل اور برسر غلط ہونا دلائل و براہین سے ثابت کر دیں۔ یہ کام عالم اسلام کی فکری آزادی اور ثقافتی بقاء کے لیے سب سے زیادہ ضروری ہے۔ عالم اسلام کو سیاسی آزادی حاصل کیے چوتھائی صدی کے قریب گزر چکا لیکن فکری طور پر مسلمان آج پہلے سے زیادہ غلام ہیں۔ اس وقت مغرب اور معصومیت ہمارے نزدیک دو مترادف الفاظ ہو کر رہ گئے ہیں۔ مغرب سے نسبت حق و انصاف کا



کافی معیار ہے، کسی چیز کی صداقت اور حقانیت کو پرکھنے اور جانچنے کے لیے آج اس کا مغرب کے رائج الوقت تصورات کے مطابق ہونا کافی سمجھا جاتا ہے۔

اس انداز فکر کو تبدیل کرنا اور مغرب کی عصمت سے انکار کرنا ہی اس راہ میں پہلا قدم ہے۔ مولانا ابوالحسن علی ندوی کے الفاظ میں ہمیں مغربی علوم کو خام مال Raw material سمجھنا چاہیے اور وہی سلوک کرنا چاہیے جو ہر خام مال کے ساتھ کیا جاتا ہے۔ نہ تو ہم اس کو جوں کا توں اپنے کام میں لا سکتے ہیں اور نہ محض ناکارہ قرار دے کر پھینک سکتے ہیں۔ ہمیں اپنی اقدار کی روشنی کو پرکھنا چاہیے۔ جو چیزیں حقائق ثابتہ کا درجہ رکھتی ہوں ان کو قبول کر لیں، جو چیزیں حقائق ثابتہ نہ ہوں اور ہماری اقدار سے معارض ہوں، ان کو ہم رد کر دیں اور باقی ماندہ کی اصلاح کر کے ان سارے علوم کو اپنے مقاصد کے لیے تیار کریں۔

اس ضمن میں سب سے پہلے جن علوم و نظامات فکری کی تطہیر کرنی ہے، ان میں فلسفہ اور اس کی ساری شاخیں، علم سیاسیات، قانون و دستور، نفسیات، معاشیات، عمرانیات، انسانیات وغیرہ شامل ہیں۔ اس معاملے میں ہم کو بلا جھجک کمیونسٹ ممالک کے تجربات سے فائدہ اٹھانا چاہیے۔ انہوں نے گزشتہ نصف صدی میں سارے علوم و فنون کی تدوین جدید کر کے ان کو مکمل طور پر کمیونسٹ فلسفہ سے ہم آہنگ کر لیا ہے۔ کمیونسٹ انقلاب سے قبل کے سارے علوم کو انہوں نے بورژوا قرار دے کر مسترد کر دیا اور اپنے مقاصد کے لیے ناکارہ ٹھہرایا حتیٰ کہ انہوں نے سائنس جیسے خالص مادی علم کی بھی دو قسمیں قرار دیں: ایک بورژوا سائنس قرار پائے، ایک کمیونسٹ سائنس۔ انہوں نے دنیا بھر کی تاریخ تک بدل ڈالی۔ کمیونسٹ علمائے تاریخ نے دنیا بھر کی تاریخ کی مادی تعبیر کر کے اس کو از سر نو مرتب کر کے رکھ دیا۔ اس طرح کمیونسٹ اصولوں پر معاشیات، سیاسیات، قانون، فلسفہ، غرضیکہ ہر علم و فن کی ترتیب نو کر دی، پھر آخر ہم مسلمانوں کو یہ کام کرنے سے کیا چیز مانع ہے۔ کمیونسٹوں کے مقابلے میں تو ہم کہیں کم مدت میں اور نہایت بہتر عقلی اور علمی



انداز میں یہ کام کر سکتے ہیں۔

مزید برآں علوم و فنون کی یہ تطہیر ایک مسلسل عمل ہے جو کبھی ختم نہ ہوگا۔ اس لیے کہ علم ایک ترقی پذیر قدر ہے۔ جوں جوں کائنات اور اس کے مختلف شعبے اپنے آپ کو انسانی عقل و فکر کے سامنے کھولتے جائیں گے، علوم کی ترقی ہوتی رہے گی۔ اگر علوم و فنون کی اس ترقی اور ہر دم تغیر کے ہر مرحلے میں ان کا از سر نو جائزہ نہ لیا گیا اور ان کی مرحلہ وار جانچ پڑتال نہ کی گئی تو جلد ہی ہماری تہذیبی اقدار اور معاشرتی علوم میں خلا اور تباہی پیدا ہو جائے گا اور ایک زبردست فکری اختلاف معاشرے میں جنم لے گا۔ علوم و فنون کی اسی تطہیر و تنقیح مسلسل کی ضرورت کی طرف علامہ اقبالؒ نے اشارہ کرتے ہوئے فرمایا تھا۔ ”ہمارا فرض یہ ہے کہ ہم انسانی فکر کے ارتقاء پر نہایت محتاط انداز میں نظر رکھیں اور اس کے بارے میں ایک تنقیدی نقطہ نظر کو بھی قائم رکھیں۔“

۲۔ تعمیر فکر، تطہیر فکر کے بعد اسلامی تحقیق کا سب سے بڑا کام تعمیر فکر کا ہے۔ اسلامی نقطہ نظر سے تمام قدیم و جدید علوم کی ترتیب نو اور تشکیل جدید اس میں شامل ہے۔ قرآن و سنت کے غیر متغیر اور ناقابل تبدل اصولوں کی روشنی میں علوم کو اس طرح مرتب کرنا کہ وہ عصر حاضر میں ہمارے لیے کارآمد ثابت ہو سکیں اور ایک ایسے نظام فکر و عمل اور تہذیب و تمدن کی تعمیر میں مدد دے سکیں جو عصر حاضر میں دنیا کے سامنے اللہ کے دین کی گواہی دے سکے۔ ﴿لَسْنَا يَكُونُ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ﴾ (سورۃ النساء (۴)، ۱۶۵) تاکہ اللہ کی حجت دنیا والوں پر تمام ہو سکے اور کوئی شخص اللہ کے خلاف کوئی حجت پیش نہ کر سکے۔

علوم کی تشکیل جدید کے اس کام کو برصغیر میں سب سے پہلے شاید علامہ اقبال ہی نے محسوس کیا تھا۔ فلسفہ اور مابعد الطبیعیات کے میدان میں علامہ مرحوم کی تطہیری اور تعمیری مساعی اسلامی فکر کی تاریخ کا نمایاں باب ہیں۔ علامہ کے بعد یہ میدان تقریباً خالی ہی نظر آتا ہے۔ بعض افراد نے مختلف علوم میں کچھ قابل ذکر کام کیا لیکن یہ کام ایک دو اشخاص کے کرنے کا نہیں۔ اس



کے لیے ایک ہمہ گیر اور بھرپور تحریک کی ضرورت ہے۔ ایک ہی گیر اور بھرپور مہم کے طور پر علوم کی تشکیل جدید کا یہ کام کامیابی کے ساتھ اس وقت ہو سکتا ہے، جب ہمارا تعلیمی نصب العین متعین ہو اور ہم پوری سنجیدگی کے ساتھ فی الواقع ایسے ارباب فکر و دانش کی ایک جماعت پیدا کرنا چاہتے ہوں جو قرآن مجید کی روشنی میں سارے رائج الوقت علوم و معارف کا جائزہ لیں اور کھرا کھوٹا الگ کر دکھائیں۔ ابھی تک تو ہمارے ہاں کوئی ایسا مربوط نظام تعلیم بھی نہیں ابھر سکا جو سارے اسلامی، عمرانی اور طبعی علوم کا ایک جامع ہو اور اس کے ہر ہر جزو میں خدا پرستی اور اسلامیات کی قرآنی روح جاری و ساری ہو۔ ابھی تک جو ایک دو کوششیں ہوئی ہیں، وہ غیر مربوط پیوند کاری کے مترادف ہیں۔

علوم کی تنقید و تنقیح کے اس عظیم الشان کام کے لیے اب تاریخ ہم کو مزید مہلت شاید نہ دے۔ اگر مستقبل قریب میں بھی ہم کچھ کر لینے میں کامیاب ہو گئے تو خیر ورنہ اسلامی اقدار اور اسلامی تہذیب کا احیاء ایک خواب و خیال ہو کر رہ جائے گا بلکہ تغیر پیہم کی اس دنیا میں ہمارے لیے اپنا وجود باقی رکھنا بھی ممکن نہ رہے گا۔ علامہ اقبال نے آج سے پچاس سال قبل جو بات اسلامی اصول فقہ کے بارے میں کہی تھی وہ آج سارے علوم و فنون پر صادق آرہی ہے۔ اس وقت اس کی جتنی اہمیت تھی، آج اس سے کہیں بڑھ کر ہے۔ علامہ نے فرمایا تھا:

”میرا عقیدہ ہے کہ جو شخص زمانہ حال کے جو رس پروڈنس (اصول قانون) پر ایک تنقیدی نگاہ ڈال کر احکام قرآنیہ کی ابدیت کو ثابت کرے گا، وہی اسلام کا مجدد ہوگا اور بنی نوع انسان کا سب سے بڑا خادم بھی وہی شخص ہوگا۔ قریباً تمام ممالک اسلامیہ میں مسلمان یا تو اپنی آزادی کے لیے لڑ رہے ہیں یا قوانین اسلامیہ پر غور کر رہے ہیں۔ غرض یہ وقت عملی کام کا ہے کیونکہ میری ناقص رائے میں مذہب اسلام گویا زمانہ کی کسوٹی پر کسا جا رہا ہے اور شاید تاریخ اسلام میں ایسا وقت اس سے پہلے کبھی نہیں آیا۔“



لیکن علوم و فنون کی تدوین نو کے اس عمل کے انتظار میں ہم دوسرے شعبوں میں اسلامی نقطہ نظر سے اصلاحات کے کام کو نہ ملتوی کر سکتے ہیں اور نہ مؤخر کر سکتے ہیں۔ ہماری رائے میں ان دونوں کاموں کو ایک ساتھ ہی ہونا چاہیے بلکہ اگر یہ دونوں کام ایک ساتھ شروع کیے جائیں تو دونوں ایک دوسرے کے مدد و معاون اور تکمیل کنندہ ثابت ہوں گے اور ایک کی راہ میں حائل دشواریوں کو دور کرنے کی ہر کوشش دوسرے کی راہ میں حائل دشواریوں کو ختم کرنے میں بھی مدد دے گی (۲۶)۔

اس بحث کو مد نظر رکھتے ہوئے ایم۔ فل اور پی۔ ایچ ڈی کے لیے ایسے موضوعات پر کام کرایا جائے جو تعمیری نوعیت کی تحقیق سے متعلق ہوں۔

## حوالہ جات

- ۱۔ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۸۶ء، ط اول) ج ۱ ص ۶، ۷۔
- ۲۔ اقسام کے لیے دیکھئے: تعلیمی تحقیق اور اس کے اصول و مبادی، ڈاکٹر احسان اللہ خان، (نگارشات میاں چیمبرز، لاہور ۱۹۹۱ء) ص ۶۷ و ما بعدھا۔
- ۳۔ اصول تحقیق، بخش، مجولہ بالا، ج ۱، ص ۷، ۸، بحوالہ:
- Andrey, J. Roth, The research paper form & Content, Belmont, California, Wadsworth publishing Co., Inc., 1966, P.4-5.
- ۴۔ تعلیمی تحقیق، خان، مجولہ بالا، ص ۷۸، ۷۹۔
- ۵۔ ایضاً، ص ۷۹۔
- ۶۔ اصول تحقیق، بخش، مجولہ بالا، ج ۱، ص ۸۔
- ۷۔ ایضاً، ص ۹، بحوالہ، تحقیق کا طریقہ کار، ڈاکٹر ش۔ اختر، ص ۲۵۔
- ۸۔ اصول تحقیق، سابق حوالہ ص ۹، بحوالہ: Darid, J. Fox, The Research process in Education, p.97.



- ۹۔ تعلیمی تحقیق، خان، محولہ بالا، ص ۷۹۔
- ۱۰۔ ایضاً۔
- ۱۱۔ ایضاً۔
- ۱۲۔ معاشرتی تحقیق، مرزا محمد، ص ۶، (رضا مہدی پروگریسو پبلشرز، لاہور ۱۹۸۹ء، ط اول)۔
- ۱۳۔ تحقیق کافن، ڈاکٹر گیان چند، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۹۴ء، ط اول) ص ۱۳، ۱۴۔
- ۱۴۔ بیانیہ (وضاحتی) حقائق وہ ہوتے ہیں جنہیں حالات و واقعات یا حقائق وغیرہ کی صورت میں بعینہ اسی طرح واضح طور پر بیان کیا جائے جس طرح وہ اپنی اصلی حالت میں رونما ہوئے ہوں (تفصیل کے لیے دیکھئے تعلیمی تحقیق، خان، محولہ بالا، ص ۸۷ تا ۹۱)۔
- ۱۵۔ ایضاً، ص ۹۲۔
- ۱۶۔ ایضاً۔
- ۱۷۔ ایضاً، ص ۹۲، ۹۳۔
- ۱۸۔ ایضاً، ص ۹۳۔
- ۱۹۔ ایضاً، ص ۹۳۔
- ۲۰۔ ایضاً، ص ۹۳، ۹۵۔
- ۲۱۔ ایضاً، ص ۹۵۔
- ۲۲۔ پاکستان میں تحقیق مخطوطات کا مسئلہ اور چند تجاویز، ڈاکٹر شیر محمد زمان، درمجلہ "فکر و نظر، مخطوطات۔ خصوصی اشاعت" ص ۱۷، ج ۳۵، ش ۲، ۳۔ اکتوبر تا مارچ ۱۹۹۰ء۔
- ۲۳۔ مخطوطات: اہمیت، حصول، تحفظ، ڈاکٹر انجم رحمان، درمجلہ فکر و نظر محولہ بالا، شمارہ، ص ۳۱، ۳۲۔
- ۲۴۔ تفصیل کے لیے دیکھئے: تحقیق نگاری، ڈاکٹر محمد طفیل ہاشمی، ص ۱۸، ۱۹، وقاضی، ڈاکٹر سعید اللہ، اصول تحقیق ص ۵۹۔
- ۲۵۔ ادب القاضی، مرتب و مدون: ڈاکٹر محمود احمد غازی، ص ۱۶ تا ۱۸۔
- ۲۶۔ اس بحث کی تلخیص کے لیے دیکھئے: اصول تحقیق، سعید اللہ قاضی، (ادارہ تعلیمی تحقیق، تنظیم اساتذہ پاکستان، لاہور، اشاعت دوم: ۲۰۰۲ء)۔



باب ۶

ماخذ کا مفہوم اور اولین و ثانیوی ماخذ میں فرق



## ماخذ کا مفہوم اور اولین و ثانوی ماخذ میں فرق

### ماخذ کا مفہوم

ماخذ کا اطلاق ان ذرائع پر ہوتا ہے جن سے کسی بھی زیر تحقیق موضوع کی تکمیل کے

لئے مواد اخذ کیا جاتا ہے۔ ماخذ کو مصداق

دریا منابع یا مراجع بھی کہتے ہیں۔ محققین نے ماخذ کے مفہوم کو یوں بیان کیا ہے:

”ماخذ میں وہ کتابیں، رسالے اور تحریریں شامل کی جاتی ہیں جن کا تعلق متن کی اساسیات سے ہوتا ہے، یعنی متن کے مختلف مخطوطے یا مطبوعہ نسخے جو اس کی تیاری، صحت اور تکمیل میں اساسی اہمیت رکھتے ہیں۔ مصادر میں ان ماخذ کو شامل کیا جاتا ہے جن سے مقدمہ اور حواشی کی ترتیب میں مدد لی گئی ہو۔ مراجع میں ایسی کتب کا ذکر آسکتا ہے جن سے توسیعی اور تفصیلی معلومات کی فراہمی میں مزید مدد مل سکتی ہو۔ سب سے پہلے قلمی ماخذ پھر قدیم مطبوعات اور آخر میں بیاضوں اور رسائل وغیرہ کا تذکرہ ہوتا ہے۔ ان سب کی فہرستیں علیحدہ علیحدہ تیار کی جاتی ہیں“ (۱)۔

### ماخذ کی اقسام

ماخذ دو طرح کے ہوتے ہیں: اولین (بنیادی) اور ثانوی، ”عام طور پر تجربے، ذاتی تفتیش و تلاش، انٹرویوز، سوال نامے، تحقیقی مقالات و مضامین، خطوط، ڈائریاں، خودنوشتہ سوانح عمریاں، متن اور ادب کی تخلیقی تحریریں، حکومت، بورڈ، تحقیقی اداروں، دانش گاہوں وغیرہ کی رٹنڈا دیں، اخبارات، مخطوطات اور فرامین وغیرہ کو بنیادی ذرائع (ماخذ) میں شمار کیا جاتا ہے۔ تحقیق



میں جن حقائق کو دریافت کیا جاتا ہے، ان کے لیے بنیادی مآخذ حوالہ بہم پہنچاتے ہیں“ (۲)۔  
 جہاں تک ثانوی مآخذ کا تعلق ہے تو ان میں وہ کتب، مقالات، یاریکار ڈز شامل ہوتے  
 ہیں جن میں واقعات و حقائق سے متعلقہ معلومات کو واقعات میں شریک ہوئے بغیر اور حقائق کا  
 مشاہدہ کیے بغیر ہی درج کر لیا جاتا ہے ”اگر کوئی مصنف کسی دوسرے مصنف کا اقتباس پیش کرتا  
 ہے تو یہ ثانوی مصادر میں شمار ہوگا۔ نصابی کتب، جنتریاں، دائرۃ المعارف اور اطلاعات کے ایسے  
 ہی خلاصے ثانوی مصادر گنے جاتے ہیں“ (۳)۔

## اصول

ثانوی مآخذ سے استفادہ کرنے کے لیے فن تحقیق کے ماہرین کے وضع کردہ اصولوں  
 میں سے کچھ یہ ہیں:

- ۱۔ ثانوی مآخذ پر اصل مآخذ کو ترجیح دیجئے۔ یعنی اگر کسی نے پیشتر کی کتاب یا تحریر کا حوالہ دیا  
 ہے تو بہتر ہے کہ اصل مآخذ کو دیکھ لیجئے۔ بعض اوقات ثانوی حوالے میں کوئی بات غلط  
 ہو سکتی ہے نیز اصل مآخذ میں کوئی مزید معلومات مل سکتی ہیں۔۔۔
- ۲۔ اگر کسی ثانوی کتاب یا مضمون میں کسی پہلے کی کتاب کا کوئی حوالہ یا اقتباس ہے اور آپ  
 یہ حوالہ ثانوی کتاب سے لیتے ہیں تو یہ ہرگز ظاہر نہ کیجئے کہ آپ نے حوالہ اصل کتاب  
 سے لیا ہے، بلکہ ثانوی مآخذ کے حوالے سے لکھیے۔ اگر ایسا نہیں کریں گے تو کسی بھی  
 موقع پر غلطی پکڑی جائے گی اور آپ کو شرمندگی ہوگی۔ نہ بھی ہو تو یہ اخلاقیات تحقیق  
 کے منافی ہے کہ مآخذ کچھ ہو، حوالہ کسی دوسرے مآخذ کا دیا جائے۔۔۔
- ۳۔ کسی دوسری کتاب یا مضمون کے اردو ترجمے کا حوالہ دینا ہے تو اصل مآخذ کو دیکھ لیجئے۔۔۔ (۴) کیونکہ  
 ترجمہ ثانوی مآخذ میں شمار ہوتا ہے۔

## معتبر مآخذ

ماہرین تحقیق نے معتبر مآخذ طے کرنے کے درج ذیل اصول بتائے ہیں:

- ۱۔ جس مآخذ سے سب سے زیادہ معلومات ملتی ہیں وہ بہتر ہے۔



- ۲۔ جو مواد کئی کتابوں میں ملتا ہے وہ زیادہ اہم ہے۔
- ۳۔ غور کیجئے کہ آپ کے موضوع کے میدان میں کون سا مصنف بہترین ہے۔
- ۴۔ جس کتاب سے آپ مواد لے رہے ہیں اس کے بارے میں طے کیجئے کہ یہ کتنی معتبر ہے۔
- ۵۔ کتاب کے اسلوب سے اس کے پایہ اعتبار کے بارے میں اندازہ ہوتا ہے (۵)۔

## فرق

مذکورہ بالا سطور میں اوّلین اور ثانوی ماخذ میں کیفیت و نوعیت کے اعتبار سے فرق کو واضح کیا گیا ہے۔ (اس فرق کو اسی اعتبار سے دستاویزی (تاریخی) تحقیق کے حوالے سے ذرا وضاحت کے ساتھ بعد میں بیان کیا جائے گا۔ مگر جہاں تک بنیادی و ثانوی ماخذ میں واضح طور پر فرق اور حد فاصل قائم کرنے کا تعلق ہے تو ماہرین تحقیق نے اسے مشکل معاملہ قرار دیا ہے، چنانچہ ڈاکٹر احسان اللہ کہتے ہیں کہ: ”یہ امر ذرا مشکل ہے کہ کسی ماخذ کے ابتدائی اور ثانوی ہونے کے مابین واضح حد فاصل کا تعین کیا جاسکے“ (۶)۔

ہاں ایک ہی چیز ایک موضوع کے لیے اوّلین اور دوسرے کے لیے ثانوی ماخذ ہو سکتی ہے اور حیثیت کا یہ تغیر اصل میں تحقیقی موضوع کی کیفیت و نوعیت پر مبنی ہے، یعنی تحقیقی عمل کی نوعیت سے مصادر کی نوعیت تبدیل ہو جاتی ہے، چنانچہ سید جمیل احمد رضوی لکھتے ہیں:

”..... بعض اوقات تحقیق کی نوعیت سے مصادر کی نوعیت بدل جاتی ہے۔ مثلاً

نصابی کتابوں کو ثانوی مصادر میں شمار کیا جاتا ہے، لیکن اگر کوئی محقق شعبہ تعلیم

میں نصابی کتب کی ترتیب و تدوین پر کام کر رہا ہو تو اس صورت میں نصابی

کتابیں ثانوی کی بجائے بنیادی ماخذ کی حیثیت اختیار کر جائیں گی“ (۷)۔

## ماخذ کی اہمیت

ماخذ خواہ بنیادی ہوں یا ثانوی ان کی اہمیت مندرجہ ذیل نکات کی حامل ہوتی ہے:



- ۱۔ ماخذ کے بغیر نئے حقائق کو منظر عام پہ نہیں لایا جاسکتا۔
- ۲۔ ماخذ کے بغیر مستند اور معروضی نوعیت کی حامل تحقیق ممکن نہیں۔
- ۳۔ ماخذ کے بغیر فہرست کتب، تصحیح و تدوین متن، حواشی و تعلیقات، اقتباس اور حوالے کا اندراج جیسے تحقیقی اقدام اٹھانا ممکن نہیں۔
- ۴۔ ماخذ کے بغیر تحقیق میں شامل جعل سازی یا سرقہ کی نشاندہی کرنا ممکن نہیں۔
- ۵۔ ماخذ کے بغیر قدیم معلومات اور روایات کی دریافت ممکن نہیں۔
- ۶۔ ماخذ کے بغیر کسی دو شخصیات، نظریات، گروہ یا اداروں کے مابین تقابلی جائزے اور کسی شخصیت کی کیس سٹڈی جیسے طریقہ کار میں بیانیہ تحقیق کا کام ممکن نہیں۔
- ۷۔ ماخذ کے بغیر کسی قسم کی تحقیقی صلاحیتوں اور کارناموں پر روشنی نہیں ڈالی جاسکتی (۸)۔

## حوالہ جات

- ۱۔ اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، (مطالعاتی راہنما، کوڈ نمبر ۱۱۷) ص ۹۲-۹۳، (علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی اسلام آباد، سن-ن)۔
- ۲۔ ایضاً، ص ۱۰۴۔
- ۳۔ لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، ص ۱۲۴، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد ۱۹۹۲ء، ط دوم)۔
- ۴۔ تحقیق کافن، ڈاکٹر گیان چند، ص ۲۰۳-۲۰۵، تلخیص، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۹۴ء، ط اول)۔
- ۵۔ ایضاً، ص ۱۹۵، بحوالہ: Roth, Audrey, J., The research paper, form and content, (Woodsworth publishing Company, Belmont, California 1966), p.54.
- ۶۔ تعلیمی تحقیق، ڈاکٹر احسان اللہ خان، ص ۸۴، لاہور۔
- ۷۔ اصول تحقیق، رضوی، محولہ بالا ص ۱۲۴۔
- ۸۔ مزید تفصیل کے لیے دیکھئے: ماہو، غلام عباس، تحقیق و تدوین، ص ۱۸۰، ۱۸۱، مکتبہ دانیال، لاہور، سن-ن۔



باب ۷

دستاویزی تحقیق اور اس کے لیے  
بنیادی وثائق کی ماخذ کا تعین



## دستاویزی تحقیق اور اس کے لیے بنیادی و ثانوی ماخذ کا تعین

### دستاویزی اسلوب تحقیق

دستاویزی اسلوب تحقیق کو تاریخی اسلوب تحقیق بھی کہا جاتا ہے۔ اس اسلوب کے مفہوم و دیگر متعلقات کے بیان سے قبل مناسب ہے کہ لفظ ”تاریخ“ کے مفہوم کو بیان کیا جائے تاکہ کسی قسم کا ابہام باقی نہ رہے:

### تاریخ کا مفہوم

#### الف۔ لغوی مفہوم

لغت میں ”تاریخ“ وقت سے آگاہ کرنے کو کہتے ہیں (کسی چیز کے واقع ہونے کا وقت بتانا)۔ اہل لغت بولتے ہیں کہ ”ارخت الكتاب وورختہ“ یعنی لکھنے کا وقت ظاہر کر دیا۔ اسماعیل بن حماد الجوهری (متوفی ۳۹۳ھ) کا قول ہے کہ تاریخ اور تواریخ دونوں کے معنی ہیں وقت سے آگاہ کرنا۔ چنانچہ ”ارخت“ بھی کہا جاتا ہے اور ”ورخت“ بھی۔ بعض اہل لغت کا قول ہے کہ تاریخ ارخ (ہمزہ کوز بر بھی اور زیر بھی) سے مشتق ہے۔ ارخ وحشی گائے (نیل گائے) کے مادہ بچہ کو کہتے ہیں اور اس کی وجہ تسمیہ یہ ہے کہ جس طرح بچہ نومولود ہوتا ہے، اسی طرح تاریخ بھی ایک نوا ایجاد چیز ہے۔



عبدالملک بن قریب الاصمعی (متوفی ۲۱۵ھ) نے دونوں لہجوں (ارخ اور ورخ) کے درمیان یہ فرق بتایا ہے کہ بنی تمیم ”ورخت الکتاب تورینخا“ بولتے تھے اور قبیلہ قیس ”ارختہ تاریخا“ کہتا تھا۔ اس سے معلوم ہوا کہ تاریخ کا لفظ اصلاً عربی ہے۔ لیکن بعض لوگوں کا کہنا ہے کہ یہ خالص عربی نہیں ہے بلکہ معرب ہے اور ماخوذ ہے فارسی کے ”ماہ“ و ”روز“ سے۔ ”ماہ“ چاند کو کہتے ہیں اور ”روز“ دن کو، گویا دن اور رات تاریخ کے کنارے ہیں۔ (۱)

### ب۔ اصطلاحی مفہوم

اصطلاح میں اس کے معنی ہیں وقت بتا کر سارے احوال کو متعین کرنا۔ تاریخ وہ فن ہے جس میں سارے زمانے کے واقعات سے بحث کر کے ان کی تحدید اور وقت کا تعین کیا جاتا ہے۔ یوں کہنا چاہیے کہ اس میں ساری دنیا کے واقعات سے بحث کی جاتی ہے۔ تاریخ کا موضوع ہے ”انسان“ اور ”زمان“۔ لفظ تاریخ کا معنی ہے علم اور سچائی کی تلاش۔ ”دریافت کرنے کے لیے تلاش کا عمل“۔ تاریخ گذشتہ حالات و واقعات کا مربوط بیان ہوتا ہے یا ان کی وضاحت ہوتی ہے جس کو صداقت کے پیش نظر تنقیدی زاویہ نگاہ سے لکھا جاتا ہے۔ چونکہ تحقیق کے اس طریقے میں دستاویزات اور ریکارڈز کو استعمال کیا جاتا ہے، اس لیے اس کو دستاویزی تحقیق (Documentary Research) کہتے ہیں۔ اس طریق تحقیق کا استعمال ہر علمی شعبے میں کثرت کے ساتھ کیا جاتا ہے۔ تاریخ، ادب، لسانیات اور انسانی علوم میں یہ بہت اہمیت رکھتا ہے۔ (۲)۔

تاریخ میں گذشتہ حالات و واقعات کو ان کے معاشرتی اور عمرانی پس منظر میں دیکھا جاتا ہے۔ تاریخ کا میدان بہت وسیع ہے، اتنا وسیع جتنی کہ انسان کی زندگی۔ یہ انسان کے تمام تر ماضی کے واقعات سے متعلق ہے۔ حالات و واقعات کو تاریخی تناظر میں دیکھنے کے ساتھ ساتھ ان کو اس طرح بھی دیکھنا چاہیے کہ وہ ایک خاص معاشرتی ماحول میں وقوع پذیر ہوتے ہیں۔ ان کا



ظہور الگ حیثیت سے نہیں ہوتا، بلکہ معاشرتی عمل سے ان کا گہرا تعلق ہوتا ہے۔ کسی فرد کے سوانحی حالات اس وقت تاریخ کا روپ دھار لیتے ہیں جب اس کو اپنے زمانے کے معاشرے کے حوالے سے زیر بحث لایا جاتا ہے۔ لیکن جب اس کے حالات کو معاشرتی پس منظر سے الگ کر کے زیر بحث لایا جائے گا، تو وہ تاریخ نہ ہوگی (۳)۔

خلاصہ یہ کہ اس فن میں زمانہ کے واقعات سے تعین اور وقت کی حیثیت سے بحث کی جاتی ہے بلکہ اس بات سے بھی کہ دنیا میں کب، کیا اور کیسے تھا، اور اس کا موضوع زمانہ اور انسان ہے یعنی زمانے کی معرفت اور انسان کے احوال کی معرفت (۴)۔

مختصر ترین الفاظ میں تاریخ کے مفہوم کو یوں بیان کیا جاسکتا ہے کہ تاریخ قوموں اور امتوں کے عروج و زوال کی ایسی داستان کو کہتے ہیں جس کے آئینہ میں ماضی کے احوال کو مستقبل میں دیکھا جاسکتا ہے۔ تاریخ کے اس مفہوم کی بنیاد پر کہا جاسکتا ہے کہ: ”تاریخی تحقیق کے طریقے سے تعلیم کے بارے میں ایسے حقائق کو جمع کرنا، منتخب کرنا، ان کا جائزہ لینا اور تصدیق کرنا یا پھر ان کی درجہ بندی کرنا ہوتی ہے، جن کا تعلق گزرے ہوئے زمانہ، گذشتہ حالات اور گم گشتہ واقعات سے بھی ہوتا ہے..... گذشتہ حالات و واقعات کے بارے میں صحیح صحیح معلومات حاصل کر لینے کا دوسرا بڑا مقصد حال اور مستقبل کے تعلیمی حالات اور واقعات کے بارے میں اندازہ لگانا ہوتا ہے“ (۵)۔

## دستاویزی تحقیق کی اہمیت و افادیت

دستاویزی تحقیق مصنف، اس کے عہد اور دستاویز کے بارے میں تمام ضروری مباحث کا احاطہ کرتی ہے۔ یہ محقق کے لیے تحقیقی کام میں بنیادی راہ نمائی کا کردار ادا کرتی ہے۔ اس کی روشنی میں تحقیقی اصولوں پر چل کر محقق صحیح صورت حال پیش کرتا ہے (۶)۔ سید جمیل احمد رضوی نے ہل اور کربر (Hill and Kerber) کہتے ہیں:



- ۱- عصری مسائل کا حل ماضی میں تلاش کیا جاتا ہے۔
  - ۲- یہ حال و مستقبل کے رجحانات پر روشنی ڈالتا ہے۔
  - ۳- تمام تہذیبوں میں باہمی اثر انداز ہونے والے عوامل ہوتے ہیں۔ دستاویزی تحقیق سے ہمیں ان کی اہمیت اور اثرات کا علم ہوتا ہے۔
  - ۴- اس طریقے سے ہم اس قابل ہوتے ہیں کہ عصر حاضر میں ماضی کے بارے میں جو فرضیات، نظریات اور عام اصول پائے جاتے ہیں، ان کے بارے میں موجود معلومات (Data) کی دوبارہ جانچ پرکھ کر سکیں۔
- ان دونوں مصنفین کے نزدیک تاریخ میں یہ صلاحیت موجود ہے کہ ماضی کو سامنے رکھ کر مستقبل کے متعلق پیش گوئی کی جاتی ہے اور زمانہ حال ماضی کی وضاحت کرتا ہے۔ اس طرح اس میں دو گونہ خوبی پائی جاتی ہے اور یہی وجہ ہے کہ یہ طریقہ ہر قسم کی علما نے تحقیق کے لیے بہت مفید ہے“ (۷)۔

### طریق کار اور اس کے مدارج

چونکہ تاریخی تحقیق میں ”تاریخی دستاویزوں، آثار قدیمہ اور ماضی کی برگزیدہ شخصیتوں، کارناموں اور فلسفوں کا مطالعہ کیا جاتا ہے“ (۸)، اس لیے ”جب محقق تاریخی تحقیق کے مطابق کام شروع کرتا ہے تو اس کو بہت سے ایسے مراحل سے گزرنا پڑتا ہے جو دوسری قسم کی تحقیق میں مشترک ہوتے ہیں، لیکن وہ چند ایسے مسائل سے بھی دوچار ہوتا ہے جو اس کے موضوع کے ساتھ مختص ہوتے ہیں۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ وہ خاص معیار اور اسلوب اختیار کرتا ہے۔ طریق کار کے مختلف مدارج یہ ہیں:

- ۱- مسئلے کی تشکیل، اس میں عموماً ان اصولوں کا اطلاق ہوتا ہے جو موضوع اور اس کے انتخاب کے بارے میں راہ نمائی کا کام دیتے ہیں۔ جس شعبہ علم میں تحقیق کی جانی



مقصود ہو، اس کے مختلف پہلوؤں کو سامنے رکھ کر مسئلے کی تشکیل کی جاسکتی ہے.....

- ۲- مصادر و مآخذ کی جمع آوری۔
- ۳- مصادر کی جانچ پرکھ۔
- ۴- واقعات یا حالات کی وضاحت کے لیے فرضیات کی تشکیل۔
- ۵- حقائق کی وضاحت۔
- ۶- تنقیدی تشریح و توضیح کے بعد سامنے آنے والے نتائج“ (۹)۔

## دستاویزی تحقیق کی اقسام

سید جمیل احمد رضوی نے ٹائرس ہل وے (Tyrus Hillway) کے حوالے سے

تاریخی تحقیق کی درج ذیل چھ اقسام بیان کی ہیں:

- ۱- سوانح حیات
- ۲- اداروں اور تنظیموں کی تاریخ
- ۳- ذرائع اور اثرات
- ۴- ترتیب و تدوین متن
- ۵- نظریات کی تاریخ
- ۶- کتابیات کی تدوین“ (۱۰)۔

## تاریخی تحقیق کے لیے بنیادی اور ثانوی مآخذ

فن تحقیق کے ماہرین نے دستاویزی تحقیق میں استعمال ہونے والے بنیادی و ثانوی

مآخذ (مصادر) کا تعین یوں کیا ہے:

### اولاً۔ بنیادی مآخذ (Primary Sources)

بنیادی یا اساسی مآخذ سے مراد: ”وہ دستاویزات ہوتی ہیں جن میں ان واقعات وغیرہ کا

ریکارڈ شامل ہوتا ہے جن کو مصنف نے خود دیکھا اور اپنے کانوں سے سنا ہو یعنی بنیادی مصادر

(منابع) میں چشم دید شہادت موجود ہوتی ہے جو تاریخ کی معقولیت (Validity) اور قدر و قیمت کو

بڑھادیتی ہے“ (۱۱)۔



بقول ہے۔ لیونرڈ بیٹس (J. Leonard Bates) ”عام طور پر مورخین بنیادی مصادر کو دو قسموں میں تقسیم کرتے ہیں:

”الف۔ بنیادی مخطوطات، جن کی مزید تقسیم اس طرح کی جاسکتی ہے: ذاتی کاغذات، دستاویزی ریکارڈز، انٹرویوز، اور متفرقات، بنیادی مطبوعات ہیں۔

ب۔ مرکزی حکومت کی مطبوعات، صوبائی حکومت کی مطبوعات، خودنوشت سوانح عمریاں اور یادداشتیں، تقریروں اور خطوط کے مجموعے، اور معاصر مضامین شامل ہوتے ہیں“ (۱۲)۔

### ثانیاً۔ ثانوی ماخذ (Secondary Sources)

تاریخی تحقیق میں استعمال ہونے والے ثانوی نوعیت کے مصادر یا منابع ”وہ ریکارڈز ہوتے ہیں جن کو وہ فرد یا افراد مرتب کرتے ہیں جو خود واقعے میں شریک نہیں ہوتے یا جنہوں نے خود اس واقعے کا مشاہدہ نہیں کیا ہوتا۔ لہذا یہ ان افراد کی شہادت ہوتی ہے جو (واقعے کے) چشم دید گواہ نہ تھے، لیکن انہوں نے کسی وجہ سے اس کا ریکارڈ تیار کیا“ (۱۳) اگر کوئی مصنف کسی دوسرے مصنف کا اقتباس پیش کرتا ہے تو یہ ثانوی مصادر میں سے شمار ہوگا۔ نصابی کتب، جنتریاں، دائرۃ المعارف اور اطلاعات کے ایسے ہی خلاصے ثانوی مصادر گنے جاتے ہیں (۱۴) ہاں بعض اوقات تحقیق کی نوعیت مصادر کی نوعیت کو بدل دیتی ہے۔ مثلاً نصابی کتابوں کو ثانوی مصادر میں شمار کیا جاتا ہے، لیکن اگر کوئی محقق شعبہ تعلیم میں نصابی کتب کی ترتیب و تدوین پر کام کر رہا ہو تو اس صورت میں نصابی کتابیں ثانوی کی بجائے بنیادی ماخذ کی حیثیت اختیار کر جائیں گی۔

تاریخی تحقیق میں محقق کوشش کرتا ہے کہ وہ بنیادی مصادر سے استفادہ کرے۔ جب وہ کام شروع کرتا ہے تو عموماً ثانوی مصادر سے مطالعے کا آغاز کر کے بنیادی مصادر کی طرف لوٹ جاتا ہے۔



## ریکارڈز اور آثار

اس طریق تحقیق میں کئی قسم کے ریکارڈز استعمال کیے جاتے ہیں۔ اس طرح مختلف قسم کے آثار (Remains) سے استفادہ کیا جاتا ہے۔ ان کی تفصیلات وان ڈیلن کے حوالے سے ذیل میں درج کی جاتی ہیں (۱۵):

## ۱۔ سرکاری ریکارڈز

مقننہ، انتظامیہ اور عدلیہ کی دستاویزات جن کو مرکزی حکومت یا صوبائی حکومت تیار کرتی ہے، مثلاً: آئین، قوانین، چارٹر، عدالتی روئدادیں اور فیصلے، ٹیکس کی فہرستیں اور اہم اعداد و شمار۔ وہ معلومات جن کو مرکزی یا صوبائی محکمہ تعلیم کے شعبے، کمیشن، پیشہ ورانہ انجمنیں یا انتظامی اتھارٹی مرتب کرتی ہے، مثلاً: کمیٹیوں کی روئدادیں، انتظامی نوعیت کے احکام، سالانہ رپورٹیں، میزانیے، تنخواہوں کی فہرستیں، حاضری کے ریکارڈز، حادثات کی رپورٹیں اور کھلاڑیوں کے ریکارڈز۔

## ۲۔ ذاتی ریکارڈز

ان میں ڈائریاں، خودنوشت سوانح عمریاں، خطوط، وصیت نامے، جائداد کے کاغذات، معاہدے، لیکچر کے اشارات، تقاریر، مضامین اور کتابوں کے اصل مسودات شامل ہوتے ہیں۔

## ۳۔ زبانی روایات (Oral Traditions)

ان میں اساطیر، لوک کہانیاں، خاندانی کہانیاں، کھیلیں، تقریبات اور واقعات کی چشم دید یادیں شامل ہوتی ہیں۔



## ۴۔ تصویری ریکارڈز (Pictorial Records)

ان میں تصویریں، متحرک تصویریں، مائیکروفلمیں، مصوری کے نمونے، سکے اور مجسمے آتے ہیں۔

## ۵۔ مطبوعہ مواد

اس میں اخبار، کتابچے اور رسالوں کے مضامین شامل ہوتے ہیں۔ اس کے علاوہ زیر تحقیق مسئلے کے بارے میں ادبی اور فلسفیانہ کتابیں بھی شامل کی جاتی ہیں۔ سید جمیل احمد رضوی ہل وے (Hillway) کے حوالے سے لکھتے:

”ایسی ادبی تخلیقات، مثلاً: نظمیں، ناول، ڈرامے اور مضامین جو اصل واقعات کے بارے میں معلومات فراہم کر سکتے ہیں، لیکن محقق زیادہ تر ان میں موجود خیالات کے پیش نظر ان کا معائنہ کرتا ہے۔ ادبی یا لسانیاتی مطالعات میں صرف ”تحریریں“ ہی خود معلومات کا ضروری ماخذ قرار پاتی ہیں“ (۱۶)۔

## ۶۔ میکانکی ریکارڈز

ان میں انٹرویوز اور اجلاس کی کاروائی شامل ہوتی ہے، جسے فیتے (Tape) کی شکل میں تیار کیا جاتا ہے۔ فونوگراف ریکارڈز بھی اسی میں آجاتے ہیں۔

## ۷۔ آثار (Remains)

تاریخی تحقیق کرنے والوں کے لیے ایسے آثار بھی اہمیت کے حامل ہوتے ہیں جو معلومات کا ذریعہ بنتے ہیں۔ ہڑپہ اور موہنجوداڑو سے ملی ہوئی قدیم اشیاء بہت سی اطلاعات فراہم کرتی ہیں۔ وہ کھلونے، برتن اور آلات جو کسی قبرستان سے ملتے ہیں، ماضی کے متعلق کافی اطلاع دے سکتے ہیں۔ بعض اوقات ایسے آثار سرکاری دستاویزات کی نسبت اصل معمولات اور حالات کو بہتر طور پر ظاہر کرتے ہیں۔ کسی مورخ کے لیے درج ذیل قسم کے آثار مفید ثابت ہو سکتے ہیں:



## الف۔ مادی آثار (Physical)

ان میں عمارتیں، فرنیچر، ساز و سامان، ملبوسات، اوزار و آلات، عطیات (مثلاً تمغے وغیرہ) اور انسانی ڈھانچے شامل ہوتے ہیں۔ ان کے علاوہ مٹی کی تختیوں پر تحریریں، کندہ کیے ہوئے پتھر، مہرزده سکے، برتن اور مجسمے بھی ان میں شامل کیے جاتے ہیں۔

## ب۔ مطبوعہ آثار

ان میں نصابی کتب، معاہدات، حاضری کے فارم، رپورٹ کرنے کے کارڈز اور اخباری اشتہارات آتے ہیں۔

## ج۔ خطی مواد

مخطوطات، ایسی تختیاں (اینٹیں) جن میں خطِ منحنی میں تحریر ہوتی ہے، چمڑے پر لکھے ہوئے مخطوطات اور جدید دور کی ٹائپ کی ہوئی دستاویزات (۱۷)۔ مصوری کے نمونے بھی اسی میں شامل کیے جاتے ہیں۔

چونکہ آثارِ ٹھوس شہادت فراہم کرتے ہیں۔ ایسی شہادت جس کا ذاتی طور پر معائنہ کیا جاسکتا ہے۔ اس لیے وہ ریکارڈز کی نسبت زیادہ قابل اعتبار مآخذ بن جاتے ہیں، مثلاً: ایک ایسا آلہ جو قدیم زمانے میں طلباء کو سزا دینے کے لیے استعمال کیا جاتا تھا، اگر وہ کسی سکول کے مقام پر مل جاتا ہے تو اس کو ناپا جاسکتا ہے، اس کا وزن کیا جاسکتا ہے۔ اور اس کی وضاحت کی جاسکتی ہے۔ اس امر کی توضیح و توجیہ کرنا کہ اس کی حیثیت کیا ہے؟ اس کو کیسے، کب اور کیوں استعمال کیا جاتا تھا؟ تو اس کے لیے محقق کو وہ رپورٹیں دیکھنا ہوں گی جو اس عہد کے لوگوں نے تیار کی تھیں (۱۸)۔



## ۸۔ متفرقات

ان میں ہل وے نے یہ چیزیں شامل کی ہیں: فن کے مختلف نمونے، موسیقی کی دھنیں، یادگاریں اور دیگر متفرق ذرائع جن سے معلومات مل سکتی ہیں (۱۹)۔

تاریخی تحقیق کے سلسلے میں بٹا اور ہارٹر (Busha and Harter) نے چند قسم کے مصادر گنوائے ہیں (۲۰)۔ ان کو لائبریری سائنس اور دوسرے علوم مثلاً: انسانی علوم اور معاشرتی علوم کی تاریخی تحقیق میں بھی استعمال کیا جاتا ہے۔ ان مصادر کو ذیل میں درج کیا جاتا ہے:

## ۱۔ سالنامے

ایسا ریکارڈ جو سالانہ بنیاد پر مرتب کیا جاتا ہے۔ اس میں عام طور پر واقعات کو زمانی اعتبار سے درج کیا جاتا ہے، لیکن ان کی اہمیت کا اظہار نہیں کیا جاتا، مثلاً: کتب خانوں یا دیگر اداروں کی سالانہ رپورٹیں۔

## ۲۔ دستاویزات (Archives)

ان میں پبلک اور سرکاری دستاویزات آتی ہیں۔ یہ اصطلاح اس مخزن کے لیے بھی استعمال کی جاتی ہے جہاں دستاویزات (Documents) کو محفوظ کیا جاتا ہے، ان کی ترتیب و تنظیم کی جاتی ہے اور ان کو استعمال کیا جاتا ہے۔

## ۳۔ فہرست (Catalogue)

چیزوں کی مکمل فہرست (کتب، ساز و سامان وغیرہ) جو کہ عام طور پر وضاحتی نوعیت کی ہوتی ہے اور اس کو کسی نظام کے تحت ترتیب دیا ہوتا ہے۔

## ۴۔ کرائیکل (Chronicle)

حقائق و واقعات کا زمانی اعتبار سے ریکارڈ، جس کا تجزیہ اور توجیہ و توضیح نہیں کی ہوتی۔



## ۵۔ وثیقہ

وہ سرکاری دستاویز جس میں ایک شخص سے دوسرے شخص کے نام جائیداد کی منتقلی کا ریکارڈ ہوتا ہے۔

## ۶۔ قصے کہانیاں (Legend)

غیر معمولی واقعات کی کہانی جو ایک نسل سے دوسری نسل تک منتقل ہوتی ہے۔ اس کی اصل روایتی یا افسانوی نوعیت کی ہوتی ہے۔ اور اس میں ایسی اطلاع پائی جاتی ہے جس کی عام طور پر جانچ پرکھ نہیں کی جاسکتی۔

## ۷۔ مخطوطہ (Manuscript)

ایسی دستاویز جو خطی ہو یا ٹائپ کی ہوئی ہو (اس میں کاربن کی کاپیاں بھی شامل کی جاتی ہیں)۔ اس میں خطوط، تاریخ، روزنامے، رسیدیں، ذاتی حالات، فہرستیں، اجلاس کی روئدادیں، معاہدے، ٹیکس کے ریکارڈز، قانونی سٹیفکیٹ (متعلقہ پیدائش، موت، شادی وغیرہ)، ادبی کتب، تقاریر اور دوسری دستاویزات کے اصل مسودات جو شخصیات یا افراد سے تعلق رکھتے ہیں، شامل ہوتے ہیں۔

## ۸۔ یادداشت (Memoir)

ان واقعات کی یادداشت یا رپورٹ جس کی بنیاد مصنف کی زندگی، اس کے مشاہدات یا اس کی کسی خاص انفارمیشن پر ہوتی ہے۔ ان ریکارڈز کو یادداشتیں کہا جاتا ہے۔

## ۹۔ یادگار (Memorial)

کسی فرد یا واقعے کی یاد میں کوئی کہی ہوئی بات یا تعمیر کی ہوئی چیز کو یادگار کے نام سے موسوم کیا جاتا ہے، مثلاً: اے۔سی۔ وولنر (A-C Woolner) جو کہ پنجاب یونیورسٹی کے مختلف



ممتاز عہدوں (پرنسپل اور سینٹل کالج، رجسٹرار، لائبریرین اور وائس چانسلر) پر فائز رہے، ان کا انتقال ۷ جنوری ۱۹۳۶ء کو ہوا۔ ”ان کی وفات کے بعد ان کی بہت سی یادگاریں قائم کی گئیں۔ ۱۹۳۰ء میں ان کے رفقاء نے ان کی یاد میں ۳۲۸ صفحات پر مشتمل دولٹرز کو میموریشن و ویوم (Woolner's Commemoration Volume) (انگریزی) پیش کیا ہے جسے پروفیسر مولوی محمد شفیع نے مرتب کیا اور جس میں مشرق و مغرب کے نامور محققین کے ۵۲ تحقیقی مقالات (سوانحی مضامین کے علاوہ) پیش کیے“ (۲۱)۔

### ۱۰۔ اسناد حقوق و مراعات (Muniment)

ایسی دستاویز جس میں کسی جائیداد کے استحقاق کی شہادت موجود ہو یا حقوق و مراعات کے مطالبے کی شہادت موجود ہو۔

### ۱۱۔ رجسٹر

تحریری ریکارڈ جو کہ عام طور پر سرکاری نوعیت کا ہوتا ہے اور اس کو مستقبل میں استعمال کرنے کے لیے مرتب کیا جاتا ہے۔ اس میں واقعات، مثلاً: پیدائش و موت کے بارے میں سلسلہ وار اندراجات ہوتے ہیں۔ کتب خانوں میں اندراج رجسٹر بھی تیار کیے جاتے ہیں۔

### ۱۲۔ رول (Roll)

ناموں کی فہرست جسے کسی خاص مقصد کے لیے ریکارڈ کیا جاتا ہے۔ اس کا استعمال حاضری کی پڑتال کے لیے کیا جاتا ہے، مثلاً کلاس روم میں حاضری یا افراد (فوج) کی حاضری۔

### ۱۳۔ جدول (Schedule)

تفصیلات یا بیانات کی گوشوارے کی صورت میں فہرست جو کہ عام طور پر بار بار رونما ہونے والے واقعات، نظام الاوقات، یا پہلے سے طے کی ہوئی ترتیب کے مطابق واقعات کے



نقشے کا ریکارڈ رکھتی ہے (۲۲)۔

اس بحث کو سمیٹتے ہوئے آخر میں ڈاکٹر احسان اللہ خان کی کتاب ”تعلیمی تحقیق“ سے

حسب ذیل اقتباس کو خلاصہ کے طور پر پیش کیا جاتا ہے:

”تاریخی تحقیق میں تجزیہ کے لیے مواد تیار نہیں کیا جاتا بلکہ وہ پہلے سے موجود ہوتا ہے۔

مواد کے حصول کے لیے دو قسم کے مآخذ استعمال میں لائے جاتے ہیں:

### الف۔ ابتدائی مآخذ

ابتدائی مآخذ ان واقعات کی دستاویزات ہوتی ہے جن کو خود مبصر نے اپنی آنکھوں سے

دیکھا ہو یا کانوں سے سنا ہو، یا ایسے اصلی شواہد جو واقعہ سے متعلق دستیاب ہوں۔

### ب۔ ثانوی مآخذ

ثانوی مآخذ ان واقعات کے بارے میں دیگر لوگوں کی اطلاعات اور بیانات جو سنی سنائی باتوں پر

مبنی ہوں اور ایسی چیزیں جو مختلف ہاتھوں سے ہو کر لوگوں کے پاس پہنچی ہوں اور ان کے اصلی

ہونے کی تصدیق مختلف ذرائع سے کرنا پڑے۔ یہ امر ذرا مشکل ہے کہ کسی مآخذ کے ابتدائی اور

ثانوی ہونے کے مابین واضح حد فاصل کا تعین کیا جاسکے۔ تاریخ کی نصابی کتب بھی ثانوی مآخذ

میں شمار ہوتی ہیں۔ جیسا کہ تحقیقی مواد کے لیے دستاویزات کے طور پر سرکاری اطلاعات، ذاتی

بیانات، قصے اور کہانیاں، تصویری مجموعے اور ہر قسم کی مطبوعات استعمال میں لائی جاتی ہیں اور یہ

تمام دستاویزات شعوری طور پر (بطور ایک ورثہ) آنے والی نسلوں کو منتقل کی جاتی ہیں۔ کچھ

دستاویزات لاشعوری طور پر محفوظ ہو جاتی ہیں اور ان میں پرانے واقعات کے بارے میں اشیاء

مطبوعہ یا ہاتھ کی لکھی ہوئی تحریریں شامل ہوتی ہیں“ (۲۳)۔



## دستاویزی ماخذ کی تنقید

دستاویزی یا تاریخی اہمیت کے ماخذ جمع کر لینے کے بعد ضروری ہوتا ہے کہ ان کے اصلی اور معتبر ہونے کے بارے میں ان کا تنقیدی جائزہ لیا جائے۔ کیونکہ تحقیق سے غیر مشکوک و قابل اعتبار نتائج نکالنے ہوتے ہیں (۲۴)۔ اور ایسے نتائج صرف معتبر و حقیقی ماخذ سے ہی نکالے جاسکتے ہیں۔ اس قسم کے ماخذ و منابع کا انتخاب دو قسم کی تنقید کے بعد ہی ممکن ہو سکتا ہے، ایک خارجی اور دوسری داخلی تنقید۔ ذیل میں دونوں کا مختصر تعارف پیش کیا جاتا ہے:

### ۱۔ خارجی تنقید/ جانچ پرکھ (External Criticism/Appraisal)

خارجی تنقید میں دستاویزی مواد کے مصنف، اس کے زمانے، مقام تصنیف اور اس کے اصل و معتبر ہونے کا جواب تلاش کیا جاتا ہے۔ ڈاکٹر احسان اللہ خان لکھتے ہیں کہ: ”خارجی تنقید میں محقق اس امر کی تسلی کر لیتا ہے کہ اس کا ماخذ کب، کہاں، کیونکر اور کس وساطت سے حاصل ہوا ہے؟ آیا یہ وہی چیز پیش کر رہا ہے جس سے معلوم ہو کہ یہ اصل ہے یا اس کے ہو بہو نقل۔ اگر نقل ہے تو اصل کو کیسے حاصل کیا جاسکتا ہے“ (۲۵)۔

خارجی جانچ پرکھ میں کبھی کبھی یوں بھی ہوتا ہے کہ کسی دستاویز کی اصلیت پر شک ہوتا ہے۔ لہذا اس وقت یہ بات ضروری ہو جاتی ہے کہ کسی ایسی دستاویز پر کام شروع کرنے سے پہلے اس کی اصلیت کی ہر طرح سے تصدیق کر لی جائے۔ کہیں ایسا نہ ہو کہ اس پر تحقیقی کام کرنے کے بعد پتہ چلے کہ یہ دستاویز ہی جعلی تھی (۲۶)۔

### ۲۔ داخلی تنقید/ جانچ پرکھ (Internal Criticisim/Appraisal)

خارجی تنقید کے بعد مواد کی داخلی تنقید کا کام شروع ہوتا ہے اور یہ دیکھا جاتا ہے کہ جو بیانات اس میں دیئے گئے ہیں وہ کس حد تک درست ہیں اور ان کی قدر و قیمت کیا ہے، اگرچہ



داخلی تنقید میں زیادہ توجہ متن کے معانی و مطالب کے لحاظ سے اصلیت معلوم کرنے پر دی جاتی ہے مگر اس کے ساتھ ساتھ یہ بھی ضروری ہے کہ مصنف کی حیثیت، اہلیت و استعداد، دیانتداری، زمانہ تالیف اور اس کے ذاتی رجحان و میلان کو بھی زیر بحث لایا جاتا ہے، چنانچہ سید جمیل احمد رضوی گولڈر (Goldher) کے حوالے سے لکھتے ہیں کہ:

”داخلی جانچ پرکھ کا تعلق مصنف کی اہلیت اور دیانتداری سے ہوتا ہے۔ اس دائرے میں وہ عہد بھی آتا ہے جس میں دستاویز تیار ہوئی۔ ہم مصنف کے بارے میں کیا جانتے ہیں؟ کیا اس کا رویہ عام طور پر خلوص پر مبنی تھا یا وہ متعصب تھا؟ کیا وہ صاحب علم اور باصلاحیت تھا؟ کیا وہ سچائی کو جاننے کی پوزیشن میں تھا اور کیا اس کی رسائی قابل اعتماد ذریعہ اطلاع تک تھی؟ کیا وہ صحیح صحیح، واضح انداز اور غیر جانب داری سے رپورٹ کرنے کی صلاحیت کا مظاہرہ کرتا ہے؟ اس نے کس مقصد کے لیے دستاویز کو تیار کیا؟ کسی تاریخی واقعہ کا بہترین ریکارڈ وہ ہوتا ہے جس میں خود غرضی، جہالت اور تعصب کا کوئی عنصر نہ پایا جائے“ (۲۷)۔

حاصل کلام یہ کہ داخلی تنقید میں دستاویز کی معنویت اور اس کے مؤلف / مصنف کے حوالے سے اس میں موجود مواد کے معتبر ہونے کا جائزہ لیا جاتا ہے۔

### دستاویزات کے مطالعہ میں معاون نکات

دستاویزی تحقیق میں مندرجہ ذیل نکات دستاویزات کے مطالعہ میں معاون ثابت ہوتے ہیں:

- ۱۔ کیا کوئی دستاویز کسی مالی فائدے یا کسی گروہی مفاد، محض شہرت یا خاندانی و جماعتی مقاصد کی خاطر تیار نہیں کی گئی ہے؟



۲۔ کیا دستاویز کا حصول مصدقہ ذرائع سے کیا گیا ہے؟ اور کیا یہ ذرائع معتبر ہیں؟ اور ان ذرائع کو چیلنج تو نہیں کیا گیا؟

۳۔ کیا دستاویز کسی واقعہ کے گزرنے کے کافی عرصے بعد، تیار کی گئی ہے؟

۴۔ اگر دستاویز طبع شدہ ہے تو کیا اس کی طباعت مصنف کے عہد کے عمومی معیارات کے عین مطابق ہے؟

۵۔ کیا مصنف نے دستاویز میں ایسے مقامات، اشیاء اور واقعات کا ذکر کیا ہے کہ جن کو اسی کے زمانے کا انسان نہ جان سکتا تھا؟

۶۔ کیا کسی دوسرے شخص نے دستاویز میں جان بوجھ کر یا غلطی سے کوئی تبدیلی تو نہیں کر دی؟ یا اس دستاویز کی نقل کرتے ہوئے اس میں کوئی تبدیلی تو نہیں ہو گئی؟ یا پھر اس عمل سے بصورت دیگر دستاویز میں کوئی الحاقی عبارت یا الفاظ تو شامل نہیں ہو گئے یا دستاویز سے کوئی عبارت تو حذف نہیں کر دی گئی؟ ان تمام باتوں سے دستاویز کی حیثیت مجروح ہو سکتی ہے۔

۷۔ کیا دستاویز مصنف کے اپنے قلم سے لکھی گئی ہے؟ یا اصل دستاویز کی نقل ہے۔ اگر یہ

دعویٰ کیا گیا ہے کہ دستاویز مصنف کے ہاتھ سے لکھی ہوئی ہے تو کیا دستاویز کی املا اور

خط مصنف کے قلم سے لکھی ہوئی دوسری دستاویزات کے مطابق ہے؟

۸۔ اگر دستاویز، اصل کی نقل ہے، تو کیا یہ نقل اصل دستاویز کے متن کے عین مطابق ہے؟

۹۔ اگر دستاویز، اصل متن سے مختلف ہے، تو کیا اختلاف . . . کو دور کر کے دستاویز کو اصل

کے مطابق بنا لیا گیا ہے؟

۱۰۔ اگر دستاویز نقل کی صورت میں ہے تو کیا اس پر کوئی تاریخ درج ہے؟ کیا دستاویز کے

مصنف، اس کے کسی قابل اعتماد معاصر، بلکہ ترجیحی طور پر مصنف کے متعدد معاصروں



نے کبھی یہ شہادت دی ہے کہ مصنف نے ایسی کوئی دستاویز تیار کی تھی؟

۱۱۔ اگر دستاویز پر تاریخ درج نہیں ہے تو کیا متن ہی موجود نظریات، رجحانات، غیر معمولی واقعات، اشخاص و مقامات کے نام، رسم و رواج، طور طریقے، اسلوب بیان، اسلوب تحریر یا اسلوب طباعت، کاغذ اور روشنائی کی اقسام سے اس امر کا تعین ہو سکتا ہے کہ یہ دستاویز کب اور کہاں تیار کی گئی تھی؟

۱۲۔ دستاویز کا کتنا حصہ ذاتی مشاہدے پر مبنی ہے اور کتنا حصہ دیگر مآخذوں سے اخذ کیا گیا ہے؟

۱۳۔ دستاویز کا وہ حصہ جو دیگر مآخذوں سے اخذ کیا گیا ہے، سند کے اعتبار سے کیا درست ہے؟ اس میں مآخذ کی صحت برقرار ہے؟ اور جن مآخذوں سے رجوع کیا گیا ہے کیا ان مآخذوں کی صحت اور سند مشکوک تو نہیں ہے؟ اور خود مصنف کا ذاتی مشاہدہ اس کے عہد کے دیگر مآخذوں سے اپنی صحت کی شہادت مہیا کرتا ہے؟ کیا یہ مشاہدہ معاصرین کے بیان کردہ واقعات اور حقائق کے مطابق ہے؟

۱۴۔ دستاویز ہیئت اور مواد کے اعتبار سے مصنف کی دوسری دستاویزوں کے مطابق ہے یا نہیں (۲۸)۔



## حوالہ جات

- ۱- الشفافة الاسلامية، علامہ راغب الطباخ، اردو ترجمہ بنام ”تاریخ افکار و علوم اسلامی“ مترجم: مولانا افتخار احمد بلخی (اسلامک پبلی کیشنز، لاہور ۱۹۸۹ء ط ۴، ج ۲، ص ۲۷۷-۲۷۸۔
- ۲- دستاویزی طریق تحقیق مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانی بخش (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد ۱۹۸۶ء، ط اول) ج ۱، ص ۱۶۱۔
- ۳- ایضاً، ص ۱۶۱، ۱۶۲۔
- ۴- الشفافة الاسلامية، الطباخ، محولہ بالا، ج ۲، ص ۲۷۸۔
- ۵- تعلیمی تحقیق اور اس کے اصول و مبادی، ڈاکٹر احسان اللہ خان، (نگارشات میاں چیمبرز، لاہور ۱۹۹۱ء) ص ۸۲۔
- ۶- مقدمہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانی بخش، محولہ بالا، ج ۱، ص ۱۰-۱۱۔
- ۷- لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد ۱۹۹۲ء، ط دوم) ص ۱۲۰، بحوالہ: Louis Cohen and Lawrence Manion, Research Methods in Education (London : Croom Helm, 1980), P. 32.
- ۸- دستاویزی طریق تحقیق، رضوی، در اصول تحقیق محولہ بالا، ج ۱، ص ۱۶۲۔
- ۹- ادبی تحقیق کے اصول، ڈاکٹر تبسم کاشمیری، ص ۷۷۔
- ۱۰- لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، رضوی، محولہ بالا، ص ۱۳۹، بحوالہ: Tyrus Hillway, Introduction to research (2nd ed., Boston: Houghtor Mifflin Co., 1974). P. 159.
- ۱۱- ایضاً، ص ۱۶۳۔



۱۲۔ لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، رضوی، مجولہ بالا، ص ۱۲۴۔

۱۳۔ ایضاً۔

۱۴۔ ایضاً۔

۱۵۔ ایضاً۔

۱۶۔ ایضاً، ص ۱۲۶ بحوالہ: Tyrus Hillway, Introduction to research (2nd ed., Boston: Houghton Mifflin Co., 1974)p.144

۱۷۔ ایضاً، ص ۱۲۷ بحوالہ: C.V. Good and D.E Scates, Methods in Research(New York: Application Century crofts, 1945) P.181.

۱۸۔ ایضاً، ص ۱۲۷۔

۱۹۔ ایضاً، بحوالہ: Tyrus Hillway, op. cit., p.145.

۲۰۔ ایضاً، ص ۱۲۷، بحوالہ: Charles H. Busha and Stephen P. Harter, Research Methods in Librarianship (New York: Academic press. 1980)pp.106-107.

۲۱۔ ایضاً، ص ۱۲۹، بحوالہ غلام حسین اور نیشنل کالج (لاہور: یونیورسٹی اور نیشنل کالج، ۱۹۶۲ء) ص ۱۵۳۔

۲۲۔ ایضاً، ص ۱۲۹-۱۳۰، نیز اردو میں اصول تحقیق، ایم سلطانہ بخش، مجولہ بالا، ج ۱، ص ۱۶۹-۱۷۰۔

۲۳۔ تعلیمی تحقیق، خان، مجولہ بالا، ص ۸۴۔

۲۴۔ تحقیق سے استخراج نتائج اعلیٰ معیار کی تحقیق کے لئے ضروری شرط ہے، چنانچہ سید جمیل احمد رضوی کہتے

ہیں: ”تحقیق صرف حقائق اور معلومات کی جمع آوری کا نام نہیں، بلکہ اعلیٰ معیار کی تحقیق میں ان سے عام

اصول اور نتائج نکالے جاتے ہیں“ > لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، رضوی، مجولہ بالا، ص ۱۲۶۔

۲۵۔ تعلیمی تحقیق، خان، مجولہ بالا، ص ۸۶۔ مزید تفصیل کے لیے دیکھئے: دستاویزی طریق تحقیق، جمیل احمد

رضوی، مجولہ بالا، ص ۱۳۲ تا ۱۳۸، و ادبی تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، مجولہ بالا، ص ۱۵۳ تا ۱۵۷۔

۲۶۔ ادبی تحقیق کے اصول، ڈاکٹر تبسم کاشمیری، مجولہ بالا، ص ۱۱۲۔



۲۷۔ لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، رضوی، مجلہ بالا، ص ۱۳۹، بحوالہ:

\_Herbert Goldher, An introduction to Scientific Research in librarianship (Washington:U.S.Dept. of Health. Education and Welfare.1969,p.65[Mimeographed]

مزید تفصیل کے لیے دیکھئے تبسم کاشمیری، مجلہ بالا، ص ۱۵۳ اور ما بعدہا۔

۲۸۔ ادبی تحقیق کے اصول، ڈاکٹر تبسم کاشمیری، ص ۱۱۲۔



باب ۸

تحقیق کے لیے

حصول مواد کے وسائل اور طریقے



## تحقیق کے لیے حصول مواد کے وسائل اور طریقے

### تحقیقی عمل میں مواد کا کردار

تحقیقی عمل کا دار و مدار حقیقت میں مواد پر ہوتا ہے ”مواد ہی محقق کے غور و فکر کی بنیاد ہے۔ خالص مواد کی شکل خام مال کی طرح ہوتی ہے۔ اسی خام مال سے تجزیہ، درجہ بندی اور تحقیق کے ذریعہ نتائج اور عام اصول وضع کیے جاتے ہیں۔ عام اصولوں کی توضیح کے بعد مواد آئینہ کے لیے انداز فکر اور باقی حقائق کی فراہمی کے لیے محرک بنتا ہے“ (۱)۔

### مواد کی فراہمی میں احتیاط کی ضرورت

جہاں تک مواد کی فراہمی کے عمل کا تعلق ہے تو اس میں ”محقق کو بہت زیادہ محتاط رہنا چاہئے۔ اگر موضوع کے اعتبار سے مفید مواد دستیاب نہیں ہوتا، یا اس کو کسی وجہ سے نظر انداز کر دیا جاتا ہے تو تحقیقی عمل کی تکمیل دشوار ہو جاتی ہے اور اس کے نتائج مشکوک و مشتبہ رہتے ہیں۔

مواد کی فراہمی کے عمل میں صرف حقائق کو جمع کرنا ہی شامل نہیں ہے۔ فراہمی کے ساتھ ساتھ ضروری مواد کے انتخاب کا عمل بھی جاری رہتا ہے۔

مواد کی فراہمی میں محقق کو ایک جاسوس کے فرائض انجام دینے پڑتے ہیں اور اس کو مکھیوں کے ذریعہ شہد کی فراہمی جیسی محنت و مشقت سے کام لینا پڑتا ہے۔ اپنے مفید مطلب چھوٹے سے چھوٹے نکات اور حقائق کو بھی وہ نظر انداز نہیں کرتا۔ اس کام کے لیے محقق کو دقیق النظر ہونا چاہئے“ (۲)۔

ان تمہیدی کلمات کے بعد حصول مواد کے ذرائع کے بارے میں بحث کی جاتی ہے:



## مواد تحقیق کے حصول کے وسائل

تحقیقی منصوبہ سے متعلقہ مواد کی فراہمی یا اس کا حصول ایک اہم منزل ہوتی ہے جس تک رسائی حاصل کرنا ہر لحاظ سے ضروری ہوتا ہے۔ اس منزل تک پہنچنے کے راستہ میں محقق کو متعدد مشکلات اور رکاوٹوں سے دوچار ہونا پڑتا ہے۔ انہیں وہ ذاتی قوت اور ارادہ کی پختگی کی بناء پر باسانی عبور کر لیتا ہے۔ ایک بیدار مغز، مخلص اور اپنے کام سے لگاؤ رکھنے والا محقق ہر صورت میں کوشش کرتا ہے کہ جہاں کہیں سے متعلقہ مواد دستیاب ہو سکے حاصل کیا جائے فن تحقیق کے ماہرین نے درج ذیل وسائل و ذرائع کی نشاندہی کی ہے جہاں سے مواد تحقیق حاصل کیا جاسکتا ہے:

## ۱۔ لائبریریاں

یہ حصول مواد کا اہم ترین ذریعہ ہوتی ہیں اور اس سلسلہ میں مرکزی کردار ادا کرتی ہیں۔ مگر یہ ضروری نہیں کہ ایک ہی لائبریری میں تحقیق کا پورا مواد مل جائے۔ بعض چیزیں ملک کی مختلف لائبریریوں، ذاتی کتب خانوں، عجائب گھروں وغیرہ میں دستیاب ہو سکتی ہیں۔ لائبریریوں کے ذریعہ بالعموم درج ذیل اقسام کا مواد دستیاب ہو سکتا ہے:

- ۱۔ دستاویزات، اصل قلمی نقول، دستی تحریروں کی نقول۔
- ۲۔ موضوع سے متعلق فاضلانہ مطالعہ۔
- ۳۔ ایسی کتابیں یا مضامین جن میں موضوع سے متعلق اقوال یا نقطہ ہائے نظر پیش کیے گئے ہوں۔
- ۴۔ دیگر قسم کا ملا جلا مواد۔
- ۵۔ یونیورسٹیوں میں تحقیقی اسناد کے لیے پیش کیے جانے والے تحقیقی مقالات کی مصدقہ نقول۔
- ۶۔ حوالے کی کتابیں، کی متعلقہ کتب، تحقیقی مقالات کے مختصر جائزے اور فہرست کتب۔
- ۷۔ نایاب کتابوں کی فوٹو اسٹیٹ نقول۔

لائبریری سے صرف کتابیں ہی دستیاب نہیں ہوتیں بلکہ وہاں سے دیگر سہولیات بھی مل



سکتی ہیں۔ مثلاً محقق کی درخواست پر دوسری لائبریریوں سے نایاب کتابیں منگوا کر دی جاتی ہیں۔  
فوٹو اسٹیٹ نقل کرنے کی سہولت بھی لائبریری سے مل سکتی ہے۔

## ۲۔ حلقہ عمل

جس طرح محقق اپنا ضروری مواد لائبریری کے ذریعہ حاصل کرتا ہے، اسی طرح بعض تحقیقی مسائل کو حل کرنے کے لیے اسے اپنے حلقہ عمل سے بھی مواد فراہم کرنا پڑتا ہے۔ مواد کی فراہمی کا یہ ایک جاندار سرچشمہ ہے۔ محقق اپنی صلاحیت، سہولت اور ضرورت کے مطابق مواد کی فراہمی کے لیے ایک مخصوص حلقے کا انتخاب کر لیتا ہے۔ اس علاقے کے قدرتی یا معاشرتی حالات سے متعلق اعداد و شمار جمع کرنا اس کا مقصد ہوتا ہے۔

## ۳۔ تحقیقی رسائل

تحقیقی رسائل میں ماضی اور حال کے تحقیقی کاموں کی تفصیل پیش کی جاتی ہے اور فاضل علماء کے مضامین بھی شائع ہوتے ہیں۔ ان میں تحقیقی موضوعات سے متعلق مواد کے بارے میں معلومات بھی پیش کی جاتی ہیں۔ قلمی کتابوں کا تذکرہ بھی ہوتا ہے اور مختلف مقالات پر مختصر تبصرے بھی شائع ہوتے رہتے ہیں (۳)۔ ڈاکٹر گیان چند رسائل پر بحث کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ:

”کتابوں کی طرح رسالے بھی تحقیق کا بیش بہا مواد فراہم کرتے ہیں بلکہ رسالوں کو ایک لحاظ سے فوقیت ہے کہ کتابوں کا مواد تو سب کے سامنے ہوتا ہے، رسالوں بالخصوص قدیم رسالوں میں نہ جانے کیا کیا بیش بہا معلومات دفن پڑی ہیں.....“ (۴)۔

## ۴۔ اخبار

رسالوں کی طرح، گوان سے کم، بعض اوقات روزانہ اخبار بھی تحقیق کا معتبر ماخذ ثابت ہوتے ہیں۔ ان میں کسی ادیب کی وفات یا اعزاز وغیرہ کے بارے میں جو خبر درج ہوتی ہے وہ چونکہ حالیہ ہوتی ہے اس لیے عموماً صحیح ہوتی ہیں۔ سنہ وفات کے لیے تو معاصر اخبار کا اندراج ایک



پکا ثبوت ہے..... (۵)۔

## ۵۔ عوام

حصول مواد کے ذرائع میں سے ایک ذریعہ عوام ہے۔ بعض اوقات، واقعات اور روایات کی تصدیق صرف عوام کے ذریعہ ہوتی ہے، عوامی ذرائع میں عام طور پر سوال نامے، انٹرویوز اور سروے شامل ہیں۔ ان ذریعوں سے بہت سی معلومات حاصل کی جاسکتی ہیں (۶)۔

## مواد تحقیق کے حصول کے طریقے

حصول مواد کے مذکورہ بالا وسائل کے ساتھ ساتھ محقق کو با مقصد مواد حاصل کرنے کے لیے صحیح اور سائنسی طریقوں کو استعمال میں لانا چاہیے تاکہ تھوڑے وقت میں مطلوبہ مواد کی دستیابی ممکن ہو جائے۔ فن تحقیق کے ماہرین نے حسب ذیل طریقوں کا ذکر کیا ہے:

### ۱۔ بنیادی وسائل کا استعمال

تحقیقی عمل میں مواد کی تلاش و جستجو بنیادی وسائل سے ہوتی ہے ”کسی وسیلے کے براہ راست استعمال کو بنیادی کہا جاتا ہے۔ اگر کسی کتاب یا مضمون کا حوالہ دینا ہے تو اس کا براہ راست مطالعہ کرنا چاہیے۔ اگر کسی دوسرے محقق نے اس کتاب کے حقائق کو اپنے مقالے میں درج کیا ہے اور اس مقالے سے اس متن کو حاصل کیا جائے تو اسے ثانوی وسیلہ کہا جائے گا۔ اس طرح حاصل کیا ہوا متن مشکوک یا غلط بھی ہو سکتا ہے۔ اس لیے جہاں تک ممکن ہو مواد کو بنیادی وسیلے سے ہی حاصل کیا جائے۔ دیگر مقالات کے مطالعے سے محقق کو کسی متن کا سرچشمہ معلوم ہو جاتا ہے۔ ایک کامیاب محقق کے لیے اپنے موضوع سے متعلق مواد کی فراہمی کے بنیادی وسائل کا علم ہونا انتہائی ضروری ہے۔ اس کو دوسرے محققین کے ذریعے استعمال کیے ہوئے حقائق کو دوسرے لفظوں میں بیان کر دینے کی علت سے بچنا چاہیے۔ بنیادی وسائل سے مواد کی فراہمی کے دوران ایسا مواد بھی محقق کے ہاتھ لگ سکتا ہے جس کو ابھی تک کسی دوسرے محقق نے استعمال ہی نہ کیا ہو۔



اس طرح نئے حقائق کو منظر عام پر لانے سے محقق کی وقعت و عظمت میں اضافہ ہوتا ہے“ (۷)۔  
اس سے ثابت ہوا کہ بنیادی وسائل سے اخذ کیا ہوا مواد ہی مستند ترین ہوتا ہے نہ کہ  
ثانوی وسائل سے۔ ”اس لیے جہاں تک ممکن ہو یہی طریقہ استعمال کیا جائے۔ صرف مجبوری کی  
حالت میں ثانوی ذرائع کی طرف رجوع جائے۔ ایک کتاب عربی میں ہے اور اس کا ترجمہ اردو  
میں ہو چکا ہے۔ اگر محقق عربی جانتا ہو تو اصل کتاب سے استفادہ کرے نہ کہ ترجمے سے۔ کیونکہ  
ترجمہ ثانوی درجے کی حیثیت رکھتا ہے (۸)۔

عام طور پر تجربے، ذاتی تفتیش و تلاش، انٹرویوز، ڈائریاں، خودنوشتہ سوانح عمریاں، متن  
اور ادب کی تخلیقی تحریریں، حکومت، بورڈ، تحقیقی اداروں، دانش گاہوں وغیرہ کی رودادیں،  
اخبارات، مخطوطات اور فرامین وغیرہ کو بنیادی ذرائع میں شمار کیا جاتا ہے۔

تحقیق میں جن حقائق کو دریافت کیا جاتا ہے، بنیادی مآخذ ان کے لیے حوالہ بہم  
پہنچاتے ہیں۔ ثانوی مآخذ پر صرف بھروسہ کر کے لکھا جاتا ہے جو غیر سائنسی طریقہ کار ہے، جس کی  
تحقیق میں گنجائش نہیں (۹)۔

## ۲۔ سروے

سروے میں بالعموم عہد جدید کے مسائل اور مفروضوں پر کام کیا جاتا ہے۔ اگرچہ اس  
طریق کار میں ماضی کے بارے میں بھی مواد فراہم ہو سکتا ہے۔ مگر عام طور پر اس میں حال کے  
مسائل کے لیے تحقیقی مواد حاصل کیا جاتا ہے۔

سروے کا طریقہ کار ادب سے زیادہ دوسرے علوم و فنون میں مقبول اور افادیت کے  
اعتبار سے بہت بہتر ثابت ہوا ہے۔ اس عہد میں سماجی علوم، تعلیم اور سائنس کے میدان میں اس  
طریق کار کو استعمال کیا جا رہا ہے، مثلاً: سائنس میں طبی سروے کے ذریعے بعض مہلک امراض  
کے بارے میں مواد اکٹھا کیا جاتا ہے..... اسی طرح سے سماجی علوم میں بھی اس طریق تحقیق سے



فائدہ اٹھایا گیا ہے۔ معاشرتی برائیوں کے سدباب کے لیے اس طریق تحقیق کو بہت اہمیت دی گئی ہے۔ عمرانیات میں اس سے خصوصاً کام لیا جا رہا ہے، مثلاً: اگر اس بات کا جائزہ لینا چاہیں کہ ۱۲ سال سے ۱۵ سال کے بچے کن حالات کی وجہ سے جرائم کا شکار ہو کر جیل پہنچتے ہیں تو یہ کام سروے کے ذریعے کیا جاسکتا ہے..... اردو ادب میں اگرچہ دستاویزی یا تاریخی تحقیق کا طریقہ سب سے زیادہ مقبول ہے۔ مگر جدید عہد میں سروے سے بھی کام لیا جا رہا ہے۔ خاص طور پر نئے مسائل اور موضوعات کا جائزہ لینے کے لیے اسے استعمال کیا جا رہا ہے۔ سروے میں کام کے دو طریقے ہیں: پہلا سوالنامہ اور دوسرا انٹرویو۔ ذیل میں ہر ایک کا مختصر تعارف پیش کیا جاتا ہے:

### پہلا طریقہ: سوال نامہ

سروے میں تحقیق کا پہلا طریقہ سوال نامہ کا استعمال ہے۔ کسی مسئلے پر تحقیق کرنے کے لیے ایک سوال نامہ تیار کیا جاتا ہے۔ اس میں تمام ضروری سوالات درج کیے جاتے ہیں۔ پھر متعلقہ اشخاص سے ان سوالات کے جوابات پوچھے جاتے ہیں۔ جوابات کو بالآخر ایک فیصلہ کن شکل دی جاتی ہے، جس سے کچھ نتائج حاصل ہوتے ہیں۔ یہی نتائج اس تحقیق کا حاصل سمجھے جاتے ہیں..... سروے میں سوال نامہ بنیادی حیثیت رکھتا ہے۔ تحقیق کی ساری بنیاد سوال نامے کی صحیح تیاری پر ہے۔ سوال نامہ جتنا واضح، قطعی اور صاف ہوگا اتنے ہی اچھے نتائج کی توقع کی جاسکتی ہے..... (۱۰)۔

سوال نامہ کی اقسام: سوال نامہ کی دو قسمیں ہوتی ہیں: کھلا سوال نامہ اور بند سوال نامہ:

### الف۔ کھلا سوال نامہ

کھلے سوال نامے میں اس طرح سے سوال پوچھے جاتے ہیں کہ جواب دہندہ اپنے لفظوں میں جواب لکھ سکتا ہے، محقق ہر سوال کے بعد کچھ جگہ خالی چھوڑ دیتا ہے جس میں جوابات لکھے جاتے ہیں۔ کھلے سوال نامے کی ایک بڑی خوبی یہ ہے کہ اس کے ذریعے زیر تحقیق موضوع



کے متعلق جواب دینے والوں کے رجحانات کا پتہ چلتا ہے۔ اس شکل میں چونکہ آراء کا دخل ہوتا ہے۔ اس لیے اس کا خلاصہ بنانے اور اسے ترتیب دینے میں کافی وقت صرف کرنا پڑتا ہے۔ کھلے سوال نامے میں جواب دینے والے کو ایک طرح سے پوری آزادی ہوتی ہے کہ وہ جو چاہے کہہ سکتا ہے، اس لیے اس کو زیادہ نمائندہ طریق کار کہا جاسکتا ہے..... (۱۱)۔

### ب۔ بند سوال نامہ

سوال نامہ کی دوسری قسم بند سوال نامہ ہے۔ اس سوال نامے میں محقق ہر سوال کے لیے ممکن جواب خود تجویز کرتا ہے اور ہر جواب کے آگے ”ہاں“ یا ”نہیں“ یا مقررہ نشان تحریر کرتا ہے، جس پر جواب دہندہ جواب کی غرض سے مقررہ نشان لگا دیتا ہے۔ اس کے علاوہ اس سلسلے میں ایک دوسرا راستہ بھی تجویز کیا جاسکتا ہے جس میں جواب دینے والا ہر سوال کے آگے یہ لکھ سکتا ہے کہ وہ کسی فیصلے پر نہیں پہنچا..... (۱۲)۔

### سوال نامہ کی تیاری کے مراحل

سوال نامہ کی تیاری کے لیے کئی مراحل سے گزرنا پڑتا ہے۔ ان مراحل کا ذکر درج ذیل سطور میں کیا جاتا ہے:

۱۔ سوال نامہ کی تیاری سے پہلے یہ ضروری ہے کہ جن افراد کو سوال نامہ بھیجا جاتا ہے۔ ان کے لیے متعلقہ ذمہ دار افراد سے اجازت لی جائے۔ اور اس امر کی بھی تسلی کر لی جائے کہ سوال نامہ میں ایسی معلومات تو حاصل نہیں کی جا رہی ہیں جو کسی اور جگہ سے آسانی سے فراہم ہو سکتی ہیں۔

۲۔ سوال نامہ بناتے وقت مفروضات اور تحریری مواد کی اہمیت کو پیش نظر رکھا جائے۔ سوالات آسان اور قابل فہم زبان میں ہونے چاہئیں۔ بصورت دیگر صحیح جوابات کا حصول مشکوک ہو جاتا ہے۔



۳۔ سوالوں کو نفسیاتی اور منطقی ترتیب میں رکھا جائے اور ان کی مختلف عنوانات کے تحت گروہ بندی کر دی جائے تو زیادہ بہتر ہوگا۔

۴۔ سوالوں کے جواب تحریر کرنے کے لیے جوابات درج کیے جائیں تاکہ متعلقہ افراد محقق کے مقصد کے مطابق صحیح صحیح جواب دے سکیں۔ ان افراد کے لیے سوالوں کی مکمل وضاحت ہونی چاہیے۔

۵۔ سوال نامہ پر کرنے میں متعلقہ افراد کو اعتماد میں لینا نہایت ضروری ہے تاکہ وہ بغیر حیل و حجت یا ہچکچاہٹ کے مناسب جواب تحریر کر سکیں۔ سوال نامہ میں درج ہونا چاہیے کہ ہر فرد کا جواب صرف تحقیقی مقاصد کے لیے استعمال کیا جائے گا اور ان کے جوابات کو راز میں رکھا جائے گا۔

۶۔ ایسے سوال نہ بنائے جائیں جن کے بارے میں خود محقق مشکوک ہو کہ متعلقہ افراد ان کا صحیح جواب دے سکیں۔ یا متعلقہ افراد اس بارے میں معلومات رکھتے ہیں۔ کچھ سوالات ایسے بھی شامل کیے جائیں جن کے ذریعے جواب دہندہ گان کی فراہم کردہ معلومات کو جانچا جاسکے (۱۳)۔

### دوسرا طریقہ: انٹرویو

سرچے میں سوال نامے کے علاوہ دوسرا طریقہ تحقیق ”انٹرویو“ کہلاتا ہے۔ ”انٹرویو یا باضابطہ ملاقات بھی ایک طرح کا سوال نامہ ہے۔ اس میں سوالات تحریری شکل میں موجود ہوتے ہیں۔ جس سے انٹرویو لیا جا رہا ہے اس کی سہولت کے مطابق انٹرویو کے لیے وقت کا تعین کیا جاتا ہے۔ غیر متعلقہ سوالات سے پرہیز کیا جاتا ہے۔ جواب اسی وقت لکھ لیے جاتے ہیں یا ٹیپ ریکارڈ کر لیے جاتے ہیں۔ نظریاتی مباحث اور عقیدوں کی چھان بین کے لیے یہ بہت مؤثر ذریعہ ہے“ (۱۴)۔

اس ضمن میں ڈاکٹر تبسم کاشمیری لکھتے ہیں: ”انٹرویو کے طریق کو ایک اعتبار سے



سوال نامے پر فوقیت بھی حاصل ہے۔ وہ اس طرح کہ سوال نامے کا دائرہ عمل محدود ہوتا ہے۔ اس میں مقررہ سوالات کے جواب دینے ہوتے ہیں اور سوال نامے کے محقق اور جواب دہندہ کا تعلق براہ راست نہیں ہوتا۔ ان کا تعلق محض کاغذ کے ذریعے قائم ہوتا ہے، یوں یہ سارا عمل ایک خاص مقررہ حد تک اندر ہی رہ کر وقوع پذیر ہوتا ہے۔ اس کے مقابلے میں انٹرویو کے طریق کو سوال نامے پر سبقت حاصل ہوتی ہے۔ انٹرویو لینے والے کا تعلق اسے فوقیت دیتا ہے۔ انٹرویو لینے والا ایک تو اپنے پاس پہلے سے طے شدہ سوالات رکھتا ہے جن میں انٹرویو کے بارے میں وافر مواد ہوتا ہے۔ وہ سوالات پر ہی انحصار نہیں کرتا۔ اس لیے کہ سوالات تو وہ اشارے ہوتے ہیں جن کی مدد سے وہ شخصیت سے گفتگو کرتا ہے۔ وہ براہ راست ذاتی تعلق سے فائدہ اٹھاتے ہوئے انٹرویو کی جانے والی شخصیت سے گفتگو کے دوران ہی موقع محل کے مطابق مزید معلومات حاصل کرنے کی کوشش کرتا ہے۔ براہ راست تعلق کی وجہ سے اسے یہ فائدہ ہوتا ہے کہ گفتگو میں پیدا ہونے والے ابہام کی وہ وضاحت حاصل کر سکتا ہے، جس سے مسئلہ پورے طور پر واضح ہو جاتا ہے۔ اس کے علاوہ جہاں جہاں تضادات نظر آتے ہیں، انٹرویو کرنے والا ان کے بارے میں بھی سوالات کر سکتا ہے جس سے موضوع پر مزید روشنی پڑ سکتی ہے۔ سوال نامے میں اگر ابہام رہ گیا ہے تو اسے دور کرنا ممکن نہیں ہے جبکہ انٹرویو میں موقع پر ہی یہ کام ہو سکتا ہے۔ اس کے علاوہ ایک اور بڑی افادیت بھی اس طریقے میں پائی جاتی ہے اور وہ یہ کہ سوالات کے دوران انٹرویو کرنے والے کو نئے امکانات کا بھی پتہ چل سکتا ہے اور جو پہلو اس کی نظر سے اوجھل رہ گئے تھے، ممکن ہے انٹرویو کرتے ہوئے وہ سارے پہلو اس کے سامنے آجائیں اور وہ ان کے بارے میں معلومات حاصل کرے۔ یہ ہیں وہ چند باتیں جو انٹرویو اور سوال نامے کا تقابلی جائزہ لیتے ہوئے کہی جاسکتی ہیں“ (۱۵)۔

مختصراً یہ کہ سروے میں انٹرویو کی نمایاں طور پر اہمیت ہے۔..... جدید دور میں انٹرویو

تحقیقی مصادر میں اہم حیثیت اختیار کر گیا ہے..... (۱۶)۔



## مشاہدات

مشاہدات، مشاہدہ کی جمع ہے۔ سوال نامہ، انٹرویو اور دیگر طریقوں کی نسبت مشاہدہ ترجیحی طریقہ تحقیق ہے مگر ایک محقق اچانک اور فوری مشاہدہ کے ذریعے اس وقت تک صحیح نتائج اخذ نہیں کر سکتا جب تک کہ اسے یہ معلوم نہ ہو کہ اسے کون سے موضوع پر توجہ دینی ہے اور وہ حواس خمسہ کے ذریعے معلوم کردہ معلومات کو کیسے تحریر کر سکتا ہے۔ مشاہدہ کرنے کے لیے بہت سے طریقے اپنائے گئے ہیں۔

علاوہ ازیں! مندرجہ ذیل طریقوں سے ”مشاہدہ“ مفید اور کامیاب بنایا جاسکتا ہے۔ عام انسانی مشاہدہ اور انسانی تحقیق کی غرض سے کیے گئے مشاہدہ میں ایک بین فرق یہی ہوتا ہے کہ آخر الذکر کی دوبارہ تصدیق کے لیے اس کے ہر ایک پہلو کا مکمل طور پر صحیح ریکارڈ رکھا جائے نیز وقت اور ماحول کی شرائط کو بھی بغیر بڑے فرق کے بیان کیا جاسکے۔ اس طرح مشاہدہ کا بیان زیادہ باعتبار بن جاتا ہے اور زیادہ سے زیادہ اشخاص ایک یا چند لوگوں کے مشاہدہ کے نتائج سے باخبر ہو سکتے ہیں اور سب کو حقائق کے جاننے میں مدد ملتی ہے۔

## پڑتالی فہرست

تحقیق کنندہ مشاہدہ کے دوران جو معلومات حاصل کرنا چاہتا ہے، ان کی ایک فہرست تیار کر لیتا ہے تاکہ وہ مشاہدہ کے ساتھ اس فہرست کا جائزہ لے سکے۔ اس سوال نامہ کے لیے ہر سوال کے ساتھ مناسب جگہ چھوڑے تاکہ بوقت ضرورت محقق اضافی معلومات کا اندراج کر سکے۔ ان سوالات کے مختلف عنوانات کے تحت گروپ بندی کر لی جائے تو بہتر ہوتا ہے۔

## وقت کا گوشوارہ

مشاہدہ کے دوران وقت کا خیال رکھا جائے تاکہ یہ معلوم ہو سکے کہ زیر مشاہدہ عوامل کتنا وقت لیتے ہیں۔ بہترین مشاہدہ وہ ہوتا ہے جو متواتر زیادہ عرصہ تک کرنے کی بجائے تھوڑے تھوڑے وقفے کے بعد کیا جائے۔ اس سے انسانی رویہ اور رجحان کی تصویر واضح ہو جاتی ہے۔



## انسانی رویہ کی ڈائری

اگر ایک استاد یا ماں باپ یا گروپ لیڈر کسی بچہ کے رویہ کے بارے میں معلومات حاصل کرنا چاہتے ہیں تو اس بچے کا مشاہدہ مختلف اوقات میں یعنی کھیل، کھانے یا دیگر مشاغل میں مصروفیت کے دوران کیا جائے۔ اور اس کا باقاعدہ تحریری ریکارڈ رکھا جائے۔ اس تمام تحریری ریکارڈ کی مدد سے بچہ کے رویہ کے بارے میں پتہ چلا لیا جاتا ہے۔ اس قسم کے طریقہ کار میں بہت سا وقت درکار ہوتا ہے۔ یہ طریق کار اگر والدین نے اپنایا ہو یا اساتذہ نے اس کا اہتمام کیا ہو تو طالب علم کی تعلیم اور راہ نمائی میں اس سے مفید نتائج برآمد ہو سکتے ہیں۔

## مکینیکل آلات

بہت سے محققین ایک ہی موضوع پر تحقیق کرتے ہیں اور ان کے نتائج میں اختلاف ہوتا ہے۔ دراصل ایسا ہونا انسانی کمزوریوں سے بعید نہیں ہے کیونکہ جذباتی لگاؤ، خصوصی انتخاب یا ذاتی تعلق، اس قسم کے عوامل مشاہدات پر اثر انداز ہوتے ہیں۔ لیکن مشینی آلات اس قسم کا تاثر لینے سے مبرا ہوتے ہیں۔ اس لیے ان کے استعمال سے صحیح نتائج اخذ کرنے میں مدد ملتی ہے۔ متحرک فلم اور آواز بندی کی مشینوں سے محققین کو کافی مدد ملتی ہے۔ علاوہ ازیں! دوسرے محققین جب چاہیں ان آلات سے استفادہ کر سکتے ہیں۔ مشاہدہ کے لیے اب ایسا ایک طرفہ آئینہ استعمال کیا جا رہا ہے جس سے محقق سب کچھ دیکھ سکتا ہے لیکن متعلقہ فرد، جس کا مطالعہ کیا جا رہا ہے، قطعی لا علم ہوگا کہ کوئی اس کا مشاہدہ کر رہا ہے۔ اس طرح صحیح ماحول کی عکاسی ممکن ہوتی ہے اور بہتر نتائج برآمد ہو سکتے ہیں (۱۷)۔

مختصر یہ کہ: ”افراد کے مشاہدے کے ذریعے بھی مواد کی فراہمی ہو سکتی ہے۔ اگر حقیقت کی تلاش کا مسئلہ درپیش ہے تو مشاہدے کا طریقہ قدرے مختلف ہوتا ہے اور مشاہدہ کرنے والا جماعت یا گروپ میں شامل ہوتا ہے۔ اگر مطالعے کی نوعیت وضاحتی یا تجرباتی ہے تو مشاہدہ کا



طریقہ مرکب ساخت پر مشتمل ہوتا ہے۔ اس میں اشیاء کی حد بندی متعین کر دی جاتی ہے۔ اطلاعات یا معلومات کو ریکارڈ کر لیا جاتا ہے۔ جہاں تک ممکن ہو مشاہدات کا بغور مطالعہ کیا جاتا ہے اور انہیں احاطہ تحریر میں لایا جاتا ہے“ (۱۸)۔

### ۳۔ کیس اسٹڈی

تحقیق اور حصول مواد کے اسالیب میں سے کیس اسٹڈی (مطالعہ احوال) بھی ایک معتبر و مؤثر اسلوب ہے۔ اس کا مطلب کسی فرد، واقعہ، ادارہ یا جماعت کے احوال کی مفصل وضاحت اور تجزیہ ہے۔ اس اسلوب کی مدد سے کسی شخص، خاندان، برادری یا قوم کی زندگی کے متعلق تمام پوشیدہ و غیر پوشیدہ خصائص دریافت کیے جاتے ہیں، ان کا تجزیہ کیا جاتا ہے، جن کی وجہ سے ان کی شناخت ممکن ہوتی ہے۔ یہ شناخت زیادہ تر ان رویوں کے ذریعے ہوتی ہے جو اشخاص کی طرز زندگی، حسن سلوک، عمل اور رد عمل کے ذریعے ظاہر ہوتی رہتی ہیں اور ان کا ماحول سے ربط بڑا گہرا ہوتا ہے۔

### مقصد

اس کے ذریعہ جو ڈاٹا (معلومات، معطیات) جمع کیا جاتا ہے اس کا مقصد صرف یہ ہوتا ہے کہ کسی شخص کی اکائی کی فطری تاریخ مرتب کی جائے۔ اس کے ان سماجی اسباب اور واقعات سے رشتہ جوڑا جائے، جو اس کے مخصوص ماحول پر اثر انداز ہوتے ہیں۔

### اہمیت

اس اسلوب تحقیق کی اہمیت کا اندازہ اس بات سے لگایا جاسکتا ہے کہ اس وقت تمام سماجی علوم کے ماہرین اسے تحقیق کے کارآمد اور مفید نتائج حاصل کرنے کے لیے بے حد مؤثر ذریعہ سمجھتے ہیں۔ یہی نہیں بلکہ مغرب کے مشہور ادیب و شاعر خاص کر ڈرامہ نگار اور ناول نگار اپنے موضوع کے پیش نظر کرداروں کی ساخت، فطرت اور ان کی جہتوں کے کیس اسٹڈی میں اتنی ہی دلچسپی لے رہے ہیں جتنی ایک ڈاکٹر اپنے بیماروں میں لیتا ہے۔



## ضروری شرائط

- درج ذیل معیار اور اصول و ضوابط کی روشنی میں کیس اسٹڈی کی ضرورت پر زور دیا گیا ہے:
- ۱۔ کلچر، تہذیب اور ادبی موضوعات کی تحقیق ایسی حقیقت کا مطالبہ کرتی ہو، جس میں افراد، برادری یا جماعت کے انفرادی یا مجموعی رویوں اور برتاؤ کا تجزیہ باسانی کیا جاسکے۔ اقدار کی بازیافت، تعین قدر کے مسائل اور تمدنی زندگی کے نظام کی پرکھ بھی مقصود ہو تو کیس اسٹڈی کی ضرورت ہو سکتی ہے۔
  - ۲۔ اس کے ذریعہ حاصل کی گئی اطلاعات سماجی زندگی کے لیے معنویت رکھتی ہو اور مخصوص سماجی زندگی کے رویوں اور سلوک کا مطالبہ پیش نظر ہو۔
  - ۳۔ خاندان اور برادری کی حیثیت کا جائزہ مخصوص افراد کے کیس اسٹڈی کے ساتھ ابھرتا ہے۔
  - ۴۔ افراد کی کیس اسٹڈی کے ذریعہ صحت مند نتائج کی توقع رہتی ہے۔
  - ۵۔ عالم طفولیت سے عمر کی آخری منزل تک کا مطالعہ ضروری سمجھا گیا ہو اور اس کے تمام تجربات نتائج کے لیے ضروری تصور کیے گئے ہوں۔ کیس اسٹڈی کے ذریعہ تو اتر سے واقعات اور سانحات کا اندازہ لگایا جاسکتا ہے تاکہ شخصیت کے ارتقاء اور نشوونما میں جو اسباب و علل کار فرما رہے ہوں ان کی پہچان کی جاسکے۔
  - ۶۔ فرد کی سماجی حیثیت اور نوعیت کا مقابلہ کرتی ہو۔
  - ۷۔ سوانح عمری، سوال نامہ، ڈائری، خطوط غرض تمام ذرائع اس طرح کیس اسٹڈی کے سلسلہ میں استعمال کیے جائیں تاکہ کسی واضح تصور مفروضہ یا نظریہ کی تصدیق یا تردید ہو سکے۔
- یہ شرائط کیس اسٹڈی کے سلسلہ میں ضروری ہیں۔ اگر کیس اسٹڈی کو حاصل کر لیا جائے تو انسان کی تہذیبی، مذہبی، سیاسی اور سماجی زندگی کے پنہاں خانوں تک رسائی ممکن ہو سکتی ہے اور یہ رسائی ایک ذہین محقق کو خاصا مواد فراہم کر سکتی ہے (۱۹)۔



## معلومات جمع کرنے کے ماخذ

اس طریقے میں محقق پہلے موضوع کا انتخاب کرتا ہے۔ پھر اس کے متعلق تمام ضروری معلومات جمع کرتا ہے۔ ان کا تعلق زیر تحقیق اکائی کی سوانح اور نشوونما سے ہوتا ہے۔ جب وہ چھوٹے چھوٹے حقائق کو مفصل طریقے سے جمع کر لینے کا کام مکمل کر لیتا ہے، تو پھر وہ اس قابل ہو جاتا ہے کہ ان حقائق کو مربوط انداز سے جوڑے اور اس اکائی کے خیالات و تجربات کی نہ صرف مکمل تصویر پیش کرے بلکہ ان کی توضیح و توجیہ بھی کرے۔ اس طرح معلوم ایسے ہوتا ہے کہ یہ طریقہ ایک خاص حد تک دستاویزی طریق تحقیق سے مشابہت رکھتا ہے۔ فرق یہ ہے کہ اس میں ہم زندہ افراد اور سماجی گروہوں کے مطالعہ تاریخ سے متعلق تحقیق کر رہے ہوتے ہیں جبکہ دستاویزی تحقیق میں ہم گذشتہ افراد اور اداروں کی تاریخ سے متعلق تحقیق کرتے ہیں (۲۰)۔

مطالعہ احوال میں جو معلومات استعمال کی جاتی ہیں، وہ مختلف ذرائع سے حاصل کی جاتی ہیں۔ ان میں بڑے بڑے ذرائع زیر تحقیق فرد کی ذاتی شہادت، ذاتی دستاویزات یعنی خطوط، ڈائریاں اور روزنامے وغیرہ، حیاتیاتی، نفسیاتی اور معاشرتی کوائف و حالات شامل ہیں۔ ان دستاویزات میں خودنوشت سوانح عمریاں، سکولوں اور دوسری سماجی ایجنسیوں کے ریکارڈز، طبی حالات، گفتگو اور کلینک میں لیے گئے انٹرویوز کے مسودے اور ایسا ہی اور بہت سا مواد شامل ہوتا ہے۔ ان دستاویزات کا معائنہ اور تجزیہ ضرور اس طرح کرنا چاہیے جس طرح دوسری دستاویزات کی جانچ پرکھ کی جاتی ہے (۲۱)۔

## معلومات جمع کرنے کے طریقے

مطالعہ احوال میں معلومات جمع کرنے کے لیے کوئی ایک خاص طریقہ استعمال نہیں کیا جاتا۔ دراصل اس کی خصوصیت ہی یہ ہے کہ اس میں مختلف قسم کی ترکیبیں (Techniques) استعمال کی جاتی ہیں، مثلاً: ڈائری یا دوسرے خفیہ ریکارڈ سے استفادہ، انٹرویو، تحریری آزمائش، براہ



راست مشاہدہ اور دستاویزی شہادت وغیرہ (۲۲)۔ معلومات جمع کرنے کے لیے کثرت کے ساتھ استعمال ہونے والا طریقہ ذاتی انٹرویو ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ جس پر تحقیق کی جا رہی ہے، اس سے براہ راست معلومات حاصل کرنا۔ جن حالات میں انٹرویو لیا جا رہا ہے، تحقیق کی نوعیت ان کو طے کرے گی، لیکن ایک بات واضح ہے کہ سروے کے انٹرویو کی نسبت مطالعہ احوال کے انٹرویو کے حالات زیادہ غیر رسمی ہوں گے۔ آزاد گفتگو کی حوصلہ افزائی کی جاتی ہے۔ انٹرویو لینے والے اور زیر تحقیق موضوع (فرد) کے درمیان قائم ہونے والا تعلق بہت اہم کیفیت کی صورت اختیار کر لیتا ہے۔ تاہم ایک تجربہ کار انٹرویو لینے والا جانتا ہے کہ وہ کس طرح اپنے آپ کو معروضی حالت میں رکھے گا اور امکانی حد تک اس میں ذاتی مداخلت سے پرہیز کرے گا (۲۳)۔

مطالعہ احوال میں یادداشت کے لیے اشارات (Notes) لکھنا نہایت اہم ہوتا ہے۔ جب انفارمیشن حاصل کی جاتی ہے، اسی وقت اشارات لکھ لینے چاہئیں..... (۲۴)۔ اس طریق تحقیق میں محقق اپنی توجہ اس بات پر مرکوز کرتا ہے کہ وہ محدود تعداد میں زیر مطالعہ اکائیوں کے بارے میں ہر ممکن چیز یقین کے ساتھ جان لے (۲۵)۔

### سروے اور مطالعہ احوال میں فرق

ان میں بڑا فرق یہ ہے کہ سروے کی وسعت زیادہ ہوتی ہے۔ اس میں معلومات زیادہ افراد سے حاصل کی جاتی ہیں جبکہ مطالعہ احوال میں ایک یا دو اکائیوں کا معائنہ کیا جاتا ہے، خاص طور پر وہ جو زیادہ نمائندہ اور مثالی ہوتی ہیں..... اکثر سماجی کارکن اپنے مقاصد کے لیے اس بات پر یقین رکھتے ہیں..... کہ دونوں طریقوں میں سے مطالعہ احوال کا طریقہ زیادہ مفید اور نتیجہ خیز ہے، لیکن تحقیقی تکنیک کے لحاظ سے دونوں کا بیک وقت استعمال زیادہ نفع آور ہے (۲۶)۔

### تحقیقی مواد کے حصول کے لیے آزمون یا ٹیسٹ کا استعمال

جدید نظریہ تحقیق سائنسی ہونے کی وجہ سے شواہد پر مبنی حقائق کو بڑی اہمیت دیتا ہے۔



سائنسی طریقہ میں نتائج کو حاصل کرنے کے لیے مختلف نوع کے تجربات ضروری ہوتے ہیں۔ تجربہ نتائج کے تسلی بخش حصول کا بہترین ذریعہ ہوتا ہے۔ مگر چاہے وہ تجربہ کے بعد یا تجربہ کے دوران یا تجربہ سے پہلے یعنی کوئی بھی حقیقت اس وقت تک تسلی بخش نہیں مانی جاسکتی جب تک کہ اس کی ہیئت ترکیبی کے بارے میں یقین یا اس کے اظہار میں ٹھہراؤ نہ ہو۔ اس طرح کسی مسئلہ پر صحیح تحقیق اسی صورت میں ممکن ہے کہ حقائق کی وضاحت اس کی ہیئت ترکیبی جاننے اور اظہار کے ٹھہراؤ کے مد نظر کیا جائے۔ اس قسم کی معلومات کے لیے پیمانے استعمال ہوتے ہیں۔ نفسیاتی اور تعلیمی اصطلاح میں ان کو ٹیسٹ کہتے ہیں۔ مقصد یہ ہوتا ہے کہ اشخاص کے بارے میں معلومات کو اعداد و شمار میں ظاہر کر دیا جائے (۲۷)۔

### اہمیت

سائنس میں ہر ایک چیز کو آزمون پر پرکھا جاتا ہے۔ اس طرح تحقیق میں بھی آزمون بہت اہم چیز ہے۔ بہت سارے محققین نے موضوعی مشاہدہ پر معروضی طریقوں کے ذریعے انسانی حقائق اکٹھا کرنے میں آزمون کو انٹرویو اور سوال نامے پر ترجیح دی ہے۔ انٹرویو کے ذریعے ہم اتنے پر اعتماد نتائج اخذ نہیں کر سکتے۔ ہمیں بہت سے اسباب کا قطعی علم نہیں ہو سکتا۔ لیکن جب ہم اسی مسئلہ کو آزمون پر پرکھتے ہیں، تجربہ کرتے ہیں اور جائزہ لیتے ہیں تو آزمون کے جواز اور پر اعتمادی کے لحاظ سے خاطر خواہ نتائج برآمد ہو سکتے ہیں..... (۲۸)۔

### فوائد

تحقیق میں آزمون نہ صرف کسی مسئلہ کو حل کرتا ہے بلکہ یہ بھی بتاتا ہے کہ وہ کیسا ہے، اور کس قدر جامع ہے۔ اسی طرح آزمون کسی چیز کے بارے میں بہت حد تک صحت کے ساتھ رائے دے سکتا ہے، مثلاً: اگر یہ کہا جائے کہ آج گرمی زیادہ ہے تو تحقیق صرف انٹرویو کے ذریعے کریں یا سوال نامہ بھیج کر لوگوں سے پوچھیں تو کوئی تسلی بخش جواب نہیں ملتا۔ اگر ملتا ہے تو وقت پر



نہیں ملتا۔ لیکن جب درجہ حرارت کے مخصوص سائنسی آلات کے ذریعے پتہ چلائیں تو ہم بہتر طور پر معلوم کر سکتے ہیں کہ موسم کا درجہ حرارت کتنا ہے (۲۹)۔

یہ ہیں وہ ذرائع یا طریقے جن کی مدد سے زیر تحقیق موضوع سے متعلق مواد کا حصول ممکن ہو سکتا ہے۔

## حوالہ جات

- ۱۔ تحقیقی عمل کے مراحل، عبدالستار دلوئی، در اردو میں اصول تحقیق، مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش (مقتدرہ قومی زبان، ط اول، ۱۹۸۶ء) ج ۱ ص ۱۰۲۔
- ۲۔ ایضاً، ص ۱۰۲، ۱۰۳۔
- ۳۔ ایضاً ص ۱۰۵، ۱۰۶۔
- ۴۔ تحقیق کافن، ڈاکٹر گیان چند، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۹۴ء، ط اول) ص ۱۵۶۔
- ۵۔ ایضاً، ص ۱۵۹۔
- ۶۔ اصول تحقیق، ایم سلطانہ بخش، کوڈ نمبر ۱۱۷ (علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد) ص ۱۰۳۔
- ۷۔ تحقیقی عمل کے مراحل، عبدالستار دلوئی، مشمولہ حوالہ مذکور، ج ۱ ص ۱۰۶، ۱۰۷۔
- ۸۔ اصول تحقیق، بخش، مجولہ بالا، ص ۱۰۳، ۱۰۴۔
- ۹۔ ایضاً، ص ۱۰۴۔
- ۱۰۔ ادبی تحقیق کے اصول، ڈاکٹر تبسم کاشمیری، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۹۲ء، ط اول) ص ۱۹۷ تا ۹۷۔
- ۱۱۔ مزید تفصیلات کے لیے دیکھئے: سید جمیل احمد رضوی، لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، (مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد: ط دوم، ۱۹۹۲ء) ص ۱۹۹-۲۲۷۔
- ۱۲۔ ادبی تحقیق کے اصول، ڈاکٹر تبسم کاشمیری، سابق حوالہ، ص ۲۱۵۔
- ۱۳۔ ایضاً، ص ۲۱۸۔



- ۱۳- تعلیمی تحقیق، احسان اللہ خان، (نگارشات میاں جمیبر زلاہور، ۱۹۹۱ء) ص ۵۷، ۵۸۔
- ۱۴- اصول تحقیق، سلطانہ بخش، کوڈ نمبر ۱۱۷، مجولہ بالا، ص ۱۰۵۔
- ۱۵- ادبی تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، مجولہ بالا، ص ۲۲۲، ۲۲۳۔
- ۱۶- ایضاً، ص ۲۲۹۔ انٹرویو کے بارے میں مزید تفصیلات کے لیے دیکھئے، ش۔ اختر، تحقیق کا طریق کار، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق مجولہ بالا ج ۱ ص ۲۰۵ و ما بعدھا۔
- ۱۷- تعلیمی تحقیق، احسان اللہ خان، مجولہ بالا، ص ۶۳، ۶۵۔
- ۱۸- اصول تحقیق، بخش، مجولہ بالا، ص ۱۰۵۔
- ۱۹- دیکھئے: تحقیق کا طریق کار، اختر، مشمولہ حوالہ مذکور ج ۱ ص ۲۳۲ تا ۲۳۵، بتصرف و تلخیص۔
- ۲۰- لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، مجولہ بالا ص ۱۸۹، بحوالہ:
- \_\_\_ Tyrus Hillway, Introduction to Research (2nd ed., Boston: Houghton Mifflin Co., 1964) P.239.
- ۲۱- ایضاً، ص ۱۸۹، ۱۹۰، بحوالہ مذکور ص ۲۳۹، ۲۴۰۔
- ۲۲- ایضاً، ص ۱۹۳ تا ۱۹۴، بحوالہ:
- \_\_\_ Herbert Goldher, An Introduction to Scientific Research in Librarianship (Washington: U.S Deptt of Heath, Education and Welfare, 1969) pp.84-85.
- ۲۳- ایضاً، ص ۱۹۴، بحوالہ: \_\_\_ Tyrus Hillway, op. cit., p.241.
- ۲۴- مزید تفصیل کے لیے دیکھئے سابق حوالہ، ص ۱۹۴۔
- ۲۵- ایضاً، ص ۱۹۵۔
- ۲۶- ایضاً، ص ۱۹۱، بحوالہ: \_\_\_ Ibid., pp. 240-41.
- ۲۷- تعلیمی تحقیق، احسان اللہ خان، مجولہ بالا، ص ۶۶۔
- ۲۸- ایضاً، ص ۶۶-۶۷۔
- ۲۹- ایضاً۔



باب ۹

مفروضات اور تحقیق میں ان کی اہمیت



## مفروضات اور تحقیق میں ان کی اہمیت

### مفروضات کا مفہوم

مفروضات، مفروضہ کی جمع ہے۔ اسے فرضیہ بھی کہتے ہیں۔ مفروضہ یا فرضیہ کی فن تحقیق کے ماہرین نے مختلف تعریفیں کی ہیں۔ بعض تو عام فہم ہیں اور بعض علمی و فنی الفاظ میں ہیں۔ ذیل میں ان ہی کا جائزہ لیا جاتا ہے:

آسان الفاظ میں کہا جا سکتا ہے کہ روزمرہ زندگی کے معمولات میں رائے (Opinion) کا لفظ کثرت سے استعمال کیا جاتا ہے۔ شروع میں محقق زیر تحقیق مسئلے کے حل کے لیے کوئی ایک رائے یا چند آراء قائم کرتا ہے۔ ان میں سے ہر ایک کو فرضیہ کے نام سے تعبیر کیا جاتا ہے (۱)۔

سادہ اور پیچیدہ مسائل کے لیے فرضیات (Hypotheses) کا استعمال کیا جاتا ہے۔ ان کے اطلاق کی مثالیں ہمیں روزمرہ معمولات میں ملتی ہیں۔ وضاحت کے لیے یہاں ایک مثال پیش کی جاتی ہے۔ فرض کیجیے کہ آپ کام کرنے کی میز پر گئے۔ اور دیکھا کہ میز پر رکھا ہوا بلب روشن نہیں ہو رہا۔ اس صورت حال کے بارے میں کئی خیالات یا سوالات ذہن میں آئے:

۱۔ کیا بلب جل گیا ہے؟ ۲۔ پلگ (Plug) نہیں لگا ہو؟ ۳۔ کہیں سے تار ٹوٹی ہوئی ہے؟

اب ان خیالات کی جانچ پرکھ کے لیے بلب کو دوسرے لیمپ میں لگا کر دیکھا تو وہ روشن ہو گیا۔ اس کا مطلب یہ ہوا کہ پہلا فرضیہ غلط ثابت ہوا۔ دوسرے فرضیے میں آزما کر دیکھا تو



وہ بھی غلط نکلا۔ آخر تیسرے فرضیے کی جانچ پڑتال سے معلوم ہوا کہ یہ درست ہے۔ دراصل تاریخی ٹوٹی ہوئی ہے۔ اس وجہ سے برقی رد نہیں آرہی اور نتیجہ کے طور پر بلب روشن نہیں ہوتا۔ فرضیات سے ہمیں ایسی روشنی ملتی ہے جس کی وجہ سے سائنسی انداز سے مسائل کے حل کرنے کی کوشش کی جاتی ہے (۲)۔

### فرضیہ کی علمی و فنی تعریف

علمی اور فنی الفاظ میں فرضیے کی تعریف یہ ہے: ”فرضیہ ایک آزمائشی اور توضیحی بیان ہوتا ہے جو دو یا دو سے زیادہ متغیرات (Variables) کے تعلق کے بارے میں موجود ہوتا ہے۔ اس تعلق کا تجرباتی طور پر مشاہدہ کیا جاسکتا ہے۔ چونکہ فرضیہ تحقیق کا ایک اہم ذہنی آلہ ہوتا ہے، اس کی حیثیت ایک سائنسی اندازے کی ہوتی ہے جو کسی عملی یا نظری مسئلے سے متعلق متغیرات کے تعلق کے بارے میں قائم کیا جاتا ہے۔ فرضیات وجدان یا نظریات سے اخذ کیے جاسکتے ہیں اور ان متعلقہ حقائق سے بھی ماخوذ ہوتے ہیں جو سابقہ مشاہدات، تحقیق یا تجربے سے حاصل ہوتے ہیں۔ فرضیات بعض مظاہر کی توضیح کرتے ہیں، تحقیقی معلومات اور ان کے تجزیے کے لیے راہ نمائی فراہم کرتے ہیں۔ ان کا مقصد یہ ہوتا ہے کہ دو یا دو سے زیادہ متغیرات کے درمیان تعلق کی آزمائش کی جائے۔ سائنسی مطالعے میں فرضیے کا اہم کام یہ ہوتا ہے کہ وہ تحقیقی معلومات کی جمع آوری میں راہ نمائی کرے اور بعد میں نئے علم کی دریافت میں مدد دے“ (۲)۔

ہل وے (Hillway) نے فرضیے پر لغوی بحث کرتے ہوئے لکھا ہے: ”لغت کے اعتبار سے فرضیہ اس کو کہا جاتا ہے جو نتیجے یا نظریے سے کم یا کم یقینی ہوتا ہے۔ یہ ایک معقول اندازہ (قیاس) ہوتا ہے جس کی بنیاد اس شہادت پر ہوتی ہے جو اندازہ لگانے کے وقت موجود ہوتی ہے۔ محقق دوران تحقیق کئی فرضیات بنا سکتا ہے یہاں تک کہ وہ آخر میں ایک ایسا فرضیہ پالیتا ہے جو زیر تحقیق صورت حال سے بہت زیادہ مناسب رکھتا ہے یا جو تمام معلومات کی توضیح نہایت عمدہ



طریقے سے کرتا ہے۔ اس طرح فرضیہ اس مطالعے سے ماخوذ سب سے بڑا نتیجہ بن جاتا ہے“ (۳)۔

## نتیجہ

مندرجہ بالا تعریف سے ہم اس نتیجہ پر پہنچتے ہیں کہ مفروضہ، نظریے کے وجود میں آنے سے پہلے وجود میں آتا ہے۔ یہ اصل نظریے کی ابتدائی صورت ہوتا ہے۔ اس میں کسی نظریے کے ابتدائی خدوخال کی ایک شکل دیکھی جاسکتی ہے۔ اس لحاظ سے مفروضہ، محقق کے لیے کام کرنے کی ایک بنیاد فراہم کرتا ہے اور اس سے وہ اپنے قائم کردہ مفروضے کی صداقت کا جائزہ لیتا ہے۔ مختلف واقعات، حقائق اور تجربات سے وہ اسے ثابت کرتا ہے اور اگر تحقیقی عمل میں کسی مفروضے کی صداقت کا ثبوت نہ مل سکے تو محقق ایسے مفروضے کو رد کر دیتا ہے یا تحقیق میں کوئی دوسرا مفروضہ بن جائے اور اس کی صداقت کے لیے مناسب مواد بھی حاصل ہو جائے تو محقق اس نئے مفروضے کو ایک نظریہ کی شکل میں پیش کر دے گا (۴)۔

ڈاکٹر ش۔ اختر مفروضات اور ان کی نوعیت پر بحث کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

”... مفروضہ اس کا لڑکھو حقائق اور اعداد و شمار کی ایک وسیع و عریض دنیا میں لے آتا

ہے، جہاں اسے اپنے کام کے مواد کا انتخاب کرنا ہے۔ یہ مواد ایسا ہوتا ہے جو معنویت سے

پُر ہوتا ہے اور جو مسائل کے حل کرنے میں مدد دیتا ہے۔ مواد کی صرف فراہمی تحقیق کے

مسائل کو حل نہیں کرتی بلکہ یہ دیکھنا بھی ضروری ہے کہ مثبت اور منفی مواد الگ الگ حاصل کیا

گیا ہوتا کہ اپنے نقطہ نظر کی تردید اور تائید میں مدد مل سکے۔ نقطہ نظر کی دنیا مفروضات کے

نام سے موسوم ہے۔ اس کے بغیر کسی قسم کی تحقیق ممکن نہیں“ (۵)۔

## تحقیق میں مفروضہ کی اہمیت

تحقیق کی دنیا میں اس وقت جتنے بھی نظریے رائج ہیں وہ آغاز ہی میں ایک نظریے کی



شکل میں وجود میں نہیں آئے تھے بلکہ نظریہ بننے سے پہلے ان کی جو ابتدائی صورت تھی اسے ”مفروضہ“ کا نام دیا جاتا ہے۔

ڈارون کا نظریہ ارتقاء فوری طور پر نظریہ نہیں بن گیا تھا بلکہ اس نظریے کو پہلے اس نے ایک مفروضے کی شکل دی اور اس میں تحقیق کا سلسلہ جاری رکھا۔ جب وافر مقدار میں اس نے تحقیقی مواد فراہم کر لیا تو اس مفروضہ کی صداقت کو ثابت کر دکھایا اور یہ مفروضہ ثبوت ملنے کے بعد ایک نظریے کی شکل اختیار کر گیا۔

مشہور نفسیات دان سی۔ جی۔ یونگ (C.G. Jung) نے اپنی ابتدائی تحقیق میں شعور اور اجتماعی لاشعور کے نظریات کو ایک مفروضہ کے طور پر اختیار کیا۔ اس کے بعد اس کی تحقیقی سرگرمیوں اور مفروضے کے ثبوت اور حقائق ملنے پر اس نے اس مفروضے کو ایک نظریے کی شکل دی۔

اسی طرح سے ہم یہ جائزہ لے سکتے ہیں کہ جدید علوم میں رائج تمام نظریات اپنی ابتدائی شکل میں مفروضے کی حیثیت رکھتے تھے اور یہی مفروضے تحقیق، تجربات و مشاہدات کے مراحل طے کرنے کے بعد جب صحیح ثابت ہو گئے تو نظریات بن گئے۔

مفروضے اور نظریے کے درمیان جو تعلق ہے، وہ ہمیشہ جاری رہنے والا ہے۔ آج بھی بے شمار مفروضے مختلف علوم، فنون میں موجود ہیں اور محققین ان کی صداقت کا جائزہ لے رہے ہیں اور جو نہی تحقیق کے ضروری مراحل پورے ہوں گے، یہ مفروضے نظریے کہلا سکیں گے۔

ادب میں بھی یہی صورت حال ملتی ہے، علامہ اقبالؒ کے نظریات، مثلاً: خودی، نظریہ فن، نظریہ عشق اور بعض دوسرے نظریے مفروضے کی منزلیں طے کر کے نظریات بنے ہیں۔ اس لحاظ سے دیکھا جائے تو مفروضے کی اہمیت واضح ہوتی ہے (۶)۔

فرضیہ کی اہمیت اس اعتبار سے بھی ہے کہ یہ ”... تحقیق کے لیے راہ نمائی فراہم کرتا



ہے اور بتاتا ہے کہ کون سے حقائق تحقیق سے متعلق ہیں اور کون سے غیر متعلق ہیں، یعنی کس قسم کی معلومات کو جمع کرنا چاہیے۔ فرضیہ یہ بتاتا ہے کہ معلومات کی جمع آوری کے لیے کس قسم کا طریقہ اختیار کیا جائے۔ اس طرح تحقیق کرنے والا ان طریقوں کو ترک کر دیتا ہے جو ایسے مواد کی فراہم نہیں کر سکتے جو فرضیے کی جانچ پرکھ کے لیے مطلوب ہوتا ہے، اور آخر میں اس طریقہ نظام (Framework) فراہم کرتا ہے جس کے ساتھ معلومات کا تجزیہ کیا جاتا کی جاتی ہے اور پھر نتائج نکالے جاتے ہیں“ (۷)۔

وان ڈیلن (Wan Dalen) نے فرضیے کو اس نقشے سے آ

مظاہر کی دریافت کے لیے راہ نمائی فراہم کرتا ہے اور تحقیق کے عمل کو رضوی نے اسی مصنف کے حوالے سے فرضیے کی اہمیت درج ذیل ہے: (۸)۔

## ۱۔ مسائل کی نشاندہی

فرضیے کے بغیر محقق مسئلے کے بارے میں سطحی اور عام سی سکتا ہے۔ فرضیہ قائم کرنے کے لیے کسی مسئلے کے بارے میں تمام معائنہ کرنا پڑتا ہے۔ ان کا باہمی تعلق تلاش کرنا ہوتا ہے اور متعلقہ انفا جوڑا جاتا ہے کہ وہ تمام عناصر کا احاطہ کرنے والا بیان بن جاتا ہے۔ فرضیہ نتائج نکالنا اور استعمال کیے گے الفاظ کی تعریف کرنا۔ یہ سب تحقیق میں ملوث کرتے ہیں اور زیر تحقیق مسئلے کو ایک واضح شکل و صورت دیتے ہیں۔

## ۲۔ حقائق کے ساتھ مناسبت

سائنسی علم کی بنیاد منتخب حقائق پر ہوتی ہے۔ تحقیق میں حقائق ہے۔ کسی مسئلے کے متعلق بغیر کسی مقصد کے بہت سی معلومات جمع کر لینا۔



شمار امکانات ان کا استعمال کرنے سے روکتے ہیں۔ فرضیہ یہ معلوم کرنے میں محقق کی مدد کرتا ہے کہ کون سی معلومات جمع کی جائیں اور اس کو اس قابل بناتا ہے کہ وہ فیصلہ کرے کہ کتنی معلومات اہم ہیں تاکہ نتائج کو مناسب طریقے سے آزمایا جاسکے۔ فرضیے کے بغیر محقق غیر معین تحقیق، اوخطا کے عمل سے گزرتی ہے، میں ست رفتاری سے کام لیتا ہے اور اس امر کا امکان ہوتا ہے کہ نملقہ معلومات کے بوجھ تلے مایوسی کے ساتھ ذہنی انتشار کا شکار ہو جائے۔ اس مسئلے کے کامیاب حل کے لیے اس کو کبھی بھی راہ نمائی نہ مل سکے۔ فرضیہ محقق کے لیے ایک کی جانب موڑ دیتا ہے۔

ہی

نہیں بتاتا کہ زیر تحقیق مسئلے کے بارے میں کون سی معلومات درکار ہیں۔ جمع کس طرح کرنا ہے یعنی ان کی جمع آوری کے لیے کون سا طریقہ، طریقے سے بنایا گیا فرضیہ بتاتا ہے کہ اس مسئلے پر کس طرح کام کیا جائے۔ ری کے لیے کون سا طریقہ غیر متعلق ہے اور کون سا متعلق ہے۔ کن کنی ہیں۔ ان کی آزمائش کس طرح کرنی ہے، اور اس کے لیے کون سا کام کرنے ضروری ہیں، کون سے شماریاتی طریقے موزوں ہیں۔ حقائق اور حالات کے بارے میں پیشن گوئی کرتا ہے، ان کے بارے میں سے لینی ہیں۔

اہوائی وضاحتیں

یہ سائنسی طریق کار، حقائق کی جمع آوری یا ان کی سطحی خصائص کے لحاظ سے آگے بڑھتا ہے۔ تحقیق صرف اس بات کا نام نہیں کہ امراض کے شفا کیا جائے، یا جارحانہ طرز عمل کے خصائص کو جمع کیا جائے، یا بچوں کے



جرائم سے متعلق حقائق کو اکٹھا کیا جائے بلکہ ان کے پیچھے کارفرما عوامل کو تلاش کرنا ہوتا ہے جو ان کے رونما ہونے کا باعث بنتے ہیں۔ علم میں خلاء کو پر کرنے کے لیے محقق بڑی چابکدستی اور مہارت سے معلوم حقائق و تعلقات کو قوت متخیلہ (خیال افروزی، Imagination) سے جوڑتا ہے تاکہ زیر تحقیق مظاہر کے بارے میں عارضی وضاحتیں پیش کی جاسکیں۔ یہ فرضیات، جن کو مسلمہ حقائق اور تخیل کی قوت پرواز سے بنایا جاتا ہے، محقق کو نامعلوم کی دریافت اور وضاحت کرنے کے لیے نہایت عمدہ ذریعہ یا آلہ فراہم کرتے ہیں۔

### ۵۔ نتائج کے لیے فریم ورک کی فراہمی

اگر فرضیہ بنا کر کام کیا جائے تو محقق کو حسب ضرورت ایک ایسا فریم ورک مل جاتا ہے جس میں رہتے ہوئے وہ نتائج بیان کر سکتا ہے۔ فرضیہ ایسا ڈھانچہ (Framework) فراہم کرتا ہے جس کی وجہ سے نتائج کو عمدہ اور معنی خیز طریقے سے بیان کیا جاتا ہے۔ اگر زیر غور تعلق کے بارے میں پہلے سے کوئی پیشن گوئی فرض نہیں کی جاتی، تو جمع کیے ہوئے حقائق کو موقع نہیں ملتا کہ وہ کسی چیز کی تصدیق یا تردید کر سکیں۔ سائنسی کھیل میں محقق پہلے شرط لگاتا ہے، پھر قرعہ اندازی کرتا ہے، نہ کہ وہ پہلے قرعہ اندازی کرتا ہے اور پھر شرط لگاتا ہے۔

### ۶۔ مزید تحقیق کے لیے تحریک

ایک اچھا فرضیہ صرف زیر غور مظہر کی وضاحت ہی نہیں کرتا بلکہ وہ ایک ذہنی ماخذ (Lever) کے طور پر کام کر سکتا ہے جس سے محقق ایسے بہت سے غیر مربوط حقائق معلوم کر لیتا ہے جن کو دوسری وضاحتوں میں یا مجموعی نوعیت کی وضاحتوں میں استعمال کیا جاتا ہے۔ فرضیہ کبھی بھی آخری اور حتمی بیان کی حیثیت سے آگے نہیں بڑھتا (پیش نہیں کیا جاتا) جیسا کہ میکس ویبر (Max weber) نے کہا: ”یہ پرانا ہو جانے والا اور پیچھے رہ جانے والا ہوتا ہے“۔ یہ وہ کلید ہے جو نامعلوم تک رسائی کا باعث بنتی ہے، ہمیں ایک مسئلے سے دوسرے مسئلے کی طرف لے جانے



والی ہوتی ہے، درمیانے درجے کی وضاحتوں سے زیادہ عمدہ تصوری اور نظری سکیموں کی طرف لے جاتی ہے جو لگاتار علم کی سرحدوں پر نئے اور متحرک شعبوں کی نشاندہی کرتی رہتی ہے۔

### اچھے فرضیے کے خصائص

ایک اچھے فرضیے کو درج ذیل خصائص کا حامل ہونا چاہیے:

- ۱۔ اس کو معقول ہونا چاہیے۔
  - ۲۔ اس کو معلوم حقائق یا نظریات کے ساتھ مطابقت رکھنی چاہیے۔
  - ۳۔ اس کو اس انداز سے بیان کیا جائے کہ (اسے) آزمائش کے مرحلے سے گزارا جاسکے اور اس کو درست یا غلط ثابت کیا جاسکے۔
  - ۴۔ اس کو آسان ترین الفاظ و اصطلاحات میں بیان کیا جانا چاہیے (۹)۔
- گولڈر (Goldhor) نے فرضیے کے تین اور خصائص گنوائے ہیں:
- ۱۔ فرضیے کی نوعیت آفاقی ہونی چاہیے یعنی متغیرات کے درمیان زیر غور تعلق محدود نہ ہو۔
  - ۲۔ اس کو غیر متغیر (Invariant) ہونا چاہیے۔ یہ وقت کے ساتھ تبدیل نہ ہوتا ہو۔
  - ۳۔ فرضیہ علت (Cause) کو بیان کرنے والا ہو، یعنی وہ ایسا تعلق بتائے جس میں وجہ یا علت بیان کی گئی ہو (۱۰)۔

### فرضیہ لکھنے کے متعلق چند تجاویز

فن تحقیق کے ماہرین نے چند تجاویز پیش کی ہیں جن سے فرضیے لکھنے میں مدد و راہ نمائی ملتی ہے، وہ تجاویز یہ ہیں:

- ۱۔ تمام متعلقہ لٹریچر کا جائزہ لینے کے بعد فرضیہ لکھنا چاہیے۔ یہ جائزہ بتائے گا کہ پہلے محققین نے کیا کام کیا ہے، کون سے تکنیکس (Techniques) استعمال کی گئیں، ان میں سے کون سی مفید ثابت ہوئیں اور کون سی بے کار، لٹریچر کے جائزے کے بغیر فرضیے



کو بنانا اور آزمانا وقت کو ضائع کرنے کے مترادف ہوتا ہے۔

۲۔ فرضیات عام طور پر تحقیقی مقالے کے پہلے باب میں لکھے جاتے ہیں۔ مطبوعہ رپورٹوں

میں فرضیات لٹریچر کے مختصر جائزے کے بعد بیان کیے جاتے ہیں۔

۳۔ فرضیات کو لکھنے کا انداز بیانیہ ہونا چاہیے نہ کہ سوالیہ۔

۴۔ عام طور پر محقق کے پاس آزمانے کے لیے ایک سے زیادہ فرضیات ہونے چاہئیں۔

لٹریچر کے جائزے کو ایسی شہادت فراہم کرنی چاہیے کہ کیا مجوزہ فرضیے سے اہم نتائج

برآمد ہوں گے یا نہیں۔

۵۔ فرضیات کو (متغیرات کے درمیان) اہم اختلاف یا اہم تعلقات کی پیشن گوئی کرنی

چاہیے۔ فرضیے کی غیر متعلق قسم (Null Form) کو عموماً طریقہ ہائے تحقیق کے باب

میں اور پھر ”نتائج“ کے باب میں بیان کیا جاتا ہے۔

۶۔ مقالے میں بیان کیے گئے فرضیے میں ہر لفظ (Term) کی واضح طور پر تعریف کر دینی

چاہیے۔ اگر زیادہ الفاظ و اصطلاحات کی تعریفیں کرنا مقصود ہو تو وہ ایک الگ حصے میں

لکھ دینی چاہئیں۔ اس حصے کا عنوان ”الفاظ کی تعریفیں“ رکھا جاسکتا ہے اور اس کو فرضیے

کے بیان کے بعد فوراً آنا چاہیے (۱۳)۔

### ہر قسم کی تحقیق میں مفروضے کی ضرورت نہیں پڑتی

وہ تحقیق جو محض حقائق کی تلاش پر مبنی ہے، اس میں کسی مفروضے کی ضرورت نہیں ہوتی،

مثلاً: کسی کتب خانے کے مخطوطات کی وضاحتی فہرست یا کسی موضوع پر کتابیات تیار کرنا۔ ان

مسائل میں مفروضے کی ضرورت نہیں ہوتی ہے لیکن وہ تحقیق جو تنقیدی تشریح و توضیح کا کام کرتی

ہے، اس میں مفروضے کی ضرورت ہوتی ہے۔ ہر اچھے تحقیقی کام میں مفروضہ ضرور قائم کیا جاتا ہے

تاکہ تحقیق کے بارے میں ایک نقطہ نظر تشکیل پاسکے (۱۳)۔ اس ضمن میں ٹائرس ہل وے



(Tyros Hillway) کہتے ہیں:

۱۔ ”جب مطالعے کا مقصد صرف معلومات و حقائق کو پانا ہو تو پھر بعض اوقات فرضیے کا کوئی فائدہ نہ ہوگا۔ اگر محقق کسی شہر یا قوم کی تاریخ پر کام کر رہا ہو، کسی شخصیت پر تحقیق کر رہا ہو یا اسانیدہ کے موجودہ تنخواہوں کے مدارج پر کام کر رہا ہو، تو اس کا مقصد صرف یہ معلوم کرنا ہے کہ حقائق کیا ہیں۔ اگر محقق کتابیات مرتب کر رہا ہو، کوئی اشاریہ بنا رہا ہو یا اسی قسم کی کوئی فہرست بنا رہا ہو تو پھر بھی فرضیے کا فائدہ نہ ہوگا۔“

۲۔ ”بہت سے اعلیٰ درجے کی تحقیق میں نہ صرف حقائق کی تلاش کرنا ہوتی ہے بلکہ ان کی توضیح و توجیہ بھی کرنا ہوتی ہے۔ اگر کوئی محقق کسی صنعت یا سیاسی جماعت کی تاریخ پر کام کر رہا ہو، تو جو حقائق وہ جمع کر رہا ہے، وہ صرف اسی وقت فائدہ مند ثابت ہوں گے، جب وہ ان سے نتائج نکالے گا یعنی ان سے عام اصول وضع کیے جائیں کہ ہم ان سے کیا سیکھ سکتے ہیں۔ عام طور پر اعلیٰ درجے کی تحقیق فرضیے یا عام اصول بنانے کے بغیر نہیں کی جاتی۔ جب محقق معلومات جمع کر لیتا ہے، تو ان کا مطلب کیا ہوتا ہے، ہم ان سے کیا نتائج نکال سکتے ہیں؟ امریکہ میں عام طور پر پی ایچ۔ ڈی کی ڈگری فرضیے کے بغیر صرف حقائق کی جمع آوری پر نہیں دی جاتی۔“

۳۔ ”مختصر طور پر یہ بات کہی جاسکتی ہے کہ تحقیقی مطالعات فرضیے کے بغیر کیے جاسکتے ہیں، لیکن ہر بڑے تحقیقی مطالعے میں فرضیہ ضروری خیال کیا جاتا ہے۔ تحقیق کا بڑا مقصد حقائق سے نتائج نکالنا ہے نہ کہ صرف ان کی جمع آوری“ (۱۴)۔



## حوالہ جات

- ۱۔ لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد ۱۹۹۲ء، ط دوم) ص ۹۵، بحوالہ:
- \_\_\_C.V.Good and D.E. Scates, methods of research, Educational psychological, Sociological, (New York:Applection Century.croft, 1954), P. 90.
- ۲۔ ایضاً بحوالہ: Deobold B. Van Dalen, Methods in Educational
- ۳۔ ایضاً، ص ۹۶، بحوالہ: Charles H. Busha and stephen P.Hrter, research in Librarianship, Techniques and Interpretation, (New York: Aacademicpress, 1980), P. 10.
- ۴۔ ایضاً، بحوالہ: rus Hillway, introduction to research (2nd ed, Boston: Houghton Mifflin C., 1964), P. 123.
- ۵۔ تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، مجولہ بالا، ص ۵۴۔
- ۶۔ موضوع کا انتخاب، ش. ڈاکٹر اختر، در اردو میں اصول تحقیق، مرتبہ: ایم سلطانہ بخش، ج ۱ ص ۱۳۸، ۱۳۹۔
- ۷۔ تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری، مجولہ بالا، ص ۵۳۔
- ۸۔ لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، رضوی، مجولہ بالا، ص ۱۱۰، بحوالہ:
- Herbert Goldhor, an introduction to Scinentific research in Librarianship. C. Wasington: U. S. Department of Health Education and Welfare, 1969, P. 41-42 [Mimeographed].
- ۹۔ ایضاً ص ۱۱۰ تا ۱۱۳، بحوالہ: Van Dalen, op. , pp. 223-224.



۱۰۔ لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، محولہ بالا، ص ۸۶، بحوالہ: Johan w.

Best .Research in Education (3rd ed.New Jersey:Prentice

-Hall.1977).P.26.

☆ فرضیہ کے خصائص کی تفصیل کے لیے دیکھئے: لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، محولہ بالا

ص ۱۰۹ تا ۱۰۰۔

۱۱۔ ایضاً بحوالہ: Goldhor.op.cit.pp.44-45

۱۲۔ ایضاً بحوالہ: Gilbert Sax, Foundations of Educational

Research, (New Jersey: Prentice-Hall, 1979), P.67.

۱۳۔ تفصیل کے لیے دیکھئے، تحقیق کے اصول، تبسم کاشمیری محولہ بالا، ص ۵۶ و ما بعدھا۔

۱۴۔ سابق حوالہ ص ۱۱۳، ۱۱۴، بحوالہ: Tyrus Hillway, op. cit., pp. 130-131.



باب ۱۰

حواشی و تعلیقات، حوالہ جات، اقتباسات اور  
اشارہ سازی میں فرق اور ان کی اہمیت



## حواشی و تعلیقات، حوالہ جات، اقتباسات اور

### اشارہ سازی میں فرق اور ان کی اہمیت

#### ۱۔ حواشی و تعلیقات کا مفہوم

حواشی، حاشیہ کی جمع ہے۔ یہ عربی زبان کا لفظ ہے۔ لسان العرب میں اس کے یہ معنی بیان ہوئے ہیں: ”کل شیء اجانبہ و طرفہ“ (۱)۔ (ہر چیز کی طرفیں اور کنارے)۔ لغت نامہ میں علی اکبر دھندا لکھتے ہیں: ”مقابل متن، آنچہ در کنار صفحہ کتاب نویسدہ از ملحقات و زیادات، شرحی کہ بر متن نویسدہ“ (۲)۔ (حاشیہ متن کا متضاد ہے۔ اس سے وہ عبارت مراد ہے جو کسی کتاب کے صفحہ کے کنارے پر لکھی جاتی ہے اور اس میں متن پر اضافوں کا ذکر کیا جاتا ہے۔ اس سے مراد گویا وہ شرح ہے جو کسی متن پر لکھی جاتی ہے)۔ اصول تحقیق کے فاضل مصنف لکھتے ہیں:

”کتب و رسائل میں حاشیہ کے معنی متن کے ہر طرف چھوٹا ہوا سادہ صفحہ بھی ہوتا ہے اور اس صفحہ پر لکھی ہوئی تحریر بھی، جن کا تعلق متن کے معنی و توضیح اور ذیلی حواشی سے ہوتا ہے“ (۳)۔

ڈاکٹر گیان چند کہتے ہیں کہ: ”پہلے زمانے میں کتابت و طباعت میں کچھ نثری عبارت یا اشعار درمیان صفحہ میں لکھتے تھے اور کچھ اطراف کے حاشیہ پر تر چھا کر کے۔ اس نواحی جگہ کو حاشیہ کہتے ہیں“ (۴)۔



آج کل حواشی کا اطلاق ذیلی اشارات (Foot Notes) پر ہوتا ہے جو دو طرح کے ہوتے ہیں:

۱- مآخذ کی اطلاع دینے والے، انہیں حوالے کہا جاتا ہے۔

۲- مآخذ پر تبصرہ کرنے والے اور معلومات میں اضافہ کرنے والے، انہیں

حواشی کہا جاتا ہے۔ متن پر حاشیہ لکھنے کو تفسیر کہتے ہیں۔ تعلیقات بھی حواشی ہی کی ایک صورت ہے، تعلیقات کو تشریحات کہتے ہیں جو کسی متن پر مختصراً لکھی جاتی ہیں۔

### حواشی و تعلیقات کا رواج قدیم ہے

حواشی و تعلیقات متن کوئی نیا رواج نہیں ہے کہ اسے صرف عصر حاضر کی تحقیقات کے ساتھ منسلک کر دیا جائے بلکہ اگر اسلامی علوم کے حوالے سے دیکھا جائے تو بہت پہلے سے اس رواج کے آغاز کا پتہ چلتا ہے، مفسرین و محدثین حضرات کی کاوشیں اس کی زندہ مثالیں ہیں، چنانچہ پروفیسر سعید الدین احمد ڈار مفسرین کا حوالہ دیتے ہوئے لکھتے ہیں:

”تحقیق میں حواشی [وتعلیقات] کا استعمال کوئی نئی چیز نہیں۔ مسلمان مفسرین نے قرآن مجید کے معنی و مطالب کو احسن طریقے پر سمجھانے کے لیے حواشی [وتعلیقات] کو ذریعہ بنایا۔ جن میں نہ صرف اپنی سوچ کی وضاحت کی بلکہ دیگر مفسرین کی رائے سے قاری کو آگاہ کیا اور اپنے خیال سے ان کا تقابلی جائزہ بھی پیش کیا“ (۵)۔

### اہمیت

صحیح متن کی پیش کش ایک اہم اور مفید علمی خدمت ہے مگر اس کی اہمیت و افادیت اصل میں مفید حواشی و تعلیقات پر مبنی ہے۔ جس قدر یہ مفید ہوں گے اسی حساب سے متن کی قدر و قیمت میں اضافہ ہوگا۔ اگر ان کا اہتمام نہ کیا جائے تو متن کی تدوین و ترتیب کا کام ادھورا ہی تصور ہوگا۔



ذیل میں چند ایک اقتباسات پیش کیے جاتے ہیں جن سے حواشی و تعلیقات کی اہمیت عیاں ہوتی ہے:

۱۔ ڈاکٹر گیان چند لکھتے ہیں: ”..... اردو [بشمول عربی] کی تدوین میں اس [تخشیہ و تعلیقات متن] کی بڑی اہمیت ہے۔ نظم کی تدوین ہو کہ نثر کی، تخلیقی نثر کی تدوین ہو کہ تذکرہ کی، قواعد یا کسی علمی موضوع کی کتاب کی، حواشی کے بغیر نامکمل رہتی ہے۔ متن کو پڑھتے وقت قاری کے ذہن میں بعض امور کے متعلق جو مزید جاننے کی خواہش ابھرتی ہے۔ مدون اپنے حواشی میں وہ جان کاری فراہم کر دیتا ہے“ (۶)۔

۲۔ ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش لکھتی ہیں: ”..... یہ عمل [یعنی تخشیہ و تعلیقات] ترتیب متن کا ایک نہایت اہم اور لازمی جزء ہوتا ہے، جس سے نہ صرف یہ کہ متن کے مختلف مآخذ اور اختلافی قراتوں کی نشان دہی ہوتی ہے بلکہ متن کے مقتضیات اور معلوم حقائق کی روشنی میں توضیحی روایتوں اور تصدیقی براہین کو بھی تقابلی مطالعے کے ساتھ حسب ضرورت اس میں شامل کیا جاتا ہے۔ ایسے حوالہ جات یا تحقیقی و تنقیدی حواشی کے بغیر متن کی تصحیح و ترتیب کا کام درجہ استناد سے محروم رہتا ہے“ (۷)۔

۳۔ ڈاکٹر محمد طفیل لکھتے ہیں: ”حاشیہ نگاری کا عمل سنجیدہ اور فنی تحریروں، نیز ترتیب متن کا ایک اہم اور لازمی جز ہے، جس کے ذریعے نہ صرف مآخذ کی نشاندہی کی جاتی ہے، بلکہ بہت سی توضیحی وضاحت بھی کر دی جاتی ہے۔ ایسے بہت سے امور حاشیہ میں لکھے جاتے ہیں جو متن کا حصہ نہیں بن سکتے۔ ان کے علاوہ قدیم متن کی تدوین (ایڈیٹنگ) کے حوالے سے اختلافی قراتوں کی نشاندہی کی جاتی ہے اور متن کے مقتضیات اور معروف حقائق کی روشنی میں توضیحی روایتوں اور تصدیق دلائل کو حسب ضرورت شامل کیا جاتا ہے۔ تحقیقی اور تنقیدی حواشی نیز حوالہ جات کے بغیر تحقیقی کام درجہ استناد سے محروم رہتے ہیں۔ اس لیے حاشیہ نگاری تصنیف و تالیف کا ایک لازمی جز و



ہے جسے مکمل کیے بغیر علمی اور تحقیقی مواد بطریق احسن قارئین کو پیش نہیں کیا جاسکتا“ (۸)۔  
 حاشیہ کی اہمیت کا اندازہ اس امر سے بھی لگایا جاسکتا ہے کہ مصنف جب اپنے مسودے پر نظر ثانی کرتا ہے تو اس میں اضافہ کرتا رہتا ہے۔ یہی حاشیہ نگاری ہے۔ حاشیہ نگاری کا فن اگر نہ ہوتا تو بہت سے افکار پیدا ہوتے ہی ختم ہو جاتے اور ہم تک ہرگز منتقل نہ ہوتے کیونکہ مصنف کو ان کے اندراج کے لیے الگ کتاب تصنیف کرنا پڑتی جو بعض حالات میں ممکن نہیں۔ اسی طرح فکری تنقید اور علمی تدقیق کے میدانوں میں بھی اس قدر پیش رفت نہ ہوتی جو آج دکھائی دیتی ہے۔ حواشی کی بدولت ہی بہت سی اغلاط کی تصحیح ہو سکتی ہے (۹)۔

### حواشی کے مقاصد

حواشی کے کئی مقاصد ہوتے ہیں جو ان کی ضرورت و اہمیت پر دلالت کرتے ہیں، جیسے:

- ۱۔ الف۔ متن میں مذکورہ افراد کا تعارف۔
- ب۔ متن میں مذکورہ مقامات کی صراحت۔
- ۲۔ تخریج، جیسے قرآنی آیات، احادیث نبویہ وغیرہ کی تخریج کرنا۔ تخریج کے تحت بالعموم ذیل کے عمل آتے ہیں:
  - الف۔ مقتبس اشعار یا نثر پاروں کے ماخذ کا پتہ لگانا۔
  - ب۔ نثری مضمون میں شامل اشعار کے مصنفوں کی صحیح نشاندہی کرنا۔
  - ج۔ متن میں مقتبس اشعار اور نثر پاروں کے متن کی تصحیح کرنا۔ اگر شبہ ہو کہ مقتبس شعریا آیت وغیرہ میں کوئی لفظ ادھر ادھر ہو گیا ہے تو اصل کتاب میں دیکھ لیا جائے۔
- ۳۔ اگر متن میں کوئی مصرع غیر موزوں درج ہو تو اس کی طرف اشارہ کرنا اور اس کی قیاسی تصحیح کرنا۔
- ۴۔ تذکروں میں شعراء کے حالات میں کسی صریح غلطی کی نشاندہی کرنا، مثلاً: تاریخ وفات کا



غلط اندراج۔

- ۵۔ مصنف متن کے کسی بیان کی تصحیح کرنا۔
- ۶۔ متن میں شامل کسی نظم یا غزل یا نثری تخلیق کا شان نزول بیان کرنا نیز تاریخ تصنیف کی نشاندہی کرنا۔
- ۷۔ متن میں درآمدہ تلمیح یا رمز یا مختصر اشارے کی تصریح کرنا۔
- ۸۔ متن کی فنی اغلاط کی طرف اشارہ کرنا۔
- ۹۔ مصنف متن کے کسی بیان پر تبصرہ کرنا۔
- ۱۰۔ متن میں مشکل یا اجنبی زبانوں کے الفاظ کی توضیح کرنا۔
- ۱۱۔ متن سے متعلق مزید معلومات بہم پہنچانا۔
- ۱۲۔ اختلافی مسائل میں متن سے مختلف نقطہ نظر پیش کرنا۔
- ۱۳۔ اگر متن میں کسی دوسری زبان (مثلاً عربی، فارسی، انگریزی) کے مواد کا اردو ترجمہ پیش کیا ہے تو نوٹ میں اصل زبان کے الفاظ دینا۔
- ۱۴۔ کسی کے شکرے کا اعتراف کرنا (۱۰)۔

حواشی کے استعمال میں یہ امر ضرور ذہن نشین ہونا چاہیے کہ ان کی شمولیت مقالے کو وسیع بناتی ہے اور استدلال میں مدد دیتی ہے۔ تاہم اگر ان کا بر محل استعمال نہ کیا جائے تو اس تکنیکی خامی سے تحقیق کا معیار مشکوک ہو جاتا ہے (۱۱)۔

### کچھ اصول

تحقیق میں حواشی و تعلیقات کی اہمیت مسلم ہے مگر اس کا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ ہر رطب و یابس کا استیعاب کر کے مقالے یا کتاب کو بوجھل بنا دیا جائے۔ فن تحقیق کے ماہرین کے مطابق درج ذیل باتوں کا اس سلسلہ میں خیال رکھنا ضروری ہے:



- ۱- ایسے حواشی نہ لکھے جائیں جو عام معروف معلومات پر مشتمل ہوں۔
- ۲- متن کے متعلق ضروری تبصروں اور وضاحتوں پر ہی اکتفا کیا جائے (۱۲)۔
- ۳- اختصار و جامعیت کا خیال رکھا جائے۔ ایسا نہ ہو کہ حواشی و تعلیقات اصل متن پر غالب آجائیں، چنانچہ عبدالرزاق قریشی آکسفورڈ یونیورسٹی کے ایک پروفیسر کے حوالے سے لکھتے ہیں کہ: ”تشریحی (تبصراتی) فٹ نوٹ کم سے کم ہوں اور زیادہ سے زیادہ مختصر ہوں اور جو بات متن میں جگہ پانے کی مستحق نہ ہو اسے حاشیہ میں بھی جگہ دینے کی ضرورت نہیں“ (۱۳)۔

### حواشی و تعلیقات کا مقام

قدیم زمانہ میں حواشی [تعلیقات] تحریر کرنے کے لیے صفحہ پر کوئی جگہ مختص نہیں ہوتی تھی بلکہ متن کے علاوہ ہر جگہ حاشیہ لکھا جاتا تھا کیونکہ حاشیہ معنی کا Margin یا Border ہوتا ہے۔ پھر اسی وجہ سے ایسی تحریر کو حاشیہ کہنے لگے جو صفحہ کے کناروں پر لکھی جاتی۔ حاشیہ نگار جگہ کا خیال کیے بغیر صفحہ پر جہاں جگہ ملتی وہاں حاشیہ لکھ دیتا تھا۔ اس طرح نہ صرف صفحہ کے چاروں کناروں پر حاشیہ لکھا جاتا بلکہ متن کے درمیان اور بین السطور بھی حاشیہ لکھنے کا رواج تھا، جس کی مثالیں عربی اور فارسی کی بے شمار مطبوعہ اور غیر مطبوعہ قدیم کتب سے دی جاسکتی ہیں۔ ان زبانوں کی قدیم کتب کا مطالعہ کرنے والا ہر قاری اس حقیقت سے بخوبی واقف ہے۔

لیکن جدید دور میں حاشیہ نگاری کے اس طریق کار کو پسند نہیں کیا جاتا بلکہ اب اس کے لیے (Foot Note) کی اصطلاح استعمال کی جاتی ہے، جس کا منشاء یہ ہے کہ حواشی صرف اسی صفحہ پر متن کے نیچے درج کیے جائیں اور اسی طریق کار کو اردو میں مستقل طور پر اپنایا گیا ہے (۱۴)۔ مختصر یہ کہ حاشیہ ترتیب متن کی چیز ہے یعنی اس کا تعلق متن کی ترتیب سے ہے۔ موجودہ زمانے میں حاشیہ فٹ نوٹ کی صورت میں صفحے پر سب سے نیچے آخری سطور میں لکھا جاتا ہے اور متن و حاشیہ کے درمیان لکیر کھینچی جاتی ہے۔



## تعلیقات و حواشی میں فرق

- تعلیقات اور حواشی میں مقصدیت کے لحاظ سے تو کوئی فرق نہیں ہے مگر نوعیت کے لحاظ سے تھوڑا سا فرق ہے۔ تعلیقات حواشی کے مقابلہ میں ذرا زیادہ تفصیلات میں ہوتی ہیں۔
- تعلیقات کا بنیادی مقصد تشریحات و تصریحات ہے۔ اگرچہ اہمیت کے لحاظ سے حواشی میں بیان کردہ اہمیت کے نکات تعلیقات کی اہمیت کے ضمن میں بھی گنوائے جاسکتے ہیں مگر ان کے علاوہ بھی تعلیقات کے کچھ منفرد اہمیت کے حامل نکات ہیں جو ان کی اہمیت و افادیت کو اجاگر کرتے ہیں جیسے:
- ۱۔ تعلیقات میں کسی مصنف کے نظریے یا تصورات کو زیادہ تفصیل کے ساتھ جانا جاسکتا ہے جو کہ اصل متن کے اندر ممکن نہیں ہوتا۔
  - ۲۔ تعلیقات میں کسی شخصیت، لفظ، اصطلاح، تلمیح، واقعہ اور مقام وغیرہ کے پس منظر اور پیش منظر کو جانا جاسکتا ہے جو اصل متن میں ممکن نہیں ہوتا۔
  - ۳۔ تعلیقات میں کی گئی تشریحات و تشریحات کی وجہ سے اس پر کسی کام کرنے والے محقق کا خاصہ وقت ضائع ہونے سے بچ جاتا ہے نیز اس کی تحقیق کے لیے ضروری مواد فراہم ہوتا ہے۔
  - ۴۔ تعلیقات کی وجہ سے کسی محقق کے لیے تحقیق کی خاطر کئی نئے موضوع اور مسائل کی نشان دہی ممکن ہو جاتی ہے۔
  - ۵۔ تعلیقات کی وجہ سے متن میں موجود ابہام کے کسی بھی پہلو کو زیادہ سے زیادہ کم کیا جاسکتا ہے یا مکمل طور پر ختم کیا جاسکتا ہے۔
  - ۶۔ تعلیقات میں متن کے مختلف ماخذ اور اختلافی قراءتوں کی نشاندہی کی جاتی ہے۔ جس سے تدوین میں آسانی رہتی ہے۔ دوسرے الفاظ میں یوں سمجھئے کہ اگر کسی محقق نے کسی مصنف کے متن کی تصحیح و ترتیب کا کام کرنا ہو تو اس متن سے متعلقہ تعلیقات اس سلسلہ



- میں انتہائی سود مند ثابت ہوتی ہے۔
- ۷۔ تعلیقات میں مصنف کی سوچ کی تصریح کے علاوہ دیگر ماہرین فن و ادب کی آراء کی بھی اس میں جگہ دی گئی ہوتی ہے۔ جس سے قاری پورے خیال یا موضوع کو بھرپور جامعیت سے اپنی فکری گرفت میں لے سکتا ہے۔
- ۸۔ تعلیقات کی وجہ سے اس ذیلی مواد کو سمجھنے میں آسانی رہتی ہی جسے بوجہ خطرہ طوالت متن میں درج نہیں کیا گیا ہوتا اور حواشی میں محض اس کا مختصر ترین تعارف ہی مل سکتا ہے (۱۵)۔

## حواشی کی اقسام

- حواشی کی کئی قسمیں ہیں، جیسے:
- ۱۔ متنی حواشی: ان کا تعلق متن کے ساتھ ہے۔
- ۲۔ تصنیفی حواشی: ان کا تعلق مصنف کے ساتھ ہوتا ہے، جس طرح علامہ اقبالؒ نے گوئے وغیرہ کا ذکر حاشیے میں کیا ہے۔
- ۳۔ غیر متنی حواشی: یہ تشریح اور وضاحت کے لیے ہوتے ہیں۔ ان کا متن کے ساتھ کوئی تعلق نہیں ہوتا۔
- ۴۔ ترتیبی حواشی: متن کی ترتیب کے لیے استعمال ہوتے ہیں۔ مثلاً بہت سے نسخے لے کر ان کا موازنہ کیا جائے جو اختلاف نظر آئے اسے حاشیے میں درج کیا جائے، جیسے: فارسی کا تذکرہ آتشکدہ اور کشف المحجوب وغیرہ۔
- ۵۔ توثیقی حواشی: ان کا تعلق مصادر یا منابع سے ہوتا ہے (۱۶)۔

## ۲۔ حوالہ جات (استنادی حواشی)

تحقیقی مقالہ میں، حوالوں کی بہت اہمیت ہے، ان کے بغیر نہ مطالعے کا احساس ہوتا ہے اور نہ دلیلوں کی سند مہیا کی جاسکتی ہے۔ نتیجہ اخذ کرنے کی راہ میں بھی ان کی ضرورت ہوتی



ہے۔ ”اصول یہ ہے کہ جس ذریعہ سے مواد حاصل کیا گیا ہے، اس کا ذکر کیا جانا چاہیے، چاہے وہ مواد بدستور لے لیا گیا ہو یا اس کا خلاصہ ہی مقالہ کے اندر استعمال کیا گیا ہو۔ اس کا تذکرہ ضروری ہے۔ ذرائع کے متعلق یہ تذکرہ ذیلی اشارات (حوالے نہ کہ حواشی) کی شکل میں کیا جاتا ہے“ (۱۷)۔

## مقاصد

جن اغراض و مقاصد کے پیش نظر محقق کو حوالوں کی ضرورت پڑتی ہے ان میں سے بڑے بڑے مقاصد درج ذیل ہیں:

- ۱۔ محقق بعض اوقات اپنے مقالے کے کسی حصہ کی طرف قاری کی توجہ دلانے کے لیے یا اپنے مقالہ میں کسی حوالہ کی طرف توجہ دلانے کے لیے حوالہ کا استعمال کرتا ہے۔
  - ۲۔ اگر کہیں سے کوئی اقتباس لیا جائے تو اس کا ماخذ تسلیم کرنے کے لیے حوالہ دیا جاتا ہے۔
  - ۳۔ کسی مصنف کے نظریات یا دلائل کی نشاندہی کے لیے حوالہ دیا جاتا ہے۔ ایسے حوالے اکثر و بیشتر اس مصنف کی تصنیف (یا تصانیف) سے دیئے جاتے ہیں، البتہ ضرورت پڑنے پر ثانوی ماخذ کا استعمال بھی کیا جاتا ہے۔
  - ۴۔ اگر محقق کوئی حقائق و اعداد پیش کرتا ہے تو وہ ان کے ماخذ کا حوالہ دیتا ہے (۱۸)۔
- مندرجہ بالا مقاصد کے حصول میں منابع، مصادر یا ماخذ کو مرکزی حیثیت حاصل ہے اور حوالہ جات کے فن کو سیکھنے کا نام ان مصادر کو مناسب طور پر درج کرنے کا نام ہے (۱۹)۔

## منابع کی اقسام

منابع مختلف الاقسام ہیں اور ان کی ایک فہرست یہ ہے:

- ۱۔ الہامی اور غیر الہامی دینی کتب۔
- ۲۔ عام کتب۔
- ۳۔ مختلف مصنفین کے مضامین پر مشتمل کتب۔
- ۴۔ مجلات میں مضامین۔



- ۵۔ اخبارات۔  
 ۶۔ انسائیکلو پیڈیا۔  
 ۷۔ لغات۔  
 ۸۔ مخطوطات۔  
 ۹۔ اجلاس و کانفرنسوں کی کارروائی۔  
 ۱۰۔ قانونی کتب بشمول عدالتی فیصلے، قوانین، مسودات قوانین، اسمبلیوں کے مباحث، حکومتی رپورٹیں وغیرہ۔  
 ۱۱۔ محقق کی ذاتی خط و کتابت وغیرہ۔

الہامی و غیر الہامی دینی کتب اکثر ابواب پر مشتمل ہوتی ہیں اور یہ ابواب، سطور یا آیات پر مشتمل ہوتے ہیں۔ باب اور آیات کا نمبر دینے سے نشاندہی کی جاسکتی ہے۔ باقی مطبوعہ کتب کے سلسلہ میں مندرجہ ذیل اطلاعات بہم پہنچانا ضروری خیال کیا جاتا ہے:

- ۱۔ مصنف کا نام۔
- ۲۔ کتاب کا نام۔
- ۳۔ مدیر، مؤلف، مترجم کا نام۔
- ۴۔ دیباچہ، تعارف، پیش لفظ لکھنے والے کا نام۔
- ۵۔ سیریز کا نام، مع جلد نمبر یا سیریز میں کتاب نمبر۔
- ۶۔ اگر پہلا ایڈیشن نہیں، تو ایڈیشن کا نمبر۔
- ۷۔ اگر جلدوں کی تعداد ایک سے زیادہ ہو تو جلد نمبر۔
- ۸۔ اشاعت و طباعت کے متعلق معلومات: مقام اشاعت، اشاعت کنندہ اور سن اشاعت۔
- ۹۔ مخصوص صفحہ یا صفحات (۲۰)۔

### حوالہ جات کے طریقے

حوالہ جات کے دو بڑے طریقے عام طور پر رائج ہیں: ایک ہارڈ سے منسوب ہے اور دوسرا شکاگو یونیورسٹی سے۔ ہارڈ ورڈ میں اپنائے گئے طریقے کے مطابق حوالے کا وقوع دو حصوں



میں دو جگہوں پر ہوتا ہے:

ایک حصہ متن میں ہی بریکٹ کے اندر دیا جاتا ہے۔ اس میں مصنف کا خاندانی نام، یا نام کا آخری حصہ لکھ کر، تصنیف کا سال اشاعت اور صفحہ نمبر دے دیا جاتا ہے۔ حوالے کا یہ حصہ مختصر ہوتا ہے اور متن کے اندر ہی بریکٹ میں موجود ہوتا ہے۔

حوالے کا دوسرا حصہ عموماً مقالے یا کتاب کے بالکل اختتام پر دیا جاتا ہے۔ وہاں پر مصنف کا نام پورا درج ہوتا ہے اور حرف ابجد کے لحاظ سے مصنفین کے نام لکھے جاتے ہیں۔ قاری کو مختصر حوالے متن کے اندر بریکٹ میں اور تفصیلی کوائف کتاب کے آخر میں مل جاتے ہیں۔

حوالہ جات کے دوسرے طریقے میں متن کے نیچے ہر صفحہ پر اس صفحے کے متعلق حوالہ جات دیئے جاتے ہیں۔ اس طریقہ کار کا فائدہ یہ ہے کہ حوالے کے متعلق تقریباً تمام معلومات زیر نظر صفحے پر موجود ہوتی ہیں۔ حوالہ جات کے نمبر شمار ہر صفحے پر نئے سرے سے شروع کیے جاسکتے ہیں یا پورے باب کے مسلسل بھی ہو سکتے ہیں (۲۱)۔

مختصر یہ کہ: ”حوالہ سازی میں..... محقق اپنی تحقیق کا اثر بڑھانے کے لیے حوالہ جات میں اضافہ کرے مثلاً: کچھ حقائق و اعداد ایسے ہوتے ہیں جو عام آدمی بھی جانتا ہے یا وہ ایسی عام فہم چیزیں ہوتی ہیں جن سے کوئی انکار نہیں کرتا۔ ایسی چیزوں کے لیے حوالے دینا، حوالہ سازی نہ ہوگا“ (۲۲)۔

### ۳۔ اقتباسات

اقتباسات، اقتباس کی جمع ہے۔ اقتباس مصنف کی اس عبارت کو کہتے ہیں جسے محقق اپنے تحقیقی عمل کے دوران استعمال کرتا ہے، چنانچہ پروفیسر سعید الدین احمد ڈار لکھتے ہیں: ”اقتباس میں کسی مصنف کے الفاظ من و عن تحقیقی کام میں درج کر دیئے جاتے ہیں۔ بعض اقتباسات چھوٹے سے جملے سے لے کر دو تین سطور [اور بعض اوقات مکمل پیرا گراف] تک کے



ہوتے ہیں۔ ان کو متن کے اندر لکھ دیا جاتا ہے اور اقتباس کے شروع اور آخر میں الٹے کو ما ”...“ ڈال دیے جاتے ہیں“ (۲۳)۔

### چند ضروری قواعد

فن تحقیق کے ماہرین نے اقتباسات کے سلسلہ میں درج ذیل قواعد اپنانے کی سفارش کی ہے:

۱۔ اگر دوسری زبان کے اقتباس کا ترجمہ کر کے دے رہے ہیں یا اردو کے اقتباس کو اپنے الفاظ میں خلاصہ کر کے لکھ رہے ہیں تو اس کو واؤین میں ہرگز محصور نہ کیجئے۔ ترجمے یا خلاصے کے آخر میں آپ حوالے کا نمبر ڈال دیں گے تو اندازہ ہو جائے گا کہ اقتباس یا دوسروں کی رائے یہاں تک تھی۔ یہ بھی ہدایت ہے کہ متن میں دوسری زبان کے اقتباس کا ترجمہ دے رہے ہیں تو فٹ نوٹ یا آخری حواشی میں اصل زبان میں عبارت دے دی جائے.....

۲۔ نظم کا ایک مصرع درج کرنا ہو تو اسے خواہ جملوں کے سلسلے میں لکھیے، خواہ نیچے نئی سطر میں، اس کے پہلے لکھ کر بغیر واؤین کے مصرع لکھئے۔ جملے کے سلسلے میں ہے تو اس کے بعد ڈیش لگا دیجئے۔ ظاہر ہے کہ مصرع نئی سطر میں ہو تو وضاحت کا حق بہتر طور پر ادا ہوگا۔

۳۔ نثری اقتباس میں ایک جملے کے اقتباس کو حسب خواہش خواہ متن کے سلسلے میں واؤین میں دیجئے خواہ نیچے سطر میں۔ اس سے بڑے اقتباس کو نیچے دینا ہی مناسب ہے....

۴۔ اقتباس کے اندر اقتباس آجائے تو آخر الذکر کو اکہرے واؤین میں دیجئے۔،،،،،۔

۵۔ اگر اقتباس کی عبارت کے آخر میں سوالیہ نشان ہے تو پہلے سوالیہ نشان لگائیے، اس کے بعد واؤین مثلاً: بادشاہ نے پوچھا ”مرزا اس قدر غور سے کیا دیکھتے ہو؟“۔



- ۶۔ اقتباس، ہجوں، اوقاف اور دوسری تمام تفصیلات میں اصل کے مطابق ہونا چاہیے۔  
ہاں اقتباس میں کوئی غلطی دکھائی دے تو اسے اسی طرح نقل کر کے قوسین میں ”کذا“  
لکھ دیجئے۔ چاہیں تو فٹ نوٹ میں غلطی کی وجہ اور قیاسی تصحیح دے سکتے ہیں۔
- ۷۔ اقتباس میں حذف کا قاعدہ یہ ہے کہ جملے کے شروع، درمیان یا آخر میں کچھ جزو چھوڑنا ہو  
تو تین نقطے (زیادہ نہیں) لگا دیجئے جو تقریباً آدھانچ کے فاصلے پر پھیلے ہوئے ہوں۔
- ۸۔ اقتباس میں اضافہ۔ اگر اقتباس میں کوئی خلا نظر آئے تو اسے مربع بریکٹ یعنی بڑے  
بریکٹ میں بھرا جائے۔ اسی طرح کوئی ضروری تبصرہ یا تصحیح کرنی ہو تو وہ بھی مربع  
بریکٹ میں ہونی چاہیے۔ مربع بریکٹ اس بات کی نشانی ہے کہ اس کے بیچ کا لفظ یا  
الفاظ اصلی مصنف کے نہیں بلکہ اقتباس کنندہ کے ہیں۔ اگر آپ خلا نہیں بھر رہے ہیں  
بلکہ تصحیح کر رہے ہیں تو بہتر ہے کہ اپنے الفاظ کے بعد سوالیہ نشان بھی بنا دیجئے تاکہ یہ  
ظاہر ہو کہ آپ کے الفاظ ”اضافہ“ نہیں بلکہ ”متبادل“ ہیں۔ [ ]، (.....؟) (۲۴)۔

### اقتباسات پیش کرنے کی ضرورت

- اقتباسات پیش کرنے کی ضرورت اور جواز درج ذیل صورتوں میں پیدا ہوتا ہے:
- ۱۔ جب کسی مصنف کے نقطہ نظر کا تجزیہ کر کے اس کی تردید کرنا مقصود ہو۔
  - ۲۔ جب دو متضاد خیالات کا جزوی موازنہ کرنا ہو۔
  - ۳۔ جب کوئی اقتباس اتنا خوبصورت ہو کہ اس سے مقالے کا صوری حسن بڑھ جانے کی  
توقع ہو (۲۵)۔
  - ۴۔ جب کسی مصنف کے الفاظ اور طریقہ اظہار کا نعم البدل ملنا مشکل ہو۔ محقق یہ محسوس کرتا  
ہے کہ اگر مصنف کے اپنے الفاظ کے علاوہ کوئی اور الفاظ استعمال کیے گئے یا کسی اور  
پیرایہ میں مصنف کا خیال بیان کیا گیا ہے، تو مصنف کا مقصد پوری طرح قاری تک



پہنچ نہیں سکے گا۔ محقق، مصنف کی صحیح ترجمانی کی غرض سے اقتباس دیتا ہے (۲۶)۔  
 ڈاکٹر ایم سلطانیہ بخش نے ان الفاظ میں اقتباسات کے استعمال کی ضرورت کو بیان کیا ہے: ”..... عام طور پر اقتباسات اس وقت استعمال کیے جاتے ہیں جب کسی مصنف کا اقتباس اس کی عبارتوں اور تصورات کی پیش کش سے بہتر طور پر محقق کے مفروضوں اور دلیلوں کو ثابت کر سکتا ہو یا پھر دستاویزی شہادت کے لیے ضروری ہو یا محقق کو کسی کی رائے سے انحراف ہو یا جہاں اعداد و شمار کے بیان میں ٹکراؤ ہو یا کہیں بنیادی اصولوں میں اختلافات ہوں جن پر بحث کرنا متن مقالہ میں مقصود ہو“ (۲۷)۔

### اخذ و استعمال اقتباسات میں احتیاط

اقتباسات کے حصول و استعمال میں بہت احتیاط اور فہم و فراست کی ضرورت ہوتی ہے۔ اس سلسلہ میں محقق کو درج ذیل باتوں کو اپنے ذہن میں رکھنا چاہیے:

- ۱۔ مصادر و مراجع سے مطالعہ کے دوران ضروری اور متعلقہ عبارتیں حوالوں کے ساتھ لکھی جائیں اور مقالہ میں استعمال کرتے وقت بہت احتیاط کیا جائے۔ بہت زیادہ اور غیر ضروری اقتباسات کا اندراج نہ کیا جائے ”اکثر یہ دیکھنے میں آتا ہے کہ محققین لمبے اقتباسات دیتے ہیں اور ان کا ناجائز استعمال کرتے ہیں۔ لمبے اقتباسات سے وہ اپنی فکری بے سروسامانی کو چھپانے کا کام لینا شروع کر دیتے ہیں۔ اقتباسات بجائے استناد کے محقق کی فکری بے جا یگی کا نعم البدل بن جاتے ہیں۔ یعنی محقق کا حقہ مسئلہ کی گہرائی تک نہیں لے جاتا، بلکہ دوسرے مصنفین کے نظریات کو اقتباسات کے ذریعے من و عن بیان کر کے ستائش حاصل کرنے کے لیے کوشش کرتا ہے۔ یہ ایک ایسی چیز ہے جو تحقیق کی روح کے خلاف ہے اس سے احتراز لازم ہے“ (۲۸)۔

۲۔ اقتباسات کا استعمال صرف وہیں زیب دیتا ہے جہاں محقق کو یقین ہو جائے کہ وہ خود



کسی خاص عبارت میں بیان کیے گے حقائق کو اچھے اسلوب میں تحریر نہیں کر سکے گا بشرطیکہ وہ مخصوص عبارت اختصار کے حسن سے مزین اور قابل قبول بھی ہو۔

۳۔ اگر مقالے میں کسی دستاویزی شہادت کی ضرورت پیش آجائے اور حوالے سے پورا

مقصد حل نہ ہو سکتا ہو تو ضروری عبارت کو بہت احتیاط سے مقالہ میں شامل کیا جائے۔

۴۔ اگر محقق کسی مصنف کے بعض مفروضات کو غلط تصور کرتا ہو یا ان کی تردید کرنا چاہتا ہو تو

براہ راست اقتباس پیش کر سکتا ہے۔

۵۔ سائنسی اور سماجی علوم کی ضروریات کے تحت طویل اقتباسات جن میں اصول،

فارمولے اور نتائج اپنی اصل شکل میں ہوں، پیش کیے جاسکتے ہیں (۲۹)۔

مختصر یہ کہ تحقیقی عمل میں اقتباسات پیش کرتے وقت درج ذیل دو پہلوں کو مد نظر رکھا جائے:

۱۔ اقتباس کی صحت: اس سے مراد یہ ہے کہ اقتباس کی عبارت ہر لحاظ سے اصل کے عین مطابق ہو۔

۲۔ اقتباس کی قطعیت اور موزونیت: اس سے مراد یہ ہے کہ دعوے کی تائید میں جو عبارت

پیش کی جائے وہ صرف اس دعوے کے متعلق ہو، خواہ عبارت ایک جملہ پر ہی کیوں نہ

مشتمل ہو (۳۰)۔

## ۴۔ اشاریہ سازی

### اشاریہ کا مفہوم

جہاں تک اشاریہ سازی (Indexing) کا تعلق ہے تو یہ ”ایک تکنیکی عمل ہے جس

میں کتاب میں موجود تمام اطلاعات قاری کو مکمل طور پر فراہم کی جاتی ہیں“ (۳۱)۔ اشاریہ بالعموم



درج ذیل امور پر مشتمل ہوتا ہے:

۱۔ کتاب کے آخر میں متن میں مذکورہ اشخاص، مقامات، کتب، اداروں وغیرہ کی ہجائی ترتیب مع صفحہ نمبر۔

۲۔ کسی ادیب کی تخلیقات نیز اس کی لکھی گئی کتابوں اور مضامین کی سلسلے وار فہرست (۳۲)۔

### اہمیت و افادیت

موجودہ دور میں اشاریہ کو بڑی اہمیت حاصل ہے اور یہ ہے بھی حقیقت میں نہایت مفید اور کام کی چیز۔ اس سے عام قاری کو بھی فائدہ پہنچتا ہے اور تحقیق کرنے والے کو بھی، خصوصاً نئے محقق کو۔ اس کے ذریعہ اس کی راہ نمائی بھی ہوتی ہے اور وقت بھی بچتا ہے۔ اس لیے اشاریہ بہت محنت اور دلچسپی سے تیار کرنا چاہیے اور جتنے اہم موضوع کتاب میں ہوں، سب کا اشاریہ بنانا چاہیے (۳۳)۔

### اشاریہ کے مقاصد

کسی کتاب کے اشاریے کے مختلف مقاصد ہو سکتے ہیں۔ اس کے بغیر کتاب خاموش تو نہیں ہوتی، البتہ بہت ست رفتاری سے اپنے قاری سے مخاطب ہوتی ہے۔ اشاریہ بنانے کا اہم مقصد یہ ہوتا ہے کہ کتاب میں موجود تمام اطلاعات قاری کو تاخیر کے بغیر مکمل طور پر فراہم کر دی جائیں۔ کتاب کا اشاریہ اس کے مندرجات و مشتملات کا راہ نما ہوتا ہے۔

کتاب میں اشاریے کے بغیر کسی چیز کو یقین کے ساتھ تلاش نہیں کیا جاسکتا۔ جو شخص پوری کتاب پڑھنا نہیں چاہتا یا اس کو پڑھنے کی ضرورت نہیں ہے اور وہ اس میں سے کسی خاص پیرے، کسی چیز یا انفارمیشن کو تلاش کرنا چاہتا ہے تو اشاریہ اس کی مدد کرتا ہے۔ اشاریہ بتاتا ہے کہ اس کتاب میں کیا موجود نہیں ہے۔ اس طرح بہت سا وقت بچ جاتا ہے۔ مختصر طور پر ان مقاصد کو اس طرح بیان کیا جاسکتا ہے کہ اشاریہ:



- ۱- کسی خاص چیز کی طرف حوالہ دیتا ہے۔
- ۲- کتاب کسی خاص منصوبے کی تحت ایک ترتیب سے لکھی جاسکتی ہے۔ اشاریہ اس امر کی تلافی کرتا ہے اور اس تک کئی قسم کی رسائی کے نظام فراہم کرتا ہے۔
- ۳- کتاب کے مندرجات کے تعلقات کی نشاندہی کرتا ہے۔
- ۴- چیزوں کی عدم موجودگی کی وضاحت کرتا ہے۔
- ۵- اشاریہ ساز کی روزی کا سامان فراہم کرتا ہے۔
- ۶- جن اخبارات و رسائل کے اشاریے بن جاتے ہیں۔ ان کی شکست کم ہو جاتی ہے۔ اخباری کاغذ جلد شکستہ ہو جاتا ہے۔ اگر ان کا اشاریہ نہ ہوگا تو بار بار کے استعمال سے ان کا کاغذ شکستہ ہو جائے گا۔

۷- اشاریہ اس وقت بھی مفید ثابت ہوتا ہے جب کتب خانے سے کتابوں کو جاری کروانے کے لیے منتخب کیا جاتا ہے یا کتابوں کی دکان سے ان کو خریداجاتا ہے۔ انتخاب کرنے والا جو چند خاص معاملات میں دلچسپی رکھتا ہے، جلد دیکھ لیتا ہے کہ کتاب ان چیزوں کو اپنے اندر رکھتی ہے؟ اور اگر رکھتی ہے تو کس قدر تفصیل کے ساتھ (۳۴)۔

## مقام

اشاریے کا مقام تحقیقی کتاب یا مقالے کا اخیر ہوتا ہے اور اسے تیار بھی کتابت سے فراغت کے بعد کیا جاتا ہے۔

## ترتیب اشاریہ کے اسالیب

ماہرین تحقیق نے ترتیب اشاریہ کے دو اسلوب متعین کیے ہیں: پہلا اسلوب یہ ہے کہ اشخاص، کتابوں اور مقامات کو ملا جلا کر الفبائی ترتیب سے درج



کیا جائے۔ ہر اندراج کے آگے ان تمام صفحات کے نمبر درج کیے جائیں جن پر وہ اندراج واقع ہے۔ یہ بالکل ضروری نہیں کہ ہر غیر ضروری اور کم اہم نام کو اشاریے میں درج کیا جائے۔

دوسرا اسلوب جو کہ بہتر ہے اور وہ یہ ہے کہ اندراجات کو کئی زمروں میں تقسیم کر دیا جائے۔ ان میں اہم ترین دو زمرے ہوں گے: ایک اشخاص، اور دوسرے کتابیں اور رسالے۔ ان کے علاوہ مقامات، ادبی اصناف و موضوعات کو بھی علیحدہ علیحدہ درج کیا جاسکتا ہے۔ زیادہ گروہوں کی ضرورت نہیں۔ اشخاص میں ادیبوں اور دوسری اہم شخصیتوں کو لینا چاہیے، مثنوی و داستان کے کرداروں کو نہیں۔

اگر اشاریہ بہت طویل اور مفصل ہوگا تو ضروری اندراج تلاش کرنے میں دقت ہوگی۔ قاری کی ضرورت کو پیش نظر رکھ کر اسے حدود میں اور مختصر رکھا جائے..... طباعت کی اس گرانی کے دور میں آٹھ دس صفحات کا اشاریہ کافی ہونا چاہیے۔ اس میں اشخاص، کتب اور رسالے سب سے اہم ہیں۔ اس کے بعد ادارے، موضوعات و تحریکات کو لیا جاسکتا ہے اور بس..... بعض عربی زدہ حضرات اشخاص کو رجاں اور مقامات کو ممکنہ کہتے ہیں۔ یہ دقیق نگاری مستحسن نہیں (۳۵)۔

## نتائج

حواشی و تعلیقات، حوالہ جات، اقتباسات اور اشاریہ سازی کا جائزہ لینے کے بعد جو نتائج سامنے آتے ہیں ان میں سے چند ایک یہ ہیں:

- ۱۔ حواشی اور تعلیقات ترتیب متن کا نہایت اہم اور لازمی جزو ہیں۔
- ۲۔ حوالہ جات یا تنقیدی و تحقیقی حواشی کے بغیر متن کی تصحیح و ترتیب کا کام درجہء استناد سے محروم رہتا ہے۔

۳۔ ہر صفحے پر متن کے نیچے حواشی درج کرنا بہتر اور سہل ہے۔

۴۔ تعلیقات اور تشریحات مختصر اور جامع ہوں۔



- ۵۔ حواشی و تعلیقات کا قدیم اسلوب یہ تھا کہ صفحہ کے چاروں طرف متن سے متعلقہ معلومات تحریر کی جاتی تھیں۔ یوں ارتقائی منازل طے کرتے ہوئے اس چلن کو خوشگوار مانا گیا ہے کہ صفحہ کے نیچے ایک لکیر لگا کر حواشی و تعلیقات کا اندراج کیا جائے۔
- ۶۔ موقع و محل کے لحاظ سے ان اجزاء میں سے ہر جزء تحقیقی عمل میں خاص اہمیت رکھتا ہے۔
- ۷۔ ان کے بغیر تحقیق کو مستند و معتبر نہیں بنایا جاسکتا۔
- ۸۔ یہ تحقیقی عمل کا جزو لاینفک ہیں۔
- ۹۔ ان میں سے ہر ایک کا مقام اپنا اپنا ہے، جس سے ان میں فرق کیا جاسکتا ہے۔
- ۱۰۔ ان کی اہمیت و ضرورت کی سب سے بڑی دلیل یہ ہے کہ فن تحقیق کے ماہرین نے انہیں خاص اہتمام کے ساتھ بیان کیا اور ہر ایک کے قواعد و ضوابط خوب محنت سے وضع کیے۔
- ۱۱۔ ان کے مطالعہ و جائزہ لینے سے عیاں ہوتا ہے کہ تحقیق کے میدان میں کس قدر انسانی ذہن ترقی کی راہ پر گامزن ہے۔
- ۱۲۔ انہیں اگر ان کے اغراض و مقاصد کے پیش نظر احتیاط اور فکر و نظر سے استعمال نہ کیا جائے تو تحقیقی عمل کی قدر و قیمت، حسن و جمال اور جاذبیت میں کمی پیدا ہو جاتی ہے۔

## حوالہ جات

- ۱۔ لسان العرب، ابن منظور افریقی، بیروت ۱۹۵۶۔
- ۲۔ حاشیہ نگاری، ڈاکٹر محمد طفیل، در ”اردو میں فنی تدوین“ ص ۲۰۴، تہذیب و ترتیب: ڈاکٹر ایم ایس ناز، بحوالہ دہخدا، علی اکبر، لغت نامہ۔ تہران ۱۳۳۰ھ خورشیدی۔



- ۳- ایضاً، بحوالہ: Cordusco, F., Research New York, (Reprint Writing) : 1958
- ۴- تحقیق کافن، ڈاکٹر گیان چند، ص ۵۶۶، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ط اول ۱۹۸۶ء)۔
- ۵- تحقیق میں حواشی، سعید الدین احمد ڈار، حوالہ جات اور اقتباسات، مشمولہ تحقیق اور اصول وضع اصطلاحات، مرتب: اعجاز راہی ص ۱۳۳ (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۸۶ء، ط اول)۔
- ۶- تحقیق کافن، ڈاکٹر گیان چند، محولہ بالا، ص ۳۵۳۔
- ۷- اصول تحقیق، ایم سلطانہ بخش، کوڈ نمبر ۱۱ ص ۹۰۔
- ۸- حاشیہ نگاری، ڈاکٹر محمد طفیل، در ”اردو میں فنی تدوین“ محولہ بالا، ص ۲۰۳۔
- ۹- ایضاً ص ۲۰۵، باختصار۔
- ۱۰- ان جملہ نکات کی تفصیل کے لیے دیکھئے: گیان، تحقیق کافن، محولہ بالا ص ۳۰۴، ۳۵۶ تا ۳۵۳ ادبی تحقیق کے اصول ۲۳۵، ڈاکٹر تبسم کاشمیری، تحقیق میں حواشی .....، سعید الدین احمد ڈار، محولہ بالا ص ۱۳۵، محمد طفیل، ڈاکٹر، حاشیہ نگاری، محولہ بالا، ص ۲۰۹ تا ۲۰۷۔
- ۱۱- اصول تحقیق، ایم سلطانہ بخش، کوڈ نمبر ۱۱ ص ۱۱۷۔
- ۱۲- تفصیل کے لیے دیکھئے، گیان چند، محولہ بالا، ص ۳۵۷ تا ۳۵۶۔
- ۱۳- مقالہ کی تسوید، عبدالرزاق قریشی، در اردو میں اصول تحقیق، مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، ج ۱ ص ۲۷۰-۲۷۱، بحوالہ:

\_\_Notes on the presentation of Theses on Literary subject; P.4.

- ۱۴- حاشیہ نگاری، ڈاکٹر محمد طفیل، در ”اردو میں فنی تدوین“ محولہ بالا، ص ۲۰۶، ۲۰۵۔
- ۱۵- مزید تفصیل کے لیے دیکھئے: تحقیق و تدوین، غلام عباس ماہور، ص ۱۷۷، ۱۷۹، مکتبہ دانیال، لاہور، س-ن۔
- ۱۶- تفصیل کے لیے دیکھئے: اشاریہ سازی، ڈاکٹر محمد طفیل، محولہ بالا ص ۲۰۷۔



- ۱۷۔ مقالہ کی پیش کش، پروفیسر عبدالستار دلوی، در اردو میں اصول تحقیق مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانیہ بخش ج ۱ ص ۲۵۸، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد ۱۹۸۶ء، ط اول)۔
- ۱۸۔ تحقیق میں حواشی، حوالہ جات اور اقتباسات، سعید الدین احمد ڈار، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانیہ بخش، ج ۱، صفحہ ۱۳۶، ۱۳۷، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۱۹۔ ایضاً۔
- ۲۰۔ ایضاً ص ۱۳۷ تا ۱۳۸۔
- ۲۱۔ اصول تحقیق، سلطانیہ بخش، مجلہ بالا ص ۱۱۸۔ مزید تفصیل کے لیے دیکھئے: ڈار، حوالہ نمبر ۱، در حوالہ مذکور ص ۱۳۹ و ما بعدھا۔
- ۲۲۔ تحقیق میں حواشی، حوالہ جات اور اقتباسات، سعید الدین احمد ڈار، سابق حوالہ، در سابق حوالہ ص ۱۳۳۔
- ۲۳۔ ایضاً ص ۱۳۵۔
- ۲۴۔ ان قواعد میں سے ہر ایک کی تفصیل کے لیے دیکھئے: تحقیق کافن، گیان چند، سابق حوالہ ص ۲۹۹ تا ۳۰۳۔
- ۲۵۔ مقالہ کی پیش کش، عبدالستار دلوی، در اردو میں اصول تحقیق، مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانیہ بخش، در مجلہ بالا، ص ۲۵۹، ۲۶۰۔
- ۲۶۔ ڈار، مجلہ بالا، ص ۱۳۵۔
- ۲۷۔ اصول تحقیق، بخش، مجلہ بالا، ص ۱۱۶۔
- ۲۸۔ ڈار، در حوالہ مذکور، ص ۱۳۵، ۱۳۶۔
- ۲۹۔ دیکھئے بخش، تحقیق، مجلہ بالا، ص ۱۱۶، ۱۱۷، تبصریف۔
- ۳۰۔ تفصیل کے لیے دیکھئے: اقتباسات و کتابیات، ڈاکٹر گوہر نوشاہی، در ”اردو میں فنی تدوین“ مجلہ بالا، ص ۱۶۷، ۱۶۸۔



- ۳۱۔ ایضاً، ص ۱۱۹۔
- ۳۲۔ تحقیق کافن محولہ بالا، گیان چند، ص ۵۶۳۔
- ۳۳۔ مقالہ کی تسوید، عبدالرزاق قریشی، در اردو میں اصول تحقیق، مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانیہ بخش ج ۱ ص ۲۸۲۔
- ۳۴۔ اشاریہ سازی، سید جمیل احمد رضوی، در ”اردو میں فنی تدوین“ محولہ بالا، ص ۳۰۸، ۳۰۹۔
- ۳۵۔ دیکھئے: تحقیق کافن، گیان چند، محولہ بالا ص ۳۲۵ تا ۳۲۷، بتقریف و تلخیص۔



باب ۱۱

الحاقی کلام اور اس کی نشاندہی کے طریقے



## الحاقی کلام اور اس کی نشاندہی کے طریقے

### الحاقی کلام کا مفہوم

کسی مؤلف کی تالیف (مطبوعہ و غیر مطبوعہ) میں اگر کسی اور مؤلف کا مواد شامل ہو جائے تو اس شامل ہونے والے مواد کو ”الحاقی مواد“ یا ”الحاقی کلام“ کہا جاتا ہے، ڈاکٹر گیان چند کہتے ہیں: ”الحاق [کا مطلب ہے] کسی کی تخلیق یا مجموعے میں کسی دوسرے کی تخلیقات کا شامل کر دینا، تحقیقی اعتبار سے [یہ] بڑی تقصیر ہے“ (۱)۔

اسی الحاقی کلام (مواد) کو فن تحقیق کے ماہرین متنی تصرفات میں سے ایک تصرف قرار

دیتے ہیں، چنانچہ ڈاکٹر نذیر احمد کہتے ہیں :

”متون میں تصرفات دو طرح کے ہوتے ہیں: ایک الحاق کی شکل میں، اور دوسرے متن کی زبان میں تغیر، ترمیم و اصلاح کی صورت میں۔ اول الذکر حالت میں دوسروں کا کلام شامل ہو جاتا ہے اور آخر الذکر صورت میں مصنف کی زبان میں طرح طرح کی ترمیمیں دانستہ اور بے دانستہ طور پر عمل میں آتی ہیں، محقق دونوں طرح کے تصرفات کا تعین کرتا ہے اور متن کو کانٹ چھانٹ کر اصل متن متعین کرنے کی کوشش کرتا ہے“ (۲)۔

### الحاقی کلام کی نشاندہی

متن میں تصرفات کا تعین اور الحاقی (اضافی) کلام کی نشاندہی اصل میں متن کی تدوینی



تحقیق اور مختلف متنی روایتوں (۳) کے تقابلی مطالعے سے ہو سکتی ہے، چنانچہ ڈاکٹر تبسم کاشمیری لکھتے ہیں کہ: ”تدوین متن... میں کسی متن کو اس کی اصلی حالت میں تیار کیا جاتا ہے۔ محقق کسی مستند متن کو بنیادی متن قرار دیتا ہے اور اس کے بعد دیگر نسخوں میں پائے جانے والے اختلافات کی نشاندہی کرتا ہے۔ تدوین متن کے ذریعے ہم شاعر یا ادیب کے صحیح متن کو دریافت کر سکتے ہیں۔ اس میں قلمی نسخوں پر بھی کام ہوتا ہے اور مطبوعہ نسخوں پر بھی۔ تدوین متن ہی کے ذریعے محقق الحاقی کلام کو الگ کرتا ہے اور یوں کسی ادیب سے منسوب ہونے والے کلام کو اصل متن سے خارج کیا جاتا ہے“ (۴)۔

کسی متن سے متعلقہ مختلف روایتوں کے تقابلی مطالعہ کے فوائد بیان کرتے ہوئے ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش لکھتی ہیں کہ: ”متن کی روایتوں کے تقابلی مطالعے سے نہ صرف یہ کہ متن کی قرأت، تحقیقی تصحیح اور تعین روایت میں مدد ملتی ہے بلکہ اس کی حدود کا تعین بھی آسان ہو جاتا ہے۔ داخلی اور خارجی شواہد کی روشنی میں یہی مطالعہ متن کی الحاقی یا اضافی روایتوں کی نشاندہی میں معاون ہوتا ہے“ (۵)۔

پروفیسر محمد حسن ادبی تحقیق کے بعض مسائل بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ: ”اردو میں تحقیق کا سب سے پہلا اور بنیادی مسئلہ تحقیق متن اور تصحیح متن کا ہے۔ تصحیح متن سے میری مراد یہ ہے کہ..... تصانیف میں جو الحاقی یا غیر مستند حصے شامل ہو گئے ہیں، ان کی نشاندہی کی جائے اور جو حصے شامل ہونے سے رہ گئے ہیں، انھیں شامل کیا جائے۔ تحقیق متن سے مراد یہ ہے کہ اصل مصنف نے جس طرح لکھا ہے اسی شکل میں متن کو پیش کر دیا جائے...“ (۶)۔

اس سے ثابت ہوا کہ متن کی تحقیق اور اس کی تصحیح کرنے سے ہی الحاقی اور اصلی کلام میں حد فاصل قائم کر کے دونوں کی نشاندہی کی جاسکتی ہے، ذیل میں ان دونوں کے متعلق مختصر اتعارفی بحث پیش کی جاتی ہے:



## تحقیق متن بلحاظ تدوین

تحقیق متن کا نہایت اہم دائرہ کار متن کی تحقیقی تدوین یا ترتیب ہے جو کسی روایت یا روایتوں (یعنی ایک تخلیقی متن کی مختلف تحریری یا زبانی یا متعدد متون کی مختلف تحریری یا زبانی شکلوں) کی جمع آوری و ترتیب دہی کے کام سے مختلف ہے۔ یہ کام اساسی حیثیت کا ہے۔

تدوین و ترتیب متن کے مفہوم کا جہاں تک تعلق ہے تو اسے ڈاکٹر گیان چند نے ان

الفاظ میں بیان کیا ہے:

”اُردو میں تدوین متن سے زیادہ مقبول اصطلاح ترتیب متن ہے۔ دونوں قریب المعنی ہیں۔ ترتیب کے معنی کسی شے کے اجزاء کو مناسب تقدیم و تاخیر سے رکھنا ہے۔ تدوین کے معنی متفرق اجزاء کو اکٹھا کر کے ان کی شیرازہ بندی کرنا ہے“ (۷)۔

اور جہاں تک تدوین متن کے عمل کا تعلق ہے تو ڈاکٹر گیان چند نے کاترے کے حوالے سے ذکر کیا ہے کہ اسے دو بڑے حصوں میں تقسیم کیا جاسکتا ہے:

- ۱۔ مختلف متون کی تنقید (Recension)۔
  - ۲۔ تصحیح (Emendation) یعنی جو کچھ تحریری شکل میں دستیاب ہے اس میں کچھ اگر صریحاً غلط ہے تو اس کی تصحیح۔
- پھر ذکر کیا ہے کہ بعد میں کاترے نے بڑھا کر عمل تدوین کے چار مرحلے قرار دیئے ہیں:

- ۱۔ مختلف ماخذ سے مواد کی تلاش۔
- ۲۔ مختلف نسخوں کی تنقید کر کے قابل اعتماد مخطوطات کا انتخاب۔
- ۳۔ مختلف مخطوطات، جہاں مصنف کے اصل لفظ کو فراہم نہیں کر سکتے، وہاں تصحیح کے



ذریعے بازیافت۔

۳۔ اعلیٰ تنقید، اس میں مصنف کے مآخذ وغیرہ کو دریافت کیا جاتا ہے (۸)۔

اس کے بعد تجزیاتی انداز میں لکھتے ہیں کہ: ”آخر الذکر تدوین متن کا جزو نہیں بلکہ عام ادبی تحقیق کے تحت آتی ہے۔ ہم اسے فی الحال نظر انداز کر سکتے ہیں۔ دوسری اور تیسری منزل بھی دراصل ایک ہی ہے۔ نسخوں میں سے انتخاب کر کے متن تیار کرنے کے لیے تصحیح کا عمل دخل بھی ساتھ ساتھ چلے گا۔ اس سے بہتر یہ ہے کہ محض متن کی حد تک تین منزلیں قرار دی جائیں:

۱۔ مواد کی تلاش۔

۲۔ مختلف نسخوں کے اندراجات کا موازنہ۔

۳۔ مختلف اندراجات میں سے چن چن کر تنقیدی متن تیار کرنا.....“ (۹)۔

## نسخوں کی اقسام

عام طور پر نسخے یا مخطوطے تین طرح کے ہوتے ہیں:

۱۔ خود مصنف کے ہاتھ کا لکھا ہوا یا مصنف کی فرمائش سے لکھا ہوا اور مصنف کا تصحیح کیا ہوا نسخہ۔

۲۔ مصنف کے زمانے کے بعد کے نسخے، جو مصنف کے نسخے سے نقل کیے گئے ہوں۔

۳۔ ان نقلوں کی نقلیں۔

تحقیق و تصحیح کا زیادہ کام دراصل اسی آخری شق کے نسخوں کے سلسلے میں ہے۔ کیونکہ نقل در نقل شدہ نسخوں میں غلطیوں یا الحاقی کلام کے راہ پانے کے امکانات ہوتے ہیں، لیکن خود مصنف کے ہاتھ کا لکھا ہوا نسخہ بھی غلطیوں سے پاک نہیں ہو سکتا، چنانچہ گیان چند لکھتے ہیں: ”خود مصنف بھی مبیضہ (۱۰) تیار کرنے میں لغزش قلم کے سبب کچھ غلطیاں کر سکتا ہے“ (۱۱)۔

مگر جہاں تک ناقل کا تعلق ہے تو اس سے زیادہ غلطیاں سرزد ہوتی ہیں کیونکہ:



”دوسرے کی دستی تحریر کو پڑھنے میں کہیں کہیں غلط فہمی ہو جاتی ہے۔ کوئی بھی ناقل گھنٹوں، دنوں اور مہینوں تک مسلسل ہو بہو نقل نہیں کر سکتا۔ بصری، نفسیاتی اور علمی وجوہ سے کچھ نہ کچھ اختلاف یا اغلاط درآ ہی جاتی ہیں۔ ناقل حرف کی نہیں، لفظ کی نقل کرتا ہے۔ مدون کو نقل در نقل..... الخ سے واسطہ پڑتا ہے“ (۱۲)۔

اس طرح سے غلطیوں کی تعداد میں اضافہ در اضافہ ہوتا چلا جائے گا، گیان چند نے کاترے کے حوالے سے یوں اندازہ لگایا ہے: ”اگر ایک ناقل ۳ فی صد غلطی کرے تو اس کی نقل ۹۷ فی صد ہی درست ہوگی، اس سے نقل کرنے والے کی ۹۲.۹ فی صد اور اس سے نقل کرنے والے کی ۹۱.۱۷ فی صد“ (۱۳)۔

ایسی صورت میں مصنف کے خودنوشت نسخے کو اہمیت دی جاتی ہے۔ محقق کو اسے حاصل کرنے کی پوری کوشش کرنی چاہیے۔ اس کے حاصل کر لینے سے کام بہل ہو جاتا ہے۔ اگر مؤلف کا خودنوشت نسخہ نہ مل سکے تو اس سے قریب ترین نسخے پر اعتماد کیا جائے۔ بعض اوقات ایسا بھی ہوتا ہے کہ کسی کتاب کا صرف ایک ہی نسخہ موجود ہوتا ہے۔ ایسی صورت میں اس کی تصحیح و ترتیب کا کام سبباً مشکل ہو جاتا ہے۔

### تنقید متن

مختلف النوع متون کی فراہمی کے بعد ان کی تنقید یعنی چھان بین کی جاتی ہے اور صحیح و مناسب متن کو چن لیا جاتا ہے۔ اسی عمل کو تنقید متن کہتے ہیں۔ ذیل میں تنقید کے مفہوم و مقصد کے بارے میں چند ماہرین فن کی آراء پیش کی جاتی ہیں:

۱۔ گیان چند: ”کسی لفظ، فقرے، جملے، مصرعے یا شعر کے مختلف متون میں سے مناسب ترین متن کے انتخاب کے عمل کو تنقید متن کہتے ہیں“ (۱۴)۔

۲۔ کاترے کے نزدیک متنی تنقید کے معنی ”صحیح متون کے طے کرنے میں دانش انسانی کی



ماہرانہ اور باضابطہ کاروائی کے ہیں۔“

۳۔ بیٹ سن کہتا ہے: ”تنقیدی ایڈیشن کا مقصد ہے کسی متن کے حق میں جتنی شہادت ملتی

ہے اس کی مدد سے متن کو اس شکل میں پیش کرنا جیسے خود مصنف نے مبیضہ تیار کیا ہو۔“

۴۔ کاترے نے بھی یہی کہا ہے کہ ”متنی تنقید کا کام، مخطوطات کی داخلی کیفیات کی شہادت

پر مصنف کے متن تک پہنچنے کی کوشش ہے۔“

۵۔ فریڈن باورس نے متن تنقید کا مقصد، مصنف کے متن کی اوّلین خالصیت (Purity)

اور بعد کی نظر ثانی کی بازیافت قرار دیا ہے، حالانکہ بعد کے ایڈیشنوں میں [مسخ] متن کو

غلط نگاری سے مسخ کرنا [واقع ہو گئی ہو (۱۵)۔

### تنقید متن کے لوازمات

یہاں لوازمات سے مراد وہ امور ہیں جن کے اہتمام والتزام سے متن تنقید کا عمل بطریق

احسن تکمیلی مراحل طے کر سکتا ہے اور اصلی والحاقی مواد کے مابین واضح حد فاصل کا تعین ممکن ہو سکتا

ہے۔ متن پر عملاً تنقید کرتے وقت اس (متن) کا معروضی و موضوعی دونوں طرح سے مطالعہ کیا

جائے:

۱۔ معروضی (Objective) مطالعہ کرتے وقت نقاد متنی معارض و موافق دونوں کا مطا

لعہ کرے:

الف۔ متنی معارض میں زیر تنقید متن (مخطوطے یا نسخے) کی ہیئت، اس کی تقطیع،

مسطر، تعداد اوراق و صفحات، خالی ورق یا صفحہ (اگر ہوں)، کاغذ، قلم، روشنائی، رسم

کتابت، تزئین، مہریں اور دستخط جیسے امور شامل ہیں۔ نقاد ان کا بغور جائزہ لے۔

نو دریافت متن کی صورت اس کی دریافت کی کہانی اور اس سے متعلق ضروری باتیں بھی

اس دائرہ میں آسکتی ہیں۔



ب۔ جبکہ مثنیٰ مواقف میں زیر تنقید نسخہ کے مشتملات اور شعری متون کی صورت میں مختلف اصناف سخن کا ذکر، اشعار کی تعداد، اصلاحات، قلم زد دستور یا منسوخ اشعار نیز زمانہ تالیف، تاریخ کتابت، تکملہ، خاتمہ، تتمہ، ترقیمہ (۱۶)، تعلیقات (جو عبارتیں بعض مطبوعات یا مخطوطات کے آخر میں شامل رہتی ہیں) جیسے امور شامل ہیں۔ نقاد کو ان کا مطالعہ کرنا چاہیے۔

۲۔ موضوعی (Subjective) مطالعہ، معروضی مطالعے کے ساتھ ضروری ہے کہ متن کا

موضوعی مطالعہ کیا جائے جس میں مثنیٰ معارف و مصادر اور محاسن شامل ہیں:

الف۔ مثنیٰ معارف میں مثنیٰ شواہد (یعنی زیر بحث متن میں کسی دوسرے متن کے متعلق شہادت، یا شواہد) اور عصری معلومات (تاریخی حقائق، سوانحی حصے، تمدنی ماحول اور اس عہد کا تنقیدی میلان) کا جائزہ لیا جاتا ہے۔

ب۔ مثنیٰ مصادر، ان میں ان کتب و رسائل اور معلومات کے وہ وسائل شامل ہوتے ہیں جن کے بارے میں کسی متن میں داخلی یا خارجی شواہد ملتے ہوں۔

ج۔ مثنیٰ محاسن، میں اسلوب نگارش پر خاص علمی اور لسانی اعتبار سے بحث کرنا ہوتی ہے۔ اس میں اصلی مسئلہ لسانیاتی مطالعہ ہے، جس سے کسی تصنیف کے زمانہ کو متعین کرنے میں کافی مدد ملتی ہے (۱۷)۔

اس بحث سے ثابت ہوا کہ کسی مخطوطہ کی مثنیٰ تنقید میں اس کی اصلیت متعین کرنے کی

غرض سے داخلی و خارجی دونوں طرح کے حقائق اور شہادتوں کا بغور جائزہ لینا ضروری ہے۔ اس امر کی مزید تائید ڈاکٹر گیان چند کی حسب ذیل تجویز سے ہوتی ہے:

”نو دریافت چیزوں کی اصلیت طے کرنے کے لیے داخلی اور خارجی دونوں شہادتوں

پر توجہ کیجئے۔ خارجی شہادت یہ ہے کہ اسے کس شخص نے دریافت کیا، کس ذخیرہ سے



ملی ہے اور کس مجموعے یا رسالے میں پائی گئی ہے۔ ان سب کا پایہ اعتبار طے کیجئے۔ اگر اس کو شامل کرنے والا مخطوطہ (مثلاً کلیات یا دیوان) عام طور پر معتبر ہے، قدیم ہے، اس میں تمام چیزیں اسی شاعر یا نثر نگار کی ہیں تو بڑی حد تک امکان ہے کہ وہ اسی تخلیق کار کی ہو۔ داخلی شہادت اس کا موضوع، اس کا اسلوب، لفظیات..... اور ادبی روایت ہیں۔ انہیں دیکھ کر فیصلہ کیجئے کہ کیا یہ اس مصنف کی دوسری تخلیقات سے ہم آہنگ ہیں۔ ان تمام شہادتوں کو دیکھ کر مدون اپنے تجربے اور نظر کے سہارے کچھ فیصلہ کرے گا“ (۱۸)۔

گویا متن کے تدوینی و تنقیدی عمل میں متن سے متعلقہ مختلف خارجی و داخلی حقائق یا معلومات کا بغور مطالعہ کرنے سے ہی مدون یا نقاد اس (زیر تدوین و تنقید) متن کی اہمیت و افادیت کا فیصلہ کرنے کے قابل ہو سکتا ہے۔ ویسے ہی کسی متن کے متعلق کوئی حتمی فیصلہ نہیں کیا جا سکتا کہ اس کی نوعیت و کیفیت کیسی ہے، کہاں کہاں اس میں الحاقی مواد ہے، اور اس میں کیا کیا اخطاء ہیں؟

### الحاقی مواد کی مثالیں

الحاقی مواد کی کچھ مثالیں درج ذیل ہیں:

- ۱۔ بقول ڈاکٹر گیان چند، کلیات (نظم و نثر)، کلیات سے کم مجموعے اور غیر متداول یا منسوخ کلام میں الحاق و حذف دونوں کا اندیشہ رہتا ہے، حذف کا زیادہ الحاق کا کم.....
- ۲۔ دور قدیم سے مصنفوں کے جو دیوان، کلیات، اور دوسرے مجموعے ہیں، ان میں بھی کثرت سے الحاق ہے، غیر شعوری بھی اور شعوری بھی (۱۹)۔
- ۳۔ ڈاکٹر تنویر احمد علوی: ”ترتیب کی راہ ہفتخوان کا سب سے بڑا طلسم الحاقی کلام ہے، جس



کی متنوع اور گونا گوں مثالیں اُردو شعراء کے دواوین میں ملتی ہیں۔ الحاق کہیں تو کاتب کی لاعلمی یا بد احتیاطی کی وجہ سے عمل میں آتا ہے یا پھر وہ کسی ارادت و عقیدت اور خلوص کے زیر اثر کیا جاتا ہے.....“ (۲۰)۔

۴۔ قاضی عبدالودود نے یہ مثالیں پیش کی ہیں:

الف۔ کتابوں کے قلمی نسخوں میں بڑے شدید اختلافات پائے جاتے ہیں۔ شاہنامہ فردوسی کے بعض نسخوں میں ”گرشاسپ نامہ اسدی“ کل نہیں تو اس کا معتد بہ حصہ داخل ہو گیا ہے۔ ایسے نسخے بھی موجود ہیں جن میں بزد نامہ کے ہزاروں شعر شامل ہیں۔ یہ تو الحاقی کلام ہے۔ اشعار کا متن بھی مختلف نسخوں میں اس قدر متفاوت ہے کہ کسی نے مبالغے کے ساتھ یہ کہا ہے کہ کسی شعر کے متعلق یقین کے ساتھ یہ نہیں کہا جاسکتا کہ وہ اپنی اصلی شکل میں ہے۔ کاتبوں نے اشعار کو اپنے عہد کی زبان کے مطابق بنانے کی کوشش کی ہے اور اپنے مذہبی عقائد بھی اس کے سر تھوپے ہیں۔

ب۔ کلیات انوری طبع ہند میں ایک ہندوستانی شاعر کے قصائد داخل ہو گئے ہیں۔ اس کے بعض اشعار اس کے ہندوستانی ہونے پر بھی مشعر ہیں اور اس کی بناء پر الحاق کے امکان کو نظر انداز کر کے ظفر علی خان نے انوری کے ہندوستانی ہونے کا دعویٰ کیا ہے۔

ج۔ ظہیر فاروقی کے دیوان کے جو نسخے ایران سے چھپے ہیں الحاقی کلام سے خالی نہیں اور نول کشوری کلیات کے آخر میں جو دیوان غزلیات ہے وہ تو یک قلم بہت بعد کے ایک شاعر ظہیر اصفہانی کا ہے۔ (یہ فارسی کے الحاقی مواد کی مثالیں ہیں)۔

د۔ اردو میں کلیات سودا میں بکثرت الحاق ہونے کے ثبوت میں قاضی عبدالودود لکھتے ہیں کہ: سودا کے کلیات مطبوعہ میں میر سوز کی سو سے زیادہ غزلیں داخل ہیں اور ناقدین کرام کلام سودا کی خصوصیات کے بیان میں بے تکلف ان سے کام لیتے رہے۔



۱۔ نثر پر بھی کاتبوں کا کرم رہا ہے دلہستان مذہب کے نول کشوری نسخوں میں ایک جگہ ایک عبارت ہے جس سے قبل ”فقیر آرزومی گوید“ مرقوم ہے۔ آرزو نے کسی نسخے کے حاشیے یا بین السطور میں وہ عبارت لکھ دی ہوگی۔ کاتب اسے کتاب کا جزو سمجھا (۲۱)۔ مناسب معلوم ہوتا ہے کہ یہاں الحاقی مواد کے در آنے کی وجوہ میں سے چند ایک ذکر کی جائیں تاکہ زیر بحث مسئلہ کی مزید وضاحت ہو جائے:

### متن میں الحاق در آنے کی وجوہ

ذیل میں ڈاکٹر نذیر احمد کی بیان کردہ وجوہ میں سے چند ایک کو بیان کیا جاتا ہے، ان میں بھی الحاقی مواد کی مثالیں موجود ہیں:

۱۔ کبھی کبھی مختلف شاعروں کی ایک ہی زمین والی غزلوں اور ان کے متنوں میں غلط ملط ہو جاتا ہے... اس طرح کا الحاق صنف غزل میں زیادہ ہوا ہے۔

۲۔ ایک ہی تخلص کے شاعروں کے کلام میں التباس عام ہے، ظہیر فاریابی کے کلیات میں غزلیات کا تقریباً تمام حصہ صائب کے ایک شاگرد ظہیر تخلص کی ہیں۔ جو مصنف سے تقریباً پانچ سو برس بعد میں ہوا ہے۔

۳۔ بیاضوں (۲۲) کے ولہ (۲۳)، منہ، ایضاً جیسی علامتوں کے غلط لگ جانے سے ایک شاعر کا کلام دوسرے کی طرف باسانی منسوب ہو جاتا ہے، کبھی کبھی نسخوں کے اوراق کی بے ترتیبی اور اوراق پر ہندسوں کے نہ ہونے سے طرح طرح کی غلط فہمیاں پیدا ہو جاتی ہیں۔

۴۔ ایک شاعر جو کسی خاص صنف میں اور کسی مخصوص طرز کے لیے مشہور ہو گیا، تو اس کے مشابہ بہت سی چیزیں جو دوسروں کی ہوتی ہیں، وہ مخصوص شاعر کی طرف منسوب ہو جاتی ہیں۔ فارسی میں رباعیات میں اس طرح کا الحاق بکثرت ہے۔ عمر خیام، اور ابو



سعید ابوالخیر کا کلام اس کی بہترین مثالیں ہیں۔

۵۔ منتخب دیوانوں کا مجموعہ بھی بڑا التباس پیدا کرتا ہے۔ کبھی کبھی ایسا ہوتا ہے کہ درمیان

سے وہ ورق نکل جاتا ہے جس پر شاعر کا نام درج ہوتا ہے، تو سارا کلام اس سے پہلے

شاعر کے نام منسوب ہو جاتا ہے۔ خصوصاً ایسا کلام جس میں تخلص کم آتا ہے۔ قصیدوں

اور رباعیوں میں الحاق کی بڑی وجہ یہی ہے۔

۶۔ کبھی کبھی باپ اور بیٹے کے کلام میں سہل نگاری کی بناء پر التباس ہو جاتا ہے اور یہ

التباس بڑی غلط فہمی کا سبب بن جاتا ہے۔

۷۔ کبھی کبھی محبوب ہستی کے مرتبے کے پیش نظر بعض دوسری کتابیں ان کی طرف منسوب

کردی جاتی ہیں۔ اس سلسلے میں یوسف رلیخاے فردوسی، بعض مثنویات عطار، دیوان

خواجہ معین الدین چشتی بطور نمونہ... پیش کیے جاسکتے ہیں (۲۴)۔

۸۔ بعض اوقات کاتب یا مؤلف جان بوجھ کر بعض مصلحتوں کے تحت کچھ اضافہ کر دیتا

ہے، مثلاً: خان آرزو نے تذکرہ مجمع النفائس میں میر کا ذکر نہیں کیا لیکن رام پور کے

ایک نسخے میں میر کا ذکر کیا ہے اور بڑی توصیف و تحسین کے ساتھ۔ عرشی صاحب نے

ڈاکٹر خلیق انجم سے خیال ظاہر کیا کہ اس نسخے میں خود میر نے یہ اضافہ کیا ہے۔

۹۔ بعض اوقات کوئی مؤلف شیعہ کو سنی یا سنی کو شیعہ بنانے کے لیے کچھ اضافے کر دیتا

ہے، مثلاً: شیعہ و جہمی کے سب رس کے ایک نسخے میں مدح چار یار کے عنوان سے کچھ

نظم و نثر کا اضافہ ہے۔ سنی شاعر حافظ کے دیوان کے ایک نسخے میں ایسے کلمات کا

اضافہ ہے کہ وہ شیعہ ظاہر ہوتا ہے (۲۵)۔



## حوالہ جات

- ۱- تحقیق کافن، ڈاکٹر گیان چند، (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد ۱۹۹۴، ط اول) ص ۴۳۱، ۵۶۴۔
- ۲- تحقیق و تصحیح متن کے مسائل، ڈاکٹر نذیر احمد، در اُردو میں اصول تحقیق، مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد ۱۹۸۶، ط اول) ج ۱ ص ۳۱۳، ۳۱۴۔
- ۳- روایت: ایک تخلیق کی مختلف شکلیں، تحریری ہوں کے زبانی (گیان، محولہ بالا ص ۵۶۷)۔
- ۴- ادبی تحقیق کے اصول، ڈاکٹر تبسم کاشمیری، ص ۸۶، ۸۷، نیز دیکھئے: رضوی، سید جمیل احمد، لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، (مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، ط: دوم، دسمبر ۱۹۹۲ء) ص ۱۵۱۔
- ۵- اصول تحقیق، ایم سلطانہ بخش، (علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی اسلام آباد، ت ن) ص ۷۰۔
- ۶- ادبی تحقیق کے بعض مسائل، پروفیسر محمد حسن، مشمولہ اُردو میں اصول تحقیق، محولہ بالا ص ۱۲۹۔
- ۷- تحقیق کافن، گیان چند، محولہ بالا، ص ۳۹۸۔
- ۸- ایضاً، ص ۴۰۳۔
- ۹- ایضاً، ص ۴۰۳۔
- ۱۰- مسودے میں نظر ثانی کے بعد صاف کیے ہوئے نسخے کو مبیضہ کہتے ہیں۔
- ۱۱- سابق حوالہ، ص ۴۰۷۔
- ۱۲- ایضاً۔
- ۱۳- ایضاً، ص ۴۰۷۔
- ۱۴- ایضاً، ص ۵۶۶۔
- ۱۵- ایضاً، ص ۳۹۷۔
- ۱۶- ترقیمہ: ”مخلوطے کے آخر میں کاتب کی اختتامیہ عبارت جس میں کاتب کا نام، مالک کتاب یا فرمائش کنندہ کا نام، زمان و مکان، کتابت، اختتامی شعر وغیرہ میں سے کچھ یا سب دیئے ہوں۔ پرانی



مطبوعات کے آخر میں بھی ترقیمہ ہوتا ہے“ (گیان چند، تحقیق کافن، محولہ بالا، ص ۵۶۵)، گویا عبارت ناقل کو ترقیمہ کہتے ہیں۔

- ۱۷۔ اردو میں اصول تحقیق، تنویر احمد علوی، تنقید متن، در محولہ بالا، ج ۱ ص ۳۶۳ تا ۳۶۶، بتلخیص و تصرف۔
- ۱۸۔ تحقیق کافن، گیان چند، محولہ بالا، ص ۴۴۲، ۴۴۳۔
- ۱۹۔ سابق حوالہ، ص ۴۴۱۔
- ۲۰۔ قدیم دوادین کی ترتیب کے مسائل، تنویر احمد علوی، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، محولہ بالا، ج ۱ ص ۱۴۳ تا ۱۴۴۔
- ۲۱۔ اصول تحقیق، قاضی عبدالودود، در اردو میں اصول تحقیق، محولہ بالا، ج ۲، ص ۳۱، ۳۲۔
- ۲۲۔ بیاض کہتے ہیں ”کسی کی [اس] ذاتی کاپی [کو] جس میں وہ اپنے یاد دوسروں کے اشعار، نظمیں یا غزلیں لکھ دیتا ہے۔ شاذ ان کے مصنف کے بارے میں تعارفی جملہ یا فقرہ بھی لکھ دیا جاتا ہے (گیان چند، محولہ بالا ص ۵۶۵)۔
- ۲۳۔ ولہ: اس کے معنی ہیں ”اس کا“۔ کسی شاعر کا ایک شعر، نظم و غزل لکھ کر اس کے بعد اسی کی دوسری چیز دی جائے تو آخر الذکر کر کے اوپر ولہ لکھ دیتے ہیں جس کے معنی یہ ہیں کہ یہ بھی اسی شاعر کا کلام ہے۔ نثر میں اس کا استعمال نہیں ہوتا لیکن غالب نے کیا ہے۔ (گیان چند، محولہ بالا ص ۵۶۹، بحوالہ مکاتیب غالب مرتبہ: عرشی ص ۳۳۴ بحوالہ رشید حسن خان، اردو املا، ص ۵۴۵)۔
- ۲۴۔ تحقیق و تصحیح متن کے مسائل، ڈاکٹر نذیر احمد، در اردو میں اصول تحقیق، محولہ بالا، ج ۱، ص ۳۱۴ تا ۳۱۷۔
- ۲۵۔ تحقیق کافن، گیان چند، محولہ بالا ص ۴۱۳، بحوالہ خلیق انجم، ڈاکٹر، متنی تنقید (ادارہ خرم پبلی کیشنز، دہلی ۱۹۶۷، ط اول) ص ۷۴۔



باب ۱۲

تحقیق متن کے طریقے اور متن میں  
غلطیاں معلوم کرنے کے ذرائع



## تحقیق متن کے طریقے اور متن میں غلطیاں معلوم کرنے کے ذرائع

### مفہوم متن

متن کا اطلاق ان اشیاء پر ہوتا ہے: ”مصنف کے اصل الفاظ، کتاب کی اصل عبارت (شرح وغیرہ سے قطع نظر کر کے)، کتاب الہی انجیل و قرآن وغیرہ کی آیت یا آیات جو کسی وعظ یا مقالے کے موضوع یا سند کے طور پر استعمال کی جائیں، متن کتاب کا مضمون (حواشی و تصاویر وغیرہ سے قطع نظر کر کے)، جلی خط، نصاب کی کتاب، درسی کتاب“ (۱)۔

بقول ڈاکٹر تنویر علوی: متن (Text) کسی ایسی عبارت، تحریر یا نقوشِ تحریر کو کہتے ہیں جن کی قرأت یا معنوی تفہیم ممکن ہو (۲)۔

### متن کا لکھا ہوا ہونا ضروری ہے

متن کے لیے ضروری ہے کہ وہ تحریر ہو۔ یہ تحریر کاغذ پر مطبوعہ یا غیر مطبوعہ، مختلف دھات کے ٹکڑوں، مٹی یا لکڑی کی بنائی ہوئی لوحوں (تختیوں)، بتوں اور پتھروں، یا چمڑوں اور چٹانوں وغیرہ کسی بھی چیز پر ہو سکتی ہے۔ متن نظم بھی لکھا جاتا ہے اور نثر بھی۔ متن ہزاروں سال قدیم بھی ہو سکتا ہے اور ہمارے عہد کے کسی مصنف کی تحریر بھی۔ اس کے لیے زمانے اور وقت کی قید نہیں۔ ہزاروں صفحات پر پھیلی ہوئی یا ایک صفحہ کی مختصر سی تحریر، دونوں بھی ہو سکتے ہیں (۳)۔



## اقسام متن

متن میں تنوع پایا جاتا ہے۔ بعض اوقات متن دو حصوں میں تقسیم ہوتا ہے: ”اصل متن“ اور ”اضافی متن“۔ کچھ املائی متن ہوتے ہیں۔ ایک شخص بولتا ہے دوسرا لکھتا ہے۔ اب اگر وہ جو کچھ سنتا ہے وہی لکھتا ہے، تو اسے ”تقلیدی متن“ کہا جائے گا۔ اگر اپنی سوجھ بوجھ کے مطابق وہ املا کیے ہوئے متن میں الفاظ کو پس و پیش اور مضمون کو کم و بیش کر رہا ہے، تو وہ املائی متن نہیں بلکہ ”نیم تقلیدی متن“ ہو جائے گا۔ بعض متون ”سماعی“ ہوتے ہیں جو بعض اوقات صدیوں تک سینہ بسینہ اور زبان بہ زبان ہوتے ہوئے تحریری شکل میں سامنے آتے ہیں۔

متون میں وقت کے ساتھ ساتھ اضافے و ترمیم کا عمل بھی جاری رہتا ہے اور اصل و فرع میں کچھ فرق واقع ہو ہی جاتا ہے۔ ایسی شکلوں میں Basic Text قدیم تر قلمی نسخہ ہی کو قرار دیا جاسکتا ہے۔ ایسے کسی متن میں وہ ترتیب اور انضباطی کیفیت مشکل ہی سے مل سکتی ہے جو انفرادی طور پر ترتیب دیئے ہوئے متون کی ایک خصوصیت ہوتی ہے (۴)۔

قدیم مشرقی و مغربی زبانوں میں کلاسیکی لٹریچر زیادہ تر مخطوطات کی صورت میں ملتا ہے اور ان ہی قلمی نسخوں کی مدد سے ان کی ہیئت اور حدود تک رسائی ممکن ہے۔ بعض متن اب اپنی اصلی شکل میں نہیں ملتے، بعض کی زبان بدل گئی ہے، اور بعض کا رسم الخط۔ اس لیے ان کی اصل صورت اور حدود و مشتملات کا فیصلہ کرنا مشکل ہے۔

مصادر کے لحاظ سے بھی متن مختلف الحیثیت ہوتے ہیں۔ بعض متون کی قلمی یا مطبوعہ صورت میں صرف ایک ہی روایت دستیاب ہوتی ہے۔ بعض کے متعدد قلمی نسخے ملتے ہیں اور کئی بار یہ کثیر التعداد ہوتے ہیں۔

بعض متون کے قلمی نسخے مختلف خطوط میں ملتے ہیں۔ معلومہ قلمی نسخوں میں سب سے اہم وہ قلمی نسخے ہو سکتے ہیں جو خود مؤلف کے قلم کے مرہون منت ہوں اور جن کے بارے میں



داخلی و خارجی شہادت موجود ہو کہ یہ صاحب تصنیف کا اپنا خطی نسخہ ہے۔ ایسے کسی نسخے میں موجود متن کو ”اساسی متن“ قرار دیا جاسکتا ہے۔ دوسرے درجہ پر ایسے قلمی نسخے آسکتے ہیں، جو مصنف کی نظر سے گزر چکے ہوں، یا مصنف کی ایماء سے بڑے اہتمام کے ساتھ تیار کیے گئے ہوں، یا جن کی تیاری میں مصنف کے کسی عزیز شاگرد، مرید یا دوست کا ہاتھ رہا ہو، ایسے متن کو فرق مراتب کے ساتھ ”استنادی متن“ کہا جاسکتا ہے۔ اس کے مقابلے میں دوسرے ایسے قلمی نسخوں کے متن کو جنہیں مستند قرار دیا جائے ”استشہادی متن“ کہنا مناسب ہوگا۔

مطبوعہ نسخوں میں بھی قدیم و جدید اور درجہ استناد کے اعتبار سے اہم اور غیر اہم کا فیصلہ انہی اور ایسے ہی باوثوق شواہد کی روشنی میں کیا جاسکتا ہے۔ جن متنوں کی کتابت شدہ روایت اور پروف کا پیوں کی تصحیح خود مصنف نے کی ہو، اسے مطبوعہ روایتوں میں ”اساسی متن“ کا درجہ دیا جاسکتا ہے۔ لیکن اس کی چھان بین میں بڑے حزم و احتیاط کی ضرورت ہوتی ہے۔ اس کے ساتھ ان (مطبوعہ) روایتوں کی اہمیت زیادہ ہوگی، جو صاحب متن کے قریب تر افراد یا زمانے سے تعلق رکھتی ہوں، ان کو ”استنادی متن“ قرار دیا جاسکتا ہے۔ دیگر مطبوعہ شکل میں نسبتاً زیادہ معتبر متن کو ”استشہادی روایت“ کا درجہ دیا جاسکتا ہے (۵)۔ ”... ہر متن ایک مستقل وجود ہے، اور اپنی مختلف روایتوں کی شکل میں ایک سے زیادہ ذیلی وجود رکھتا ہے۔ ایسی صورتحال میں متنوں کی صحیح ہیئت اور جدید روایت کا تعین ایک نہایت مشکل مگر نتیجہ خیز کام ہے، جس کے لیے غیر معمولی سطح پر ذہنی کاوش اور جزئیات کی تلاش کا اہتمام ضروری ہوتا ہے۔ اس کے بغیر حقیقت تک رسائی ممکن نہیں“ (۶)۔

## تحقیق و تصحیح متن کے لوازمات:

### ۱۔ طرز املاً و تاریخ خط سے واقفیت

ایک محقق کے لیے ضروری ہے کہ وہ تحقیق متن کے عمل کے وقت طرز املاً و تاریخ خط سے آشنا ہو کیونکہ: ”متن کی تحقیق و تصحیح میں نسخوں کی قدامت کا تعین نہایت اہم مسئلہ ہے۔ جب



طرز خط و املا سے واقفیت نہ ہو، تو یہ مسئلہ خاطر خواہ طور پر حل نہیں ہو سکتا۔ ایسے مخطوطے جن پر تاریخ کتابت تحریر ہو، اور وہ ہر طرح کے شک و شبہ سے پاک ہوں، بہت محدود ہوتے ہیں۔ بغیر تاریخ اور مشکوک نسخوں کے بارے میں کوئی رائے اس وقت تک قائم نہیں کی جاسکتی جب تک مختلف دور میں املا اور خط کا جو طرز رائج تھا، اس سے کما حقہ شناسائی نہ ہو“ (۷)۔

اس بحث سے ثابت ہوا کہ متن کی تحقیق اور اس کی صداقت کے تعین میں خط اور املا

سے واقفیت بہت ضروری ہے۔

## ۲۔ شاعری و فن عروض سے واقفیت

شعری مخطوطے کی تحقیق و تصحیح کے لیے محقق کا فن شاعری اور عروض سے پورے طور پر واقف ہونا بھی ضروری ہے، اس کے بغیر وہ قدیم متون کی تصحیح خاطر خواہ نہیں کر سکتا، چنانچہ ڈاکٹر نذیر احمد لکھتے ہیں:

”جو شخص ملکہ شاعری اور فن عروض میں حسب ضرورت دستگاہ نہیں رکھتا، وہ قدیم متون کی تصحیح خاطر خواہ نہیں کر سکتا... متن کی تصحیح میں قدم قدم پر (قوانی و اوزان) کا سہارا لینا پڑتا ہے۔ ذوق شعر اور مذاق سلیم کے بغیر تصحیح متن کا کام نہیں ہو سکتا...“ (۸)۔

## ۳۔ عہد بعہد زبان سے واقفیت

تحقیق متن کا ایک اسلوب یہ بھی ہے کہ محقق متن بعہد بعہد کی زبان سے واقف ہوتا کہ

مصنف کے عہد کو باسانی متعین کیا جاسکے، چنانچہ ڈاکٹر نذیر احمد لکھتے ہیں:

”... محقق متن کے لیے لازم ہے کہ وہ زبان کی ہر دور کی مخصوص خصوصیات کو

جانتا ہوتا کہ مصنف کے دور کے تعین میں آسانی ہو۔ اس کے اس علم سے فائدہ

یہ بھی ہوگا کہ وہ نامانوس اور نا آشنا لفظوں کا صحیح تعین کر سکے گا“ (۹)۔



## ۴۔ کاغذ اور روشنائی کی پہچان

طرزِ خط اور طریقِ املا سے واقفیت کے ساتھ ساتھ کاغذ اور روشنائی کی پہچان بھی محقق کے لیے ضروری ہے کیونکہ: ”کاغذ و سیاہی تحقیقِ متن کے امور ہیں جن سے واقفیت سے تحقیق میں مدد ملتی ہے۔ سیاہی کی تیاری بڑا مشکل کام خیال کیا جاتا تھا۔ اس کام میں برسوں تجربہ اور آزمائش کی جاتی تھی۔ اسی کا نتیجہ ہے کہ ۸ سو، ۹ سو سال کے پرانے نسخے آج بھی اسی طرح دعوتِ نظارہ دیتے ہیں۔ ان پرانی سیاہیوں کا مقابلہ آج کل کی سیاہی سے کیا جائے تو ان قدیم فنکاروں کی دقتِ نظر کی داد دینا پڑتی ہے۔ یہی حال پرانے کاغذوں کا ہے۔ بعض کاغذ ایسے اچھے ہوتے تھے کہ ہزار سال کی مدت کے بعد آج وہ نئے معلوم ہوتے ہیں۔ کاغذ و سیاہی کی مختلف اقسام سے واقفیت نسخے کی قدامت و اہمیت متعین کرنے میں بڑی مفید ہوتی ہے“ (۱۰)۔

## ۵۔ خطاطوں کے تذکروں سے استفادہ

طرزِ خط سے پورے طور پر واقف ہونے کے لیے خطاطوں کے تذکروں سے استفادہ ضروری ہے کیونکہ: ”اہم قلمی کتابوں کے لکھنے والے اکثر مشہور خطاط ہوتے ہیں۔ خطاطوں سے واقفیت نسخے کی اہمیت کے تعین کی ضامن ہے۔ اگرچہ خطاطوں کے تذکرے کم ہیں اور جو ہیں ان میں صرف مشہور خطاطوں کا ذکر ملتا ہے۔ غیر خطاط ہزاروں کی تعداد میں ایسے ہیں جن کا احاطہ کسی تذکرے میں نہیں ہو سکا ہے۔ پھر بھی ضمناً مشہور خطاطوں کے ضمن میں بعض غیر معروف خطاطوں کا ذکر آ جاتا ہے۔ بہر حال یہ تذکرے بہت سود مند ہوتے ہیں۔ اکثر ایسا ہوتا ہے کہ معمولی کاتب کا لکھا ہوا نسخہ مشہور کاتب کی طرف منسوب کر دیا جاتا ہے۔ اگر ہم خطاطوں کے دور اور ان کے طرزِ خط سے آشنا ہوں گے تو اس طرح کے جعل کا پردہ فوراً چاک ہو جائے گا۔ غرض قلمی نسخے کی قدر و قیمت کے تعین میں خطاطوں کے تذکروں سے مدد مل سکتی ہے“ (۱۱)۔

حاصل کلام یہ ہے کہ تحقیقِ متن کے عمل میں ان اسالیب اور لوازمات کا لحاظ اگر نہ رکھا



جائے تو محقق کا تحقیق شدہ و ترتیب کردہ متن نہ ہی تو مستند ٹھہر سکتا ہے اور نہ ہی قابل توجہ قرار پا سکتا ہے۔

## متن میں تبدیلی یا غلطی کیسے واقع ہوتی ہے؟

روایتیں تقریری بھی ہو سکتی ہیں اور تحریری بھی۔ دونوں صورتوں میں روایت و درایت کے اصولوں کے تحت، روایت کی صحت و عدم صحت کے بارے میں کوئی فیصلہ کیا جا سکتا ہے۔

زبانی تقریر کے مقابلے میں تحریری روایت کی اصل صورت کے تحفظ کا بڑا ذریعہ ہے لیکن نقل در نقل روایت کی صورت میں ان جانے میں بہت سی تبدیلیاں (غلطیاں) راہ پا جاتی ہیں۔ کبھی خود مصنف بھی غیر ارادی طور پر کچھ کا کچھ لکھ جاتا ہے جو اس کا مقصد نہیں ہوتا۔ یہی صورت کاتب کے ساتھ بھی پیش آ سکتی ہے، کبھی غلطی خود روایت نگار کرتا ہے اور کبھی وہ کسی دوسری روایت یا نسخے سے ماخوذ ہوتی ہے۔ جس کے باعث یہ دیکھنے میں آتا ہے کہ ایک ہی قسم کی تبدیلی یا غلطی ایک سے زیادہ روایتوں میں ملتی ہے (۱۲)۔

## متن میں غلطیوں یا تبدیلیوں کی اقسام

متن میں غلطیاں یا تبدیلیاں مختلف النوع ہوتی ہیں۔ محققین نے انہیں ان کی سببی نوعیت کے پیش نظر حسب ذیل انواع میں بانٹ رکھا ہے:

### ۱۔ ترمیم

نامعلوم اسباب کے تحت ہونے والی تبدیلیاں جن میں سہو نظر اور لغزش قلم بھی شامل ہیں۔

### ۲۔ تعبیر

جس میں مبہم لفظ کی وضاحت کے لیے کسی عبارت کو بڑھایا گیا ہو۔

### ۳۔ تفسیح

جس میں جان بوجھ کر کسی متن یا اجزائے متن کو منسوخ کیا گیا ہو۔



۴- تصحیح

صاحب متن نے خود اپنی خواہش اور مقصد کے مطابق عبارت میں کوئی تبدیلی کی ہو۔

۵- تصحیف

صاحب متن کے علاوہ کسی دوسرے شخص نے متن یا اجزائے متن میں دانستہ

یا نادانستہ کوئی غلطی کی ہو۔

۶- انتساب

غلط انتساب ایک دوسری صورت ہے جس کے اپنے کچھ اسباب و وجوہ ہو سکتے ہیں۔ کبھی یہ خواہش اور ارادے کے تحت ہوتا ہے اور اپنی تصنیف ازراہ عقیدت و خلوص دوسرے کے نام کر دی جاتی ہے اور کبھی نقل بردار کی لاعلمی، خیالات کی یکسانیت اور اوزان کی یک رنگی اس کا سبب بن جاتی ہے۔ کبھی مختلف تصانیف کی ہم رشتگی کے باعث ایسا ہوتا ہے۔ کبھی مصنفین یا کتا بوں کے ناموں کی مشابہت اس کا موجب بن جاتی ہے اور کبھی اس سلسلہ میں کچھ خاص مقاصد کے زیر اثر ثنوبت جعل و دخل تک پہنچ جاتی ہے (۱۳)۔

علاوہ ازیں! متون میں تصرفات کی وجہ سے ان میں غلطیوں کا امکان پیدا ہو جاتا ہے۔ متون میں تصرفات دو طرح کے ہوتے ہیں: ایک الحاق کی شکل میں، دوسرے متن کی زبان میں تغیر اور ترمیم و اصلاح کی صورت میں۔ اول الذکر حالت میں دوسروں کا کلام شامل ہو جاتا ہے اور آخر الذکر صورت میں مصنف کی زبان میں طرح طرح کی ترمیم دانستہ یا نادانستہ طور پر عمل میں آتی ہیں۔ محقق دونوں طرح کے تصرفات کا تعین کرتا ہے اور متن کو کانٹ چھانٹ کر اصل متن متعین کرنے کی کوشش کرتا ہے۔ متن میں تصرفات مختلف اسباب کی بناء پر عمل میں آتے ہیں۔ چند اسباب یہ ہیں:

۱- زبان کی املائی دقتیں اور رسم الخط کی بعض خصوصیات۔



- ۲۔ کاتب کا جہل جو عمداً ہوتا ہے۔
- ۳۔ کاتب کا جہل جو لاعلمی کی بناء پر ہوتا ہے۔
- ۴۔ قدیم متنوں میں ناموس الفاظ کی کثرت ہوتی ہے، کاتب اکثر پرانے لفظوں کی جگہ نئے لفظ رکھ دیتا ہے۔
- ۵۔ ایک ہی تخلص کے شاعروں کے کلام میں التباس ہو جاتا ہے۔
- ۶۔ کبھی کبھی مختلف مشاعروں کی ایک ہی زمین والی غزلوں اور ان کی متنوں میں خلط ملط ہو جاتا ہے۔
- ۷۔ ایک شاعر جو کسی خاص صنف میں اور کسی مخصوص طرز کے لیے مشہور ہو گیا، اُس کے مشابہ بہت سی چیزیں جو دوسروں کی ہوتی ہیں، وہ مخصوص شاعر کی طرف منسوب ہو جاتی ہیں۔
- ۸۔ منتخب دیوانوں کا مجموعہ بھی بڑا التباس پیدا کرتا ہے۔ کبھی ایسا ہوتا ہے کہ درمیان سے وہ ورق نکل جاتا ہے، جس پر شاعر کا نام درج ہوتا ہے، تو سارا کلام اس سے پہلے شاعر کے نام منسوب ہو جاتا ہے۔
- ۹۔ کبھی کبھی محبوب ہستی کے مرتبے کے پیش نظر بعض دوسری کتابیں ان کی طرف منسوب کر دی جاتی ہیں۔
- ۱۰۔ انسانی طبائع کی کمزوری، جس کی بہترین مثال ایک ہی کتاب کے دو نسخے ہیں، جو کسی حال میں یکساں نہیں ہو سکتے، دونوں میں کچھ نہ کچھ فرق لازمی ہوتا ہے۔ اور رفتہ رفتہ ان نقلوں اور نقلوں کی نقلوں میں اتنا فرق آ جاتا ہے کہ وہ الگ الگ کتب معلوم ہونے لگتی ہیں۔
- ۱۱۔ کبھی کبھی باپ اور بیٹے کے کلام میں سہل نگاری کی بناء پر التباس ہو جاتا ہے اور یہ



التباس بڑی غلط فہمی کا سبب بن جاتا ہے (۱۴)۔

صورت حال خواہ کچھ بھی ہو، متنی حقائق کی جستجو کا مقصد متن کی صحیح حدود اور روایتوں کا تعین ہے۔ اس کا فیصلہ کرنے کے لیے کہ متن میں کس نوعیت کی غلطی کہاں موجود ہے؟ گہری چھان بین، تقابلی مطالعہ اور نظر داری کی ضرورت ہے۔ اس کے بغیر کسی صحیح نتیجہ تک پہنچنا آسان نہیں ہوتا (۱۵)۔

علاوہ ازیں درستگی متن کے لیے ان امور کا لحاظ رکھنا ضروری ہے:

- ۱۔ قدیم متنوں کو اصول تدوین کی مکمل پابندی کے ساتھ مرتب کیا جانا چاہیے۔
- ۲۔ کسی اقتباس کے مستند نسخے کو ماخذ بنائے بغیر پیش نہ کیا جائے۔ صحت متن کی اہمیت کو پیش نظر رکھنا چاہیے۔
- ۳۔ جب تک یہ معلوم نہ ہو جائے، کہ یہ تحریر ہر طرح کے سقم سے پاک ہے اس وقت تک یقین نہیں کرنا چاہیے کہ جو کچھ ہمارے سامنے ہے وہ بعینہ اس شخص کے افکار و خیالات ہیں۔
- ۴۔ متن کی تصدیق کے سلسلے میں مختلف اسناد و مدارک ہوتے ہیں۔ مثلاً منشور و منظوم متون، بیاضیں، تذکرۃ الشعراء، سیاسی تاریخیں، لغات و قواعد، ملفوظات صوفیہ، مکاتیب وغیرہ۔ جب یہ سارے اسناد کام میں لا کر متن کی تصحیح ہوتی ہے تو وہ بڑی حد تک بھروسے کے قابل ہوتے ہیں (۱۶)۔
- ۵۔ متنی نقاد کے لیے ضروری ہے کہ وہ مختلف عہد کے کچھ منتخب نسخے پڑھے تاکہ اسے مختلف تحریروں پر پورا عبور حاصل ہو سکے۔ زیادہ نسخوں کا مطالعہ تصحیح متن میں مدد و معاون ثابت ہوگا۔
- ۶۔ متن کے متعلقہ عہد کی ادبی تاریخ پر پورا عبور حاصل ہونا چاہیے۔
- ۷۔ متن کی مختلف جہتوں اور نوعی صورتوں کا استحصاء کرنا ضروری ہے تاکہ متن کی صحیح ہیئت کا



تعیین ہو سکے۔

۸۔ یہ جاننا کہ روایت کو نقل کرنے والا شخص کوئی معتبر شخص ہے یا نہیں، اگر کسی روایت کا سلسلہ آگے بڑھتا ہے تو کن واسطوں سے کہاں تک پہنچتا ہے۔ جو وسائل اور واسطے درمیان میں آتے ہیں انہیں صحت بیان یا روایت کے اعتبار سے کیا درجہ دیا جاسکتا ہے۔ ان میں کوئی ایسا شخص تو نہیں ہے جس کی قوت تفہیم یا نگارش قلم پر پوری طرح بھروسہ نہ کیا جاسکے، اور جس کی قوت حافظہ پر اعتبار نہ کیا جاسکے۔

۹۔ قدیم متون کی صورت میں الفاظ کے قدیم املا کو نظر انداز نہیں کیا جاسکتا۔

۱۰۔ ”کسی متن کی اصل اور صحیح صورت وہی ہو سکتی ہے جس کے ساتھ خود صاحب متن نے اسے پیش کیا ہو۔ اپنی اصلی شکل میں مصنف کا اپنا مسودہ یا مبیضہ اگر مل جائے اور باوثوق سطح پر اس کے بارے میں یہ فیصلہ کیا جاسکے کہ یہ صحیح ہے تو اسی روایت کو اصل متن قرار دیا جانا چاہیے“ (۱۷)۔

۱۱۔ ”...تخلیقی متون میں جہاں زبان، املا اور تلفظ کے بہت سے مسائل متن سے وابستہ ہوتے ہیں وہاں اولین متن کو اساسی روایت قرار دینا اور مؤخر روایت کو اضافی حیثیت سے شامل کرنا زیادہ بہتر صورت ہو سکتی ہے“ (۱۸)۔

۱۲۔ تصحیح متن کا کام قدیم قلمی یا مطبوعہ نسخوں کی مدد سے ان کے تقابلی مطالعہ کی روشنی میں کیا جانا چاہیے۔ اس کے لیے مصنف یا مصنف کے زمانے کے رسم الخط، زبان، املا اور تلفظ کی صورتوں سے علمی سطح پر واقفیت ضروری ہے۔ اس زمانے کی لغات اور فرہنگوں سے بھی حسب ضرورت استفادہ کیا جاسکتا ہے (۱۹)۔



## حوالہ جات

- ۱- متن اور روایت متن، ڈاکٹر تنویر احمد علوی، در اردو میں اصول تحقیق، مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش (مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ۱۹۸۶ء، ط اول) ج ۱ ص ۳۳۹، بحوالہ: اسٹینڈرڈ اردو انگلش ڈکشنری، ص ۱۲۰۸۔
- ۲- ایضاً۔
- ۳- اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم۔ سلطانہ بخش، کوڈ نمبر ۱۱ ص ۶۶، علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد، ت۔ ن۔
- ۴- متن اور روایت متن، علوی، در بحوالہ مذکور، ج ۱، ص ۳۵۱، ۳۵۲ خلاصہ۔
- ۵- ایضاً، ص ۳۵۳۔
- ۶- ایضاً، ص ۳۵۳۔
- ۷- تحقیق و تصحیح متن کے مسائل، ڈاکٹر نذیر احمد، در اردو میں اصول تحقیق، محولہ بالاج ص ۳۱۷، ۳۱۸۔
- ۸- ایضاً، ص ۳۲۰-۳۲۱، بتصریف۔
- ۹- ایضاً، ص ۳۲۱۔
- ۱۰- ایضاً، ص ۳۲۲۔
- ۱۱- ایضاً۔
- ۱۲- متن اور روایت متن، علوی، در حوالہ مذکور ج ۱ ص ۳۵۳، ۳۵۴ ملخصاً۔
- ۱۳- ایضاً، ص ۳۵۷، ۳۵۸۔
- ۱۴- تفصیل کے لیے دیکھئے، تحقیق و تصحیح متن کے مسائل، نذیر احمد، در حوالہ مذکور ج ۱ ص ۳۱۳-۳۱۷۔
- ۱۵- متن اور روایت متن، علوی، در سابق حوالہ، ج ۱، ص ۳۵۸، بتصرف قلیل۔



- ۱۶۔ تحقیق متن کے اسناد کی تفصیلات کے لیے دیکھئے: تحقیق و تصحیح متن کے مسائل، ڈاکٹر نذیر احمد، مشمولہ،  
 اردو میں اصول تحقیق، مجلہ بالاج اص ۳۲۲ تا ۳۲۶۔
- ۱۷۔ متن اور روایت متن، علوی، در مجلہ بالاج اص ۳۵۸۔
- ۱۸۔ ایضاً ص ۳۵۹۔
- ۱۹۔ ایضاً۔



باب ۱۳

رموزِ اوقاف اور ان کے استعمال کے اُصول



## رموزِ اوقاف اور ان کے استعمال کے اصول

اس سے قبل کہ رموزِ اوقاف اور ان کے استعمال کے مواقع و اصول بیان کیے جائیں مناسب معلوم ہوتا ہے کہ ان کے مفہوم، تاریخی پس منظر اور ان کی افادیت و اہمیت کو زیر بحث لایا جائے تاکہ کسی قسم کا ابہام باقی نہ رہے:

### رموزِ اوقاف کا مفہوم

کسی بھی زبان میں جب کسی بھی طرح کی گفتگو کی جاتی ہے تو کہیں ٹھہرا جاتا ہے اور کہیں نہیں ٹھہرا جاتا، کہیں کم ٹھہرا جاتا ہے اور کہیں زیادہ۔ اس رکنے اور نہ رکنے کے عمل کا، بات کے صحیح بیان کرنے اور اس کے صحیح مطلب کو سمجھنے میں بہت دخل ہوتا ہے۔ اس لیے کچھ علامتیں مقرر ہیں جنہیں ”رموزِ اوقاف“ کہتے ہیں۔ دوسرے الفاظ میں یوں سمجھئے کہ کسی بھی تحریر کو واضح طور پر سمجھنے کے لیے ضروری ہوتا ہے کہ اس کی عبارت کو لفظوں اور جملوں کے لحاظ سے الگ الگ کر دیا جائے۔ اس علیحدگی کے لیے اہل علم نے کچھ علامتیں مقرر کر دی ہیں، جو ”رموزِ اوقاف“ کہلاتی ہیں۔ ان کے مفہوم کو ماہرین فن نے اپنے اپنے انداز میں یوں بیان کیا ہے:

۱۔ بقول بابائے اردو مولوی عبدالحق: ”اوقاف یا وقفے ان علامتوں کو کہتے ہیں جو ایک جملے کو دوسرے جملے سے یا کسی جملے کے ایک حصے کو دوسرے حصوں سے علیحدہ کریں“ (۱)۔

۲۔ ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان رموز و علاماتِ اوقاف کو ”اوقاف قرأت“ کے نام سے موسوم کر



کے لکھتے ہیں: ”اوقاف قرأت سے مراد وہ علامات و رموز ہیں جو تحریری فقروں میں الفاظ کے مابین لکھے جاتے ہیں اور جن سے جملوں کی تقسیم ہوتی ہے اور صحیح مفہوم کو سمجھنے میں آسانی ہوتی ہے“ (۲)۔

## تاریخی پس منظر

اردو زبان میں رموز اوقاف کے استعمال کے زمانے کا جہاں تک تعلق ہے تو اس ضمن میں ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان لکھتے ہیں کہ: ”اردو میں اوقاف قرأت کا استعمال اٹھارویں صدی عیسوی (یعنی ۱۷۹۹ء) تک نہ تھا، حتیٰ کہ جملے کے خاتمے پر بھی کوئی نشان نہیں ہوتا تھا۔ البتہ بعض قلمی کتابوں میں جملے کے ابتدائی لفظ پر شکر فی روشنائی سے علامت ”“ ملتی ہے۔ فورٹ ولیم کالج اور بمبئی ایجوکیشنل سوسائٹی کا اردو نائپ میں چھپی ہوئی کتابوں میں، جو انیسویں صدی عیسوی کی پہلی تہائی کی ہیں، اختتام جملہ کی علامت کے طور پر ستارے کا نشان ملتا ہے، جسے انگریزی میں (Asterist) کہتے ہیں۔ یہی ستارے کا نشان سرسید کے ”تہذیب الاخلاق“ میں بھی ملتا ہے“ (۳)۔

سرسید احمد خان نے تہذیب الاخلاق جلد ۵ بابت یکم رمضان ۱۲۹۱ھ میں علامات قرأت پر اپنے خیالات ظاہر کیے تھے۔ یہ مضمون مقالات سرسید مرتبہ اسماعیل پانی پتی کے حصہ ہفتم میں شامل ہے۔ سرسید نے اردو کے لیے مندرجہ ذیل انگریزی علامات کو تجویز کیا تھا:

| انگریزی علامت  | اردو علامت     | تبدیلی   |
|----------------|----------------|--|
| ۱۔ کا (،)      | علامت سکتہ (،) | انگریزی علامت چونکہ واو سے مشابہ تھی اس لیے اس کو الٹ دیا گیا۔                         |
| ۲۔ سی کولن (;) | علامت وقفہ (:) | انگریزی کی صورت یہاں بھی الٹ دی گئی ہے اردو میں سکتے کی علامت نقطے کے اوپر ڈالی گئی ہے |



- ۳۔ کولن (:) علامت وقفہ (:) اس میں کوئی تبدیلی نہیں کی گئی۔
- ۴۔ فل شاپ (.) علامت وقفہ کامل (-) اس میں بھی کوئی تبدیلی نہیں کی گئی۔
- ۵۔ نوٹ آف انشیر و گیشن (?) علامت استفہام (?) اردو جملے کے مطابق اس کا رخ تبدیل کیا گیا ہے۔
- ۶۔ نوٹ آف اسکلامیشن (!) علامت تعجب و حیرت و فرحت (!) اس میں کوئی تبدیلی نہیں کی گئی۔
- ۷۔ ہائفن (-) علامت ترکیب (-) اس میں کوئی تبدیلی نہیں کی گئی۔
- ۸۔ ڈیش ( ) خط یا لکیر \_ اس میں کوئی تبدیلی نہیں کی گئی۔
- ۹۔ پرتھسز ( ) علامت جملہ معترضہ ( ) اس میں کوئی تبدیلی نہیں کی گئی۔
- ۱۰۔ کوٹیشن علامت اقتباس " " اردو جملے کے مطابق اس کا رخ تبدیل کیا گیا ہے۔
- ۱۱۔ انڈر لائن \_ علامت توجہ \_ اس میں کوئی تبدیلی نہیں کی گئی۔
- ۱۲۔ اشار (☆) نجم (علامت حذف) اس میں کوئی تبدیلی نہیں کی گئی۔
- ۱۳۔ T علامت حاشیہ اس میں کوئی تبدیلی نہیں کی گئی (۴)

ڈاکٹر محمد صدیق خان: ”..... اردو میں رموز اوقات کا استعمال انگریزی کے زیر اثر شروع ہوا۔ انگریزی عہد سے پہلے ان کے باقاعدہ استعمال کی شہادت نہیں ملتی۔ اس موضوع کے ساتھ لوگوں کی دلچسپی اسی زمانے میں شروع ہوئی۔ جن اہل علم نے اس مسئلے پر اظہار خیال کیا، ان میں سے بیشتر نے انگریزی رموز اوقاف ہی کو اختیار کرنے پر زور دیا۔ لیکن اس کا یہ مطلب بھی نہیں کہ اہل اردو رموز اوقاف کے تصور سے بالکل نا آشنا تھے۔ کم از کم مسلمانوں کے سامنے قرآن مجید کے اوقاف قرأت کا جامع و مکمل نمونہ ضرور تھا، جو صدیوں سے رائج چلا آ رہا تھا، لیکن یوں لگتا ہے کہ اس زمانے میں اردو کے لیے اوقاف کی ضرورت ہی نہیں محسوس کی گئی کیونکہ: ایک تو اہل زبان عام طور پر اپنی زبان کے معاملے میں ایسے سہاروں سے بے نیاز ہی نظر آتے ہیں۔ دوسرے اردو کی ساخت اور مزاج بھی کچھ ایسا تھا کہ رموز اوقاف کے بغیر ہی گزارہ ہو رہا تھا“ (۵)۔



## اردو جملے کی خصوصیات

- ۱۔ اردو کا جملہ انگریزی اور فارسی کے جملے کی طرح طویل تھا نہ پیچیدہ..... اردو جملہ اکہرے بدن کا ہے اور اس میں زیادہ دم خم نہیں ہے۔ زیادہ بوجھ اس کی برداشت سے باہر ہے۔ اس لیے وہ سطروں سے بڑھے تو اس کا دم پھول جاتا ہے۔
  - ۲۔ اردو جملے کی ایک اور نمایاں خصوصیت اس کا فعل پر ختم ہونا بھی ہے۔ اس سے جملے کے آغاز و اختتام کے تعین میں مدد ملی ہے۔
- اردو کی ان دو خصوصیتوں کی وجہ سے بھی اردو پڑھنے میں ایسی دشواریوں کا احساس کم ہوا ہے جن کو دور کرنے کے لیے اوقاف عبارت کی ضرورت پڑتی ہے (۶)۔

## قرآن مجید کے رموز اوقات کا استعمال کہیں اور ممکن نہیں

قرآن مجید کے رموز اوقات مسلمانوں کے پیش نظر تھے لیکن اگر ضرورت بھی ہوتی تو یہ اپنی جامعیت کے باوجود اردو کے کام نہیں آسکتے تھے۔ کیونکہ وہ رموز اوقاف سے زیادہ کہیں معنویت کے حامل ہیں (۷)۔ اس حقیقت کی تائید علامہ زرقانی کے حسب ذیل قول سے بھی ہوتی ہے، وہ فرماتے ہیں:

”قرآن مجید کے رموز اوقاف کا تعلق صرف حسن ترتیل کا لحاظ رکھنا ہی نہیں بلکہ یہ ایک مستقل فن ہے جو کئی علوم میں دستگاہ کامل کا محتاج ہے۔ ابو بکر بن مجاہد کے مطابق اوقاف قرآن کا عالم وہی شخص ہو سکتا ہے جو علم نحو، اختلاف قرأت، تفسیر، قصص اور عربی زبان پر مکمل عبور رکھتا ہو“ (۸)۔

اس کے علاوہ قرآنی اوقاف الفبائی علامتوں کی صورت میں لکھے جاتے ہیں۔ م، ط، ز، ص، ق، س، صل، صلی اور لامعروف علامتیں ہیں۔ اگر ان کا استعمال اردو میں کیا جاتا تو ان کے اردو کی علامتوں کے ساتھ خلط ملط ہونے کا امکان تھا، جس سے عبارت کی معنوی صحت



متاثر ہو سکتی تھی۔ اور سب سے بڑھ کر یہ کہ قرآن مجید کی تکریم کا بھی تقاضا تھا کہ جو چیز قرآن کے لیے ہے، وہ اسی کے لیے مخصوص رہے، کہیں اور استعمال نہ ہو۔ مسلمانوں نے اس بات کا پورا پورا خیال رکھا۔ چنانچہ آج عربی و فارسی تحریروں میں جو رموز اوقاف مروج ہیں وہ مغرب سے ماخوذ ہیں (۹)۔ اور وہ مندرجہ ذیل اصطلاحات کی صورت میں رائج ہیں:

| انگریزی نام           | عربی اصطلاح     | فارسی اصطلاح |
|-----------------------|-----------------|--------------|
| Full stop             | الوقف الكامل    | نقطہ         |
| Comma                 | شولة            | ویرگول       |
| Semi -colon           | الشولة المنقوطة | پوان ویرگول  |
| colon                 | نقطتان          | دو نقطے      |
| Mark of Interrogation | علامة الاستفهام | علامت سوال   |
| Mark of Exclamation   | علامة الاستعجاب | علامت تعجب   |
| Brackets              | قوسین           | ہلالین       |
| Dash                  | شرطہ            |              |
| Inverted Commas       | علامة الاقتباس  | کومہ         |
| Hyphen                | الواصلة (۱۰)۔   |              |

سر سید احمد خان کے ایک معاصر غلام محمد نے ”نجوم العلامات“ کے عنوان سے ایک رسالہ مرتب کیا جس میں انہوں نے قرآنی اوقاف کے مطابق اردو کے لیے رموز اوقاف وضع کیے۔ سر سید احمد خان نے ان سے اختلاف کیا اور وجوہ اختلاف کم و بیش وہی تھے جن کا اوپر ذکر کیا گیا ہے۔ ان کے مقابلے میں سر سید نے انگریزی رموز اوقاف کو قابل ترجیح قرار دیا (۱۱)۔

### اردو میں رموز اوقاف کے استعمال کا باقاعدہ آغاز

اردو میں جس مطبوعہ کتاب میں سب سے پہلے اوقاف قراءت کی پابندی کی گئی وہ



مولانا حالی کی کتاب ”یادگار غالب“ ہے۔ یہ کتاب ۱۸۹۷ء میں رحمت اللہ رعد نامی پریس کانپور میں چھپی تھی (۱۲) گو یاد بستان سرسید ہی کے ایک رکن مولانا حالی نے انہیں سب سے پہلے اپنی کتاب میں استعمال کیا (۱۳)۔

پھر ستمبر ۱۹۰۰ء میں مولوی نظام الدین حسن نے علامات اوقاف کے استخراج کے متعلق انگریزی میں ایک رسالہ شائع کیا۔ اس کے بعد ۱۹۰۲ء میں کتاب ”اوقاف العبارات“ لکھی جو ۱۹۰۲ء میں لکھنؤ سے ۶۳ صفحات میں شائع ہوئی۔ اس کتاب میں مصنف نے قرآن شریف کے رموز اوقاف سے بحث کی ہے اور آخر کے دو صفحات میں ”رموز اوقاف عبارت بطرز مغربین“ کا ذکر کیا ہے..... پھر یہ سلسلہ آگے بڑھتا ہے اور ۱۲۲ میں اس سوال پر ایک کانفرنس بلانے کی تجویز پیش کی جاتی ہے کہ ”اوقاف قرأت کے نہ ہونے سے اردو زبان کو نقصان پہنچتا ہے یا نہیں؟ اس کے لیے انگریزی اوقاف بحسنہ استعمال کیے جاسکتے ہیں یا ان میں کسی ترمیم کی ضرورت ہے؟“ ۱۹۲۳ء میں مولوی عبدالحق نے اس اجلاس کے انعقاد کی تفصیل اور اس کی سفارشات شائع کی ہیں۔ ان ہی رموز اوقاف کو انجمن ترقی اردو نے اختیار کیا اور مولوی عبدالحق نے انہیں قواعد اردو میں یوں شائع کیا:

| علامت | اردو نام       | انگریزی نام           |
|-------|----------------|-----------------------|
| !     | ختمہ           | Full stop             |
| ,     | سکتہ           | Comma                 |
| ;     | وقفہ           | Semicolon             |
| :     | رابطہ          | colon                 |
| ?     | سوالیہ         | Mark of Interrogation |
| -:    | تفصیلیہ        | colon&Dash            |
| !     | فجائیہ، ندائیہ | Mark of Exclamation   |



|            |       |                 |
|------------|-------|-----------------|
| ( ) یا [ ] | توسین | Brackets        |
| —          | خط    | Dash            |
| ..         | واوین | Inverted Commas |
| -- (۱۴) -  | زنجیر | Hyphen          |

اس کے بعد علماء زیر بحث موضوع کے متعلق کتب و مقالات لکھتے رہے، جیسے:

۱۔ مولوی عبدالحق کے مخلص دوست آن جہانی پنڈت برج موہن دتا تر یہ کیفی کی فاضلانہ تصنیف ”کیفیہ“ مطبوعہ ۱۹۴۲ء۔

۲۔ اردو املاً از مولوی غلام رسول سابق لائبریرین سٹی کالج، حیدرآباد دکن۔ یہ جامع کتابچہ قیام پاکستان کے بعد ۱۹۶۰ء میں بھارت سے شائع ہوا۔ اس کے آخری یعنی آٹھویں باب کا عنوان ہے ”رموز اوقاف اور ان کا استعمال“۔

۳۔ جامع القواعد حصہ نحو۔ یہ ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان کی فاضلانہ تصنیف ہے، جو نمبر ۲ میں مذکور کتابچے کے تیرہ برس بعد ۱۹۷۳ء میں شائع ہوئی۔

۴۔ اردو املاء از رشید حسن خان۔ ۷۰۶ صفحات پر مشتمل اس نہایت ضخیم و مدلل کتاب کو اردو بورڈ بھارت نے ۱۹۷۴ء میں شائع کیا۔ اس میں ایک باب رموز اوقاف (ص ۵۴۵) ہے۔

۵۔ اردو کیسے لکھیں از رشید حسن خان۔ یہ مختصر لیکن نہایت مفید کتاب ۱۹۷۵ء میں بھارت سے شائع ہوئی۔ اس میں رموز اوقاف کے عنوان سے ایک عمدہ باب شامل ہے۔

۶۔ ۱۹۸۰ء میں ”نگار پاکستان“ کا خصوصی شمارہ یعنی املا نمبر ڈاکٹر فرمان فتح پوری صاحب مدیر اعلیٰ کے دو طویل مقالوں ”اردو املاء اور رسم الخط“ پر مشتمل شائع ہوا (۱۵)۔

اس کے علاوہ ملک کے علمی و ادبی اور تحقیقی ادارے گاہے بگاہے زیر بحث موضوع کے

بارے میں سیمیناروں اور کانفرنسوں کا انعقاد کراتے رہتے ہیں، جیسے: اردو املاء اور رموز اوقاف

کے مسائل کے موضوع پر مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد کے زیر اہتمام ۲۳ تا ۲۵ جون ۱۹۸۵ء میں



ایک سہ روزہ سیمینار منعقد ہوا۔ اس سیمینار کا بنیادی مقصد اردو املاء اور رموز اوقاف کے استعمال میں یکسانیت پیدا کرنے کے لیے ایسے اصول وضع کرنا تھا، جنہیں اہل علم و ادب ہی نہیں بلکہ عام لوگ بھی اپنا سکیں۔ اس سیمینار کی روداد کو اعجاز راہی صاحب نے مرتب کیا اور مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد نے اسے نومبر ۱۹۸۵ء میں پہلی بار زیور طبع سے آراستہ کیا۔

## افادیت

رموز اوقاف کی افادیت یہ ہوتی ہے کہ ان کی مدد اور ان کے ذریعہ سے:

- ۱۔ ذہن جملے یا جزو جملہ کی اصلی اہمیت جان لیتا ہے۔
- ۲۔ مطلب سمجھنے میں آسانی ہوتی ہے۔
- ۳۔ نظر کو سکون بھی ملتا ہے وہ تھکنے نہیں پاتی (۱۶)۔
- ۴۔ جملوں کی تقسیم ہوتی ہے۔
- ۵۔ گفتگو کے صحیح مضمون اور مفہوم کے سمجھنے میں آسانی ہوتی ہے۔
- ۶۔ ایک طرف پڑھنے والے کی آنکھ لفظوں اور جملوں کی تقسیم کو عبور کرتے ہوئے ذہن کی راہ نمائی کرتی ہے تو دوسری طرف ذہن مسلسل اور مربوط طور پر تقریر کا مفہوم اور مطلب آسانی اور صحت کے ساتھ اخذ کر لیتا ہے۔ اس طرح کہنے والے کو یہ یقین ہو جاتا ہے کہ میری گفتگو کا مدعا صحیح سمجھا جا رہا ہے اور پڑھنے والا بجائے خود ہر طرح کی غلط فہمی سے بچ جاتا ہے۔

۷۔ ان اوقاف کی مدد سے تحریر میں تقریر کرنے والے کی آواز کا اتار چڑھاؤ بہ خوبی اور صحیح طور پر سمجھ میں آ جاتا ہے“ (۱۷)۔

سر سید احمد خان نے ان الفاظ میں رموز اوقاف کی افادیت بیان کی ہے۔ وہ انگریزی زبان کے حوالے سے لکھتے ہیں: ”..... انگریزی میں چند علامتیں مقرر ہیں جن کو پنکچویشن کہتے



ہیں۔ انگریزی عبارت میں وہ نشان ہمیشہ لگائے جاتے ہیں۔ ان کا فائدہ یہ ہے کہ عبارت کو صحیح طور پر پڑھنے میں آسانی ہوتی ہے۔ ان نشانوں سے معلوم ہوتا ہے کہ جملہ کہاں ختم ہوتا ہے؟ کہاں سے دوسرا مطلب شروع ہوتا ہے؟ کون سے لفظ ایک دوسرے سے ملے ہوئے ہیں؟ کس جگہ ملا کر پڑھنا چاہیے؟ تاکہ مطلب پڑھنے والے اور سننے والے کی سمجھ میں بخوبی آتا جائے۔

اس کے سوا ان نشانوں سے یہ بھی معلوم ہوتا ہے کہ اس عبارت میں کون سا جملہ ”جملہ معترضہ“ ہے اور کون سا ”استفہامیہ“؟ کس مقام پر مصنف نے کوئی بات تعجب انگیز لکھی ہے اور کس مطلب پر مصنف نے پڑھنے والے کی زیادہ توجہ چاہی ہے؟

علیٰ ہذا القیاس اس میں کچھ شک نہیں کہ علامات قرأت نہایت عمدہ چیز ہیں اور علم و ادب کی ترقی کے لیے نہایت مفید ہیں۔ تمام ملکوں میں جہاں علم و فنون، علم ادب و انشاء، تہذیب و شائستگی کی ترقی ہے، ان علامات کا استعمال ہوتا ہے.....“ (۱۸)۔

محمد احسن خان لکھتے ہیں: ”.....رموز اوقاف کا صحیح استعمال وقت کی اہم ضرورت ہے کیونکہ ان کی پابندی سے کلام کا صحیح مفہوم، معنویت، اہمیت، زور اور لہجہ سمجھنے میں بہت آسانی ہوتی ہے۔ ابہام اور تعقید آسانی سے رفع ہو جاتی ہے.....“ (۱۹)۔

## رموز اوقاف کی اہمیت

تحریری عمل، خواہ تحقیقی ہو یا غیر تحقیقی، میں رموز اوقاف کا صحیح استعمال بہت اہمیت کا حامل ہے۔ اگر انہیں موقع و محل کے مطابق استعمال نہ کیا جائے تو عبارت کے مفہوم میں کئی طرح کا خلل واقع ہو جاتا ہے۔ اس اجمال کی تفصیل درج ذیل اقتباسات سے ہوتی ہے:

۱۔ ”.....ان کے بغیر نہ تو زبان بامعنی ہو سکتی ہے، نہ جملوں میں سلاست، سادگی اور حسن پیدا ہو سکتا ہے اور نہ پڑھنے میں سہولت میسر آ سکتی ہے، کیونکہ سب جانتے ہیں کہ کسی



بھی عبارت میں کسی مقام کے کم یا زیادہ وقفے کے لیے اور مطالب کی تکمیل یا جاری ہونے کا اظہار کرنے کے لیے استعمال کی جانے والی یہ وہ علامات ہیں جن کے وسیلے سے اس عبارت کے مفہوم کو اس کے صحیح مضمون میں سمجھنے میں مدد ملتی ہے اور یہی ان علامات یا رموزِ اوقاف کی اہمیت ہے کہ ان کے استعمال کے بغیر یا صحیح استعمال کے بغیر معانی کچھ کے کچھ ہو سکتے ہیں، کئی کئی معانی نکل سکتے ہیں یا سرے سے عبارت بے معنی بن سکتی ہے اور ہر صورت میں ابلاغ کی صورت مسخ ہو جاتی ہے“ (۲۰)۔

۲۔ ”رو کو مت، جانے دو۔ رو کو، مت جانے دو۔ ان چار الفاظ پر مشتمل جملوں میں ایک سکتے کی جگہ تبدیل ہو جانے سے معانی الٹ جاتے ہیں۔ اس کے لکھنے والے کے ذہن میں اصلی بات کیا ہے؟ اس کا تعین اس سکتے یا رموزِ اوقاف کے صحیح استعمال سے ہی ہو سکتا ہے اور جس طرح غلط استعمال معنی بدل دیتا ہے اسی طرح عدم استعمال ابہام پیدا کر دیتا ہے“ (۲۱)۔

۳۔ ”..... ایک سکتے کا غلط استعمال یا عدم استعمال کسی قانون، ایکٹ یا رول کو اور اس کے مفہوم کو یکسر بدل سکتا ہے۔ رموزِ اوقاف کی یہ اہمیت صرف قانون اور ایکٹ تک محدود نہیں، ان کا غلط استعمال دیگر تحریروں کو بھی اسی طرح متاثر کرتا ہے“ (۲۲)۔

رموزِ اوقاف کی یہ اہمیت صرف اردو زبان ہی سے مختص نہیں۔ وقفے یا توقف کی یہ علامات ہر زبان میں اتنی ہی اہمیت رکھتی ہیں بلکہ زبان کا مزاج ان سے متعین ہوتا ہے اور یہ ہر زبان کے مزاج کے مطابق ہوتی ہیں۔ قرآن پاک میں رموزِ اوقاف کے استعمال سے اور ان کی اہمیت سے ہم سب واقف ہیں۔ کلام اللہ میں ان کے استعمال کا اہتمام پوری احتیاط سے کیا گیا ہے اور اسے چھاپتے ہوئے، ان کو صحیح جگہ اور صحیح طریقے پر استعمال کرنے اور پڑھتے ہوئے ان



کے مطابق ٹھہرنے یا نہ ٹھہرنے کی سخت تاکید کی گئی ہے۔ یہ تاکید اور اہتمام ہی ان رموز اوقاف کی اہمیت کو اجاگر کرنے کے لیے کافی ہے۔ وقف مطلق، وقف جائز، وقف مجوز، وقف مرخص و علیٰ ہذا القیاس رموز اوقاف اس امر کا تعین کرتے ہیں کہ ٹھہرنا چاہیے یا نہ ٹھہرنا چاہیے، کیونکہ ٹھہرنے یا نہ ٹھہرنے سے معانی متاثر ہوتے ہیں (۲۳)۔

## رموز اوقاف اور ان کے استعمال کے اصول

### ۱۔ حتمہ (-) Fullstop

یہ علامت، جسے عام طور پر ”ڈیش“ اور انگریزی میں ”فل سٹاپ“ کہتے ہیں، بھرپور ٹھہراؤ کی علامت ہے۔ سرسید احمد خان نے اسے ”علامت وقفہ کامل“ کہا ہے (۲۴)۔ اس کے استعمال کے مواقع یہ ہیں۔

الف۔ جب کوئی مفرد جملہ چھوٹا ہو، تو اس کے آخر میں یہ علامت استعمال ہوتی ہے، جیسے:  
زندگی کی کوئی حالت تکلیف سے خالی نہیں۔

اللہ تعالیٰ ایک ہے۔

ب۔ جب کوئی فقرہ ترتیب معانی میں پورا ہو جائے، تو وہاں یہ علامت استعمال ہوتی ہے،

جیسے: ناامیدی سے اور آزمائش میں پڑنے سے ہمارے دلوں کا جوش کم ہو جاتا ہے۔

ج۔ جب کسی اقتباس کو پیش کر کے اس کا حوالہ دیا جائے تو حوالہ نمبر کے آخر میں استعمال

ہوتی ہے، جیسے: ”.....“۔

د۔ جب کسی لفظ کو مختصر کر کے لکھا جائے، تو اس کے بعد بھی علامت وقفہ کامل لگائی جاتی

ہے، جیسے:

الح جو اختصار ہے الی آخرہ کا۔



بی۔ اے جو اختصار ہے پیچلر آف آرٹس کا۔  
ایم۔ اے جو اختصار ہے ماسٹر آف آرٹس کا۔

## ۲۔ سکتہ (،) Comma

اس علامت کا انگریزی نام ”کاما“ (comma) زیادہ مشہور ہے۔ یہ سب سے چھوٹے ٹھہراؤ کی علامت ہے اور کثرت کے ساتھ استعمال ہوتی ہے۔ اس علامت کا فائدہ یہ ہوتا ہے کہ عبارت کے ٹکڑے ایک دوسرے سے اس طرح مل نہیں پاتے کہ مطلب خبط ہو جائے۔ جب بھی ایسے لفظ اکٹھے ہو جائیں، جن کو ایک دوسرے سے الگ کیا جانا ضروری ہو، تو وہاں کاما کو استعمال کرنا ضروری ہوتا ہے۔ اس کے استعمال کے مواقع یہ ہیں:

الف۔ جب دو یا زیادہ ایک ہی قسم کے کلمے ایک ساتھ آئیں، تو ایسی صورت میں عام طور پر یہ ہوتا ہے کہ پہلے ایک یا دو لفظوں کے بیچ میں کاما آتا ہے اور آخری لفظ سے پہلے ”اور“ آتا ہے، جیسے:

یہ کتاب مفید، نصیحت آموز اور آسان ہے۔

اسلام آباد، پنڈی، لاہور اور کراچی میں بھی اسلامی کتب مل جاتی ہیں۔

وہ تو بہت سمجھ دار، ذہین اور بااخلاق ہے۔

ب۔ ندائیہ لفظوں اور جملوں کے بعد، جیسے:

جناب صدر، خواتین و حضرات! اے ماؤ، بہنو، بیٹیو۔

میرے بھائی، میری بات سن۔

او جانے والے، ادھر ہوتا جا۔

جاگنے والو، جاگتے رہو۔

ج۔ مختلف ٹکڑوں کے بیچ میں، جیسے:



- صبح ہو کہ شام، اللہ تعالیٰ کو یاد کرنا چاہیے۔
- آندھی ہو کہ پانی، روشنی ہو یا اندھیرا، تنہائی ہو یا محفل، کسی بھی حالت میں اخلاق اور سچائی کا دامن ہاتھ سے نہیں چھوڑنا چاہیے۔
- و۔ ایک ہی ڈھنگ کے جملوں کے بیچ میں، جیسے:
- میں یہاں آیا، وہاں گیا، غرض سارا دن پھرتا رہا۔
- کھیلنے کے وقت کھیلو، پڑھنے کے وقت پڑھو (۲۵)۔
- ر۔ جب کسی مفرد جملہ میں مبتدا اور خبر مرکب ہوں، تو ان کے بیچ میں علامت لگانا چاہیے، جیسے:
- کسی چیز کی طرف مستقل اور پوری توجہ، اعلیٰ طبیعت کی نشانی ہے۔
- ز۔ مرکب جملہ کے مفرد اجزاء کو علامت لگانا چاہیے، تاکہ پڑھنے میں الگ الگ پڑھے جائیں، جیسے:
- جب اچھائی نہیں رہتی، تو لوگوں کی توجہ بھی نہیں رہتی۔
- بہادروں نے جب دشمنوں کا حال سنا، تو ان پر نہایت دلیری سے حملہ کیا۔
- س۔ جب معطوف و معطوف علیہ میں حرف عطف موجود نہ ہو، تو وہاں علامت لگانا ضروری ہے، جیسے:
- عقل، ہوش، علم، ہنر سب وقت پر کام آتے ہیں۔
- وہ تو سیدھا، سادھا، ایماندار، آدمی ہے۔
- ش۔ مستثنیٰ اور مستثنیٰ منہ کے درمیان میں بھی علامت لگانا ضروری ہوتا ہے، جیسے:
- وہ شخص ایماندار ہے، مگر ست۔
- بہت بڑا عالم ہے، مگر بے عمل۔



- پر ہیزگار ہے، مگر ظاہری باتوں میں۔
- ص۔ جب حرف عطف کے بغیر کسی اسم کی متعدد صفتیں بیان کی جائیں، تو وہاں علامت سکتے کا استعمال ضروری ہے، جیسے:
- زید نہایت دانا، ہوشیار، عالم، فاضل ہے۔
- ض۔ جب جملہ میں دو دو لفظ ساتھ ساتھ ہوں، تو ہر دو کے بعد علامت لگائی جائے، جیسے:
- بے بندوبستی اور بد انتظامی، مفلسی اور محتاجی، تکلیف اور مصیبت، ویرانی و بربادی، آپس کی نا اتفاقیوں کا نتیجہ ہے۔
- ط۔ بیانیہ جملہ، مفرد فقرہ کے شروع میں ہو، خواہ بیچ میں ہو، خواہ آخر میں، اس کے ساتھ بھی علامت سکتے استعمال ہوتی ہے، جیسے:
- ان کی نیکی، احسان مندی سے، مجھے یاد ہے۔
- ان کی نیکی مجھے یاد ہے، نہایت احسان مندی سے۔
- احسان مندی سے، ان کی نیکی مجھے یاد ہے۔
- ظ۔ اگر اسم موصول کے بعد بیانیہ جملہ ہو، تو اس کے پہلے علامت سکتے ہونی چاہیے، جیسے:
- وہ، جو خم ہو کر بھی سیدھی ہو جائے، اصل تلوار ہے۔
- ع۔ جب کسی جملہ کی ترکیب الٹ ہو جائے، تو اس کے درمیان میں علامت سکتے استعمال ہوتی ہے، جیسے:
- اللہ تعالیٰ کے نزدیک کوئی چیز مشکل نہیں۔ اس مثال میں علامت سکتے کی ضرورت نہیں ہے مگر اس کی ترکیب الٹ دی جائے تو علامت سکتے لگانی ہوگی، جیسے:
- کوئی چیز مشکل نہیں ہے، اللہ تعالیٰ کے نزدیک۔



غ۔ جب کوئی فعل محذوف ہو تو وہاں علامت سکتے استعمال ہوتی ہے، جیسے: پڑھنے سے آدمی پورا انسان ہوتا ہے اور اچھی گفتگو سے، لائق اور لکھنے سے، قابل (۲۶)۔

### ۳۔ وقفہ (؛) Semi Colon

اس علامت کے ذریعے فقرہ کو دو یا زیادہ حصوں میں تقسیم کیا جاتا ہے۔ اس کے استعمال کے مواقع یہ ہیں:

الف۔ جب کئی لفظوں کے بیچ میں کاما ہو، تو اکثر ایسا ہوتا ہے کہ آخری ٹکڑے سے پہلے طویل وقفے کا محل ہوتا ہے؟ ایسے موقعوں پر آخری ٹکڑے کے بعد وقفہ لانا چاہیے، جیسے:

سچائی، خلوص، ایمانداری؛ اس سب کی ضرورت ان کو نہیں۔

ب۔ اسلام آباد، لاہور، کراچی؛ ان سب شہروں میں یونیورسٹیاں موجود ہیں۔ اس کی ایک دوسری صورت یہ ہوتی ہے: مؤظاً امام مالک، صحیح بخاری، صحیح مسلم؛ سنن ابن ماجہ، سنن نسائی، سنن بیہقی؛ فتح الباری، عمدۃ القاری، فیض الباری؛ بار بار پڑھنے کی کتابیں ہیں۔

جب کسی فقرے کا جزو اپنی ترکیب اور اپنا معنی بتانے میں پورا ہو، مگر اُس کے بعد کا

جملہ بیانیہ ہو، تو ایسی جگہ علامت وقفہ لگانی چاہیے، جیسے:

غور کرنے کی عادت ڈالو؛ کہ اس سے زیادہ عمدہ کوئی تعلیم نہیں۔

ج۔ جب ایک فقرہ کے کئی جملے علامت سکون سے علیحدہ کیے جائیں اور ان کا نتیجہ آخری

فقروں پر منحصر ہو، تو آخری فقرہ سے پہلے علامت وقفہ لگانی چاہیے، جیسے:

نیکی سے اللہ تعالیٰ خوش ہوتا ہے؛ برے کاموں سے اللہ تعالیٰ ناراض ہوتا ہے؛ نیکیوں کو

عاقبت میں جزا دے گا؛ بدکاروں کو قیامت کے دن سزا دے گا: یہ ایسے خیالات ہیں کہ

دنیا کو خوف ورجا (امید) میں رکھتے ہیں، نیکی پر رغبت دلاتے ہیں، گناہوں سے باز

رکھتے ہیں۔



## ۴۔ رابطہ (:) Colon

اس علامت کو حسب ذیل موقعوں پر استعمال کیا جاتا ہے:

- الف۔ کسی مثال سے پہلے، مثلاً: اسلام آباد پاکستان کا دارالخلافہ ہے۔  
 ب۔ کسی کہاوت سے پہلے، مثلاً: مثل مشہور ہے: جان پچی لاکھوں پائے۔  
 ج۔ کسی قول سے پہلے، مثلاً: قرآن کہتا ہے: اللہ تعالیٰ ایک ہے۔  
 د۔ کسی اقتباس سے پہلے، مثلاً: فلاں پروفیسر کے لیکچر کا نچوڑ یہ ہے: "....."  
 ر۔ سچی بات سے پہلے، مثلاً: سچ ہے: گیا وقت پھر ہاتھ آتا نہیں۔

## ۵۔ تفصیلیہ (-:) Colon &amp; Dash

یہ علامت حسب ذیل موقعوں پر استعمال کی جاتی ہے:

- الف۔ تفصیل بیان کرتے وقت، جیسے: دنیا کی چار سب سے بڑی سلطنتیں یہ ہیں: امریکہ، روس، برطانیہ اور فرانس۔  
 ب۔ کسی فہرست کو پیش کرتے وقت، جیسے: عربی مہینوں کے نام یہ ہیں: - محرم، صفر، ربيع الاول، ربيع الثاني..... الخ۔  
 ج۔ جملے میں جب کئی کئی باتیں مسلسل پیش کرنی ہوں یا کسی امر کی تفصیل پیش کرنی ہو، تب بھی اس علامت کا استعمال کرتے ہیں، مثلاً: اب میرا حال سنیے: - نماز فجر ادا کر کے قرآن کی تلاوت کی؛ ناشتہ کیا؛ اخبار دیکھا؛ اور پھر لکھنے پڑھنے کے کام میں مشغول ہو گیا۔  
 د۔ مسلسل باتوں کے اظہار کے موقع پر بھی علامت تفصیلیہ لگائی جاتی ہے، مثلاً:  
 جب اعضاء کی نافرمانی اس حد تک پہنچی کہ ہر ایک نے اپنا اپنا کام بند کر دیا، تو غریب معدے کو غذا کہاں سے میسر ہوتی؟ ہر ایک عضو کا یہ حال ہوا: - ہاتھ کف افسوس ملنے لگے، آنکھوں نے بھی رونا شروع کر دیا، کان بھی مارے ضعف کے سن ہو گئے، زبان کا



بولنا بند ہو گیا۔

### ۶۔ سوالیہ (?) Mark of Interrogation

یہ علامت ہمیشہ کسی سوالیہ فقرے کے آخر میں استعمال ہوتی مثلاً: کیا بات ہے؟ تم کہاں سے آرہے ہو؟ اس لفظ کا کیا مطلب ہے؟

### ۷۔ فجائیہ، ندائیہ (!) Mark of Exclamation

الف۔ فجائیہ: یہ علامت ان لفظوں یا جملوں کے بعد استعمال کی جاتی ہے، جن سے کوئی جذبہ ظاہر ہو، مثلاً: افو! سخت تکلیف ہے۔ شاباش! خوب سبق یاد کیا ہے۔ جذبہ کی شدت کی مناسبت سے دو علامتیں بھی لگائی جاتی ہیں، جیسے: معاذ اللہ! بس صاحب! بس!!

ب۔ ندائیہ: پکارنے، محبت، حقارت اور تعظیم کے اظہار کے لیے استعمال ہوتی ہے، مثلاً: او لڑکے! اے اللہ! اجی حضور! خواتین و حضرات! بزرگو اور دوستو!

### ۸۔ قوسین () یا [ ] Brackets

یہ علامت عام طور پر درج ذیل مقاصد کے لیے استعمال ہوتی ہے:

الف۔ جب کسی فقرہ میں کوئی جملہ معترضہ آجائے، تو اس کے شروع و آخر میں علامت قوسین استعمال کی جاتی ہے، جس سے معلوم ہو جاتا ہے کہ وہ ایک الگ جملہ ہے، جو مطلب کے درمیان آ گیا ہے، جیسے:

اس بات کو نجوبی جان لو (اور تم کو اتنا ہی جاننا کافی ہے) کہ انسان کے لیے صرف نیکی ہی اصلی خوشی ہے۔

احمد کے پاس (جو کل آپ سے ملا تھا) ایک گھڑی بکاؤ ہے۔

ب۔ جملے کے درمیان توضیحی کلمات کا اضافہ کرنے کے لیے، جیسے:



ناظم خوراک (خریداری)، ناظم خوراک (تقسیم)۔

ناظم تعلیمات (زنانہ)، ناظم تعلیمات (مردانہ)۔

ج۔ متبادل کے اظہار کے لیے، مثلاً:

افراد قوت (Man power)۔

ناظم اعلیٰ (Director General)۔

کتاب خانہ (Library)۔

د۔ ماخذ کا حوالہ دینے کے لیے، جیسے: (۱)، (۲)، (۳)، (۴)..... الخ۔

### ۹۔ خط (\_\_\_) Dash

یہ علامت درج ذیل موقعوں پر استعمال ہوتی ہے:

الف۔ جب جملہ یا یکا یک ختم ہو جائے اور کچھ چھوٹ جائے، مثلاً: سب استاد کہتے تھے کہ احمد

بڑا \_\_\_ لڑکا ہے، مگر اب پتا چلا کہ خالی شہرت ہے۔

ب۔ توضیحی لفظ یا فجائیہ کلمے کے شروع اور آخر میں، جیسے: گھر میں \_\_\_ نہ صرف میں، بلکہ

سارا خاندان \_\_\_ اکبر کا مداح ہے۔ اعظم تو \_\_\_ چشم بدو \_\_\_ بہت ہونہار ہے۔

ج۔ کبھی اس علامت کا استعمال بعد از کنایہ کسی محذوف لفظ کے ساتھ ہوتا ہے، مثلاً: میں

جاتا تھا \_\_\_ مجھ سے ملا۔ اس مقام پر کسی ایسے شخص سے کنایہ ہے، کہ جس کو پڑھنے

والا جانتا ہے یا لکھنے والے کو اس کا نام ظاہر کرنا مقصود نہیں ہے۔

### ۱۰۔ واوین ("") Inverted Commas

جب کوئی اقتباس دیا جاتا ہے، یا کسی کا قول اس کے لفظوں میں نقل کیا جاتا ہے، تو اس

کے ابتداء اور آخر میں یہ علامت استعمال کی جاتی ہے، مثلاً:

نبی کریم ﷺ نے فرمایا: "اعمال کا دار و مدار نیتوں پر ہے۔"



طالب علم نے کہا: ”میں ضرور امتحان میں پاس ہو جاؤں گا“۔

☆ کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ کسی لفظ یا مجموعہ الفاظ کے ایک خاص معنی ہوتے ہیں، یا ایک خاص طرح استعمال کیا گیا ہوتا ہے اور پڑھنے والوں کی توجہ کو اس خاص معنویت یا خاص انداز استعمال کی طرف مبذول کرانا مقصود ہوتا ہے، تو اس صورت میں بھی ان الفاظ یا اس لفظ کو ”واوین“ میں لایا جاتا ہے۔

☆ کبھی بعض اصطلاحوں کو بھی ”واوین“ میں لکھا جاتا ہے، تاکہ وہ عام عبارت سے ممتاز نظر آئیں۔

## ۱۱۔ زنجیرہ (.....) Hyphen

سریدنے سے چھوٹے خط ( \_ ) کی طرح لکھا اور انگریزی کی طرح اسے دو لفظوں سے بننے والے مرکب الفاظ کے اجزا کے درمیان لکھنے کی سفارش کی ہے، جیسے: کتب\_خانہ، ڈاک\_خانہ وغیرہ۔

لیکن یہ علامت عام نہیں ہو سکی اور اس قسم کے مرکب الفاظ فی زمانہ اس علامت کے بغیر ہی لکھے جاتے ہیں۔

ان علامت اوقاف کے علاوہ درج ذیل بھی مستعمل ہیں:

## ۱۲۔ نقطے (... ) Dots

عبارت کے آغاز، یا درمیان، یا آخر میں آنے والے نقطے اس بات کی علامت ہوتے ہیں کہ یہاں سے عبارت چھوڑ دی گئی ہے۔ محققین اس علامت حذف کو عربی وارد دونوں میں استعمال کرتے ہیں۔

## ۱۳۔ ترچھا خط (/) Oblique

الف۔ یہ ایک نئی علامت ہے، جو زیادہ تر دفتری تحریر میں استعمال ہوتی ہے، جہاں اس سے



متبادل کے اظہار کا کام لیا جاتا ہے، مثلاً: مرد/عورت یعنی مرد یا عورت۔

ب۔ اسی طرح بعض دفتری اندراجات میں متبادل اسماء و افعال کے درمیان ترچھا خط آتا ہے، جیسے:

تصدیق دی جاتی ہے کہ مسی/مسماة.....بن/بنت اس سکول کا/کی طالب علم/طالبہ رہا/رہی ہے۔

ج۔ دفتری مراسلت میں حوالہ نمبروں میں بھی ترچھے خط سے کام لیا جاتا ہے، مثلاً:

غ۔ س۔ نمبر ۱۱۱/۲۰۰۲ء/عملہ اسلام آباد (مورخہ ۲۲ ستمبر ۲۰۰۲ء) (۲۷)۔

مختصر یہ کہ آج کل تحقیقی عمل میں زیادہ تر استعمال درج ذیل رموز اوقاف کا ہوتا ہے:

۱۔ ختمہ (-) ۲۔ سکتہ (،) ۳۔ رابطہ (:)

۴۔ (سوالیہ (?)) ۵۔ ندائیہ/فجائیہ (!) ۶۔ قوسین ( )، [ ]۔

۷۔ واوین (" ") ۸۔ ترچھا خط (/) جیسے فتح الباری ۲/۱۱۱۔ ۹۔ نقطے (.....)

### رموز اوقاف کے استعمال کے بارے میں چند اہم ہدایات

۱۔ رموز اوقاف صرف وہیں استعمال کیے جائیں جہاں ان کی حقیقی ضرورت ہو (یعنی ان سے صحیح مفہوم واضح ہوتا ہو یا حسن، معنویت، اہمیت اور زور سمجھنے اور ابہام یا اشتباہ یا تعقید دور کرنے میں مدد ملتی ہو)۔

۲۔ محض کتابی یا طباعتی حسن بڑھانے کے خیال سے ان کا استعمال ہرگز نہ کیا جائے۔

۳۔ رموز اوقاف کے غلط استعمال سے اجتناب کیا جائے کیونکہ ان کے غلط استعمال سے مطلب

بالکل تبدیل یا خبط ہو سکتا ہے، جیسے: رو کو مت، جانے دو۔ رو کو، مت جانے دو۔ ان چار

الفاظ پر مشتمل جملوں میں ایک سکتے کی جگہ تبدیل ہو جانے سے معانی الٹ جاتے ہیں۔



## حوالہ جات

- ۱۔ اردو میں رموز اوقاف کا استعمال اور اصلاحی تجاویز، محمد احسن خان، در ”روداد سیمینار: اِلاء ورموز اوقاف کے مسائل“ ص ۸۳، مرتبہ: اعجاز راہی، اسلام آباد: مقتدرہ قومی زبان، ط اول: ۱۹۸۵ء۔
- ۲۔ اِلاء اور علامات وقف، ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان، در ”اردو اِلاء ورموز اوقاف“ مرتبہ: ڈاکٹر گوہر نوشاہی، ص ۱۵۳، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، ط اول: ۱۹۸۶ء۔
- ۳۔ ایضاً۔
- ۴۔ اردو میں انگریزی رموز اوقاف کے استعمال کے امکانات، ڈاکٹر محمد صدیق خان شبلی، در ”روداد سیمینار اِلاء ورموز اوقاف کے مسائل“ ص ۱۶۱، ۱۶۲، خان، غلام مصطفیٰ، اِلاء وعلامت وقف در ”حوالہ مذکور“ ص ۱۵۳، حاشیہ نمبر ۱۔
- ۵۔ ایضاً، ص ۱۵۹۔
- ۶۔ ایضاً، ص ۱۵۹، ۱۶۰۔
- ۷۔ ایضاً، ص ۱۶۰۔
- ۸۔ البرهان فی علوم القرآن، بدرالدین محمد بن عبداللہ الزرکشی، ج ۱ ص ۳۴۳، دار الفکر، بیروت، سن۔ ن۔
- ۹۔ ایضاً، ص ۱۷۱، حاشیہ نمبر ۲۔
- ۱۰۔ ایضاً، ص ۱۶۰، ۱۶۱۔
- ۱۱۔ ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان، محولہ بالا، ص ۱۵۳۔
- ۱۲۔ اردو میں انگریزی رموز اوقاف کے استعمال کے امکانات، ڈاکٹر محمد صدیق خان شبلی، صفحہ ۱۶۳۔
- ۱۳۔ دیکھئے: سابقہ دونوں حوالے۔
- ۱۴۔ مزید تفصیل کے لئے دیکھئے: اردو میں رموز اوقاف کا استعمال اور اصلاحی تجاویز، محمد احسن خان، محولہ بالا، ص ۱۹۲ تا ۱۹۷۔
- ۱۵۔ ایضاً، ص ۱۸۳۔



- ۱۶۔ ایضاً، ص ۱۸۳، ۱۸۴۔
- ۱۷۔ علامات قراءت، سرسید احمد خان، در "إطاء ورموز اوقاف" محولہ بالا، ص ۱۶۷، بحوالہ "تہذیب الاخلاق جلد ۵ بابت یکم رمضان ۱۲۱۹ھ ص ۱۶۵ تا ۱۶۹۔
- ۱۸۔ اردو میں رموز اوقاف کا استعمال اور اصلاحی تجاویز، محمد احسن خان، محولہ بالا، ص ۱۹۸، ۱۹۹۔
- ۱۹۔ اردو میں رموز اوقاف کا استعمال، ڈاکٹر ممتاز منگلوری، در "إطاء ورموز اوقاف کے مسائل" ص ۲۲۵، مرتب: اعجاز راہی، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ط اول: ۱۹۸۵ء)۔
- ۲۰۔ ایضاً، ص ۲۲۶۔
- ۲۱۔ ایضاً، ص ۲۲۸۔
- ۲۲۔ ایضاً، ص ۲۲۷۔
- ۲۳۔ علامات قراءت، سرسید احمد خان، در "إطاء ورموز اوقاف" ص ۱۷۵ بحوالہ تہذیب الاخلاق ج ۵ یکم رمضان ۱۲۱۹ھ۔
- ۲۴۔ مزید تفصیل کے لیے دیکھیے: اردو ورموز اوقاف، رشید حسن خان، در "إطاء ورموز اوقاف" محولہ بالا، ص ۱۹۳، ۱۹۴۔
- ۲۵۔ علامات قراءت، سرسید احمد خان، در "حوالہ مذکور" ص ۱۷۱ تا ۱۷۳، تھوڑے اختصار اور تصرف کے ساتھ۔
- ۲۶۔ رموز و علامات اوقاف کی فہرست بمعہ تفصیلات ان مضامین کی مدد سے تیار کی گئی ہے:
- 1۔ اطاء اور علامات وقف، ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان،۔
  - 2۔ علامات قراءت، سرسید احمد خان،۔
  - 3۔ اعراب (یا حرکات و سکنات)، ڈاکٹر مولوی عبدالحق، (بابائے اردو)۔
  - 4۔ رموز اوقاف اور ان کا استعمال، غلام رسول،۔
  - 5۔ اردو لغت بورڈ کے املائی و اعرابی اصول، نسیم امر و ہوی۔
  - 6۔ اردو میں انگریزی رموز اوقاف کے استعمال کے امکانات، ڈاکٹر محمد صدیق خان شبلی، در "إطاء ورموز اوقاف" محولہ بالا۔
  - 7۔ اردو میں انگریزی رموز اوقاف کے استعمال کے امکانات، پروفیسر علی حیدر ملک، در "إطاء ورموز اوقاف کے مسائل" محولہ بالا۔
  - ۲۷۔ دیکھیے: اردو میں رموز اوقاف کا استعمال، ڈاکٹر ممتاز منگلوری، محولہ بالا، ص ۲۰۰۔



باب ۱۴

املاء کے اصول



## املاء کے اصول

کسی زبان کی عبارت یا لفظوں کا اُس کی لکھاوٹ کے طریقے پر درست لکھنا املاء کہلاتا ہے (۱)۔ ذیل میں مقتدرہ قومی زبان کی سفارشات کی روشنی میں املاء کے اصول بیان کیے جاتے ہیں:

### الف مقصورہ

۱۔ عربی کے ایسے الفاظ جن کے آخر میں ”ی“ لکھی جاتی ہے، اس ”ی“ پر چھوٹا الف ”الف مقصورہ“ آتا ہے، مگر پڑھتے وقت ”ی“ کی بجائے الف پڑھا جاتا ہے، انہیں اُردو میں بھی عربی املاء کے مطابق لکھا جائے کیونکہ قرآن پڑھنے والے سب ہی لوگ اس سے مانوس ہیں، مثلاً:

الف۔ ادنیٰ، اعلیٰ، اولیٰ، بشریٰ، تحت الثریٰ، تعالیٰ، تقویٰ، حتیٰ، دعویٰ، سلویٰ، صغریٰ (نام)، طوبیٰ، عظمیٰ، عقبیٰ، عیسیٰ، فتویٰ، قویٰ، کبریٰ، کسریٰ، لبنیٰ، لیلیٰ، متنبیٰ، ثنیٰ، مجتبیٰ، مرتضیٰ، مصطفیٰ، مقفیٰ، موسیٰ، نصاریٰ، وسطیٰ، ہدیٰ، یتامیٰ اور یحییٰ وغیرہ۔

ب۔ بدر الدجی، خدیجۃ الکبریٰ، شمس الہدیٰ، شمس الضحیٰ، اور نور الہدیٰ وغیرہ۔

۲۔ عربی کے ان الفاظ کو اسی طرح لکھا جائے: زکوٰۃ، مشکوٰۃ، صلواۃ۔

۳۔ ان تمام صورتوں میں بھی الف عربی طریقے ہی سے لکھا جائے: الہ، الہی، الہیات،

لہذا، ہذا۔

۴۔ بعض عربی الفاظ میں کسی حرف کے اوپر زبر لکھا جاتا ہے، اُردو میں اس الف کو متعلقہ



حرف کے بعد مستقل حرف کی حیثیت سے لکھ دیا جاتا ہے، یہ دونوں طرح لکھنا جائز ہے جیسے:

الحق اسحاق، اسمعیل اسماعیل، رحمن رحمان،  
مولانا مولانا، یسین یاسین، علیحدہ علیحدہ علاحدہ۔

### الف اور الف مقصورہ

عربی کے ان الفاظ کو اردو میں الف سے لکھا جاتا ہے۔ انہیں اسی طرح درست سمجھنا چاہیے: تقاضا، تماشا، سلیمان، صفرا (صغیر کی جمع)، کبرا (کبیر کی جمع)، لقمان، ماجرا، مبرا، مصفا، معرا، مقتدا، منقا، مولا اور ہیولا وغیرہ۔

### الف لام اور عربی کے مرکبات

عربی کے ایسے مرکبات جن کے درمیان ”الف لام“ لکھا جاتا ہے، انہیں اردو میں ”الف لام“ کے ساتھ ہی لکھا جائے، مثلاً:

۱۔ اصل الاصول، امیر البحر، انا الحق، بالترتیب، بالفصل، بالفعل، بالکل، بین الاقوامی، حتی الامکان، حتی المقدور، حتی الوسع، شمس الہدیٰ، عبد الجبار، عبد الجلیل، عبد الغنی، عبد الغفار، عبد الغفور، عبد اللطیف، علی الحساب، علی الخصوص، علی العموم، فی البدیہ، فی الحال، فی الفور، فی الوقت، ما بہ الاتیاز اور نور الہدیٰ وغیرہ۔

۲۔ بدر الدجی، بین السطور، صدر الصدور، عبد الرزاق، عبد الرحمن، عبد الرحیم، عبد الستار، عبد السلام، عبد السمیع، علی الترتیب، علی الرغم، علی الصباح، مافی الضمیر، مسیح الدین، مسیح الرحمن اور مسیح الزمان وغیرہ۔

### الف بجائے ہائے مختفی

۱۔ عربی اور فارسی کے ماسوا اردو میں مروج دیگر تمام زبانوں کے ایسے الفاظ جن کے آخر



میں ”الف“ کی آواز آتی ہے، اُن کے آخر میں ”الف“ ہی لکھا جائے، مثلاً:  
 آرا، آریا، اڈا، اکھاڑا، باڑا، بسترا، بگولا، بلبلا، بُندا، بھانجا، بھروسا، بھوسا، بھیا، بارا،  
 پانسا، پپتا، پتا، پٹاخا، پڑکا، پُرسا، پلندا، تارا، تولیا، تھانا، ٹڈا، ٹھیکا، جوشیلا، جھروکا، چاولا، چوراہا،  
 چونا، چھبیللا، چھلا، دلیا، دوپٹا، دورخا، ڈاکا، ڈاکیا، ڈبا، ڈبیا، ڈراما، راجا، رکشا، سمجھوتا، شلوکا، فرما  
 (فنِ طباعت سے تعلق)، کا کا، کبسوڈیا، گھونسلا، میلا اور ٹھیلا وغیرہ۔

۲۔ عربی اور فارسی کے ایسے الفاظ جنہیں اُردو میں بہ تصرف استعمال کیا جاتا ہے، اُنہیں  
 دونوں طرح لکھا جاسکتا ہے۔ جیسے:

چغہ چغا، خاکہ خاکا، صافہ صافا، صوفیاء صوفیا،  
 طلبہ طلباء، طلبا، نصیبہ نصیبا، نشیلہ نشیلا، نقشہ نقشا  
 ۳۔ شق نمبر ۱ کے تحت آنے والے ایسے الفاظ جن کے آخر میں ”الف“ لکھنے سے معنی کا  
 التباس ہو سکتا ہے، اُن کے آخر میں ”ہائے مختلف“ لکھی جائے، مثلاً:

آنہ (ایک سکہ) آنا (مصدر) بدلہ (انتقام) بدلا (بدلنا مصدر سے)

پتہ (شناخت) پٹا (نباتات) پیسہ (ایک سکہ) پیسا (مصدر)

تولہ (وزن) تولا (تولنا مصدر سے)، خاصہ (کھانا) خاصا (خصوصیت)۔

۴۔ وہ اسمائے خاص جو ہائے مختلف سے لکھے جا رہے ہیں، بدستور اسی طرح لکھے جائیں،  
 جیسے: ٹھٹھ، دینہ، ڈسکہ، سوہاوہ، کوئٹہ، گوجرہ، مانسہرہ، مندرہ، کوہالہ، آگرہ، ڈھاکہ،  
 افریقہ، امریکہ، مکہ (معظمہ)، مدینہ (منورہ)۔

۵۔ فارسی کے بعض الفاظ اُردو میں ”الف“ سے لکھے جا رہے ہیں، اُنہیں ”ہ“ سے لکھنا  
 چاہیے جیسے: گلہ، مرہ۔

۶۔ عربی، ترکی اور فارسی کے بعض الفاظ کو اُردو میں ”ہ“ سے لکھنے کا غلط رواج ہو رہا ہے،



انہیں ”الف“ سے لکھا جانا چاہیے، مثلاً: تمغا، حلوا، سقا، شوربا، عاشورا، قورما، ملغوبا اور معما وغیرہ۔

۷۔ ان الفاظ کو ”ت“ کی بجائے ”ط“ سے لکھا جائے: طوطا، طشت، طشتری، طمانچہ، طہامسپ، غلطیاں۔

۸۔ ان الفاظ کو ”ت“ سے لکھنا بہتر ہے: تیار، تیراک، ناتہ

## تنوین

۱۔ اردو میں عربی کے ایسے بہت سے الفاظ مستعمل ہیں جن پر دو زبر لکھے جاتے ہیں اور آواز نون کی طرح ادا ہوتی ہے، جیسے: عموماً (عمومن) اور مثلاً (مثلن) وغیرہ۔ اردو میں ایسے الفاظ کو لکھتے ہوئے لفظ کے آخر میں ”الف“ کا اضافہ کر کے اُس پر تنوین لگاتے ہیں، مثلاً:

آنا، اتفاقاً، اسماء، اصالتاً، اندازاً، حقیقتاً،  
شکایتاً، ضرورتاً، عادتاً، عمداً، فطرتاً، فعلاً،  
فوراً، مثلاً، مروتاً، نبأ، نسلأ۔

۲۔ عربی کے تائے مدورہ ”ة“ پر ختم ہونے والے الفاظ جو اردو میں چھوٹی ”ہ“ سے لکھے جاتے ہیں۔ ان پر عربی قاعدے سے ہی تنوین لگائی جائے، مثلاً:

ارادہ سے ارادۃ، دفعہ سے دفعۃ، کلیہ سے کلیۃ۔

## ذ-ز

۱۔ درج ذیل الفاظ کے املا کا ایک طریقہ نہیں، انہیں کبھی ”ذ“ اور کبھی ”ز“ سے لکھ دیا جاتا

ہے۔ معیاری املا کے لیے ان الفاظ کو ”ذ“ سے لکھا جائے: باج گزار، بذلہ، پذیرائی، خدمت گزار، دل پذیر، درگذر، ذات، ذرا، ذرہ، راہ گزار، سرگذشت، شکر گزار، عرضی



گذار، گذارش، گذارنا، گذشتہ، گذرگا، گذرنا اور مال گذاری وغیرہ۔

۲۔ ان الفاظ کو ”ز“ سے لکھا جائے: آزر (حضرت ابراہیم کے والد چچا)، ازدحام،

زرتشت، زکریا، زخار، گزند اور ناگزیر وغیرہ۔

ژ

یہ الفاظ ”ژ“ سے لکھے جائیں: ارژنگ، اژدر، اژدھا، پرشن، پڑمردگی، پڑمردہ،

ٹیلی وژن۔

### ہائے مخلوط (ھ)

جن الفاظ میں ہائے مخلوط کی آواز ہو یعنی ”ہ“ کی آواز دوسرے حرف سے مل کر مرکب آواز

دیتی ہو، جیسے: بھ، پھ، تھ، ٹھ، وغیرہ وہ الفاظ ہمیشہ ہائے دو چشمی (ھ) سے لکھے جائیں مثلاً:

۱۔ ابھی، تبھی، کبھی، انھیں، تمھیں، جنھیں، تمھارا، تمھاری، چولھا، دولھا، دولھن، کمھار،

کولھو، ننھا، بھنبھناھٹ، پھڑ پھڑانا، پھوپھا، پھوپھی، تھرتھرانا، چھن چھناھٹ، گھگھڑ،

گھنگھورا اور گھونگٹ وغیرہ۔

۲۔ مندرجہ ذیل الفاظ کے تلفظ میں اکثر ہائے مخلوط کی تکرار ہوتی ہے، مثلاً: بھا بھی،

ڈھنڈھورا لیکن تلفظ کے پیش نظر لکھنے میں صرف جزو اول ہائے مخلوط (ھ) سے

لکھا جائے:

بھا بھی، بھبک، بھبکی، بھبوکا، بھنبوڑ، بھوبل، ڈھنڈورا، ڈھونڈا، ڈھیٹ، گھنگرو،

گھنگریالے، اور گھونگٹ وغیرہ۔

### نون غنہ

الف۔ بعض الفاظ میں نون غنہ کی آواز کے مقام و مخرج کے بارے میں اختلاف پایا

جاتا ہے۔ چونکہ ان الفاظ کا املا ذیل کی صورت میں رواج پا چکا ہے۔ اس لیے انھیں اسی



طرح لکھا جائے:

۱- پاؤں، چھاؤں، داؤں، کھڑاؤں، گاؤں۔

۲- بہنگی، لہنگا۔

ب- درج ذیل الفاظ کا دونوں طرح لکھنا درست ہے:

|       |        |        |         |
|-------|--------|--------|---------|
| پیترا | پینترا | چوچلہ  | چونچلہ  |
| جھوک  | جھونک  | سپولیا | سنپولیا |
| سیکڑا | سینکڑا | کیچلی  | کینچلی  |
| کیچوا | کینچوا | موچھ   | مونچھ   |

واؤ

۱- قدیم املا کے رواج کے مطابق آج بھی بعض الفاظ کو کہیں کہیں پیش (ے) کے بجائے ”

واؤ“ سے لکھا جاتا ہے جو درست نہیں۔ ان کو وائے کے بغیر ہی یوں لکھا جائے: ادھار،

بڑھاپا، پہنچانا، پہنچے، چغا، دکان، دلار اور دلاری وغیرہ۔

۲- مندرجہ ذیل الفاظ دونوں طرح یعنی ”واؤ“ کے بغیر پیش سے یا ”واؤ“ سے لکھنے

درست ہیں:

|        |         |       |        |
|--------|---------|-------|--------|
| پر بیا | پور بیا | دگنا  | دوگنا  |
| دہرا   | دوہرا   | رمالی | رومالی |
| لہار   | لوہار   | مشاپا | موٹاپا |
| نکیلا  | نوکیلا۔ |       |        |

واؤ معدولہ (و)

۱- درج ذیل الفاظ میں اگرچہ ”واؤ“ کی آواز موجود نہیں ہے لیکن ”واؤ“ لکھی جاتی



ہے۔ اس لیے انھیں اسی طور پر لکھا جائے، نیز درسی کتابوں میں واؤ معدولہ کا نشان (واؤ کے نیچے چھوٹی سی لکیر مثلاً خوشی، خواجہ) ڈالنا بہتر ہوگا:

استخوار، افسانہ خواں، تنخواہ، خدانخواستہ، خواب، خواجہ، خوار، خواہ، خواہش، خود، خودی، خورد، خورشید، خوش، خوشامد، خوش آمدید، خوش نما، خوشنود، خویش اور درخواست وغیرہ۔

۲۔ ان الفاظ کا ”واؤ“ معدولہ کے ساتھ لکھنا درست نہیں، یہ بغیر ”واؤ“ کے لکھے جائیں: برخاست، خُرد (بردار خُرد، خُرد وکلاں)، خُردہ (خردہ فروش، خُردہ گیر)۔

### ہمزہ اور الف

۱۔ عربی کے ایسے الفاظ جن کے آخر میں ہمزہ لکھا جاتا ہے لیکن اُردو نے انھیں بغیر ہمزہ

کے اپنا لیا ہے۔ انھیں ہمزہ کے بغیر ہی لکھا جائے، مثلاً: ابتداء، ادبا، استثناء، استفتاء، اشتہاء، املاء، انتہاء، انشاء، اولیا، بہاء، ثناء، جزاء، حکما، ضیاء، طلباء، علما، فقر اور منشا وغیرہ۔

۲۔ شق نمبر ۱ میں درج الفاظ اگر کسی ترکیب کا حصہ ہوں تو اس صورت میں ان میں ہمزہ کا لکھنا ضروری ہے جیسے: ان شاء اللہ، بہاء الحق، بہاء الدین، بہاء اللہ، ثناء الحق، ذکاء اللہ، ضیاء الحق، ضیاء الدین، علاء الدین اور منشاء الحق وغیرہ۔

۳۔ شق ۱ کے ایسے الفاظ جن پر تنوین لگ سکتی ہے، تنوین لگاتے ہوئے ان میں ہمزہ برقرار رہے گا، مثلاً: ابتداء، بناء، جزاء۔

۴۔ عربی کے ایسے الفاظ جن کے درمیان الف کے اوپر ہمزہ لکھا جاتا ہے اُردو میں بھی انھیں اسی طرح لکھا جائے، مثلاً: تاثر، تأسف، تأمل، توأم، جرأت، قرأت۔

### ہمزہ اور واو

۱۔ ان عربی الفاظ کو اُردو میں بھی عربی املا کے مطابق لکھا جائے: مؤثر، مؤخر، مؤدت، مؤذن، مؤرخ، مؤسس، مؤکل، مؤلف اور مؤنث وغیرہ۔



۲۔ اردو کے ایسے الفاظ جن کے آخر میں واؤ لکھی جاتی ہے اور ہمزہ کے بغیر ان کی آواز مکمل نہیں ہوتی ان میں ہمزہ لکھا جائے، مثلاً: الاؤ، الجھاؤ، بلاؤ، بچاؤ، بناؤ، بہاؤ، بھاؤ، پاؤ (وزن)، پلاؤ، پھاؤ، پھراؤ، تاؤ، جھکاؤ، چاؤ، چناؤ، چھڑکاؤ، داؤ، دباؤ، راؤ، کھاؤ، گھٹاؤ، گھماؤ، لگاؤ اور مناؤ وغیرہ۔

۳۔ ایسے مصادر جن کا صیغہ امر ”الف“ پر ختم ہو، ان کے تمام صیغوں میں ”ہمزہ“ کا استعمال ہوگا اور جہاں امر ”الف“ کی بجائے کسی اور حرف پر ختم ہو، ”حرف واؤ“ کا استعمال ہوگا، جیسے: کھانا سے کھا، کھاؤ اور کرنا سے کر، کرو، آؤ، اٹھاؤ، اڑاؤ، بتاؤ، بچاؤ، بچھاؤ، بہاؤ، باؤ (پانا سے)، پڑھاؤ، جاؤ، جلاؤ، سناؤ، گاؤ، گھٹاؤ، گھماؤ، لاؤ اور منگاؤ وغیرہ۔

۴۔ جمع کی صورت میں آنے والے مندرجہ ذیل الفاظ ”ہمزہ“ اور ”واؤ“ کے ساتھ لکھے جائیں گے:

|       |         |      |        |
|-------|---------|------|--------|
| بہو   | بہوؤں   | بچھو | بچھوؤں |
| سادھو | سادھوؤں | ہندو | ہندوؤں |

۵۔ ایسے مصادر جن کا امر ”الف“ یا ”واؤ“ پر ختم ہو، مثلاً: آنا جانا، دھونا وغیرہ۔ ان کے تمام متعلقہ صیغوں میں ”ہمزہ“ استعمال کیا جائے، مثلاً:

الف۔ آئے، جائے، دھوئے، سنائے۔

ب۔ گئے، نئے۔

ج۔ آئے، اٹھائے، بتائے، پکائے، جائے، چلائے، سنائے، سوئے، فرمائے،

کھائے، کھوئے، گھمائے، لائے، ملائے اور منگوائے وغیرہ۔

د۔ آئیو، پائیو، جائیو اور کھائیو وغیرہ۔



## ”ہمزہ“ اور ”ی“

ایسے مصادر جن کا صیغہ امر ”الف“ یا ”واو“ پر ختم نہ ہو، مثلاً: اٹھنا، بولنا، جینا، چاہنا۔ ان کے کسی بھی صیغے میں ”ہمزہ“ استعمال نہیں ہوگا، انہیں ”ہمزہ“ کے بغیر ”ی“ سے لکھا جائے، مثلاً: جیسے، دیے، سے، کیے، لیے، چاہیے، اٹھیے، بولیے، بیٹھیے، پیے، پیسے، تولیے، دیجیے کیجیے، کھولیے، لیجیے، ملیے اور مریے وغیرہ۔

## ”ہمزہ“ اور ”یے“

وہ الفاظ جن میں ”یے“ کے ساتھ ہمزہ کی واضح آواز موجود ہو، انہیں ہمزہ اور ”یے“ کے ساتھ لکھا جائے، جیسے:

الف۔ چائے، رائے، سائے، سرائے اور گائے وغیرہ۔  
 ب۔ آئے، اترائے، اٹھوائے، اگائے، بتائے، بجائے، بچائے، بٹھائے، پڑھائے، بھگائے، بھگوئے، بھلائے، بنائے، پائے، پھرائے، پکائے، پھلائے، پھنسائے، پہنائے، پھیلانے، جتانے، جگانے، جمائے، چبانے، چرائے، چڑھائے، چلانے، چھڑانے، دھلانے، رلانے، ستانے، سجانے، سنانے، سلانے، کمانے، کہلانے، کھدانے، کھلانے، گنائے، گنوائے، گہنائے، گھبرائے، گھٹانے، لائے، لبھائے، لٹکانے، مٹانے، ملانے، منانے، منگانے، منگوائے، نبھانے، نہانے، ہرانے، ہلانے اور ہنسانے وغیرہ۔

## ”ہمزہ“ اور ”ی“ (آزمائش)

۱۔ عربی اور فارسی کے بعض الفاظ میں اصلاً ”ی“ استعمال ہوتی ہے لیکن اردو میں ان کے تلفظ میں ہمزہ کی آواز واضح طور پر نکلتی ہے۔ اس لیے انہیں ”ی“ کی بجائے ہمزہ ہی سے لکھا جائے، مثلاً: آزمائش، آسائش، افزائش، پیائش، ستائش، فرمائش، گنجائش، نمائش، آسندہ، پائندہ، نمائندہ، پائندگی، نمائندگی، سائل، قائل، مائل، شائق، فائق،



لائق، ذائقہ، معائنہ اور مضائقہ وغیرہ۔

۲۔ عربی کے ایسے الفاظ جن میں دو ”یے“ ایک ساتھ آتی ہیں، اردو میں انھیں لکھتے ہوئے

پہلی ”یے“ کو ہمزہ سے بدل دیا جاتا ہے۔ انھیں ہمزہ سے لکھنا جائز ہے، مثلاً:

تخیل \_\_\_ تخیل      تزیین \_\_\_ تزیین

تعیین \_\_\_ تعین      تمیز \_\_\_ تمیز

۳۔ ان تراکیب اضافی میں ”یائے“ کا استعمال نہیں ہوگا بلکہ ہمزہ کے نیچے زیر کا استعمال

ہوگا، جیسے: سوء ادب اور سوء ظن وغیرہ۔

۴۔ اس نوعیت کے غیر عربی و فارسی الفاظ بھی ہمزہ سے لکھے جائیں: ارائیں، اناؤنسر،

بائبل، پائل، پاؤڈر، پائلٹ، پرائیویٹ، ٹائپ، ٹائٹل، ٹائلٹ، ٹائم، ڈائنا، مائیٹ،

ڈیزائن، رامائن، سائنس، فائل، فینائل، کمپاؤنڈر، گانگہ، گھائل، میسر، نارائن، ٹانگ

اور ٹانگہ وغیرہ۔

۵۔ ان الفاظ میں ہمزہ اور ”یے“ کی بجائے صرف ہمزہ لکھا جائے، مثلاً: بے مانگی،

پانجامہ، پاندار، باکمال، جاندار اور ہمسائیگی وغیرہ۔

### ہمزہ اور اضافت

۱۔ اگر مضاف کے آخر میں ہائے محنتی ہو، تو اضافت کے لیے ہمزہ کا استعمال کیا جائے،

جیسے: تشنہء کربلا، پیمانہء صبر، جذبہء دل، جلوہء مجاز، خانہء خدا، دیوانہء دنیا، فسانہء دل،

نالہء شب، نذرانہء عقیدت، نشہء دولت اور نغمہء فردوس وغیرہ۔

۲۔ جو لفظ ”الف“ یا ”واو“ پر ختم ہوتا ہے، اس کے بعد اضافت کے لیے ہمزہ اور ”یے“

(دیئے) لکھی جائے، جیسے: اردوئے معلیٰ، بوئے گل، دُعائے نیم شبی، دُنیائے فانی،

صدائے دل، کوئے یار، گفتگوئے خاص اور نوائے ادب وغیرہ۔



۳۔ ”یے“ ”ی“ اور واؤ پر ختم ہونے والے بعض الفاظ کی اضافت، ہمزہ کے بغیر بہتر ہے، مثلاً: پیروی میر، سعی لا حاصل، شناساے دیرینہ، گادِ زمین، نفی خودی، نفی غیر، وادی سندھ اور وحی آسمانی وغیرہ۔

۴۔ مرکب اضافی کی ان صورتوں میں ہمزہ استعمال ہوگا: پئے نظر کرم، درپئے آزار، مئے باقی۔

## فصل و وصل

۱۔ مرکب الفاظ، جہاں تک ممکن ہو، ملا کر نہ لکھے جائیں، جیسے: آب پارہ، آتش کدہ، آج کل، آن پڑھ، آن گھر، بت خانہ، پیش تر، بے جان، پھل کاری، توپ خانہ، جے پور، خوب تر، خوب سیرت، خوب صورت، دانش کدہ، دل لگی، دل نوز، ستم گر، شاہ جہاں آباد، غم کدہ، کم تر، کم ترین، گل بدن، گل دستہ، گل ریز، گل کاری، گل کدہ، ہم عصر اور ہم نام وغیرہ۔

۲۔ ان الفاظ کو جوڑ کر لکھنا بہتر ہے: انجان، باغبان، باسانی، بحد ادب، بخدا، بخوبی، بدولت، بذات خود، براہ راست، بشرطیکہ، بعینہ، بغیر، بہتر، بہر حال، بہم، بیدل، بیخودی، پاسبان، تاجور، تا وقتیکہ، جاں بلب، جانور، جبکہ، جستجو، چنانچہ، چونکہ، حالانکہ، خاکسار، خوشتر، خوشبو، زمیندار، سخنور، سوگوار، شاخسانہ، شاہراہ، شرمسار، شہباز، صاحب دل، غرضیکہ، غمگسار، غمگین، فنکار، کمزور، کیونکہ، گفتگو، گمراہ، گناہگار، مشکبو اور نگہبان وغیرہ۔

۳۔ انگریزی اور دوسری یورپی زبان کے الفاظ کو جہاں تک ہو سکے، چھوٹے ٹکڑوں میں لکھنا چاہیے، تاکہ پڑھنے میں سہولت ہو، جیسے: ان فارمل (INFORMAL)، انسٹی ٹیوٹ (INSTITUTE)، پارلی منٹ (PARLIAMENT)، ٹیلی فون (TELEPHONE)، ٹیلی وژن (TELEVISION)، ٹیلی گرام



(TELEGRAM)، فونوگرام (PHONOGRAM)، کیفے ٹیریا (CAFETERIA)۔

۳۔ ان الفاظ کو جوڑ کر لکھنا مناسب ہے: اسٹیشن (STATION)، انسپکٹر (INSPECTOR)،

انسٹرکٹر (INSTRUCTOR)، ڈاکٹر (DOCTOR)، ریڈیو (RADIO)، ریلوے

(RAILWAY)۔

## امالہ

۱۔ ایسے الفاظ جو ”ہ“ یا ”الف“ پر ختم ہوتے ہوں یا ایسے الفاظ جن کے آخر میں ”ہ“ ہے

لیکن وہ ”الف“ کی آواز دیتے ہوں اور ان کی جمع بڑی (یے) سے بن سکتی ہو، ایسے

الفاظ کے بعد حروف مغیرہ (کو، سے، میں، پر، نے، کے، کا، کی، تک وغیرہ) کے آنے

کی صورت میں ان کا ”الف“ یا ”ہ“ بڑی ”یے“ میں بدل جائے گا۔ مثلاً:

آگرہ \_ آگرے کا تاج محل، اڈہ \_ اڈے پر،

افسانہ \_ افسانے کا عنوان، دیوانہ \_ دیوانے کی بڑ،

لڑکا \_ لڑکے نے، معاملہ \_ اس معاملے میں،

مسئلہ \_ اس مسئلے کو، مرغا \_ مرغے کی ٹانگ،

مکہ مدینہ \_ مکے سے مدینے تک۔

۲۔ تاہم عربی فارسی کے الفاظ جو ”الف“ پر ختم ہوتے ہیں امالہ قبول نہیں کرتے (البتہ

مقامات اور شہروں کے ساتھ امالہ استعمال ہوگا)، جیسے: املا، انشاء، دنیا، صحرا، مکے،

مدینے، کعبے، چارسدے اور کوئٹے وغیرہ۔

۳۔ بعض ایسے مرکبات جن کے پہلے لفظ کی جمع بن سکتی ہے، وہ بھی امالے کے ساتھ لکھے

جائیں گے، چاہے کوئی حرف مغیرہ ان کے بعد آئے یا نہ آئے، جیسے: پہرے دار،

تانگے والا، ذمے دار، رکشے والا، سٹے باز، مزے دار اور مقدمے باز وغیرہ۔



- ۴۔ بعض ایسے الفاظ جو الف نون غنہ (اں) پر ختم ہوتے ہیں اور اُن کی جمع ”می“ نون غنہ (یں) سے بنتی ہے، وہ بھی امانہ قبول کریں گے، جیسے: دھویں سے اور کنویں سے۔
- ۵۔ عربی کے ایسے الفاظ جو ”ع“ یا ”عہ“ پر ختم ہوتے ہیں اور ان کی آخری آواز ”الف“ کی نکلتی ہے، وہ بھی امانہ قبول کریں گے، جیسے: برقعے میں، جمعے کو، (اس) قطعے میں، قلعے کے اندر، مصرع، مرقع، مقطوع اور موقع وغیرہ۔

## اعراب

اردو میں اعراب کی تفصیل حسب ذیل ہے:

- زبر: جیسے بن، گل      زیر: جیسے دن، گل (کلِ کل)
- پیش: جیسے بن، گل      مد: جیسے آم، آج
- جزم یا سکون: جیسے دوست، گوشت      تشدید: جیسے تمنا، موثر

☆ درسی کتب میں اعراب ضرور لکھے جائیں لفظ کے پہلے حرف پر زبر ہو تو وہ عام طور پر لکھا نہیں جاتا۔

## علامات

مندرجہ ذیل علامات کو بھی موقع اور محل کے مطابق عبارت میں استعمال کیا جائے:

= ایضاً تخلص کی علامت

الْح: پورا شعر یا عبارت لکھنے کی بجائے اس کے چند ابتدائی کلمات لکھ دیے جاتے ہیں

اور ان کے بعد الْح لکھ دیا جاتا ہے اس سے مراد ”الی آخرہ“ یعنی اس کے آخر تک ہے۔

”رحمۃ اللہ علیہ/علیہا وغیرہ کے لیے

”رضی اللہ تعالیٰ عنہ/عنہما عنہم عنہما کے لیے۔ علامت استعمال نہ کی جائے۔

”صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم۔ پورا لکھا جائے۔



ع مصرعے کی علامت

کذا کسی عبارت کو نقل کرتے وقت یہ لفظ لکھتے ہیں، اس کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ

اصل عبارت اسی طرح ہے خواہ وہ غلط ہی کیوں نہ ہو۔

تاریخ کو ظاہر کرنے کے لیے یہ علامت استعمال ہوتی ہے اور عدد کے بعد

لکھی جاتی ہے۔ مثلاً ۱۲/۱۲ اپریل، ۱۵/۱ اکتوبر

اعداد

۱۔ اعداد کو لفظوں میں لکھتے ہوئے یوں لکھا جائے:

|         |        |          |
|---------|--------|----------|
| .....   | .....  | ایک      |
| دوسرے   | دونوں  | دو       |
| تیسرے   | تینوں  | تین      |
| چوتھے   | چاروں  | چار      |
| پانچویں | پانچوں | پانچ     |
| چھٹے    | چھیوں  | چھ، چھٹے |
| ساتویں  | ساتوں  | سات      |
| آٹھویں  | آٹھوں  | آٹھ      |
| نویں    | نوؤں   | نو       |
| دسویں   | دسوں   | دس       |

۲۔ الف۔ گیارہ سے اٹھارہ تک کے الفاظ ہائے ملفوظ سے لکھے جائیں: گیارہ،

بارہ، تیرہ، وغیرہ۔

ب۔ گیارہ سے اٹھارہ تک اعداد ترتیبی اور عصری میں ہائے ملفوظ ہائے مخلوط



سے بدل جاتی ہے: گیارھواں، بارھواں، تیرھواں وغیرہ۔

۳۔ اکتالیس سے اڑتالیس تک کی گنتی میں لام کے بعد ”ی“ کا استعمال ضروری ہے جیسے:

اکتالیس، بیالیس، تینتالیس، چوالیس وغیرہ۔

۴۔ یہ الفاظ نون غنہ کے ساتھ لکھے جائیں: تینتیس، چونتیس، پینتیس، پینتالیس،

سینتالیس (۲)۔



## حوالہ جات

- ۱- اطاء کے قاعدے، غلام رسول، در "اردو اطاء و رموز اوقاف"، مرتبہ: ڈاکٹر گوہر نوشاہی، ص ۷۳، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، ط اول: ۱۹۸۶ء۔
- ۲- اردو میں فنی تدوین، ڈاکٹر ایم ایس ناز، مرتب: ص ۳۳۹ تا ۳۷۷، ادارہ تحقیقات اسلامی بین الاقوامی اسلامی یونیورسٹی۔ اسلام آباد، طبع اول: ۱۹۹۱ء۔



باب ۱۵

حوالہ جاتی اصول اور  
کتابیات کی تیاری کے طریقے



## حوالہ جاتی اصول اور کتابیات کی تیاری کے طریقے

### حوالہ دینے کی ضرورت و افادیت

تحقیقی عمل صرف محقق کے ذاتی افکار و خیالات پر مبنی نہیں ہوتا بلکہ دوسروں کی کاوشیں بھی اس کے تحقیقی مقالہ میں شامل ہو جاتی ہیں۔ ان کاوشوں کا اعتراف کرنے کے لیے حوالہ دینے کی ضرورت ہوتی ہے۔ چنانچہ مشہور محقق عبدالرزاق قریشی لکھتے ہیں: ”تحقیقی مقالہ بڑی حد تک دوسرے مصنفین کی کتابوں، تحریروں، دستاویزوں اور روئدادوں وغیرہ پر مشتمل ہوتا ہے۔ اس لیے حاشیہ میں ان کا اعتراف کرنا اور انھیں اہمیت دینا ضروری بلکہ محقق کا اخلاقی فرض ہے۔ یہ اعتراف صرف عبارت کی حد تک نہ ہو، بلکہ اگر مصنف کے خیالات سے استفادہ کیا گیا ہے تو اس کا اقرار بھی ضروری ہے“ (۱)۔ اسی ضرورت کو کرنل غلام سرور نے یوں اجاگر کیا ہے، لکھتے ہیں:

”علمی تحقیق کا بنیادی تقاضا یہ ہے کہ جو کچھ ضبط تحریر میں لایا جائے یا جس بات کا زبانی اظہار کیا جائے، اس کی ٹھوس بنیاد موجود ہو اور اس کے ثبوت میں مستند حقائق اور شواہد فراہم کیے جائیں۔ ایسا تحقیقی مقالہ جس میں دلائل کے ساتھ حوالہ جات نہ دیئے گئے ہوں، ہرگز معیاری قرار نہیں دیا جاسکتا، بلکہ اسے ایک فرد کے اپنے ذہن کی اختراع تصور کیا جاتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ اپنی تحقیقی کاوشوں کو واقع بنانے کی غرض سے، محققین جدید کتب خانوں کا سہارا لیتے ہیں اور کتب خانوں کے ماہر عملے کی ہدایات اور راہ نمائی کی روشنی میں اپنی تحقیقی کاوشوں کو پایہ تکمیل تک پہنچاتے ہیں“ (۲)۔



## افادیت

حاشیہ میں حوالوں کے کئی فوائد ہیں، مثلاً:

- ۱- ان کے ذریعے دوسروں کی کاوشوں کے اعتراف کا علم ہوتا ہے۔
- ۲- محقق کے استعمال کیے ہوئے مواد کے مستند ہونے کا بھی پتہ چلتا ہے۔
- ۳- اگر کوئی شخص اسی موضوع پر یا موضوع کے کسی خاص پہلو سے متعلق زیادہ تفصیل جاننا چاہتا ہے تو آسانی سے وہاں تک اس کی رسائی ہو سکتی ہے (۳)۔

## حوالہ دینے کے مقامات:

اس وقت تین جگہوں پر حوالے دینے کا رواج ہے:

## پہلی جگہ: ہر صفحے کا نچلا حصہ

ہر صفحے کے نیچے ایک لکیر کھینچ کر اس کے حوالے تحریر کر دیئے جاتے ہیں۔ اس طریقہ کا ایک فائدہ یہ ہے کہ قاری کو اس صفحے سے متعلق مآخذ کا وہیں پتہ چل جاتا ہے۔ اور دوسرا فائدہ یہ ہے کہ اگر نمبر درج کرنے میں رد و بدل ہو گیا ہو تو صرف اسی صفحے کے نمبروں میں تبدیلی کرنا پڑتی ہے۔ لیکن اس طریقہ میں ایک خامی یہ ہے کہ حوالہ جات دیکھنے کی وجہ سے قاری کی پڑھنے میں تسلسل قائم نہیں رہتا اور دوسری خامی یہ ہے کہ کبھی کبھار ایسا بھی ہوتا ہے کہ کسی صفحے کے حوالہ جات اور حواشی مکمل طور پر اس صفحے پر نہیں آ سکتے۔ اس لیے دوسرے صفحے پر منتقل کرنے پڑتے ہیں، پھر اس صفحے پر لکھنا پڑتا ہے کہ بقیہ صفحہ فلاں پر اور دوسرے صفحے پر بھی لکھنا پڑتا ہے کہ بقیہ از صفحہ فلاں۔ اسی صفحے پر یہ بھی لکھنا پڑتا ہے حوالہ جات صفحہ ہذا۔

## دوسری جگہ: ہر باب کا اختتام

حوالہ جات ہر باب کے آخر میں دیئے جاتے ہیں اور باب کے ابتداء سے جتنے بھی



نمبر شمار بنتے ہیں اس کی ترتیب کا اعتبار کیا جاتا ہے، مثلاً: حوالہ نمبر ۱، ۲، ۳، ۴... الخ۔

اس مقام پر حوالے دینے کے طریقہ کا فائدہ یہ ہے کہ مقالے کو ٹائپ کرتے وقت آسانی رہتی ہے۔ لیکن قاری کو حوالہ دیکھنے میں تھوڑی دقت ہوتی ہے۔ اگر نمبر لکھنے میں کہیں غلطی ہو جائے تو دوبارہ باریک بینی سے پڑتال کرنے کی ضرورت ہوتی ہے اور بعض اوقات ساری ترتیب بدلتی پڑتی ہے، مثلاً:

نمبر ۵ کے بجائے ۴ یا ۳ کے بجائے ۵ لکھا گیا اور آخری ۱۸ ہے تو نمبر ۴ یا ۵ سے دوبارہ نمبر تبدیل کرنے پڑیں گے۔ بہر کیف حوالہ جات کے اس طریقہ میں محقق کو بیدار مغز رہنے کی ضرورت ہوتی ہے۔

### تیسری جگہ: کتاب یا مقالے کا اختتام

حوالہ دینے کا تیسرا طریقہ یہ ہے کہ کتاب یا مقالے کے آخر میں اس کے ابتداء سے اختتام تک کے حوالے مسلسل نمبروں کی صورت میں دے دیے جاتے ہیں، جیسے حوالہ نمبر ۱ تا ۳۴۰ (۴)۔

### چوتھی جگہ

چوتھی جگہ کا تعلق زیادہ تر رسالوں اور مجلات میں چھپنے والے تحقیقی مقالوں سے ہے وہ یہ ہے کہ تحقیقی مقالے کے آخر میں حوالے دے دیے جاتے ہیں اور جب کسی کتاب کا حوالہ دینا ہوتا ہے تو پہلی بار پوری معلومات درج کر دی جاتی ہیں، اس طرح جتنے نمبر مقالہ میں ہوں گے ان کے حوالے مقالہ کے آخر میں درج ہوں گے۔

مختصر یہ کہ کسی بھی حوالے کو حاشیہ میں درج کرنے کے لیے دو طریقے ہیں:

اول یہ کہ مضمون یا کتاب کے ہر باب میں ہر صفحے پر حواشی کے نمبر ۱، ۲ سے شروع کیے

جائیں اور صفحہ ختم ہو جانے کے بعد، نئے صفحے پر حواشی کے نمبر از سر نو ۱، ۲ سے درج کیے جائیں۔



دوسرا طریقہ یہ ہے کہ مضمون یا کتاب کے کسی باب یا حصے کے ختم ہونے تک حواشی کے نمبر مسلسل لکھے جائیں۔ یہ طریقہ زیادہ مناسب ہے۔ خاص طور جب مقالے کو شائع کرنا ہو تو یہ طریقہ زیادہ آسان معلوم ہوتا ہے۔

### حوالہ دینے کے مروجہ طریقے

عام طور پر حوالہ دینے کے تین طریقے رائج ہیں: ایک طریقہ کی ابتداء مصنفین کے مشہور ناموں سے ہوتی ہے، دوسرے کی اصلی ناموں سے اور تیسرے طریقہ کی ابتداء کتب کے ناموں سے ہوتی ہے۔ ذیل میں ان تینوں طریقوں کو بیان کیا جاتا ہے:

#### پہلا طریقہ

حوالہ دینے کا پہلا طریقہ یہ ہے کہ مصنف یا مرتب یا مدون، کے مشہور نام کو پہلے لکھا جاتا ہے۔ پھر کتاب کا نام، پھر ناشر، پھر سن اشاعت، پھر ایڈیشن (اگر ہے)، پھر جلد نمبر (اگر ہے)۔ پھر صفحہ نمبر، مثلاً:

۱۔ عثمانی، مفتی محمد رفیع، کتابت حدیث عہد رسالت و عہد صحابہؓ میں (ادارۃ المعارف، کراچی، جولائی ۱۹۹۳ء) ص ۱۲۔

۲۔ الذہبی، ڈاکٹر محمد حسین، التفسیر والمفسرون (مکتبہ وھبہ، الطبعة الثالثة (یا ط: ۳)۔ ۱۳۰۵ھ-۱۹۸۵ء)، ج ۱ ص ۱۰۔

#### دوسرا طریقہ

اس طریقہ کے مطابق حوالہ کی ترتیب یوں ہے:

مصنف یا مرتب کا نام، کتاب کا نام، ایڈیشن (اگر ہے)، مقام اشاعت، ناشر، سال اشاعت، جلد (اگر ہے)، باب (اگر ہے)، صفحہ یا صفحات، مثلاً:



۱۔ محمد حسین آزاد، آب حیات، طبع یازدہم (لاہور، ۱۹۱۱ء)، ص ۱۰۱۔ اس حوالے کو مختصر آیوں دیا جاسکتا ہے:

محمد حسین آزاد، آب حیات، طبع یازدہم، ص ۱۰۱ (۵)۔

### تیسرا طریقہ

حوالہ دینے کے تیسرے طریقہ کی ترتیب یوں ہے:

الف۔ کتاب کا مکمل نام یا مشہور نام، (اگر ہو)۔ مؤلف کا پورا نام، مشہور نام جیسے ابن کثیر، ابن جریر، ایڈیشن (اگر ہو)۔ مقام اشاعت، ناشر، سال اشاعت، جلد (اگر ہو)، باب (اگر ہو)، صفحہ یا صفحات، مثلاً:

تفسیر القرآن العظیم، یا تفسیر ابن کثیر (مشہور نام)، حافظ عماد الدین ابوالفداء اسماعیل بن کثیر، (یا صرف ابن کثیر)، ط: ثانیہ، ۱۹۶۶ء، ج ۱ ص ۱۱۳۔

ب۔ کتاب کا نام یا مشہور نام، مؤلف کا نام، مقام اشاعت، سن اشاعت، ایڈیشن (اگر ہو)، جلد، پھر صفحہ، مثلاً:

التفسیر والمفسرون، مؤلف محمد حسین الذہبی، مکتبہ وھبہ، ۱۹۸۵ء، الطبعة الثالثة (یا ط: ۳)، ج ۱ ص ۱۹۔

ج۔ کتاب کا نام، مؤلف کا نام، جلد نمبر (اگر ہو)، صفحہ، ناشر و مقام اشاعت، طبع نمبر (اگر ہو)، سن طباعت (اگر ہو)، مثلاً:

التفسیر والمفسرون، مؤلف محمد حسین ذہبی، ج ۱، ص ۱۰۴، مکتبہ وھبہ، ط: ۳، ۱۹۸۵ء۔

اس بحث سے ثابت ہوا کہ ”حوالہ دینے کا کوئی مخصوص طریقہ یا اصول معین نہیں ہے،

لیکن جو طریقہ بھی اختیار کیا جائے اس کی پابندی شروع سے آخر تک کی جائے۔ بہتر طریقہ یہ ہے

کہ جب کسی کتاب کا پہلی بار حوالہ دیا جائے تو اس کی تھوڑی سی تفصیل دے دی جائے۔ مکمل تفصیل

کتاب کے آخر میں کتابیات یا فہرست مآخذ کے تحت ہوگی لیکن مضمون کی صورت میں مکمل تفصیل



اسی موقع پر دینا ہوگی“ (۶)۔

## اختصارات کا استعمال

حوالہ میں بعض ہدایات اور صراحتیں مسلسل دی جاتی ہیں۔ انہیں مختصر طور پر بیان کرنے کے لیے فن تحقیق کے ماہرین نے کچھ اختصارات متعین کر رکھے ہیں تاکہ وقت اور جگہ کی بچت ہو سکے۔ ان کے استعمال میں غفلت نہ برتی جائے ورنہ پڑھنے والے کو اور خاص طور پر ممتحن کو زحمت ہوگی اور تحقیق کا معنوی حسن متاثر ہوگا۔ ذیل میں ان اختصارات (اشارات، علامت) کو بیان کیا جاتا ہے:

۱۔ ایضاً، نفس المرجع (یہی حوالہ یعنی حوالہ اسی مرجع سے ہو جس کا متصلاً اوپر ذکر ہے۔ انگریزی مترادف = ibid ہے۔

۲۔ ایضاً ص، نفس المكان (یہی حوالہ صفحہ، یعنی جب دوسرا اقتباس اسی صفحے اور اسی جلد سے ہو جس سے اوپر کا حوالہ ہے۔ انگریزی مترادف = loc cit)۔

۳۔ حوالہ سابق، سابق حوالہ، المرجع السابق (جب کہ ایک حوالہ چھوڑ کر اوپر کے مرجع کا ذکر ہو۔

انگریزی مترادف = op. cit)

۴۔ تص (تصویر)

۵۔ تر (ترجمہ)

۶۔ تن (تاریخ ندارد)

۷۔ س۔ ن (سن اشاعت موجود نہیں)

۸۔ م۔ ن (مقام اشاعت ندارد)

۹۔ و دیگر (مصنفین یا مولفین کی تعداد دو سے زیادہ ہو تو پہلے مولف یا مرتب یا

مصنف کا نام لکھ کر دیگر وغیرہ لکھ دیا جائے۔



- ۱۰۔ ج (اگر تصنیف یا تالیف کی ایک سے زیادہ جلدیں ہوں)
- ۱۱۔ ص (صفحہ، صفحات)
- ۱۲۔ م ک (ملاحظہ کریں، موازنہ کریں فلاں حوالے سے)
- ۱۳۔ مترجم (صاحب ترجمہ)
- ۱۴۔ محولہ بالا (اوپر آیا ہوا حوالہ)
- ۱۵۔ مخطوطہ (ہاتھ سے لکھا ہوا، قلمی نسخہ)
- ۱۶۔ مرتب (صاحب تدوین و ترتیب) (۷)۔

## حوالہ دینے کے اصول

- ۱۔ اگر فوراً اسی مصنف اور اسی کتاب کا حوالہ دینا ہو تو وہ یوں ہوگا:
- ایضاً، یا نفس المصدر یا نفس المرجع، انگریزی میں سے "ibid" لکھا جائے گا۔
- ۲۔ اگر صفحہ کوئی اور ہو تو ایضاً وغیرہ کے بعد صفحہ لکھ دیا جائے۔
- ۳۔ اگر اسی کتاب کے کئی صفحات کا حوالہ دینا ہو تو انہیں یوں لکھا جائے: ص ۲۱ تا ۲۹۔
- ۴۔ اگر ایک صفحہ کے بعد کئی صفحات کا حوالہ دینا پڑ جائے تو یوں لکھا جائے: ص ۱۲ و بعد یا و ما بعدھا، انگریزی میں اس کو "PP 12FF" لکھا جاتا ہے۔
- ۵۔ اگر ایک صفحہ کے بعد مسلسل دوسرے صفحہ کا حوالہ بھی دینا ہو تو یوں لکھا جائے: ص ۱۹ تا ۲۰، یا ص ۱۹، ۲۰۔
- ۶۔ اگر کسی کتاب کا حوالہ نمبر ۹ بنتا ہے اور حوالہ نمبر ۱۱ بھی اسی سے ہو تو مؤلف کا مشہور نام، جو پہلی بار لکھا ہے، دوبارہ لکھا جائے، ساتھ محولہ بالا، یا المرجع السابق (of- cit) لکھا جائے۔
- اگر وہی مشہور نام کسی اور مؤلف کا بھی ہو تو ایسی صورت میں مشہور نام لکھ کر ساتھ کتاب کا نام ضرور لکھا جائے۔



کتب کے ناموں سے حوالے دینے کی صورت میں کتاب کا نام دوبارہ لکھا جائے اور باقی معلومات میں اوپر والا اصول اپنایا جائے۔

۷۔ کسی کتاب کے مصنفین یا مولفین ایک سے زیادہ ہونے کی صورت میں درج ذیل اصول اپنائے جائیں:

الف۔ اگر مصنف یا مولف دو ہوں تو دونوں کے مکمل نام کتاب پر مکتوب ترتیب کے مطابق لکھے جائیں۔ اگر کوئی مشہور نام ہے تو اسے پہلے لکھا جائے، پھر کتاب کا نام اور دیگر معلومات درج کی جائیں، مثلاً:

فاروقی، محمد احسن، ہاشمی سید نواز احسن، ناول کیا ہے (درداکادمی، لاہور، ۱۹۲۳ء) ص ۳۰ تا ۳۳۔

ب۔ اگر مصنفین تین سے زیادہ ہوں تو کتاب پر مکتوب پہلے مصنف کا نام لکھ کر وغیرہ، اور دیگر حوالہ جاتی معلومات درج کی جائیں۔

۹۔ کسی کتاب کے مرتبین ایک سے زیادہ ہونے کی صورت میں درج ذیل طریقے اپنائے جائیں:

الف۔ اگر ایک مرتب ہو تو پہلے مرتب کا نام لکھ کر بریکٹ میں لفظ (مرتب) لکھ دیا جائے تاکہ معلوم ہو کہ یہ مرتب ہے نہ کہ مصنف، پھر مرتب شدہ کتاب کا نام اور دیگر حوالہ جاتی معلومات درج کی جائیں۔

ب۔ اگر دو مرتب ہوں تو ان کے نام جس ترتیب سے کتاب پر ہیں اسی کو برقرار رکھا جائے۔ پھر کتاب کا نام اور دیگر معلومات۔

ج۔ اگر مرتبین دو سے زیادہ ہوں تو پہلے مرتب کا نام لکھ کر ”دیگر“ یا ”وغیرہ“ لکھا جائے پھر دیگر معلومات دی جائیں۔



- ۱۰۔ رسائل و جرائد میں شائع شدہ مضامین کا حوالہ دیتے وقت میں یہ ترتیب اپنائی جائے:
- مضمون / مقالہ نگار کا نام، ”مقالے / مضمون کا نام“، رسالے / جریدے کا نام، جریدے کی جلد اور نمبر شمار، سال اشاعت، مقام اشاعت، صفحہ / صفحے نمبر۔
- ۱۱۔ کسی کمیشن یا کسی کمیٹی کی جانب سے لکھی ہوئی کتاب کا حوالہ دیتے وقت اس کمیشن یا کمیٹی کا نام دیا جائے پھر دیگر حوالہ جاتی معلومات درج کی جائیں۔
- ۱۲۔ متعدد مولفین کے مجموعہ مقالات میں سے کسی مقالے کا حوالہ دینا ہو تو پہلے مقالہ نگار کا نام، پھر مقالہ کا نام پھر مجموعہ مقالات کا نام پھر ایڈیٹر کا نام پھر باقی کوائف بیان کیے جائیں۔
- ۱۳۔ مخطوطے کا حوالہ دیتے وقت پہلے مصنف کا نام پھر مخطوطے کا نام، پھر لائبریری کا نام (جہاں مخطوطہ ہے)، پھر نمبر مخطوطہ اور اس کا صفحہ نمبر درج کیا جائے۔
- ۱۴۔ دائرۃ المعارف سے کسی مضمون کا حوالہ دیتے وقت پہلے مقالہ نگار کا نام پھر مقالہ کا نام، پھر دائرۃ المعارف کا نام، اور اس کے بعد دیگر حوالہ جاتی کوائف درج کیے جائیں۔ اگر مقالہ نگار کا نام نہ ہو تو صرف دائرۃ المعارف کا نام، پھر جلد نمبر، پھر صفحہ نمبر اور مقام طباعت کو درج کیا جائے۔
- ۱۵۔ کسی کتاب کے ترجمے کا حوالہ دیتے وقت پہلے اصل کتاب کا نام پھر ترجمے کا نام (اگر ہو)۔ پھر مترجم کا نام اور دیگر کوائف، جیسے: راغب الطباخ، الثقافة الاسلامیہ کا اردو ترجمہ بنام ”تاریخ افکار و علوم اسلامی“، مترجم: افتخار احمد بلخی... الخ۔
- ۱۶۔ غیر مطبوعہ مقالے سے حوالہ دینے کی صورت میں پہلے مقالہ نگار کا نام پھر مقالہ کا نام پھر اس ادارے کا نام جس نے مقالے پر ڈگری ایوارڈ کی ہے، پھر لائبریری کا نام اور نمبر برائے مقالہ اور صفحہ کا نمبر لکھ دیئے جائیں۔
- ۱۷۔ قوامیس (ڈکشنریوں) سے حوالہ دیتے وقت ڈکشنری تیار کرنے والے کا نام، پھر ڈکشنری کا



نام پھر لفظ کا مادہ لکھ دیا جائے۔ یہاں صفحہ نمبر لکھنے کی ضرورت نہیں ہوتی۔

۱۸۔ قرآن مجید کی کسی آیت کا حوالہ دینا ہو تو پہلے سورۃ کا پورا نام، پھر بریکٹ میں قرآنی ترتیب کے مطابق سورۃ نمبر، پھر رابطہ (Colon) (:) کے بعد آیت نمبر لکھ دیا جائے، جیسے: سورۃ البقرۃ (۲): ۱۳۔

۱۹۔ اگر کسی تفسیر کا حوالہ دینا ہو تو پہلے مفسر کا نام پھر تفسیر کا نام پھر جلد (اگر ہو) پھر صفحہ اور دیگر معلومات لکھی جائیں۔

۲۰۔ اگر کسی حدیث کی کتاب کا نام دینا ہو تو پہلے محدث کا نام، پھر کتاب، پھر باب، حدیث نمبر بھی لکھا جاسکتا ہے۔ یہاں صفحہ نمبر لکھنے کی ضرورت نہیں ہوتی۔

۲۱۔ حدیث کی کسی کتاب کی شرح کا حوالہ دیتے وقت پہلے شارح کا نام، پھر اس کتاب کا نام جس کی وہ شرح ہے پھر کتاب کے مولف کا نام، پھر شرح کی جلد کا نمبر (اگر ہو) ... الخ۔

۲۲۔ محقق کو ہر حال میں اصل مآخذ کا حوالہ دینے کی کوشش کرنی چاہیے۔ اگر اس تک رسائی نہ ہو سکے تو ثانوی مآخذ کے ذریعے اصل مآخذ کا حوالہ دے۔ اس کا اصول یہ ہے کہ:

پہلے ثانوی مآخذ (مصدر) کے مولف کا نام، پھر ثانوی مآخذ کا نام پھر لفظ ”بحوالہ“ لکھ کر بنیادی (اصل) مآخذ کے مولف کا نام لکھا جائے، پھر مصدر کا نام، پھر دیگر حوالہ جاتی معلومات درج کی جائیں۔

۲۳۔ سرکاری دستاویزات کا حوالہ دیتے وقت پہلے ان کے مولف یا مصنف کا نام (اگر کوئی ہو)، پھر اس ادارے کا نام جس نے ان دستاویزات کو شائع کیا ہے۔

۲۴۔ اخبار کے مضمون کا حوالہ دیتے وقت پہلے مقالہ نگار کا نام، پھر مضمون، پھر اخبار کا نام، پھر کالم کا نمبر (اگر ہو)، پھر مقام اشاعت، پھر تاریخ سن و ماہ اور صفحہ نمبر لکھا جائے۔

۲۵۔ عدالتی کارروائی کا حوالہ دینا ہو تو پہلے کورٹ کے نام، پھر کیس کے نام اور تاریخ و سن کو درج



کیا جائے۔

۲۶۔ کانفرنس کی غیر مطبوعہ کارروائی کا حوالہ دیتے وقت پہلے اس ادارے کا نام جس نے کانفرنس منعقد کرائی ہے، پھر اس موضوع کا نام جس پر کانفرنس ہوئی ہے، پھر سال و مقام انعقاد کانفرنس اور صفحہ درج کیا جائے۔

۲۷۔ ریڈیو یا ٹیلی وژن کے پروگرام کا حوالہ دیتے وقت پہلے موضوع پروگرام، پھر اسٹیشن کا نام جہاں سے وہ پروگرام نشر ہوا ہے، پھر شہر کا نام جہاں وہ اسٹیشن واقع ہے، پھر تاریخ، سن اور وقت کا اندراج کیا جائے (۸)۔

## حوالوں کو ترتیب دینے کے طریقے

حاشیہ نگاری میں عملی طور پر مختلف حوالوں کو یوں ترتیب دیا جاتا ہے:

### مصنف کا نام

- ۱۔ حاشیہ میں کسی مصنف کا نام درج کرنے کے بعد سکتہ (،) لگایا جائے گا۔ مثلاً: محمد زکریا، معین الرحمن، صدیق جاوید،
- ۲۔ اگر مصنف نے کتاب کے سرورق پر اپنا پورا نام نہیں دیا بلکہ نام کے صرف ابتدائی حروف استعمال کیے ہیں تو حاشیہ میں اسے یوں ہی لکھا جاتا ہے، مثلاً: ن۔م۔م۔راشد، اے۔بی۔اشرف، ا۔د۔نسیم،
- ۳۔ بیشتر ادیب اپنے اصل نام کی جگہ قلمی نام استعمال کرتے ہیں، حواشی میں ان کا قلمی نام ہی لکھا جاتا ہے۔ لیکن اگر کسی خاص وجہ سے مصنف کا اصل نام لکھا جائے تو اسے قوسین میں درج کرنا چاہیے، مثلاً: میراجی [شاء اللہ]۔
- ۴۔ اگر مصنف کا نام کتاب پر موجود نہ ہو، مگر یہ معلوم ہو کہ مصنف کون ہے تو اس صورت میں مصنف کا نام قوسین [ ] میں تحریر کیا جائے گا۔



۵۔ اگر مصنف کا علم ہو مگر اس کے بارے میں شک ہو تو مصنف کا نام تو سین میں سوالیہ نشان کے ساتھ لکھا جائے گا [؟]۔

۶۔ اگر مصنف کا تعین نہ کیا جاسکتا ہو، تو تو سین میں نام معلوم لکھ سکتے ہیں [نام معلوم]۔ مگر جدید دور میں اس قسم کا اندراج متروک ہو رہا ہے صرف کتاب کا نام لکھ دیا جاتا ہے جس کا مطلب یہ ہے کہ مصنف نام معلوم ہے۔

### کتاب کا عنوان

مصنف کے نام کے بعد کتاب کا عنوان تحریر کیا جائے گا۔ کتاب کا عنوان تحریر کرتے وقت مندرجہ ذیل نکات کو پیش نظر رکھنا چاہیے:

۱۔ تمام شائع شدہ کتابوں کو مطبوعہ مواد کے زمرے میں رکھا جائے گا۔ اس نوعیت کے مواد میں کتابوں، پمفلٹوں، جرائد، اخبارات، رسائل، متحرک فلموں، کہانیوں، مقالوں، نظموں اور لیکچروں کے عنوانات کے نیچے خط کشیدہ استعمال کیا جاتا ہے، مثلاً: نیا شعرا افق، فتنہ سامانی، دل، شام کی منڈیر سے، اردو ادب کی تحریکیں۔

۲۔ اس شائع شدہ مواد کے ساتھ صرف واوین (Brackets) کا استعمال کیا جاتا ہے: کتابوں کے ابواب یا مختلف حصے، جرائد میں شائع شدہ مقالات، کہانیاں، نظمیں، لیکچرز، موعظت، موسیقی کی دھنیں، ریڈیو اور ٹی وی کے پروگرام وغیرہ۔

۳۔ اس غیر مطبوعہ مواد کا حوالہ بھی واوین میں آئے گا: ٹائپ شدہ رپورٹیں، روکدائیں اور تحقیقی مقالے۔

۴۔ دنیا کی مقدس کتابوں کے عنوانات کے نیچے نہ واوین لگاتے ہیں اور نہ ہی خط کشیدہ۔ قرآن، بائبل، زبور۔



## کتاب کے اشاعتی کوائف

- ۱۔ کتاب کے نام کے بعد کتاب کے اشاعتی کوائف کو قوسین میں تحریر کیا جائے گا۔ ان کوائف میں مقام اشاعت، ناشر کا نام اور سنہ اشاعت شامل ہے۔ ان کوائف کو درج کرتے وقت مقام اشاعت کے بعد رابطہ (Colon) لگے گا، اور ناشر کے بعد سکتہ (Comma) اور کتاب کے صفحے کا حوالہ قوسین کے باہر درج ہوگا، مثلاً: (کراچی، انجمن ترقی اردو، ۱۹۷۴ء) ص ۲۲ (لاہور، مجلس ترقی ادب، ۱۹۸۱ء) ص ۲۰۔
- ۲۔ مقام اشاعت میں صرف شہر کا نام لکھنا کافی ہے۔ اگر ناشر کے نام کے ساتھ متعدد شہروں کے نام دیے گئے ہیں تو اس ادارے کے مرکزی شہر کا نام استعمال کرنا چاہیے، مثلاً: بعض کتابوں پر غلام علی اینڈ سنز کے نام کے ساتھ لاہور، کراچی، حیدرآباد درج ہیں۔ چونکہ اس ادارے کا مرکزی دفتر لاہور میں ہے۔ اس لیے مقام اشاعت میں لاہور کا اندراج ہوگا۔ (لاہور: غلام علی اینڈ سنز، ۱۹۸۱ء)۔
- ۳۔ اگر کتاب کے دو ناشر ہوں تو دونوں کے نام درج ہوں گے۔ (لاہور: اقبال اکادمی پاکستان، ۱۹۷۷ء)، (لاہور: مجلس ترقی ادب، ۱۹۷۸ء)۔
- ۴۔ بعض حالات میں کوئی کتاب کسی ناشر کی طرف سے کسی دوسرے ادارے کے لیے شائع کی جاتی ہے۔ اس صورت میں دونوں کا نام ناشر کی جگہ آئے گا: (لاہور: ملک سراج دین اینڈ سنز برائے پنجاب ٹیکسٹ بک بورڈ، ۱۹۸۳ء)۔
- کسی غیر ملکی ناشر کے ادارے کے نام کا ترجمہ نہیں کیا جاتا ہے، یہ نام ہو بہو درج ہونا چاہیے، مثلاً: (شکاگو: شکاگو یونیورسٹی پریس، ۱۹۷۳ء)، (بوسٹن: ہوگٹن مفلن کمپنی، ۱۹۸۱ء)۔
- ۵۔ بعض کتابوں میں ناشر کا نام تو درج ہوتا ہے مگر مقام اشاعت درج نہیں ہوتا۔ اس حالت میں قوسین میں مقام اشاعت کی جگہ [م۔ن] یعنی مقام ندر دکھ دیا جاتا ہے۔



۶۔ کبھی کبھی کچھ کتابوں پر مقام اشاعت درج نہیں ہوتا لیکن اگر کسی داخلی شہادت سے مقام اشاعت کا تعین ہو سکے تو اس صورت میں مقام اشاعت کو قوسین میں تحریر کیا جائے گا، مثلاً: ([لاہور] مطبع یوسفی، ۱۸۹۸ء)۔ لیکن اگر مقام اشاعت کے بارے میں تعین نہیں ہے تو پھر اسے سوالیہ نشان کے ساتھ ظاہر کرنا ہوگا۔

۷۔ وہ کتاب جو مقام اشاعت اور سنہ اشاعت سے محروم ہو، مگر اس پر ناشر کا نام موجود ہو تو اسے اس طریقے سے لکھا جائے گا: (م۔ن، مطبع احمدی، س۔ن)۔ کتاب میں سنہ اشاعت درج نہ ہو تو اس مقام پر بھی [سن۔ن] لکھنا ہوگا: (لاہور: س ن پبلی کیشنز، سن۔ن)۔

کسی داخلی شہادت سے کتاب کا سنہ اشاعت معلوم ہو جائے تو اس کو یوں لکھیں گے: (لکھنؤ: مطبع منشی نولکشور: [۱۸۸۵])۔ اگر سنہ اشاعت کے بارے میں یقین نہیں ہے تو اسے سوالیہ نشان کے ساتھ ظاہر کرنا ہوگا [؟۱۸۸۵] (۹)۔

### ذیلی حاشیہ (فٹ نوٹ) کے عمومی اصول

- ۱۔ تمام ذیلی حاشیوں اور حوالوں کے علیحدہ نمبر ہوں گے۔ نمبر شمار مقالے کے متن اور حاشیہ دونوں جگہ دیئے جائیں گے۔
- ۲۔ مقالے کے ہر باب کے علیحدہ نمبر ایک باب کی حد تک مسلسل نمبر شمار دیئے جائیں گے۔
- ۳۔ نمبر شمار کے لیے عربی اعداد، ۱، ۲، ۳، ... استعمال ہوں گے، نہ کہ 1, 2, 3, ... (۱۰)۔

### ثانیاً: کتابیات کی تیاری کے طریقے

#### کتابیات کی اہمیت و افادیت

مصنف کتاب لکھنے کے دوران جن کتابوں، رسالوں اور اخبارات سے استفادہ کرتا



ہے۔ ان تمام کی تفصیل کتاب کے آخر میں شامل کر دیتا ہے۔ اس فہرست کو کتابیات (Bibliography) کہتے ہیں۔ کسی کتاب یا تحقیقی مقالے کے اصل اہمیت اس کی تیار کردہ کتابیات (Bibliography) اور اشاریے (Index) سے لگائی جاسکتی ہے۔ کتابیات میں کتاب کے مصنف، عنوان، اشاعت، اور سن طباعت وغیرہ کی مکمل معلومات موجود ہوتی ہے۔ کتابیات کی اہمیت محتاج بیان نہیں۔ محقق کے لیے علمی مواد کی تلاش ایک مسئلہ ہوتا ہے۔ کتابیات اس مرحلہ پر محقق کی راہ نمائی کرتی ہے۔ اس کے فرائض اور دائرہ کار کو اس طرح بیان کیا جاسکتا ہے:-

- ۱۔ کتابیات، محقق کے لیے بنیادی ذریعہ معلومات فراہم کرتی ہے۔
- ۲۔ کتاب کے مندرجات کے بارے میں کتابیات کے ذریعے کافی حد تک علم ہو جاتا ہے، مثلاً: کتاب کے مصنف و عنوان کے علاوہ کتاب کب اور کہاں شائع ہوئی۔ کتنے صفحات پر مشتمل ہے، وغیرہ وغیرہ۔ صفحات کی تعداد سے یہ اندازہ بھی لگایا جاسکتا ہے کہ اس میں مطالعے کے لیے کسی قدر مواد موجود ہے۔
- ۳۔ نایاب کتابوں کے بارے میں معلومات عموماً کتابیات کی مدد سے حاصل ہوتی ہیں۔ کتب خدانخواستہ ضائع بھی ہو جائے تو کتابیات میں اس کی تفصیل باقی رہتی ہے۔
- ۴۔ کتابیات کی بدولت پتہ چلتا ہے کہ دنیا میں علمی مواد کتابی شکل میں کتنی تعداد میں شائع ہو رہا ہے، کن موضوعات پر تحقیقی کام جاری ہے اور کسی ایک ملک میں علمی مواد کے شائع ہونے کی رفتار کیا ہے۔

۵۔ علمی مواد کو کتابیات کی وساطت سے آئندہ نسلوں کے لیے محفوظ کیا جاسکتا ہے۔

کتابیات علم کو نسل در نسل منتقل کرنے کا ایک ذریعہ ہے۔ کتاب کی ہیئت (Form) مختلف ہو سکتی ہے، مثلاً: عام یا سادہ (Enumerative)، اشاراتی (Annotated) توضیحی اور تجرباتی (Analytical)۔



معیاری کتابیات کی خصوصیات میں صحت مواد، یکسانیت اندراج اور وضاحت کا ہونا لازمی ہے۔ ناموں کے غلط ہجوں اور صفحات کے غلط اندراج سے کتابیات کی صحت پر ناخوشگوار اثر پڑتا ہے اور اس کی افادیت مجروح ہو جاتی ہے۔

کتابیات تیار کرتے وقت ایک اور بات کا لحاظ رکھنا ضروری ہے۔ مفصل کتابیات بوجہ درج کرنا مقصود نہ ہو تو لامحالہ مواد کا مناسب انتخاب کرنا پڑے گا۔ انتخاب کرتے وقت اس بات کا خاص خیال رکھا جانا چاہیے کہ کسی مروجہ معیار کو اختیار کیا جائے، تاکہ بنیادی اندراجات کتابیات میں شامل ہونے سے رہ نہ جائیں (۱۰)۔

مختصر یہ کہ آج کل مقالات کے آخر میں کتابیات یا مصادر و مراجع (ماخذ) کی فہرست دینا ضروری ہوتا ہے۔ اس کا فائدہ یہ ہے کہ مقالہ کے ماخذ، مواد کے استناد، اس کی اہمیت و افادیت سے آگاہی ہو جاتی ہے۔

## کتابیات کی تیاری کے لوازمات

کتابیات (یعنی مصادر و مراجع کی فہرست) کی تیاری اور اس کے پیش کرنے میں درج ذیل امور کا خاص خیال رکھا جائے:

۱۔ فہرست میں صرف ان کتب کو جگہ دی جائے جن سے محقق نے مقالہ کی تیاری میں براہ راست استفادہ کیا ہے۔

۲۔ فہرست کی تیاری میں وہی طریقہ اختیار کیا جائے جو نوٹ لینے میں اختیار کیا گیا تھا، یعنی تراشے پر مصنف کا نام، کتاب کا نام اور دوسری ضروری معلومات نوٹ کی جائیں تاکہ انہیں حروف تہجی کے لحاظ سے ترتیب دینے میں سہولت ہو۔ کتابیات کے کارڈ کا سائز ۳×۵" ہو۔

۳۔ مخطوطات کی فہرست، مطبوعات کی فہرست سے الگ ہونی چاہیے۔



- ۴۔ رسائل و جرائد کو بھی مطبوعات سے الگ رکھا جائے۔
- ۵۔ سب سے آخر میں ذاتی خطوط اور سوال نامے وغیرہ ہوں۔
- ۶۔ مخطوطات و مطبوعات کی فہرست مصنف و احرورف تہجی کے لحاظ سے ترتیب دی جائے۔
- مخطوطہ کی شکل میں اس لائبریری کا نام اور پتہ بتانا بھی ضروری ہے جس میں وہ مخطوطہ محفوظ ہے۔ اگر سن کتابت نسخہ پر درج ہو تو وہ ضرور دیا جائے۔ اگر مخطوطہ مصنف کا ذاتی نسخہ ہے، یا کسی اور فرد کی ملکیت ہے، تو اس کا مختصر سا تعارف کر دینا مناسب ہوگا۔
- ۷۔ اگر مطبوعات کی فہرست طویل ہے اور کتابیں مختلف موضوعات پر مشتمل ہیں تو انھیں موضوع کے اعتبار سے تقسیم کر دینا بہتر ہوگا۔
- ۸۔ اگر کتابیں مختلف زبانوں میں ہیں تو انھیں زبان کے لحاظ سے تقسیم کر دینا مناسب ہوگا (۱۱)۔

## کتابیات کی تیاری کے چند مراحل

کتابیات تیار کرتے وقت مصنفین کے ناموں کو خاص اہمیت دی جاتی ہے (۱۲)۔  
ذیل میں مثالوں کے ذریعے ناموں کے اندراج کے چند قواعد بیان کئے جاتے ہیں:

### دو الفاظ پر مشتمل نام

ایسے نام جو دو الفاظ پر مشتمل ہوں، ان کا اندراج بالعموم اسی طرح کیا جاتا ہے، جس طرح زندگی میں انھیں پکارا جاتا ہے، مثلاً: احمد دین، احمد دین، کاشف اقبال، کاشف اقبال، ندیم سرور، ندیم سرور۔

مصنف اگر شاعر ہے اور اس کا نام دو یا دو سے زائد لفظوں پر مشتمل ہو تو اندراج تخلص

میں کیا جائے گا۔ بعد میں نام، جوں کا توں درج ہوگا، مثلاً:

الطاف حسین حالی      الطاف حسین

احمد ندیم قاسمی      قاسمی، احمد ندیم



|                |                 |
|----------------|-----------------|
| اسد اللہ غالب  | غالب، اسد اللہ  |
| بہادر شاہ ظفر  | ظفر، بہادر شاہ  |
| حمایت علی شاعر | شاعر، حمایت علی |

## مرکب نام

مرکب نام سے مراد ایسے نام ہیں، جو ایک دوسرے سے ملا کر لکھے اور بولے جاتے ہیں، یعنی نام کے دونوں جزو ایک دوسرے کے لیے لازم و ملزوم ہوتے ہیں۔ ان ناموں کا پہلایا دوسرا جزو اگر حذف کر دیا جائے تو نام نامکمل اور بے معنی ہو کر رہ جاتا ہے نام کے ساتھ شاعر کا تخلص استعمال ہونے کی صورت میں اندراج تخلص کی شکل میں کیا جاتا ہے، مثلاً:

|                   |                    |
|-------------------|--------------------|
| وحید الزمان       | وحید الزمان        |
| ڈاکٹر وحید الزمان | وحید الزمان، ڈاکٹر |
| سید ابوالحسن      | ابوالحسن، سید      |
| عزیز الحسن مجذوب  | مجذوب، عزیز الحسن  |

## تین الفاظ پر مشتمل نام

|                  |                   |
|------------------|-------------------|
| انور اقبال قریشی | قریشی، انور اقبال |
| محمد عاصم عثمانی | عثمانی، محمد عاصم |
| غلام ربانی تاباں | تاباں، غلام ربانی |

## خواتین کے ناموں کا طریقہ اندراج

پاکستانی خواتین کے ناموں کے اندراج ان کے اپنے نام کے حوالے سے کیا جاتا ہے،

مثلاً:

|                        |                         |
|------------------------|-------------------------|
| بیگم شائستہ اکرام اللہ | شائستہ اکرام اللہ، بیگم |
|------------------------|-------------------------|



|                  |                         |
|------------------|-------------------------|
| بیگم شہناز آفتاب | بیگم شہناز آفتاب، بیگم  |
| ڈاکٹر عالیہ امام | عالیہ امام، ڈاکٹر       |
| شہناز اختر قریشی | قریشی، شہناز اختر (۱۳)۔ |

### کتاب کے نام کے اعتبار سے حوالوں اور کتابیات کے فوائد

اوپر صرف مصنفین / مؤلفین کے اعتبار سے حوالے دینے اور کتابیات مرتب کرنے کے اسلوب اور اس کے متعلقات کا بیان کیا گیا ہے۔ اس اسلوب کے علاوہ کتاب کے ناموں کے اعتبار سے بھی حوالے دینے اور کتابیات (ماخذ کی فہرست) مرتب کرنے کا رواج ہے:

### کتاب کے نام سے شروع کرنا فطری طریقہ ہے

حوالہ دینے اور کتابیات مرتب کرنے میں مصنف کے بجائے کتاب کا اعتبار کرنا اصل میں فطری طریقہ ہے، کیونکہ:

- ۱۔ ہر کتاب کے سرورق پر اس کا نام پہلے لکھا ہوتا ہے پھر اس کے مولف / مصنف / مرتب / مدون کا۔
- ۲۔ کتاب خریدنے والا عام طور پر دوکاندار کو کتاب کا نام پہلے بتاتا ہے کہ مجھے فلان کتاب چاہیے۔ ضرورت پڑنے پر ہی مصنف کا نام بتانا پڑتا ہے۔
- ۳۔ کتاب کے تاجر رسیدوں پر ہمیشہ کتاب کے نام لکھتے ہیں۔
- ۴۔ لائبریریوں کے لیے کتاب منگوانے کے لیے ہمیشہ ان کے نام بتانے پڑتے ہیں۔ ضرورت پڑنے پر مولف کا نام بھی لکھ دیا جاتا ہے۔ مگر وہ بھی کتاب کے نام کے بعد ہی۔
- ۵۔ لائبریریوں سے کتاب لیتے وقت رجسٹر میں ان کے نام لکھے جاتے ہیں۔
- ۶۔ لائبریریوں میں عام طور پر کیٹلاگنگ کے دو طریقے رائج ہیں: ایک کتاب کے نام سے اور دوسرا مصنفین کے نام سے۔ ان دونوں طریقوں میں حروف تہجی (الفبائی) کا اعتبار ہوتا ہے۔



کتاب تلاش کرنے والا زیادہ تر کتب کے نام سے مطلوبہ کتاب تلاش کرتا ہے اگر نہ ملے تو مصنفین کے نام دیکھے جاتے ہیں۔

۷۔ علمی حلقوں میں جب کتب کا ذکر ہو رہا ہو تو اکثر و بیشتر پوچھا جاتا ہے کہ فلاں کتاب کس مؤلف کی ہے یا فلاں کتاب کے مولف کا کیا نام ہے؟

۸۔ کتب کے ناموں پر حوالے اور کتابیات مرتب کرنے میں زیادہ سہولت ہے جبکہ مصنفین کے ناموں میں مشکل پیش آتی ہے وہ اس طرح کہ:

۱۔ جب کوئی نام تین لفظوں پر مشتمل ہو تو آخری لفظ کو پہلے لکھنا پڑتا ہے اور یہ یقین نہیں ہوتا کہ وہی آخری حصہ مشہور ہے یا کوئی اور حصہ۔ ناموں میں فرق بھی پایا جاتا ہے۔ اس مشکل کو کرنل غلام سرور نے یوں بیان کیا ہے:

”ہمارے ہاں، مشکل یہ ہے کہ ہنوز ناموں کے اندراج کا مسئلہ واضح طور پر حل نہیں ہو سکا کیونکہ ناموں میں یکسانیت نہیں پائی جاتی۔ ایک نام کے کئی کئی اجزاء ہوتے ہیں۔ پھر ایک شخص کے کئی نام ہوتے ہیں۔ بعض حضرات اپنا نام تبدیل کر لیتے ہیں۔ ان دشواریوں کے پیش نظر، پاکستانی مصنفوں کے ناموں کی کتابیات مرتب کرنا مشکل کام ہے“ (۱۵)۔

۲۔ جب ایک ہی مشہور (خاندانی) نام کے کئی مصنف ہوں تو ان میں سے ہر ایک کے نام کا حوالہ دوبارہ دیتے ہوئے کتاب کا نام دوبارہ لکھنا پڑھے گا۔ اگر کہیں بھول سے کتاب کا نام رہ جائے تو یہ معلوم نہیں ہوگا کہ یہ حوالہ کس مولف سے متعلق ہے۔ اگر ٹائپ کرتے وقت ان میں سے کسی کا مشہور نام رہ جائے تو بھی قاری مشکل میں پڑ جائے گا کہ یہ حوالہ کون سے مولف / مصنف کا ہوگا۔ اہل علم ایسی مشکلات سے بخوبی آگاہ ہیں۔

کتب کے نام کے اعتبار سے حوالہ دینے کا طریقہ

کتاب کا مکمل نام یا مشہور نام (اگر ہو)، مصنف / مؤلف / مدون کا نام، جلد نمبر اگر ہو،



صفحہ نمبر، ناشر کا نام، مقام اشاعت، طبع نمبر سن اشاعت، مثلاً:

تفسیر القرآن العظیم یا تفسیر ابن کثیر، حافظ ابوالفداء اسماعیل بن کثیر (متوفی ۷۷۴ھ)

ج ۲، ص ۱۳، دار الفکر، بیروت، اشاعت اول (یا طبع اول یا ط: ۱)، ۱۹۶۲ء۔

پہلی بار حوالے دیتے وقت اسی طرح مکمل تفصیل کے ساتھ دیا جائے۔ اس کا فائدہ یہ

ہے کہ اگر خدا نخواستہ کتاب / مقالہ کے اخیر سے مرور زمانہ کے ساتھ کتابیات کا حصہ کہیں

ضائع ہو جائے تو کتاب / مقالہ کے اندر ہی قاری کو مکمل حوالہ مل جائے گا۔

حوالہ دینے کی یہ ترتیب فطری ہے کیونکہ قاری یا محقق جب کتاب کو استعمال میں لاتا ہے تو وہ:

۱۔ سب سے پہلے کتاب کا نام دیکھتا ہے۔

۲۔ پھر مصنف وغیرہ کے نام کو دیکھا جاتا ہے۔

۳۔ پھر اندر سے متعلقہ صفحہ دیکھتا ہے۔

۴۔ اگر کتاب جلدوں میں ہو تو وہ متعلقہ جلد کو نکال لیتا ہے۔ پھر صفحہ دیکھتا ہے۔

۵۔ ہمیشہ کتاب اور مصنف کے نام کے بعد ناشر کا نام ہوتا ہے۔

پھر، مقام اشاعت اور اندر والے صفحے پر اشاعت / طبع نمبر ہوتا ہے۔ پھر سال اشاعت۔

☆ اگر کسی کتاب / مقالہ میں حوالوں اور کتابیات کی ترتیب مصنفین / مولفین کے ناموں

کے اعتبار سے ہو اور قاری ایسی کتاب دیکھنا چاہتا ہو جس کے مولف کا نام اسے یاد نہ ہو (اور عام

طور پر مصنفوں کے نام یاد بھی نہیں ہوتے) تو ایسی صورت میں بلوگرانی میں ہر مصنف کے سامنے

لکھی ہوئی کتاب کو دیکھنا پڑے گا۔ اگر تعداد کم ہو تو آسان ہے اگر تعداد زیادہ ہو تو دقت پیش آئے گی۔

اس کے مقابلہ میں کتب کے ناموں پر الفبائی ترتیب کے اعتبار سے مرتب کی ہوئی بلو

گرانی (ماخذ کی فہرست) کے ذریعہ سے مطلوب کتاب فوراً مل جائے گی۔ خواہ اس ترتیب میں

موضوعات کا اعتبار کیا گیا ہو، یا زبانوں کا یا صرف حروف تہجی کے اعتبار سے ایک عام فہرست

مرتب کی گئی ہو۔



## حوالہ جات

- ۱- مقالہ کی تسوید، عبدالرزاق قریشی، در "اردو میں اصول تحقیق" مرتبہ: ایم سلطانہ بخش، ج ۱ ص ۲۷۰۔
- ۲- حوالہ جات کا طریق کار، کرنل غلام سرور، در "اردو میں فنی تدوین" مرتبہ: ڈاکٹر ایم ایس ناز ص ۱۸۱۔
- ۳- مقالہ کی تسوید، قریشی، محولہ بالا، ص ۲۷۰ تھوڑے تصرف کے ساتھ۔
- ۴- دیکھئے: اردو میں اصول تحقیق، سابق حوالہ، ج ۱، ص ۲۷۰، تصنیف و تحقیق کے اصول، قاضی عبدالقادر، ص ۱۷۱، کیف تکتب بحثال اور رسالہ، دکتور احمد شلشی، ص ۱۱۲، اصول تحقیق، ڈاکٹر قاضی سعید اللہ، ص ۷۵، ۷۶۔
- ۵- دیکھئے: مقالہ کی تسوید، قریشی، محولہ بالا، ج ۱ ص ۲۷۲، تصنیف و تالیف کے اصول، ڈاکٹر عبدالقادر، ص ۷۳۔
- ۶- مقالہ کی تسوید، قریشی، در حوالہ بالا، ج ۱ ص ۲۷۲۔
- ۷- دیکھئے: تصنیف و تالیف کے اصول، ڈاکٹر عبدالقادر، محولہ بالا، ص ۷۱، تحقیق نگاری، ڈاکٹر محمد طفیل ہاشمی، ص ۷۲۔
- ۸- دیکھئے: تحقیق کا فن، گیان چند، ص ۳۱۰ و بعد، مقالہ کی تسوید، قریشی، محولہ بالا، بحوالہ، حوالہ مذکور، ج ۱، ۲۷۵ تا ۲۷۲۔ اصول تحقیق، سعید اللہ قاضی، محولہ بالا ص ۷۶ تا ۸۲، تصنیف و تحقیق کے اصول، ڈاکٹر عبدالقادر، محولہ بالا ص ۷۱ تا ۸۱۔
- ۹- تصنیف و تالیف کے اصول، عبدالقادر، محولہ بالا، ص ۷۱۔
- ۱۰- حوالہ جات کا طریق کار، غلام سرور، محولہ بالا، ص ۱۸۸ تا ۱۸۹۔ تھوڑی تلخیص و تبدیلی کے ساتھ۔
- ۱۱- دیکھئے: مقالہ کی تسوید، قریشی، مشمولہ "بخش محولہ بالا" ج ۱، ص ۲۷۷، ۲۷۸۔
- ۱۲- ہمارے ہاں، مشکل یہ ہے کہ ہنوز ناموں کے اندراج کا مسئلہ واضح طور پر حل نہیں ہو سکا کیونکہ ناموں میں یکسانیت نہیں پائی جاتی۔ ایک نام کے کئی کئی اجزاء ہوتے ہیں۔ پھر ایک شخص کے کئی کئی نام ہوتے ہیں۔ بعض حضرات اپنا نام تبدیل کر لیتے ہیں۔ ان دشواریوں کے پیش نظر، پاکستانی مصنفوں کے ناموں کی کتابیات مرتب کرنا مشکل کام ہے (حوالہ کا طریق کار، غلام سرور، محولہ بالا، ص ۱۹۲)۔
- ۱۳- حوالہ کا طریق کار، غلام سرور، ص ۱۹۲ تا ۱۹۳۔
- ۱۴- دیکھئے: سابق حوالہ، ص ۱۹۳، ۱۹۵۔
- ۱۵- سابق حوالہ، غلام سرور، محولہ بالا، ص ۱۹۲۔



باب ۱۶

معیاری تحقیقی مقالے کی خصوصیات



## معیاری تحقیقی مقالے کی خصوصیات

### تحقیقی مقالے کی تعریف

ڈاکٹر احمد شلمی نے Arthur Cole کے حوالے سے تحقیق مقالہ کی تعریف یوں کی ہے: ”تقریر و اف یقدمہ باحث عن عمل تعہدہ و اتمہ، علی أن یشمل التقريرُ کلّ مراحل الدراسة منذ كانت فكرة حتى صارت نتائج مدوّنة، مرتبة، مؤیّدة بالحجج والأسانید“ (۱)۔

(تحقیق مقالہ اس مکمل رپورٹ کو کہتے ہیں جسے کوئی محقق اپنے تحقیقی کام کو کامیاب تکمیل کے بعد پیش کرتا ہے۔ یہ رپورٹ مطالعے کے تمام مراحل کا احاطہ کرتی ہے، یعنی موضوع کے متعلق ابتدائی سوچ سے لے کر تحقیق کے نتیجے میں حاصل ہونے والے نتائج تک کو دلائل و براہین کی روشنی میں مرتب و مدون کر کے پیش کیا جاتا ہے)۔

اس تعریف کو سب سے عمدہ تعریف قرار دیا گیا ہے اور یہ بات کسی حد تک درست بھی ہے۔ یوں تو یہ تعریف تحقیقی مقالے کے بارے میں مکمل تصور پیش کرتی ہے، البتہ اس میں ”تقریر و اف“ (مکمل رپورٹ) کے الفاظ محل نظر ہیں کیوں کہ یہ ضروری نہیں کہ تحقیقی مقالہ بہر طور مکمل رپورٹ ہو۔ تحقیق کے میدان میں شاید ہی کسی بات کو مکمل یا آخری اور حتمی کہا جاسکتا ہے، البتہ مقالہ سابقہ معلومات پر قابل لحاظ اضافہ اور نئے نتائج کا حامل ہونا چاہئے (۲)۔

### معیاری تحقیقی مقالے کی خصوصیات

ایک معیاری تحقیقی مقالہ وہ ہوتا ہے جس کی تیاری میں درج ذیل تحقیقی اصولوں کا لحاظ



رکھا گیا ہو:

## ۱۔ مواد کی ترتیب و تنظیم

مقالہ نگاری کا ایک اصول یہ ہے کہ موضوع سے متعلق جمع شدہ مواد کو اچھے اسلوب میں مدون و مرتب کیا جائے۔ مواد کی ترتیب و تنظیم کے مرحلہ پر پہنچ کر محقق کو چاہیے کہ:

۱۔ ”وہ اپنے خیالات اور علم کی ایک شکل مقرر کر لے۔ اس عمل میں اس کی سوچی سمجھی منصوبہ بندی اور متعلقہ دلائل کا دخل رہتا ہے۔ متعلقہ مواد سے پیدا شدہ دلائل کی روشنی میں اپنے موضوع یا مسئلے کا حل تلاش کیا جاتا ہے“ (۳)۔

۲۔ وہ اپنے آپ کو تقویٰ کی صفت سے متصف کرے اور غیر ضروری باتوں سے مقالہ کے دامن کو بچاتے ہوئے صرف متعلقہ مواد کو خوب احتیاط کے ساتھ منظم و مرتب کرے۔ یہ حقیقت ہے کہ کام کسی بھی نوعیت کا کیوں نہ ہو اگر اس کی ترتیب و تنظیم عمدہ ہو تو نتیجہ بھی عمدہ ہوتا ہے اور اسے پذیرائی بھی ملتی ہے (۴)۔

ان مقاصد کے حصول کی خاطر ”مفید ہوتا ہے کہ محقق پہلے تحریری شکل میں ایک خاکہ تیار کر لے۔ اس طرح مطالعے کی صورت حال اس کے ذہن میں واضح ہو جائے گی اور اس کے مطابق وہ اس کو خوبصورت انداز میں پیش کر سکے گا۔ اس تحریری خاکے میں یہ چیزیں شامل رہنی چاہئیں کہ جمع شدہ مواد کی تنظیم کس طرح کی گئی؟ اس مواد سے کون کون سے دلائل کس انداز میں پیدا ہوئے اور ان دلائل سے کون کون سے نتائج نکلتے ہیں۔ اس سے یہ فائدہ ہوتا ہے کہ مقالے کے مختلف اجزاء کا ربط واضح ہو جاتا ہے۔ مقالے کا ہر ایک حصہ باہم مربوط ہونا چاہیے۔ تب ہی اس کو صحیح معنوں میں (معیاری) مقالہ کہا جاسکتا ہے“ (۵)۔

مواد کی تنظیم و ترتیب میں خاکہ کی افادیت یہ بھی ہے کہ اس کی روشنی میں ابواب کے عنوان اور ذیلی سرخیاں بنائی جاسکتی ہیں۔ اس کام کو احتیاط سے کرنا چاہیے کیونکہ سرخیاں قاری کے



لیے تمام مواد کو ایک نظر میں پیش کرتی ہیں، اس کی مدد کرتی ہیں کہ وہ مقالہ میں اپنے مطلب کی چیز پالے اور ان کی مدد سے وہ آسانی سے معانی کو سمجھ لیتا ہے۔ سرخیاں اس وقت تک ان مقاصد کو پورا نہیں کر سکتیں جب تک وہ آنے والے پہروں (Paragraphs) کے مندرجات کو درست طریقے سے بیان نہ کرتی ہوں۔

## ۲۔ تسوید مقالہ

مقالہ سے متعلقہ مواد کو منظم و مرتب کر لینے کے بعد اسے لکھنے کی باری آتی ہے۔ اصول تحقیق کی اصطلاح میں اسے ”تسوید“ کہتے ہیں۔ تسوید مقالہ تحقیقی عمل کا بہت اہم مرحلہ ہوتا ہے۔ اس پر پہنچ کر محقق کو اپنے موضوع سے متعلقہ مرتب شدہ مواد کو استعمال کرنا ہوتا ہے۔ اسے پہلے کی طرح یہاں بھی خوب احتیاط اور بیدار مغزی سے کام لینا چاہیے، چنانچہ فن تحقیق کے ماہرین لکھتے ہیں:

”مواد کی ترتیب کے بعد مقالہ لکھنے کا کام شروع ہوتا ہے۔ مواد کی تلاش، چھان بین اور ترتیب میں جس محنت، دیانت اور دقت نظر کا ثبوت دیا گیا ہے، مقالہ کی تسوید میں بھی اس کا اہتمام ضروری ہے۔ واضح فکر، مواد کی منطقی ترتیب، صحیح ترجمانی اور موثر طرز تحریر میں ایک قطعی رشتہ ہے“ (۶)۔ جس سے مقالے کی تحریر میں عالمانہ شان اور محققانہ وقار پیدا ہوتا ہے۔ مقالے کی معلومات کے ذریعے محقق اپنے مطالعہ کے نتائج، عملی تحقیق اور جمع شدہ دلائل دوسرے علماء تک پہنچانا چاہتا ہے۔ اس کے لیے ضروری ہے کہ محقق کا طرز تحریر واضح ہو کہ اس نے اپنا تحقیقی عمل کس مقصد سے کیا ہے؟ اس سے کیا کیا نتائج اخذ کیے ہیں؟ (۷)۔

## آغاز تحریر کے اصول

فن تحقیق کے ماہرین نے تحریری کام کے آغاز کے چند اصول متعین کر رکھے ہیں،

جو کہ یہ ہیں:



## الف۔ تحریر کا آغاز موضوع سے کرنا

مقالے کی تحریر کا آغاز براہ راست اپنے موضوع سے کرنا ہی اچھا اور سائنسی طریقہ کار سمجھا جاتا ہے۔ طویل تمہید اور تبصروں سے پرہیز کرنا چاہیے کیونکہ اس سے مقالے کی ضخامت بڑھ جاتی ہے جو ایک عیب سمجھا جاتا ہے۔ مقالے کی قدر و قیمت اس بات سے نہیں جانچی جاتی کہ محقق نے اپنے موضوع کے بارے میں کتنا کہا ہے۔ بلکہ یہ دیکھا جاتا ہے کہ اس نے کیا کہا ہے اور کس انداز سے کہا ہے۔ بعض محققین بظاہر خوبصورت لیکن موضوع سے غیر متعلقہ بیانات اور غیر ضروری معلومات مقالے میں شامل کر کے اس کا حجم تو بڑھا دیتے ہیں لیکن واضح طور پر کسی اہم نتیجے پر پہنچتے ہوئے معلوم نہیں ہوتے۔ اس لیے براہ راست موضوع سے شروع کرنا مقالہ نگاری کا اہم اصول ہے (۸)۔ وہ مقالہ جس کی تیاری میں اس اصول کا لحاظ رکھا گیا ہو وہ معیاری کہلاتا ہے۔

## ب۔ نتائج اور تاثرات کو خلوص و اختصار سے پیش کرنا

کوئی بھی محقق اپنے تحقیقی عمل کے شعبے کے متعلق ساری معلومات رکھتا ہے۔ اسی پر وہ اپنے موضوع اور تحقیقی کام کی بنیاد رکھتا ہے۔ لیکن ان ساری معلومات کا مقالے میں شامل کیا جانا ضروری نہیں۔ ان کی بنیاد پر محقق نے اپنا جو نقطہ نظر بنایا ہے صرف اسی کی وضاحت کی جانی چاہیے اور اپنے اخذ کردہ نتائج اور تاثرات کو پورے خلوص اور اختصار کے ساتھ پیش کر دینا چاہیے۔ اپنے مفروضات کی تائید میں اسے ثبوت پیش کرنے چاہئیں۔ اس طرح مقالے کی پیش کش کے لیے اپنے موضوع کا مکمل، صحت مند اور غیر کتابی علمیت کا حاصل ہونا ضروری ہے۔ اس طرح مقالے میں غیر ضروری ضخامت نہیں آئے گی (۹)۔

## ۳۔ اسلوب تحریر

معیاری مقالے کے لیے اس کے اسلوب تحریر کا معیاری ہونا لازمی ہے۔ اہل علم حضرات اس حقیقت سے بخوبی آشنا ہیں کہ ایک اہم اور عمدہ بات کو اگر دلکش انداز میں بیان نہ کیا



جائے تو اس کی طرف سامعین و قارئین متوجہ نہیں ہوتے۔ اس کے مقابلہ میں عام سی بات کو اگر اچھے انداز میں پیش کیا جائے تو وہ ان کی توجہ کا مرکز بن جاتی ہے۔

تحقیقی عمل میں اس مقصد کے حصول کے لیے محقق کو خوب محنت اور لگن سے کام کرنے کی ضرورت ہوتی ہے۔ وہ جو بات بھی لکھے سوچ سمجھ کر موقع و محل کے مطابق سیدھے سادھے انداز میں لکھے اور قاری کے لیے اس میں دلچسپی و لگن پیدا کرے۔

### انداز تحریر کی خصوصیات

انداز تحریر ہر ایک شخص اور موضوع کے اعتبار سے تبدیل ہوتا رہتا ہے۔ مقالے کے اسلوب تحریر کو دو خصوصیات سے مزین ہونا چاہیے: ایک سنجیدگی اور دوسری اثر۔ ان دونوں کے ساتھ تکمیل، وحدت اور وضاحت وغیرہ کو بھی شامل کیا جاسکتا ہے (۱۰)۔

### ۴۔ مقالے کی زبان

تحقیقی مقالے کی زبان عام فہم، سادہ اور دلکش ہو۔ ثقیل اور طویل نوعیت کے جملوں سے گریز کیا جائے۔ جس زبان میں مقالہ لکھا جا رہا ہے اس کے علاوہ کسی دوسری زبان کے الفاظ استعمال نہ کیے جائیں۔ اگر استعمال ضروری ہو تو انھیں بریکٹ میں لکھا جائے۔ فن تحقیق کے ماہرین نے زبان کے متعلق درج ذیل تجاویز پیش کی ہیں:

- ۱۔ مقالہ عام طور پر زمانہ ماضی یا ماضی قریب میں لکھا جائے۔
- ۲۔ نتائج کا تذکرہ زمانہ حال میں کیا جاسکتا ہے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ ان کا تعلق آخر میں ایک مخصوص عنصر سے نہیں رہ جاتا۔ ایک عام تخلیق کا ذکر دور حاضر کی مناسبت سے ہی کیا جانا چاہیے۔
- ۳۔ ضمائر متکلم (میں، ہم، میرا، ہمارا وغیرہ) کا استعمال نہیں کرنا چاہیے۔ ان کے استعمال سے مقالے کا اختیار ختم ہو جاتا ہے۔



- ۴۔ صیغہ فاعل کا استعمال صیغہ مفعول کے مقابلے میں زیادہ ہونا چاہیے۔
- ۵۔ گنتی کے اعداد اگر سو تک ہوں تو ان کو حروف میں لکھا جانا چاہیے سو سے زائد گنتی کو اعداد میں لکھا جاسکتا ہے۔ اس کے علاوہ اگر جملے کی ابتدا گنتی سے ہوتی ہے تو اس کو حروف میں ہی لکھنا چاہیے۔
- ۶۔ زیادہ تر ایک ہی فعل کے ساتھ دو سے زائد مسلسل جملوں کا اختتام نہیں ہونا چاہیے (۱۱)۔

### ۵۔ الفاظ کا استعمال

معیاری مقالہ وہ ہوتا ہے جس کے جملوں میں عام فہم، سادہ اور مناسب و موزوں الفاظ کا استعمال موقع و محل کے مطابق کیا گیا ہو۔ ”زیادہ طویل، مرکب، غیر مستعمل اور فرسودہ الفاظ کے استعمال سے مقالے کا مفہوم واضح نہیں ہوتا۔ مقالات میں کچھ ایسے مقامات بھی ہو سکتے ہیں جہاں اصطلاحی الفاظ کا استعمال ضروری ہوتا ہے۔ اصطلاحی الفاظ (۱۲)، کے انتخاب میں مندرجہ ذیل باتوں کا خیال رکھنا چاہیے:

- ۱۔ اگر ایک سے زائد اصطلاحی الفاظ کا استعمال ہو رہا ہو تو ان میں سے اسی لفظ کا انتخاب کرنا چاہیے جو زیادہ تر لوگوں کے لیے تسلیم شدہ ہو۔
- ۲۔ مقالے کے شروع میں جن اصطلاحی الفاظ کا استعمال ہوا ہے، اس مفہوم میں ان ہی الفاظ کا استعمال پورے مقالے میں کیا جانا چاہیے۔
- ۳۔ اگر انگریزی یا کسی دوسری زبان کے اصطلاحی لفظ کا ترجمہ کیا گیا ہو تو بریکٹ میں یا تمہیدی حصے میں ان کی بنیادی شکل کا اظہار کر دینا مناسب ہوتا ہے۔
- ۴۔ اگر اصطلاحی الفاظ کا استعمال کیے بغیر کسی خیال کا اظہار ممکن ہو تو اصطلاحی الفاظ سے احتراز کرنا ہی بہتر ہوگا۔



الفاظ کے استعمال کے بارے میں یہ مشورہ بھی دیا جاتا ہے کہ جدید انداز میں وضع کیے ہوئے الفاظ تخلیقی ادب میں چاہے کتنی ہی اہمیت رکھتے ہوں، لیکن تحقیقی مقالے میں ان کا استعمال ایک نقص ہی سمجھا جائے گا۔ مقالے میں مقامی یا بازاری الفاظ کا استعمال بھی ناپسندیدہ ہوتا ہے۔ ان کے استعمال سے زبان کی سنجیدگی ختم ہو جاتی ہے“ (۱۳)۔

## ۶۔ تکرار کلمات سے اجتناب

معیاری مقالہ وہ ہوتا ہے جو کلمات کے تکرار سے خالی ہو کیونکہ مقالے کا اسلوب نگارش تکرار کلمات سے متاثر ہوتا ہے۔ اس لیے جملوں کی ساخت میں ایسے کلمات کو استعمال کیا جائے جو مروج اور عام فہم ہوں۔ جملوں میں ایسے الفاظ اور کلمات کے استعمال سے اجتناب کرنا چاہیے جو مستعمل نہ ہوں یا متروک ہوں۔

## ۷۔ مناسب اختصار

مناسب اختصار معیاری مقالہ کی خصوصیات میں سے ہے۔ جس قدر مقالہ میں کم سے کم الفاظ میں زیادہ سے زیادہ مفہوم ادا ہو سکتا ہو اتنا ہی بہتر ہے۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ اس قدر اختصار سے کام لیا جائے کہ مقالہ نگار قاری کو اپنا مافی الضمیر بطریق احسن منتقل نہ کر سکے۔ مقالہ کے جملوں کو مختصر، پر مغز، سادہ، آسان اور باہم مربوط ہونا چاہیے تاکہ مفہوم کو واضح طور پر سمجھا جاسکے (۱۴)۔

## ۸۔ مطالعہ مواد

معیاری مقالہ وہ ہوتا ہے جس کی تیاری میں محقق نے موضوع سے متعلقہ مواد کا خوب توجہ اور گہرائی سے مطالعہ کیا ہو۔ اپنے موضوع پر یا اس سے ملتی جلتی کتب، تحقیقی مقالے اور مضامین سے بھرپور استفادہ کیا ہو۔ تحقیقی عمل میں وسیع مطالعہ کا فائدہ یہ ہے کہ اس کی بنیاد پر محقق باسانی نتائج اخذ کر سکتا ہے اور بروقت اپنے تحقیقی کام سے فارغ ہو سکتا ہے۔



زبانی امتحان کے وقت ممتحنین میں سے اگر کسی کا مطالعہ وسیع ہو اور وہ ایسے مواد کی اطلاع دے جس سے محقق کم مطالعہ کی وجہ سے ناواقف ہو یا وہ ایسے نتائج بتائے جو محقق کے نتائج سے بہتر اور مختلف ہوں تو اسے ایک مرتبہ پھر اپنے مقالہ پر محنت کرنا ہوگی۔ اس طرح وقت بھی لگے گا اور ذہنی، بدنی اور مالی تکلیف بھی اٹھانا پڑے گی۔ اس پریشانی سے بچنے کا واحد حل یہ ہے کہ محقق کو وسیع مطالعہ کرنا چاہیے اور اپنے موضوع سے متعلقہ مواد سے اچھی طرح واقف ہونا چاہیے۔ معیاری مقالہ کے لیے یہ ضروری ہے۔

## ۹۔ جدت

معیاری مقالہ کی ایک اہم خوبی یہ بھی ہوتی ہے کہ اس میں کسی نہ کسی طرح کی جدت اور نیا پن پایا جاتا ہو۔ تحقیق کے میدان میں جدت کئی طرح کی ہو سکتی ہے، مثلاً:

- ۱۔ جہاں تک پہلے محقق نے کسی کام کو پہنچایا ہو وہاں سے اسے شروع کیا جائے۔
- ۲۔ معلوم اور معروف مواد کو نئے اور مفید اسلوب میں مرتب و مدون کیا جائے۔
- ۳۔ منتشر مواد کو ایک عنوان کے تحت مدون و مرتب کیا جائے۔
- ۴۔ پہلے سے موجود تحقیق سے نئے نتائج اخذ کیے جائیں (۱۵)۔

## ۱۰۔ اقتباسات کا صحیح استعمال

معیاری مقالہ وہ ہوتا ہے جس کی تیاری میں مصادر و مراجع سے اقتباسات کی صورت میں متعلقہ مواد کو تحقیق کے مروجہ اصولوں کے مطابق استعمال کیا گیا ہو، مثلاً:

- ۱۔ ”اقتباس کی عبارت احتیاط سے نقل کی جائے اور اسے ”واوین“ ”میں رکھا جائے تاکہ وہ محقق کی عبارت سے نمایاں ہو سکے۔
- ۲۔ اگر عبارت مختصر (یعنی چار سطروں پر مشتمل) ہو تو اسے متن کے ساتھ اور متن کے قلم سے لکھنا چاہیے۔



۳۔ اگر عبارت طویل (یعنی چار سطروں سے زیادہ گی) ہو تو اسے متن سے الگ کر کے لکھنا ہوگا اور اس کا قلم متن کے قلم سے نمایاں طور پر خفی ہوگا۔ اس کی سطریں بھی نسبتاً مختصر ہوں گی، یعنی دائیں بائیں جگہ چھوٹی رہے گی۔ اس طرح وہ متن کی عبارت سے نمایاں ہوگی“ (۱۶)۔

۴۔ اقتباس لیتے وقت اس بات کا خیال رکھنا ضروری ہے کہ اسے متن میں اس طرح جوڑ دیا جائے کہ وہ متن کا ایک لازمی حصہ معلوم ہو۔ اس لیے اقتباس کو ماقبل کے ساتھ جوڑنے کے لیے ایک دو تمہیدی جملے استعمال کرنا ضروری ہوں گے۔ ورنہ پھر اقتباس کا ماقبل کے ساتھ کسی قسم کا ربط نظر نہیں آئے گا۔ اس طرح مابعد کے ساتھ بھی اس کو جوڑنا ہوگا جس کے لیے ایک آدھ جملہ بطور تبصرہ دینا ضروری ہوگا (۱۷)۔

حاصل کلام یہ کہ وہ تحقیقی مقالہ جس میں اقتباسات کی صورت میں دوسروں کی آراء یا عبارت نقل کرنے میں خوب احتیاط اور دردت نظر سے کام لیا گیا ہو وہی اصل میں معیاری مقالہ ہوتا ہے۔

اسی طرح تحقیقی مقالہ میں مصادر مراجع سے مواد کو (اقتباسات کی صورت میں) نقل کیا جاتا ہے۔ ایک اچھا اور معیاری مقالہ وہ ہوتا ہے جس میں نقل شدہ مواد کا تنقیدی جائزہ لیا گیا ہو۔ وہ اس طرح کہ: مواد کی خوبیوں خامیوں کو مستند اور وزنی دلائل کی روشنی میں اجاگر کیا گیا ہو اور خامیوں کو دور کرنے کے لیے مثبت انداز میں مفید تجاویز پیش کی گئی ہوں (۱۸)۔

### ۱۱۔ جملوں اور پیرا گرافز میں ربط

ایک اچھے اور معیاری مقالے کی اندورنی خوبی یہ ہوتی ہے کہ اس کے جملے آپس میں مربوط ہوتے ہیں اور ان میں کسی قسم کا انقطاع اور بعد نہیں ہوتا۔ وہ سادہ، آسان اور واضح ہوتے ہیں۔ اسی طرح پیرا گراف کے درمیان میں بھی ربط پایا جاتا ہے۔ یہ ایسی خوبی ہوتی ہے جو تحقیقی



مقالہ کی خوبصورتی اور دلکشی میں اضافے کا باعث بنتی ہے۔

## ۱۲۔ حواشی و حوالہ جات

جس مقالہ میں تحقیق کے مقررہ اصولوں کے مطابق حواشی و حوالہ جات کا اہتمام کیا گیا ہو وہ معیاری مقالہ کہلاتا ہے۔ تحقیقی مقالہ میں چونکہ اقتباسات کو نقل کیا جاتا ہے، اس لیے حاشیہ میں حوالہ کی صورت میں ان کتب کا اعتراف کرنا ضروری ہوتا ہے جس سے مواد اخذ کیا جاتا ہے (۱۹)۔

## ۱۳۔ خوب توجہ سے نظر ثانی کرنا

مقالہ پر نظر ثانی کرنا تحقیقی مراحل میں سے ایک اہم مرحلہ ہوتا ہے، جو مقالہ کے مسودہ کی تکمیل کے بعد شروع ہوتا ہے۔ محقق کو چاہیے کہ وہ خوب محنت، توجہ اور دقت نظر سے کئی بار اپنے مقالہ پر نظر ثانی کرے۔ وہی مقالہ معیاری کہلاتا ہے جس پر محقق نے کئی بار نظر ثانی کی ہو۔

## مقاصد

نظر ثانی یاد ہرانے کے عمل سے کئی مقاصد حاصل کیے جاسکتے ہیں، مثلاً:

### الف۔ حذف و اضافہ

مقالہ کے پہلے مسودہ کی تکمیل کے بعد نظر ثانی کرتے ہوئے معلوم ہوتا ہے کہ کچھ غیر متعلقہ مواد شامل ہو گیا ہے اور کچھ متعلقہ باتیں باقی رہ گئی ہیں۔ اس لیے حذف و اضافے کی ضرورت پڑتی ہے جو صرف نظر ثانی کے ذریعے ہی پوری ہو سکتی ہے۔

### ب۔ بہتر ترتیب

حذف و اضافہ کا نتیجہ اصل میں ترتیب نو ہوتا ہے۔ ترتیب ایسی منطقی ہونی چاہیے کہ ایک باب دوسرے باب سے زنجیر کی کڑیوں کی طرح منسلک ہو۔ دہرانے کے عمل میں محقق کو خوب



غور کرنا چاہیے تاکہ ترتیب بہتر سے بہتر ہو سکے۔

## ج۔ حوالوں کی تصحیح

بعض اوقات حوالوں کو لکھتے وقت محقق سے کچھ غلطیاں ہو جاتی ہیں، مثلاً:

- ۱۔ مولفین اور کتب کے ناموں کے اندراج میں رد و بدل ہو جاتا ہے۔ نظر ثانی کرتے وقت اس نوعیت کی غلطیوں کا پتہ چل جاتا ہے۔
- ۲۔ حوالوں کے اندراج میں تکرار واقع ہو جاتا ہے۔ وہ اس طرح کہ جب کوئی حوالہ پہلی بار درج کرنا ہو تو اس کی پوری تفصیل دینا ہوتی ہے۔ یہی حوالہ جب دوبارہ دینا ہو تو مختصراً دینا ہوتا ہے۔ لیکن اکثر ایسا ہوتا ہے کہ اس کی جملہ تفصیلات دوبارہ بلکہ کئی بار درج ہو جاتی ہیں۔ ایسے تکرار کو صرف نظر ثانی اور دہرانے کے عمل سے دور کیا جاسکتا ہے۔

## د۔ جملوں کی ساخت اور زبان کی بہتری

نظر ثانی کے ذریعے مقالہ کے جملوں کی ساخت اور اس کی زبان میں بہتری پیدا کی جاسکتی ہے۔ پہلی تسوید میں تو ساری توجہ خیالات کو کاغذ پر منتقل کرنے اور سلسلے وار جمانے میں صرف کی جاتی ہے۔ انشا کی طرف اس قدر توجہ نہیں کی جاتی۔ دہرانے کے عمل میں زبان و بیان کو چمکانا اور نکھارنا ہوتا ہے (۲۰)۔

علاوہ ازیں! نظر ثانی کے دوران درج ذیل باتوں کا خیال رکھا جائے:

- ۱۔ اگر کوئی ایسی بات درج ہو گئی ہے جو اختلاف کا موجب بن سکتی ہے تو اسے نظر انداز کر دینا چاہیے۔

۲۔ نظر ثانی کے دوران اگر کوئی تحقیق طلب پہلو سامنے آجائے تو اس پر تحقیق کی جائے۔

۳۔ نظر ثانی مقالہ کی تکمیل کے بعد ہی شروع کی جائے۔ ہاں اگر جزوی طور پر ساتھ ساتھ

نظر ثانی ہوتی رہے تو کوئی حرج نہیں مگر تکمیل کے بعد کی نظر ثانی زیادہ نتیجہ خیر



ہوتی ہے۔

۳۔ نظر ثانی کے عمل میں صبر و تحمل سے کام لیا جائے۔ جلد بازی سے کام لے کر اپنی تحقیق کی قدر و قیمت کم نہ کی جائے (۲۱)۔

### ۱۴۔ عمدہ کتابت اور جلد بندی

تحقیقی مقالے کی عمدہ کتابت ٹائپ اور جلد بندی اس کے معیاری ہونے کا ثبوت ہوتا ہے۔ اگر مقالے کا مواد بہت قیمتی اور عمدہ ہو لیکن کتابت یا ٹائپ اور جلد بندی اچھی نہ ہو تو وہ مقالہ معیاری نہیں کہلا سکتا اور نہ اس سے انسان متاثر ہو سکتا ہے۔

### ۱۵۔ تحقیقی مقالے کی ہیئت

ماہرین تحقیق کے نزدیک معیاری تحقیقی مقالہ اسے کہا جاتا ہے جس کی ہیئت درج ذیل

اجزاء پر مشتمل ہو:

### ۱۔ سرورق

مقالے کی ابتداء سرورق سے ہوتی ہے۔ اس پر درج ذیل چھ باتوں کا لکھنا ضروری

ہے:

- ۱۔ مقالے کا عنوان۔
- ۲۔ ڈگری کا نام جس کے لیے مقالہ پیش کیا گیا۔
- ۳۔ دائیں جانب مقالہ نگار کا نام۔
- ۴۔ بائیں جانب استاذ کا نام جس کی نگرانی میں مقالہ مکمل ہوا ہے۔
- ۵۔ شعبہ، فیکلٹی اور یونیورسٹی کا نام جہاں مقالہ پیش کیا گیا۔
- ۶۔ تاریخ، یعنی ماہ اور سن جس میں مقالہ پیش کیا گیا، مثلاً:



جوامع کی ترتیب و تدوین کے اسالیب و مناہج

(جامع البخاری، جامع مسلم، جامع الترمذی)

مقالہ برائے ایم۔ فل (علوم اسلامیہ)

زیر نگرانی:

مقالہ نگار:

عبدالحمید خان عباسی، رول نمبر G-7550194 پروفیسر ڈاکٹر علی اصغر چشتی

شعبہ قرآن و تفسیر، کلیہ عربی و علوم اسلامیہ چیئر مین شعبہ حدیث و سیرت

علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد

کلیہ عربی و علوم اسلامیہ، علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد، ۲۰۰۳ء

۲۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم

سرورق کے بعد ایک صفحہ پر بسم اللہ الرحمن الرحیم لکھا جاتا ہے۔

۳۔ ہدیہ تشکر

اس صفحہ پر مقالہ نگاران افراد اور اداروں کا شکریہ ادا کرے جنہوں نے مقالہ کی تیاری میں اس کی کسی بھی نوعیت کی مدد کی ہوتی ہے۔ شکریہ ادا کرتے وقت سب سے پہلے اس شخصیت سے آغاز کرے جس نے اختیار موضوع میں مقالہ نگار کی مدد کی ہو۔ پھر اس ادارے کا شکریہ ادا کرے جس نے موضوع کو منظور کر کے اس پر تحقیق کرنے کی اجازت دی ہے۔ پھر اپنے نگران اور دیگر افراد کا شکریہ ادا کرے جنہوں نے مقالہ کی تیاری میں تعاون کیا ہے۔ ان لائبریریوں کے منتظمین / ذمہ داران کا شکریہ ادا کرے جنہوں نے اس کی مدد کی ہے۔ شکریہ ادا کرتے وقت مبالغہ اور چاپلوسی سے اجتناب کیا جائے۔



## ۴۔ فہرست مضامین

کلمات تشکر کے صفحے کے بعد مقالے کے مضامین (مشکلات) کی فہرست دی جاتی ہے۔ فہرست کی ترتیب یوں ہوتی ہے۔ دیباچہ / تمہید / مقدمہ / پیش لفظ۔ مقدمہ پر مشتمل صفحات پر نمبر دو طرح سے لگائے جاسکتے ہیں۔ ایک حروف تہجی کے اعتبار سے جیسے الف، ب، ج، د..... الخ۔ پھر پہلے باب سے صفحہ نمبر ۱، ۲، ۳، ۴، ۵..... الخ۔ اور دوسرے اعداد کے اعتبار سے یعنی مقدمہ کے پہلے صفحہ کا نمبر پھر ۲، ۳، ۴..... ۲۰۷ وغیرہ تک۔

دیباچہ یا مقدمہ عام طور پر ان نکات پر مشتمل ہوتا ہے:

- ۱۔ اختیار موضوع کے اسباب۔
- ۲۔ موضوع کا بنیادی سوال۔
- ۳۔ فرضیہ اگر کوئی بنتا ہو۔
- ۴۔ موضوع پر پہلے سے ہونے والے کام (اگر کوئی ہو) کا ایک جائزہ۔
- ۵۔ اپنے موضوع پر کام کرنے کی جوازیت۔
- ۶۔ کام کی تکمیل کے بعد امت کے لیے اس کے افادیت۔
- ۷۔ موضوع پر کام کرنے کا اسلوب جو اس (موضوع) کی نوعیت و کیفیت پر مبنی ہوگا۔

## ۵۔ ابواب

مقدمہ کے بعد اصلی موضوع شروع ہو جاتا ہے: موضوع کو عام طور پر ابواب، فصول، مباحث، یا صرف فصول اور مباحث میں بانٹ دیا جاتا ہے۔

اگر موضوع کی تقسیم ابواب میں ہو تو بہتر یہ ہے کہ ہر ایک باب کا نمبر اور عنوان الگ صفحے پر لکھا جائے اور اگلے صفحہ پر وہی نمبر اور عنوان دوبارہ لکھ کر متعلقہ مواد کو لکھنا شروع کیا جائے۔

اگر فصول طویل ہوں تو بہتر یہی ہے کہ ہر فصل کو نئے صفحے سے شروع کیا جائے جس طرح باب کو



نئے صفحہ سے شروع کیا جاتا ہے۔

اگر طویل نہ ہوں صرف فصل اور اس کے عنوان کو لکھ دیا جائے اور نیچے متعلقہ مواد کو درج کیا جائے مواد کو مختلف ذیلی عنوانات قائم کر کے درج کرنا مقالہ کی افادیت اور قاری کی دلچسپی میں اضافے کا باعث بنتا ہے۔

## ۶۔ نتائج یا خلاصہ بحث

یہ تحقیقی مقالے کا اہم ترین حصہ ہوتا ہے جس سے اس کی صحیح قدر و قیمت کا اندازہ ہو جاتا ہے۔

## ۷۔ ملحقات اور ضمیمے

مقالہ سے متعلقہ مواد لکھتے وقت کچھ باتیں ایسی ہوتی ہیں جو اہم تو ہوتی ہیں مگر انھیں متن میں ذکر کرنا مناسب نہیں رہتا۔ ایسی باتوں کو مقالہ میں ملحقات یا ضمیموں کے طور پر شامل مقالہ کر دیا جاتا ہے۔

## ۸۔ مصادر و مراجع کی فہرست

یہ کسی بھی تحقیقی مقالے کی ہیئت کا آخری حصہ ہوتا ہے۔ مصادر و مراجع کی فہرست کے بجائے کچھ محققین کتابیات (Bibliography) کا لفظ استعمال کرتے ہیں۔ لیکن اول الذکر کا استعمال بہتر ہے۔

مصادر و مراجع کی فہرست مرتب کرتے وقت وہی طریقہ اختیار کیا جائے جو مقالہ میں حوالوں کے لیے استعمال کیا ہو۔ اگر مقالہ میں حوالے کتب کے ناموں کے اعتبار سے ہیں تو مصادر و مراجع کی فہرست بھی کتب ہی کے ناموں پر مرتب کی جائے۔ اگر حوالے مؤلفین / مصنفین کے ناموں پر ہیں تو مصادر و مراجع کی فہرست میں ان کے ناموں ہی کا اعتبار کیا جائے۔ ہر ایک طریقہ میں حروف تہجی کا لحاظ رکھا جائے۔ مصادر و مراجع کی فہرست اگر طویل ہو تو اسے موضوعات



میں بانٹا جاسکتا ہے۔ جیسے کتب تفسیر، کتب حدیث، کتب فقہ وغیرہ۔ یہاں بھی الفبائی ترتیب کا لحاظ ضروری ہے۔ جس مقالہ کی ہیئت ان اجزاء پر مشتمل ہو وہ معیاری مقالہ کہلانے کا حقدار ہوگا۔

## زبانی امتحان: معیار مقالہ کے تعین کا آخری مرحلہ

سندی تحقیق کے لیے جو مقالہ لکھا جاتا ہے اس کی آخری منزل زبانی امتحان (viva voce) ہوتی ہے۔ کسی بھی مقالہ کے معیاری وغیر معیاری ہونے کا پتہ زبانی امتحان کے دوران چل جاتا ہے۔

### وقت امتحان کا تعین

جب مقالہ نگار اپنے مقالہ کے چند نسخے متعلقہ شعبہ کے چیئر مین / انچارج کے پاس جمع کرواتا ہے تو وہ انہیں شعبہ امتحانات کو بھیج دیتا ہے۔ شعبہ امتحانات والے اسے وائس چانسلر یا ادارے کے سربراہ کے تجویز کردہ کوئی سے دو ماہرین کے پاس رپورٹ لینے کے لیے ارسال کر دیتے ہیں۔ یہ مقالہ کا جائزہ لینے کے بعد اپنی رپورٹ شعبہ امتحانات کو بھیج دیتے ہیں۔ اس رپورٹ میں انہوں نے معیار مقالہ کا تعین کیا ہوتا ہے۔ یہ کسی بھی مقالہ کے معیار کے تعین کا زبانی امتحان کے مرحلہ سے پہلے کا مرحلہ ہوتا ہے۔ رپورٹ مثبت ہونے کی صورت میں زبانی امتحان (viva voce) کے انعقاد کا بندوبست کیا جاتا ہے۔ دونوں ممتحنین میں سے کسی ایک کو خارجی ممتحن (External Examiner) کے طور پر بلایا جاتا ہے اور داخلی ممتحن کے طور پر متعلقہ ادارہ ہی کا ایک استاذ شامل ہوتا ہے۔ نگران مقالہ بھی وہاں موجود ہوتا ہے۔ بعض یونیورسٹیوں میں Open viva ہوتا ہے۔ اس لیے مذکورہ تین ممبران کے علاوہ کچھ اور افراد بھی موجود ہوتے ہیں۔ وہ بھی مقالہ نگار سے سوالات کر سکتے ہیں اور کرتے بھی ہیں۔

### خلاصہ بیان کرنے کا مطالبہ

مقالہ نگار سے سب سے پہلا مطالبہ یہ کیا جاتا ہے کہ وہ اپنے مقالہ کا خلاصہ بیان



کرے۔ بعض یونیورسٹیوں میں یہ ہوتا ہے کہ مقالہ نگار اپنے مقالہ کی تلخیص تیار کرتا ہے جسے ممتحنین کی طرف مقالہ کے ساتھ بھیج دیا جاتا ہے۔ جب مقالہ نگار خلاصہ بیان کرنے لگے تو بہتر یہی ہوتا ہے کہ وہ زبانی طور پر بیان کرے۔ دیکھ کر پڑھنا زیادہ مفید نہیں ہوتا۔

خلاصہ بیان کر لینے کے بعد سوالات کا مرحلہ شروع ہوتا ہے۔ سب سے پہلے باہروی (External) ممتحن کو موقع دیا جاتا ہے۔ اگر اس ممتحن نے مقالہ کا خوب باریک بینی سے تنقیدی جائزہ لیا ہو تو وہ قسم قسم کے سوالات کر سکتا ہے۔ بعض ممتحنین تو سوالات اور غلطیوں کو لکھ کر لے آتے ہیں۔ سوالات کے علاوہ صفحات کے اعتبار سے ان غلطیوں کی نشاندہی کرتے جاتے ہیں اور مقالہ نگار سے تصحیح کا مطالبہ کرتے ہیں۔ مقالہ نگار کو چاہیے کہ مقالہ جمع کرانے کے بعد خوب محنت سے خود اس کا تنقیدی جائزہ لے۔ جو سوالات اس کے ذہن میں پیدا ہوں انہیں لکھتا جائے اور جو غلطیاں نظر آئیں ان کی صفحات اور سطور کے اعتبار سے فہرست مرتب کر لے۔ جب ممتحنین غلطیوں کی تصحیح کا مطالبہ کریں تو وہ اپنی تیار کی ہوئی فہرست انہیں دے دے۔ ایسا کرنا مقالہ نگار کے لیے بہت سود مند ثابت ہوتا ہے۔

زبانی امتحان کے وقت محقق کو اپنا معاملہ اللہ تعالیٰ کے سپرد کر دینا چاہیے اور اس سے مدد کی التجا کرنی چاہیے۔ اس عمل کے جو اثرات ہوں گے انہیں امتحان کے دوران وہ بخوبی محسوس کر لے گا۔ سوالات کے جوابات دیتے وقت مقالہ نگار کو پروقار، سنجیدہ اور عاجزانہ اسلوب اپنانا چاہیے۔ ہر جواب اطمینان بخش دینے کی کوشش کرنی چاہیے۔ اگر ممتحن کسی موقع پر سخت رویہ اختیار کر بھی لے تو بھی مقالہ نگار کو ایک طالب علم ہی رہنا چاہیے اور سنجیدگی و اعتدال سے کام لینا چاہیے۔ باہروی ممتحن کے بعد اندرونی ممتحن کی باری آتی ہے۔ وہ بھی سوالات پوچھتا ہے۔ اس موقع پر بھی مقالہ نگار کو پہلے ہی کی طرح کارویہ اپنانا چاہیے۔

مقالہ کی تیاری میں ابتداء سے آخر تک اگر مقالہ نگار نے خوب محنت کی ہو، تحقیق کے



مروجہ و مسلمہ اصولوں کے مطابق کام کیا ہو، مصادر و مراجع سے صحیح طرح سے استفادہ کیا ہو، نگران مقالہ کو مطمئن رکھا ہو، اس کی نصیحتوں پر عمل کیا ہو اور ہر بات کو سمجھ کر لکھا ہو تو زبانی امتحان کے دوران وہ مطمئن نظر آئے گا، ممتحنین سے خائف نہیں ہوگا۔ وہ اس کے حوصلے پست کرنے کی کتنی بھی کوشش کیوں نہ کریں مگر وہ گھبرائے گا نہیں، اس کے چہرے پر مایوسی کے اثرات تک نظر نہیں آئیں گے۔ بالآخر وہ کامیاب ہو جائے گا۔ یہی ہر صاحب مقالہ کی خواہش ہوتی ہے۔

اس کے برعکس اگر مقالہ نگار نے مطلوبہ تقاضوں کو پورا نہ کیا ہو، یا کچھ کو کیا ہو اور کچھ کو نہ کیا ہو تو جیسی اس کی کارکردگی ہوگی اسی کے مطابق اس کے ساتھ معاملہ ہوگا:

☆ اگر کام غیر معیاری ہو تو ہو سکتا ہے کہ اسے کچھ ترامیم اور اضافوں کے ساتھ دوبارہ مقالہ لکھنے کو کہا جائے۔

☆ اگر کچھ غلطیاں ہوں یا کوئی اور نقائص رہ گئے ہوں تو ہو سکتا ہے کہ اس سے غلطیوں کی تصحیح کرنے اور نقائص کو دور کرنے کا مطالبہ کیا جائے اور کہا جائے کہ اس وقت تک نتیجہ نہیں ملے گا جب تک مطلوبہ کام نہ لیا جائے۔

### سوالات کی نوعیت

عام طور پر مقالہ کے متعلق درج ذیل موضوعات کے متعلق سوالات پوچھے جاسکتے ہیں:

#### ۱۔ ہیئت مقالہ

سب سے پہلے مقالہ نگار سے مقالہ کی ہیئت کے متعلق سوالات کیے جاتے ہیں۔ ہیئت کے عناصر اور پر بیان کیے جا چکے ہیں۔ ان کے مطابق مقالہ تیار کیا جائے۔

#### ۲۔ اسلوب تحقیق

مقالہ نگار مقدمہ میں اپنے اسلوب تحقیق کو بیان کر دیتا ہے۔ اس اسلوب کے نکات کو ذہن میں رکھتے ہوئے ممتحنین سوالات کرتے ہیں۔ وہ جاننا چاہتے ہیں کہ کیا محقق نے اس اسلوب



کی پابندی کی ہے جس کی صراحت اس نے مقدمہ میں کی ہے۔ کسی بھی مقالے کا اسلوب اس کے معیاری وغیر معیاری ہونے میں مرکزی کردار اداء کرتا ہے۔ اس لیے اس پہلو پر خاص توجہ مرکوز رکھنی چاہیے۔

۳۔ علمی پہلو

بعض اوقات ایسا بھی ہوتا ہے کہ ممتحنین مقالہ کے مواد میں سے نہیں بلکہ باہر سے سوالات کرتے ہیں۔ ان سوالات کا تعلق کسی نہ کسی پہلو سے مقالہ سے ہوتا ہی ہے۔ اس نوعیت کے سوالات کے جوابات دینے کے لیے مقالہ نگار کو تیار رہنا چاہیے۔ اگر جواب آتا ہو تو اچھے اسلوب میں دینا چاہیے۔ انہیں مطمئن کرنے کی خاطر کبھی بھی ادھر ادھر کی باتوں کا سہارا نہیں لینا چاہیے۔ اگر جواب نہ آتا ہو تو معذرت کر لینے میں ہی بہتری ہوتی ہے۔ بہر کیف مقالہ نگار کو ہر قسم کے حالات سے مقابلہ کرنے کے لیے اپنے آپ کو ہر وقت تیار رکھنا چاہیے اور اللہ سے مدد مانگتے رہنا چاہیے۔

## حوالہ جات

- ۱۔ کیف تکتبُ بحثاً أو رسالة، دکتور احمد شلبی، ص ۱۳، مکتبة النهضة المصرية، بالقاهرة، ۱۹۹۰۔
- ۲۔ تحقیق نگاری، ڈاکٹر محمد طفیل ہاشمی، ص ۱۱، علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد۔
- ۳۔ مقالہ کی پیش کش، پروفیسر عبدالستار دلوی، مشمولہ ”اردو میں اصول تحقیق“، ج ۱، ص ۲۳۹، مرتبہ: ڈاکٹر ایم۔ سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد۔
- ۴۔ دیکھئے: مقالہ کی تسوید، عبدالرزاق قریشی، مشمولہ ”اردو میں اصول تحقیق، مجلہ بالا، ج ۱، ص ۲۶۳۔



- ۵۔ مقالہ کی پیش کش، دہلی، مشمولہ، محولہ بالا، ج ۱ ص ۲۳۹۔
- ۶۔ مقالہ کی تسوید، عبدالرزاق قریشی، در "اردو میں اصول تحقیق" محولہ بالا، ج ۱ ص ۲۶۳، ۲۶۴۔
- ۷۔ اصول تحقیق، ایم۔ سلطانیہ بخش، ص ۱۳۶۔
- ۸۔ مقالہ کی پیش کش، پروفیسر عبدالستار دہلی، مشمولہ "اردو میں اصول تحقیق" محولہ بالا، ج ۱ ص ۲۳۸، ۲۳۹۔
- ۹۔ ایضاً، ص ۲۳۹۔
- ۱۰۔ تفصیل کے لیے دیکھئے: مقالہ کی پیش کش، عبدالستار دہلی، در "اردو میں اصول تحقیق" ج ۱ ص ۲۶۰، ۲۶۱۔
- ۱۱۔ دہلی، سابق حوالہ، ص ۲۶۱، ۲۶۲۔
- ۱۲۔ اصطلاح اس لفظ یا مرکب کو کہتے ہیں جس سے کسی علم یا فن میں کوئی خصوصی معنی مراد لیے جاتے ہیں۔ اگر وہ لفظ عام زبان میں بھی استعمال ہوتا ہے تو وہاں اس کے جو معنی ہوتے ہیں، زیادہ تر امکان یہ ہے کہ علمی و فنی اصطلاح کے طور پر اس کے محدود یا مختلف معنی ہوں گے۔ اصطلاح ایسی علامت ہے جو اس علم و فن کے لکھنے اور پڑھنے والوں کے مابین ایک خاموش سمجھوتے کی غمازی کرتی ہے، (گیان چند، تحقیق کافن، ص ۲۳۳)۔
- ۱۳۔ مقالہ کی پیش کش، عبدالستار دہلی، در اردو میں اصول تحقیق، ج ۱ ص ۲۶۲۔
- ۱۴۔ دیکھئے، اصول تحقیق، سعید اللہ قاضی، ص ۹۶۔
- ۱۵۔ دیکھئے، تحقیق نگاری، ڈاکٹر محمد طفیل ہاشمی، ص ۲۶، قاضی، سعید اللہ، اصول تحقیق، ص ۱۱۱۔
- ۱۶۔ قریشی، محولہ بالا در "حوالہ سابق" ج ۱ ص ۲۶۸، ۲۶۹، مزید تفصیل کے لیے دیکھئے: باب نمبر ۱۱، اقتباسات۔
- ۱۷۔ اصول تحقیق، ڈاکٹر سعید اللہ قاضی، ص ۸۵۔
- ۱۸۔ دیکھئے: تحقیق نگاری، ہاشمی، محولہ بالا، ص ۲۶، اصول تحقیق، قاضی سعید اللہ، ص ۱۱۲۔
- ۱۹۔ تفصیل کے لیے دیکھئے: سابق حوالہ، ج ۱ ص ۲۷۰، ۲۷۱۔
- ۲۰۔ دیکھئے: تحقیق کافن، گیان چند، ص ۲۶۳، ۲۶۵۔
- ۲۱۔ دیکھئے: تحقیق نگاری، ہاشمی، محولہ بالا، ص ۱۱۱، ۱۱۲۔



پی ایچ ڈی علوم اسلامیہ کے خاکہ کا نمونہ

تدوین حدیث کے اسالیب و مناہج

(عہد رسالت ﷺ تا ۲۵۸ھ)

نگران تحقیق

پروفیسر ڈاکٹر جمیلہ شوکت

ڈائریکٹر شیخ زاید اسلامک سینٹر

پنجاب یونیورسٹی لاہور

مقالہ نگار

عبدالحمید خان عباسی

اسٹنٹ پروفیسر شعبہ قرآن و تفسیر

علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد

ادارہ علوم اسلامیہ

پنجاب یونیورسٹی لاہور

۱۴۲۵ھ - ۲۰۰۴ء



## مقدمہ

### موضوع کا تعارف اور اس کی اہمیت

اسلامی ضابطہ حیات کو اعتقادی و عملی طور پر اپنانے اور اس کا مکمل فہم و ادراک حاصل کرنے کے لیے قرآن مجید اور احادیث رسول ﷺ کی طرف رجوع کرنا نہایت ضروری ہے۔ کیونکہ ان دونوں سے اعتقادی اور عملی اصول و احکام کے چشمے پھوٹتے ہیں۔ اسی وجہ سے دونوں کے احکام کو اسلامی شریعت کا بنیادی مصدر و منبع ہونے کی حیثیت حاصل ہے۔ قرآن مجید ان احکام کا اجمال اور احادیث رسول ﷺ ان کی تفصیل و توضیح اور شارح و ترجمان ہیں یعنی دونوں ایک دوسرے کے لیے لازم و ملزوم ہیں، علامہ سید سلیمان ندویؒ فرماتے ہیں:

۱۔ ”علم القرآن اگر اسلامی علوم میں دل کی حیثیت رکھتا ہے تو علم حدیث شہ رگ کی۔ یہ شہ رگ اسلامی علوم کے تمام اعضاء و جوارح تک خون پہنچا کر ہر آن ان کے لیے تازہ زندگی کا سامان پہنچاتی رہتی ہے۔ آیات کا شان نزول اور ان کی تفسیر، احکام القرآن کی تشریح و تعیین، اجمال کی تفصیل، عموم کی تخصیص، مبہم کی تعیین سب علم حدیث کے ذریعہ معلوم ہوتی ہے“ (۱)۔

۲۔ ”اسی طرح حامل قرآن کی سیرت، حیات طیبہ اور آپ ﷺ کے اخلاق و عادات مبارکہ، اقوال و اعمال، سنن و مستحبات اور احکام و ارشادات اسی علم کے ذریعے ہم تک پہنچے ہیں“ (۲)۔

۳۔ ”اسی طرح خود اسلام کی تاریخ، صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے احوال اور ان کے اعمال و اقوال اور اجتہادات و استنباطات کا خزانہ بھی اسی (علم حدیث) کے ذریعہ ہم تک پہنچا ہے“ (۳)۔



علامہ ندوی آخر میں لکھتے ہیں: ”اسی بناء پر یہ کہا جائے تو صحیح ہے کہ اسلام کے عملی پیکر کا صحیح مرقع اسی علم کی بدولت مسلمانوں میں ہمیشہ کے لیے قائم ہے اور ان شاء اللہ تا قیامت رہے گا“ (۴)۔

علامہ جعفر الکتانی (م ۱۳۴۵ھ) فرماتے ہیں: ”یقیناً وہ علم جو ہر ارادہ رکھنے والے کے لیے ضروری ہے اور ہر عالم و عابد کو اس کی ضرورت پڑتی ہے، وہ یہی علم حدیث و سنت ہے یعنی جو بھی حضور اکرم ﷺ نے اپنی امت کے لیے مشروع و مسنون قرار دیا ہے“ (۵)۔

اس کے بعد علامہ کتانی نے یہ اشعار نقل کیے ہیں:

دین النبی و شرعہ اخبارہ      وأجل علم یقتضی آثارہ

من کان مشتغلاً بہا و بنشرہا      بین البریة لا عفت آثارہ (۶)۔

(نبی اکرم ﷺ کا دین اور شریعت آپ ﷺ کی احادیث ہیں۔ اور یہ وہ عظیم علم ہے جس کی پیروی کی جاتی ہے، جو اس میں اور اس کی نشر و اشاعت میں مشغول ہو اس کے نشانات مخلوق میں باقی رہتے ہیں)۔

احادیث رسول ﷺ کی اس ضرورت و اہمیت اور عظمت و رفعت کے پیش نظر آغاز اسلام ہی سے مسلمانوں نے انہیں پوری محنت اور اخلاص و عقیدت سے سمجھنے اور عملی زندگی میں اپنانے کے ساتھ ساتھ محفوظ و مدون کرنے کا اہتمام بھی کیا اور ایسی خدمات سرانجام دیں جن کی دنیا کے دیگر مذاہب میں کوئی نظیر نہیں ملتی۔ چنانچہ حافظ ابن حزم لکھتے ہیں کہ اقوام عالم میں کسی کو اسلام سے پہلے یہ توفیق میسر نہیں ہوئی کہ اپنے پیغمبر کی باتیں صحیح ثبوت کے ساتھ محفوظ کر سکے۔ یہ شرف صرف ملت اسلامیہ کو حاصل ہے کہ اس نے اپنے رسول ﷺ کے ایک کلمہ کو صحت و اتصال کے ساتھ جمع کیا۔ آج روئے زمین پر کوئی ایسا مذہب نہیں ہے جو اپنے پیشوا کے ایک کلمہ کی سند بھی صحیح طریق پر پیش کر سکے۔ اس کے برعکس اسلام نے اپنے رسول ﷺ کی سیرت کے ایک



ایک گوشہ کو پوری صحت و اتصال کے ساتھ محفوظ کیا ہے (۷)۔

اس عظیم کارنامے کا اعتراف غیروں نے بھی کیا ہے، ڈاکٹر اسپرنگر (۸) کہتے ہیں کہ مسلمانوں نے علم حدیث کی حفاظت کے لیے اسماء الرجال کا فن ایجاد کیا، جس سے پانچ لاکھ انسانوں کے حالات محفوظ ہو گئے (۹)۔

سیرت رسول ﷺ کے جملہ پہلوؤں کو سینوں اور سفینوں میں محفوظ کرنے کا یہ بے نظیر اہتمام اس لیے کیا گیا کیونکہ آپ ﷺ کی ذات گرامی کو اللہ تعالیٰ نے تاقیامت انسانیت کے لیے ”اسوۂ حسنہ“ یعنی بہترین نمونہ قرار دیا (۱۰)، جو آپ ﷺ کے اقوال، افعال، احوال اور شب و روز کے جملہ معمولات پر مشتمل ہے۔ اللہ تعالیٰ نے جس طرح آپ ﷺ کی حیات طیبہ کو ”بہترین نمونہ“ قرار دیا، اسی طرح اس کی تمام تفصیلات کو نسل در نسل منتقل کرنے کے لیے احادیث و سنن کے حفظ و ضبط کا ایک مستقل نظام قائم کر دیا۔

صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے اس ”اسوۂ حسنہ“ کے ایک ایک لمحہ کو نہ صرف اپنے دل و دماغ میں بٹھایا اور اس پر عمل پیرا رہے بلکہ اسے قیامت تک محفوظ کرنے کے لیے روایت و تحریر کا سلسلہ بھی شروع کر دیا۔ شمع رسالت کے ان پروانوں نے حضور اکرم ﷺ کی نجی زندگی سے لے کر بین الاقوامی سیاسی معاملات تک کو ضبط کیا۔ پھر تابعین اور تبع تابعین رحمہم اللہ کی پوری پوری زندگیاں اس مقدس مشن میں صرف ہوتی رہیں۔ اس طرح احادیث نبویہ کا ایک ضخیم اور قابل فخر ذخیرہ بڑی بڑی کتب کی شکل میں مدون ہوتا گیا۔ ان کتب کے مؤلفین و مدونین نے اپنے اپنے ذوق اور اغراض و مقاصد کے پیش نظر مختلف نوعیت کے اسالیب و مناہج اپنائے جن کی معرفت سے ان کتب کے مزاج کا پتہ چل سکتا ہے اور محققین حضرات کے لیے ان سے استفادہ آسان ہو سکتا ہے۔

علم حدیث \_\_\_\_\_ جو کہ من ابرک العلوم و اشرف الفنون علی وجہ



الأرض ہے۔ کے ساتھ شغف رکھنے والے حضرات جانتے ہیں کہ تدوین حدیث کے اسالیب و مناہج کا یہ اختلاف اور مصادر حدیث کے انداز و طرق کا یہ تنوع حقیقت میں ذخیرہ احادیث کی صحت اور اس کے ضعف پر اثر انداز نہیں ہوتا بلکہ ان مصادر سے استفادہ کرتے وقت اکثر و بیشتر اوقات نہ جاننے والے کے لیے دقت و پریشانی کا باعث بنتا ہے۔ کئی مبتدئین کو ”حوالہ جاتی“ کام کرتے وقت مطلوبہ احادیث تک رسائی کے راستہ میں صعوبت و دشواری کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔ اس کی اصل وجہ یہ ہے کہ ہر مؤلف کا اپنا اپنا ذوق اور خاص نقطہ نظر ہوتا ہے جس کے مطابق وہ کتابی صورت میں احادیث مدون کرتا ہے۔ اس لئے عام قارئین بالخصوص محققین حضرات اور حدیث شریف کے اساتذہ کرام اور طلباء کے لئے ضروری ہے کہ وہ تدوین حدیث کے اسالیب و مناہج نیز ان پر مدون ہونے والی کتب کے جامعین کے ذوق، نقطہ نظر، اغراض و مقاصد اور ان کے انداز و طرق کے تنوع سے بخوبی آگاہ ہوں تاکہ کما حقہ ان کی مدونات سے استفادہ کر سکیں۔ کیا یہ حقیقت نہیں ہے کہ کتب حدیث کی مزاج شناسی کے بعد ہی باحثین و محققین حضرات کے لیے ان سے استفادہ کرنا آسان ہو سکتا ہے؟

موضوع کی اس اہمیت اور اس پر کام کرنے کی ضرورت کے علاوہ، مقالہ نگار کی اس سے ذاتی دلچسپی اور متعلقہ مصادر و مراجع سے اس کی پہلے سے واقفیت بھی اسے اختیار کرنے کا سبب بنی۔

### موضوع کا بنیادی سوال

پی ایچ۔ ڈی علوم اسلامیہ کے لیے لکھے گئے تحقیقی مقالہ بعنوان ”تدوین حدیث کے

اسالیب و مناہج“ کے بنیادی سوال کے اہم نکات درج ذیل ہیں:

- ۱۔ تدوین حدیث کی جمع و تدوین کا کام کب شروع ہوا؟
- ۲۔ حفاظت و تدوین حدیث کے عمل میں صحابہ رضی اللہ عنہم و تابعین کی روش کس نوعیت



کی تھی؟

- ۳۔ تدوین حدیث کے اسالیب و مناہج کیسے ایجاد ہوئے؟ اور ہر ایک اسلوب کا آغاز کس کس محدث نے کون کون سی کتاب تصنیف کر کے کیا؟
- ۴۔ محدثین نے اپنی اپنی کتب کو کن کن اغراض و مقاصد کے پیش نظر تالیف کیا؟
- ۵۔ محدثین نے تدوین حدیث کے عمل میں کن کن شرائط کو ملحوظ خاطر رکھا؟
- ۶۔ تدوین حدیث کے اسالیب و مناہج میں تنوع کیوں پایا جاتا ہے؟
- ۷۔ تدوین حدیث کے ہر ایک اسلوب کی نمائندہ کتب ترتیب و تدوین کے لحاظ سے ایک جیسی ہیں یا ایک دوسرے سے مختلف ہیں؟
- اس مقالہ میں ان ہی سوالوں کے ممکنہ جوابات دینے کی کوشش کی گئی ہے۔

### موضوع تحقیق پر سابقہ کام کا جائزہ

تدوین حدیث کے اسالیب و مناہج متعین کر کے ان کے تحت مرتب ہونے والی کتب کے انداز و طرق بیان نہیں کیے گئے ہیں، حتیٰ کہ کسی ایک اسلوب کو متعین کر کے بھی تحقیقی نوعیت کا کام نہیں ہوا ہے۔ البتہ کتب حدیث کو مختلف انواع مثلاً: مسانید، جوامع، سنن معاجم وغیرہ میں منقسم کر کے ہر نوع کی تعریف، ترتیب اور مؤلف کے مختصر تعارف کو بیان کیا گیا ہے، اور کہیں صرف کتاب اور مؤلف کے نام پر ہی اکتفا کیا گیا ہے۔ جیسا کہ علامہ جعفر الکتانیؒ نے اپنی کتاب "الرسالة المستطرفة" میں کیا ہے۔

کتب حدیث کی اقسام پر سب سے پہلے امام ابوالسعادات مبارک بن محمد ابن الاثیر الجزریؒ (م ۶۰۶ھ) نے اپنی کتاب "جامع الاصول من احادیث الرسول ﷺ" کے جزء اول کے مقدمہ میں قدرے تفصیل سے لکھا ہے (۱۱)۔ اس کو حاجی خلیفہ (م ۱۰۶۷ھ) نے کشف الظنون میں نقل کیا ہے (۱۲)۔ پھر علامہ محمد طاہر بن صالح الجزیری (م ۱۳۳۸ھ) نے



اسے اپنے انداز میں بیان کیا (۱۳)، جسے محمد عبدالحمید چشتی نے فوائد جامعہ کی اپنی شرح ”عجالہ نافعہ“ میں (۱۴)، امام عبدالرحمن بن عبدالرحیم مبارکپوری (م ۱۳۵۳ھ) نے ”مقدمة تحفة الأحوذی“ میں (۱۵)، محمد عبدالعزیز الخولی نے ”تاریخ فنون الحدیث“ میں (۱۶) اور استاذ محمد أبوزھومصری نے ”الحدیث والمحدثون“ میں اپنے اپنے اسلوب میں بیان کر دیا ہے (۱۷)۔ ان سے کتب حدیث کی اقسام اور ان کی ترتیب واضح ہو جاتی ہے۔

علاوہ ازیں! علوم الحدیث کی اکثر و بیشتر کتب میں مدونات حدیث کی انواع کو کسی نہ کسی انداز میں بیان کیا گیا ہے (۱۸)، جبکہ بعض میں ان کی اقسام کو بیان کرنے کے ساتھ ساتھ ان کی تصنیف و تالیف اور جمع و تدوین کے طریقوں کی بھی نشاندہی کر دی گئی ہے (۱۹)۔

جن جن کتب حدیث کی شرحیں لکھی جا چکی ہیں ان میں سے ہر ایک شرح کی پہلی جلد کے مقدمہ میں شارح نے کسی نہ کسی انداز میں متعلقہ کتاب کے اسلوب کو بیان کرنے کی کوشش کی ہے، مگر اس نے مثالوں سے اسلوب کے نکات کی توضیح و تائید نہیں کی ہے۔ ایسا زیادہ تر موطا امام مالک موطا امام محمد، صحاح ستہ کی شروح میں ہوا ہے۔ مسانید میں سے مسند امام احمد بن حنبل کے علاوہ تقریباً تمام مسانید، امام طبرانی کی معجم کبیر و صغیر اور مصنفات کی شروح نہیں لکھی گئی ہیں جن سے ان کے منہج اور خصوصیات معلوم کرنے میں مدد مل سکے۔

جہاں تک محققین حضرات کا تعلق ہے تو انہوں نے بھی اپنی محققہ کتب حدیث کے مقدموں میں ان کے اسلوب اور خصائص وغیرہ کو بیان کیا ہے، مگر مثالوں سے توضیح یا تائید بالکل نہیں کی ہے، جیسے مقدمہ ”شرح معانی الآثار“ از محمد سید جارالحق اور محمد زہری النجار، جبکہ بعض محققین نے تو نفس کتاب کے بارے میں کچھ بھی بیان نہیں کیا ہے، جیسے مقدمہ مصنف عبدالرزاق از مولانا حبیب الرحمن اعظمی اور مقدمہ مصنف ابن ابی شیبہ از محمد عبدالسلام شاہین وغیرہ۔ اور جنہوں نے اسلوب بیان کیا بھی ہے تو چند ایک سطور میں یا پھر مصنف کے اسلوب ترتیب کو اجاگر



کیا ہے، جیسے امام طبرانی کی ”المعجم الکبیر“ کے محقق حمدی عبدالمجید سلفی نے کیا۔

اس کے علاوہ کتب حدیث پر لکھی جانے والی عام نوعیت کی کتب اور محدثین کے تذکروں کی کتب میں بھی کتب حدیث کے منہج اور ان کی خصوصیات کے چند نکات کو بیان کیا گیا ہے، مگر ان میں بھی بہت کم کتابوں میں مثالوں سے توضیح و تائید کی گئی ہے جیسے شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی (م ۱۲۳۸ھ) کی بستان الحدیث اور مجالہ نافعہ، ڈاکٹر احمد محرم الشیخ ناجی کی کتاب ”الضوء اللامع المبین عن مناهج المحدثین“، استاذ ابوزہومصری کی کتاب الحدیث المحدثون، ڈاکٹر محمود طحان کی کتاب ”اصول التخریج و دراسة الاسانید“، ڈاکٹر ابو محمد عبدالمہدی بن عبدالقادر کی کتاب ”طرق تخریج حدیث رسول ﷺ“، ڈاکٹر الحسنی عبدالمجید ہاشم کی تالیف ”الامام البخاری محدثا و فقیہا“، مولانا محمد صدیقی کاندھلوی کی کتاب ”امام اعظم اور علم الحدیث“، مولانا محمد عبدالرشید نعمانی کی کتاب ”امام ابن ماجہ اور علم حدیث“، مولانا تقی الدین ندوی مظاہری کی ”محدثین عظام اور ان کے علمی کارنامے“، علامہ غلام رسول سعیدی کی ”تذکرۃ المحدثین“، مولانا ضیاء الدین اصلاحی کی دو جلدوں میں ”تذکرۃ المحدثین“، امام ابوزہرہ کی آئمہ اربعہ میں سے ہر ایک کے متعلق الگ الگ چار کتب وغیرہ۔ مقالہ نگار کے علم کے مطابق اس نوعیت کا کام، خواہ تحقیقی ہے یا عام نوعیت کا ہے، خواہ عربی میں ہے یا اردو میں... زیادہ تر آئمہ اربعہ، ارباب صحاح ستہ، یا مشہور سنن میں سے کسی سنن اور اس کے مؤلف کے متعلق ہی ہے۔ واللہ اعلم۔

### حدود (Limitations)

اس مقالہ میں عہد رسالت ﷺ سے ۴۵۸ ہجری تک کے تدوین حدیث کے بعض اسالیب و مناہج کو بیان کیا گیا ہے اور اختصار کے پیش نظر ہر ایک اسلوب پر مدون ہونے والی کتب میں سے چند مطبوع، متداول و مشہور کتب کا انتخاب کر کے ان کے اسلوب ترتیب و تدوین



کو اجاگر کیا گیا ہے:

- ۱- مسانید میں سے مسند ابی داؤد طیالسی، مسند حمیدی، مسند امام احمد بن حنبل، مسند ابی یعلیٰ الموصلی۔ اور معاجم میں سے امام طبرانی کی معاجم ثلاثہ: کبیر، اوسط اور صغیر۔
  - ۲- موطآت میں سے موطأ امام مالک بروایت یحییٰ بن یحییٰ اللیثی اور بروایت امام محمد بن حسن الشیبانی (موطأ امام محمد)۔ مصنفات میں سے مصنف عبدالرزاق اور مصنف ابن ابی شیبہ۔
  - ۳- جوامع میں سے جامع صحیح البخاری، جامع صحیح مسلم اور جامع الترمذی۔
  - ۴- مستخرجات و مستدرکات اور کتب اطراف الحدیث کے کچھ متعلقات اور امام حاکم "کی" "المستدرک علی الصحیحین" کے اسلوب کو بیان کیا گیا ہے۔
  - ۵- سنن میں سے سنن الدارمی، سنن ابن ماجہ، سنن ابی داؤد، سنن نسائی، سنن الدارقطنی اور سنن بیہقی (السنن الکبریٰ)۔
  - ۶- کتب اختلاف الحدیث اور مشکل الحدیث میں سے امام شافعی کی اختلاف الحدیث، ابن قتیبہ کی تاویل مختلف الحدیث، امام طحاوی کی معانی الآثار و مشکل الآثار اور ابن فورک کی مشکل الحدیث و بیانہ۔
- اگر ہر ایک اسلوب پر مرتب ہونے والی جملہ کتب کا استیعاب کیا جاتا تو مقالہ کی ضخامت دو چند بلکہ اس سے بھی بڑھ جاتی۔ اس لیے مذکورہ کتب ہی کے اسالیب کو مختصر بیان کرنے کی کوشش کی گئی ہے۔

### موضوع پر تحقیق کی گنجائش

مذکورہ بالا حدود تحقیق سے عیاں ہوتا ہے کہ اس موضوع پر تحقیقی کام کرنے کی کافی



گنجائش موجود ہے، وہ اس طرح کہ:

- ۱- ہر ایک اسلوب پر الگ الگ کام کیا جاسکتا ہے، مثلاً: صرف کتب مسانید پر، صرف معاجم پر، صرف موطآت پر، صرف مصنفات پر، صرف سنن پر وغیرہ وغیرہ۔
- ۲- صدی بصدی کام کیا جاسکتا ہے، خاص کر دوسری صدی ہجری کیونکہ اس میں تدوین حدیث کے میدان میں بہت وسیع پیمانے پر کام ہوا ہے اور اکثر تدوین حدیث کے اسالیب و مناہج کا آغاز اس صدی میں ہوا ہے، جیسے اسلوب ابواب کی انواع (موطآت، مصنفات، جوامع، سنن)، مسانید، اجزاء حدیث اور اربعینیات وغیرہ۔
- ۳- ہر ایک اسلوب کی کتب کا آپس میں یاد و مختلف اسالیب کی ایک ایک یا دو دو یا تین کتب میں مختلف اعتبارات سے تقابلی مطالعہ کیا جاسکتا ہے۔
- ۴- ہر ایک اسلوب کی کتب کا الگ الگ تحقیقی و تجزیاتی اور تنقیدی مطالعہ کیا جاسکتا ہے۔
- ۵- ہر ایک اسلوب کی کتب کی شرح کو کئی اعتبارات سے موضوع تحقیق بنایا جاسکتا ہے۔
- ۶- ہر ایک اسلوب کی کتب کی تحقیقی و علمی خدمات کا جائزہ لیا جاسکتا ہے۔

### فوائد

- یہ مقالہ کئی فوائد کا حامل ہے، ان میں سے چند ایک یہ ہیں:
- ۱- اس میں تدوین حدیث کے اسالیب و مناہج کے تاریخی ارتقاء سے متعلق اہم معلومات ایک خاص تسلسل کے ساتھ یکجا بیان ہوئی ہیں۔
  - ۲- اس میں ۲۴ (چوبیس) مطبوع، متداول اور مشہور و معروف کتب حدیث اور ان کے مدونین و مصنفین کے متعلق ضروری معلومات مختصر مگر جامع انداز میں موجود ہیں۔
  - ۳- عام پڑھے لکھے بالخصوص عربی زبان سے نا آشنا حضرات بھی بڑی بڑی کتب حدیث کے انداز و طرق اور ان کے مزاج سے باسانی واقف ہو سکتے ہیں۔



۴۔ تدوین حدیث کے اسالیب و مناہج میں سے ہر ایک اسلوب و منہج پر مدون ہونے والی مشہور، مطبوع اور متداول کتب حدیث کے مدونین کی تاریخ وفات کے لحاظ سے الگ الگ فہرستیں مرتب ہیں، جن سے زیر بحث اسلوب کی کتب کے آغاز و ارتقاء کا علم ہو سکتا ہے۔

### مقالہ ہذا کے مصادر کی نوعیت

مقالہ ہذا کے مصادر و مراجع میں حدیث، شروح حدیث، اصول حدیث، سیرت، طبقات، تراجم اور لغت وغیرہ کی کتابیں شامل ہیں۔

۱۔ اس مقالہ میں حدیث کی جن کتب سے، ان کے اسلوب کو بیان کرنے کے لیے، استفادہ کیا گیا ہے ان کا ذکر حدود کے عنوان کے تحت ہو چکا ہے، تخریج حدیث کے لیے بھی ان ہی کتب پر اعتماد کیا گیا ہے۔

۲۔ اس مقالہ کے مصادر میں شروح حدیث کی جو اہم کتب شامل ہیں ان میں سے کچھ یہ ہیں: ابن حجرؒ کی فتح الباری، بدرالدین عینیؒ کی عمدہ القاری، أحمد قسطلانیؒ کی ارشاد الساری، نوویؒ کی شرح صحیح مسلم، محمد بن خلیفہ وشتانیؒ کی اكمال اكمال المعلم شرح صحیح مسلم، سیوطیؒ کی شرح سنن النسائی، ابوالحسن سندیؒ کی شرح سنن ابن ماجہ، خلیل احمد سہارنپوریؒ کی بذل المجہود، محمد زرقانیؒ کی شرح الموطأ، محمد زکریاؒ کی أوجز المسالك، اور عبدالحی لکھنویؒ کی التعليق الممجد وغیرہ۔

۳۔ اسماء الرجال کی کتب میں سے امام بخاریؒ کی التاريخ الكبير، ابن سعدؒ کی الطبقات الكبرى، خطیب بغدادیؒ کی تاریخ بغداد، ذہبیؒ کی سیر اعلام النبلاء، تذکرۃ الحفاظ، میزان الاعتدال، ابن کثیرؒ کی البداية



والنہایۃ، حافظ ابن حجرؒ کی تہذیب التہذیب اور تقریب التہذیب وغیرہ سے مدد لی گئی ہے۔

۴۔ علوم الحدیث کی کتب میں سے امام حاکمؒ کی معرفة علوم الحدیث، ابن الصلاح

کی مقدمة فی علوم الحدیث، خطیب بغدادیؒ کی الکفاية فی علم الروایة، الجامع لأخلاق الراوی واداب السامع، امام سخاویؒ کی فتح المغیث، اور امام سیوطیؒ کی تدریب الراوی وغیرہ سے مواد اخذ کیا گیا ہے۔

۵۔ مقالہ ہذا میں بعض مقامات پر ثانوی مصادر اور کہیں کہیں اردو کی کتب سے بھی استفادہ کیا گیا ہے۔ ان سب کے حوالے دے دیئے گئے ہیں۔

بعض کتب کے دو ایڈیشنوں سے بھی استفادہ کیا گیا ہے کیونکہ ہر ایک ایڈیشن کا محقق الگ الگ ہے اور ہر ایک نے مقدمہ میں کچھ امور بیان کیے ہیں جو ایک دوسرے سے مختلف ہیں۔ اگر ایک ایڈیشن زیر استعمال رکھا گیا ہے اور دوسرے سے کوئی نئی بات مل گئی ہے تو اس صورت میں دوسرے ایڈیشن کا حوالہ دے دیا گیا ہے اور فہرست مصادر و مراجع میں دونوں ایڈیشنوں کی تفصیل کو بیان کر دیا گیا ہے۔

### اسلوب تحقیق (Research Methodology)

اس مقالہ کے اسلوب تحقیق کے اہم نکات حسب ذیل ہیں:

- ۱۔ مقالہ کا بنیادی اسلوب بیانیہ اور دستاویزی تحقیق کے اصولوں کے مطابق ہے۔
- ۲۔ کسی بھی کتاب کے اسلوب کو بیان کرتے وقت سب سے پہلے اس کے مؤلف کا مختصر تعارف کرایا گیا ہے اور حاشیہ میں ان مصادر و مراجع کی نشاندہی کر دی گئی ہے جن سے حالات زندگی ماخوذ ہیں اور جن میں حالات کی تفصیلات موجود ہیں۔ اس کے بعد زیر بحث کتاب کا تعارف کرایا گیا ہے، جس میں اس کے مقصد تالیف، شرائط تخریج



حدیث، ابواب و احادیث کی تعداد اور مصادر حدیث میں اس کے مقام و مرتبہ وغیرہ کو بیان کیا گیا ہے۔

۳۔ اس کے بعد کتاب کے اسلوب ترتیب و تدوین کو نکات کی صورت میں بیان کیا گیا ہے

اور اکثر نکات کی توضیح کتاب سے مثالوں کے ذریعے کر دی گئی ہے۔ قرآنی آیات اور احادیث رسول اللہ ﷺ پر اعراب لگا دیئے گئے ہیں اور ان کی تخریج بھی کر دی گئی ہے۔

۴۔ مقالہ کے دوران ضرورت پڑنے پر ہی عربی عبارتوں کو نقل کیا گیا ہے۔ زیادہ تر عربی

اقتباسات کے ترجمہ پر اکتفاء کیا گیا ہے، کیونکہ کثرت اقتباسات سے حجم بڑھتا چلا جاتا ہے۔

۵۔ ہر باب کے حوالہ جات و حواشی اس کے آخر میں دے دیئے گئے ہیں۔

۶۔ فہرست احادیث نبوی ﷺ مقالہ میں احادیث کے اندراج کی ترتیب سے مرتب کی

گئی ہے۔ اس فہرست میں احادیث کا متن، تخریج اور مقالہ کے اس صفحہ کی نشاندہی کی گئی ہے جس صفحہ پر یہ حدیث موجود ہے۔

۷۔ اُعلام کی فہرست حروف تہجی پر مرتب کی گئی ہے۔ اور صرف ان صفحات کے نمبر لکھ دیئے

گئے جن پر ان شخصیات کا مختصر تعارف کرایا گیا ہے۔

۸۔ حوالے دینے اور مصادر و مراجع کی فہرست تیار کرنے میں مصنفین / مؤلفین کے

مشہور ناموں کے بجائے کتب کے ناموں کا اعتبار کیا گیا ہے، کیونکہ یہ آسان اور

فطری اسلوب ہے۔ اس مقالہ کی طبیعت کا تقاضا بھی یہی ہے کہ فہرست کتب کے

ناموں پر مرتب کی جائے تاکہ ہر ایک اسلوب کی کتب یکجا ہو جائیں۔ اس کے مقابلہ

میں مصنفین / مؤلفین کے ناموں پر حوالے دینے اور مصادر و مراجع کی فہرست مرتب

کرنے میں کئی پیچیدگیوں اور دشواریوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔ اہل علم ان سے بخوبی



آشنا ہیں۔ مصنفین / مؤلفین میں سے بعض اپنے اصلی ناموں سے معروف ہوتے ہیں جیسے ابراہیم بن یزید، بعض کنیتوں سے جیسے ابوحنیفہ (النعمان بن ثابت) اور ام مبشر (ام مبشر بنت معرور)، بعض اپنے آباء سے، جیسے ابن مردویہ (احمد بن موسیٰ بن مردویہ بن فورک ابو بکر)، ابن الاثیر (مبارک بن محمد ابو السعادات) اور ابن حنبل (احمد بن محمد بن حنبل الشیبانی)، بعض القابات سے جیسے البرزازی (احمد بن عمرو ابو بکر) اور الجصاص (احمد بن علی ابو بکر الرازی)، بعض بلدان سے جیسے الاصفہانی (النعمان بن عبدالسلام)، الدہلوی (شاہ ولی اللہ) اور بعض قبائل سے مشہور ہوتے ہیں جیسے الانصاری (محمد بن عبداللہ) وغیرہ۔ اعلیٰ کی وجہ شہرت متعین کرنے میں کسی نہ کسی طرح کی مشکل کا امکان رہتا ہی ہے۔

## عنوانات مقالہ کی تقسیم و ترتیب

مقالہ ہذا مقدمہ اور تمہید کے علاوہ سات ابواب پر مشتمل ہے:

**مقدمہ:** مقدمہ ان عناصر پر مشتمل ہے: اسباب اختیار موضوع، جیسے اس کی اہمیت و ضرورت، اس سے مقالہ نگار کی ذاتی دلچسپی، اس کے مصادر و مراجع سے مقالہ نگار کی پہلے سے واقفیت، کچھ بنیادی سوالات، موضوع تحقیق پر سابقہ کام کا جائزہ، حدود تحقیق، موضوع پر تحقیق کی گنجائش، مقالہ کے فوائد، مصادر کی نوعیت، اسلوب تحقیق اور عنوانات کی تقسیم و ترتیب۔

**تمہید:** اس میں عہد رسالت سے لے کر ۴۵۸ ہجری تک تدوین حدیث کے اسالیب و مناہج کا تاریخی و ارتقائی جائزہ لیا گیا ہے اور مصادر اصلیہ کی قدر و قیمت کی معرفت کے لیے صحت و شہرت کے لحاظ سے کتب حدیث کے طبقات کو بیان کیا گیا ہے۔



## ابواب کی تقسیم

مقالہ ہذا کے ہر ایک باب کے ابتداء میں اس میں بیان ہونے والے اسلوب کا تعارف، اور اس پر مدون ہونے والی کتب کے آغاز و ارتقاء کو ترتیب زمانی کے لحاظ سے ان کی فہرست مرتب کر کے بیان کیا گیا ہے۔ پھر زیر بحث اسلوب کی توضیح کے لیے اس سے متعلقہ چند مشہور کتب منتخب کر کے ان کے اسالیب کو بیان کیا گیا ہے۔ ہر کتاب کے اسلوب ترتیب و تدوین کے بیان سے قبل اس کے مؤلف اور کتاب کے تعارف کو مختصراً بیان کیا گیا ہے۔

**باب اول:** میں تدوین حدیث کے اسلوب مسانید و معاجم کو زیر بحث لایا گیا ہے۔ مسانید میں سے مسند ابی یعلیٰ الموصلی، مسند حمیدی، مسند امام احمد بن حنبل، مسند ابی داؤد طیالسی اور امام طبرانی کی معاجم ثلاثہ کے اسلوب ترتیب و تدوین کو بیان کیا گیا ہے۔

**باب دوم:** میں تدوین حدیث کے اسلوب ابواب کی دو شاخوں موطآت و مصنفات کو زیر بحث لایا گیا ہے۔ موطآت میں سے موطأ امام مالک و موطأ امام محمد اور مصنفات میں سے مصنف عبدالرزاق صنعانی و مصنف ابن ابی شیبہ کے اسلوب ترتیب و تدوین کو بیان کیا گیا ہے۔ ان دونوں طرح کی کتب میں فقہی ابواب کے اسلوب پر احادیث رسول ﷺ کے ساتھ ساتھ آثار صحابہ رضی اللہ عنہم، اقوال و فتاویٰ تابعین و تبع تابعین رحمہم اللہ کو بھی مدون کیا گیا ہے۔

**باب سوم:** اس باب میں اسلوب ابواب کی صرف ایک قسم، جو ”جوامع“ کے نام سے مشہور ہے، کو زیر بحث لایا گیا ہے اور توضیحاً جامع صحیح البخاری، جامع صحیح مسلم اور جامع الترمذی کے اسلوب ترتیب و تدوین کو بیان کیا گیا ہے۔

**باب چہارم:** اس باب میں تدوین حدیث کے تین مختلف اسالیب: استخراجی، استدراکی اور



اطرافنی کوزیر بحث لایا گیا ہے۔ پہلے اسلوب پر مدونہ کتب کو ”مستخرجات“ دوسرے پر ”مستدرکات“ اور تیسرے پر ”اطراف الحدیث“ کہتے ہیں۔ ان میں سے صرف استدراکی اسلوب پر مدون ہونے والی معروف و متداول کتاب ”المستدرک علی الصحیحین“ کے اسلوب کو بیان کیا گیا ہے۔

**باب پنجم:** میں تدوین حدیث کے اسلوب ابواب ہی کی ایک اہم صنف ”السنن“ کوزیر بحث لایا گیا ہے اور اس اسلوب پر مدون ہونے والی سنن میں سے سنن الدارمی، سنن ابن ماجہ، سنن ابی داؤد، سنن الدارقطنی اور سنن بیہقی کے اسلوب ترتیب و تدوین کو بیان کیا گیا ہے۔

**باب ششم:** اس باب میں تدوین حدیث کے ایک منفرد اسلوب اور علوم الحدیث میں سے ایک اہم علم ”اختلاف الحدیث“ کوزیر بحث لایا گیا ہے۔ اس اسلوب کی توضیح کے لیے چار مشہور کتب کے اسلوب ترتیب و تدوین کو بیان کیا گیا ہے: امام شافعی کی اختلاف الحدیث، امام ابن قتیبہ کی تاویل مختلف الحدیث اور امام طحاوی کی معانی الآثار و مشکل الآثار۔

**باب ہفتم:** اس باب میں تدوین حدیث کے ان اسالیب کو بیان کیا ہے: اجزائے حدیث، اربعیات، علل حدیث اور غریب الحدیث۔ ان میں سے ہر ایک اسلوب کے صرف تعارف اور ان کتب کی فہرست زمانی ترتیب کے لحاظ سے مرتب کی گئی ہے جو اس اسلوب کے مطابق تالیف ہوئی ہیں۔

ساتویں باب کے بعد نتائج تحقیق اور سفارشات کو بیان کیا گیا ہے۔ اس کے بعد قرآنی آیات، احادیث نبویہ، اُعلام اور مصادر و مراجع کی فہرست مرتب کی گئی۔



مقالہ ہذا میں اگر کوئی خوبی ہے تو یہ صرف اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم اور نبی اکرم ﷺ کی نظر کرم کا نتیجہ ہے اور اگر کوئی کمی یا کوئی کوتاہی ہے تو یہ مقالہ نگار کی کم ہمتی، کم علمی و غفلت کی وجہ سے ہے۔ مقالہ نگار اصلاح کے لیے ہمہ وقت تیار ہے۔ اللہ تعالیٰ اپنے حبیب حضرت محمد ﷺ کے طفیل اس کوشش کو قبول فرمائے۔ آمین، ثم آمین۔

عبدالحمید خان عباسی

جمعة المبارک ۳ / رجب ۱۴۲۵ھ

۲۰ / اگست ۲۰۰۴ء



## حوالہ جات

- ۱- تدوین حدیث (گیلانی)، تعارف از سید العلماء مولانا سید سلیمان ندوی: د۔
- ۲- ایضاً۔
- ۳- ایضاً۔
- ۴- ایضاً۔
- ۵- الرسالة المستطرفة: ۲۔
- ۶- ایضاً۔
- ۷- مزید تفصیل کے لیے دیکھئے: الفصل فی الملل والأهواء والنحل: ۸۲/۲، امام اعظمؒ اور علم الحدیث: ۵۴۶۔
- ۸- ڈاکٹر اسپرنگر جرمن کے مشہور عربی دان فاضل ہیں۔ مدت تک ایٹانک سوسائٹی میں کام کیا۔ اصابہ کا نسخہ ان ہی کی تصحیح سے کلکتہ میں چھپا (سیرت النبی ﷺ) (نعمانی): ۶۳/۱ (حاشیہ نمبر ۱)۔
- ۹- الأصابة فی تمییز الصحابة (مقدمة)، نیز دیکھئے: سیرت النبی ﷺ: ۶۳/۱ (حاشیہ نمبر ۱)۔
- ۱۰- دیکھئے: سورة الأحزاب: ۲۱۰۔
- ۱۱- جامع الأصول من احادیث الرسول (ابن الأثیر): ۱۵ او ما بعدھا۔
- ۱۲- كشف الظنون عن أسامی الكتب و الفنون: ۱/۲۳۸۔
- ۱۳- دیکھئے: توجيه النظر الى أصول الأثر: ۱۳۷ او ما بعدھا۔
- ۱۴- فوائد جامعہ برعجالہ نافعہ: ۱۸۰، وما بعدھا۔
- ۱۵- مقدمة تحفة الأحوذی: ۱/۶۳ تا ۷۱۔
- ۱۶- تاریخ فنون الحدیث: ۳۵، ۳۷۔
- ۱۷- الحدیث المحدثون: ۳۶۳، ۳۶۷۔
- ۱۸- مثلاً دیکھئے: تدريب الراوی: ۱/۲۳۲۔
- ۱۹- مثلاً دیکھئے: توجيه النظر: ۱۳۷، وما بعدھا، فوائد جامعہ برعجالہ نافعہ: ۱۸۳ تا ۱۸۶، علم فہرسة الحدیث: ۱۵، ۱۴۔



باب ۱

تحقیق و تدوین کی

اردو و انگریزی اصطلاحات



## تحقیق و تدوین کی اردو و انگریزی اصطلاحات

### اولاً: اردو اصطلاحات

#### الف

اتفاقیہ: کسی نسخے میں جے، رموز اوقاف اور لفظوں کی تقسیم

اختلاف نسخ: تدوین متن میں مختلف نسخوں کے اختلافات اور ان کا ایک جا اندراج

اساسی نسخہ: وہ نسخہ جسے تدوین میں اہم ترین مان کر متن میں دیا جائے۔

استدراک: لغوی معنی سمجھ کر حاصل کرنا یا تدراک کرنا۔ کتاب کے آخر میں متن کتاب کے کسی

اندراج میں ترمیم و تصحیح۔

اسماء الرجال: اشاریے میں اشخاص کے نام۔

#### اشاریہ:

۱۔ کتاب کے آخر میں متن میں مذکورہ اشخاص، مقامات، کتب، اداروں وغیرہ کی ہجائی

ترتیب مع نمبر صفحہ۔

۲۔ کسی ادیب کی تخلیقات نیز اس پر لکھی گئی کتابوں اور مضامین کی سلسلے وار فہرست

افقی تمثیل: اگر کسی نسخے یا ایڈیشن سے دوسرے کئی نسخے نکلے ہوں تو اسے افقی (Collateral)

تمثیل کہیں گے۔

الحاق: کسی کی تخلیق یا مجموعے میں کسی دوسرے کی تخلیقات کا شامل ہو جانا۔



آمیختہ نسخہ: وہ نسخہ جس کا متن پہلے کے دو نسخوں سے ملا کر تیار کیا گیا ہو۔

انتحال: یہ عربی اصطلاح ہے جو اردو میں رائج نہیں لیکن ہونی چاہیے۔ مقتدی احسن ازہری

مختصر تاریخ ادب عربی (بنارس، ۱۹۷۷ء) حصہ اول ص ۹۵ پر لکھتے ہیں:

”انتحال نام ہے کسی چیز کی غلط نسبت کا“، لیکن انتحال کا صحیح مفہوم کسی دوسرے کی تخلیق کو

اپنی تخلیق بنا کر پیش کرنا ہے۔

انتخابی اسکول: متن کی تدوین کرتے وقت جملہ معتبر نسخوں کو لے کر سب کی مدد سے متن تیار کرنا۔

انتخاب متن: دیکھئے تنقید متن

اوقاف: جملے، فقرے اور لفظ میں توقف اور تخصیص وغیرہ کے نشانات۔

## ب

بنیادی نسخہ: دیکھئے اساسی نسخہ

بیاض: کسی کی ذاتی کاپی جس میں وہ اپنے یا دوسروں کے اشعار، نظمیں یا غزلیں لکھ لیتا ہے

شاہان کے مصنف کے بارے میں تعارفی جملہ یا فقرہ بھی لکھ دیا جاتا ہے۔

## ت

تہمیت: مسودے کو صاف کر کے نقل کرنا۔

تمتہ: کتاب کے تمام ہو جانے کے بعد کسی اور جزو کا اضافہ

تحریف: ایک حرف کی جگہ دوسرا حرف رکھنا۔ کسی شعر یا نثری جملے کے اصل متن میں تبدیلی کر

دینا۔

تحمیہ: کسی متن پر حاشیے لکھنا۔

تخریج: اگر کسی تحریر میں، عموماً نثری تحریر میں، دوسروں کے اشعار، اقوال، آیات، احادیث

وغیرہ ہوں تو ان کے مصنف کی نشان دہی کرنا، نیز ان کا صحیح متن دینا۔



## تدوین:

۱۔ کسی تصنیف کے مختلف نسخوں کا مقابلہ کر کے درست متن تیار کرنا۔

۲۔ کسی مصنف کی منتشر تخلیقات یا کسی تخلیق کے منتشر اجزاء کو صحیح ترتیب سے جمع کرنا۔

ترتیب: دیکھئے تدوین۔

ترجمہ: تذکرے میں کسی شاعر کے حالات

ترقیمہ: مخطوطے کے آخر میں کاتب کی اختتامیہ عبارت جس میں کاتب کا نام، مالک کتاب یا

فرمائش کنندہ کا نام، زمان و مکان کتابت، اختتامی شعر وغیرہ میں سے کچھ یا سب دیے

ہوں۔ پرانی مطبوعات کے آخر میں بھی ترقیمہ ہوتا تھا۔

ترک: اگلے لوگ مخطوطات میں صفحے کا نمبر نہیں ڈالتے تھے۔ دائیں ہاتھ کے صفحے کے نیچے بائیں

کونے میں اگلے صفحے کی ابتداء کے ایک دو الفاظ لکھ دیتے تھے۔ انہیں ترک کہا جاتا ہے۔

تسوید: کسی مضمون یا کتاب کا پہلا مسودہ لکھنا۔

تصحیح: متن میں اگر کچھ صریحاً غلط ہے تو اس کو درست کرنا۔

تصحیف: لفظ کو بدل دینا بالخصوص لفظوں کی تبدیلی سے، مثلاً: توشہ کو نوشہ یا لعنت کو لعنت لکھ دینا۔

تعلیقہ: ضمیمہ

تمت: کتاب کا خاتمہ جو بالعموم اس قسم کے فقرے پر ہوتا ہے: تمت، تمام شد۔

تمسیح: متن کو غلط نگاری سے مسخ کرنا۔

تنشیر: ایک قلمی یا مطبوعہ نسخے (بالعموم مصنف کے نسخے) سے جو دوسرے نسخے ماخوذ ہوتے

ہیں اس پورے سلسلے کو تنشیر کہتے ہیں۔

تنقید متن: کسی لفظ، فقرے، جملے، مصرع یا شعر کے مختلف متون میں سے مناسب ترین متن کے

انتخاب کا عمل۔



توقیف: اوقاف لگانے کا عمل

توقیت: (بروزن توقیر) کسی ادیب کی زندگی کے اہم واقعات اور تصانیف کو سنہ اور تاریخ وار درج کرنا۔

## ج

جنگ: موٹی بیاض جس میں اپنے اور دوسروں کے اشعار کے علاوہ نثر پارے بھی ہو سکتے ہیں۔

جدی تنشیر: اگر ایک قلمی یا مطبوعہ نسخے سے دوسرا نسخہ اور اس سے تیسرا نسخہ ماخوذ ہو علیٰ ہذا القیاس، تو اس عمودی تنشیر کو جدی تنشیر کہتے ہیں۔

## ح

حاشیہ:

۱۔ پہلے زمانے میں کتابت و طباعت میں کچھ نثری عبارت یا اشعار درمیان صفحہ میں لکھتے تھے اور کچھ اطراف کے حاشیے میں ترچھا کر کے۔ اس نواحی جگہ کو حاشیہ کہتے ہیں۔

۲۔ متن کے کسی اندراج پر تبصرہ یا مزید معلومات جو فٹ نوٹ یا باب یا متن کے آخر میں دی جائیں۔

حواشی: حاشیے کے دوسرے معنی کی جمع یعنی متن پر تبصرے یا اضافی معلومات

حوض: کسی صفحے پر جدولی خطوط سے محصور درمیانی جگہ جس کے تین طرف حاشیہ ہوتا ہے۔

حیات نامہ: دیکھئے توقیت

## خ

خطی نسخہ: دیکھئے قلمی نسخہ



و

دستخطی نسخہ: مصنف کے ہاتھ کا لکھا یا ٹائپ کیا ہوا نسخہ

ر

راوی: روایت کرنے والا، مصنف یا مولف

رکاب: دیکھئے ترک

رموز اوقاف: اوقاف کی علامتیں

روایت: ایک تخلیق کی مختلف شکلیں، تحریری ہوں کہ زبانی

روش التقاطی: التقاط کے معنی ہیں چننا۔ یہ ایرانی اصطلاح ہے۔ کسی متن کے نسخوں میں جو بہترین

معلوم ہوتا اسے اساسی نسخہ بنا لینا۔

روش انتقادی: یہ بھی ایرانی اصطلاح ہے۔ کسی متن کے قدیم ترین نسخے کو اساسی نسخہ بنا لینا۔ دیکھئے

ڈاکٹر سید حسن کا مضمون مشمولہ ”تدوین متن کے مسائل“ پٹنہ۔ ص ۴۳

ف

فرہنگ: عام معنی لغت کے ہیں۔ لیکن تدوین متن میں کسی متن کے بعد اس کے اصطلاحی،

مشکل، خصوصی معنی والے الفاظ یا عربی وغیرہ کے فقرے دے کر ان کے معنی لکھنا۔

ق

قرأت: کسی تحریر، بالعموم منخطوطے کے کسی لفظ یا عبارت کو پڑھ کر اس کے تلفظ اور جے کو متعین

کرنا، مثلاً: ”بل پری“ کی صحیح قرأت ”بھول پڑے“ طے کرنا۔

ض

ضمیمہ: کسی کتاب کے متن کے بعد وہ اضافی حصہ جس میں متن کے تعلق سے مفید معلومات

دی ہوں لیکن وہ ایسی ہوں جنہیں متن میں نہیں دیا جاسکتا تھا۔



## ق

- قلم زد: دیکھئے منسوخ  
 قلمی نسخہ: ہاتھ سے لکھا ہوا نسخہ  
 قیاسی تصحیح: کسی متن کے غلط اندراج کو قیاساً درست کرنا۔

## ک

## کتابیات:

- ۱۔ کسی کتاب کے جملہ ماخذ یعنی کتابوں اور مضامین کی فہرست۔  
 ۲۔ کسی ادیب کا اشاریہ یعنی اس کے بارے میں لکھی گئی کتابیں اور مضامین۔  
 سٹکلول: وہ بیاض جس میں دوسروں کی متفرق نظم و نثر کی چیزیں لکھ دی گئی ہوں۔

## ل

- لا ادری: ”میں نہیں جانتا“۔ دیکھیے لا اعلم  
 لا اعلم: ”مجھے علم نہیں“۔ ایسے شعر، نظم، غزل یا نثری عبارت کے قبل لکھا جاتا ہے جس کا مصنف معلوم نہ ہو۔  
 لوح: کسی کتاب کا پہلا صفحہ یا سرورق۔ بعض اوقات پہلے صفحے کا سرعنوان یعنی اوپری حصہ۔

## م

- ماخذ: دیکھئے کتابیات کا پہلا مفہوم  
 ماخذی نسخہ: جس نسخے سے کسی دوسرے نسخے کی نقل کی جائے۔  
 مبیعہ: مسودے میں نظر ثانی کے بعد صاف نقل کیا ہوا نسخہ  
 متداول: کسی ادیب کا وہ منتخب مروج متن جو حذف و ترمیم کے بعد تشکیل پذیر ہوا اور جسے مصنف نے اپنی تائید سند کے ساتھ جاری کیا ہو۔



متن: تدوین کے لئے وہ تحریر جسے کوئی ترتیب دینا چاہے۔

متنی تنقید: دیکھئے تدوین۔

مجهول الاسم: ایسی قلمی یا مطبوعہ کتاب یا تخلیق جس کا مصنف معلوم نہ ہو۔

محشی: حواشی لکھی ہوئی کتاب یا دوسری تحریر

مخطوطہ: قلمی غیر مطبوعہ نسخہ

مخطوطہ تنشیر: اگر کسی کتاب کے ایسے دو نسخے یا ایڈیشن ملیں جن میں بہت اختلاف ہو اور یہ طے نہ کیا

جاسکے کہ کس کا کتنا استناد ہے، اس صورت حال کو مخطوطہ تنشیر کہتے ہیں۔

مدون: تدوین کرنے والا

مرتب: دیکھئے مدون

مسودہ: کسی کتاب یا مضمون کا نقش اول۔ ہاتھ کی لکھی یا ٹائپ کی ہوئی وہ تحریر جو طباعت کے

لئے دی جائے۔

مصادر: دیکھئے کتابیات کے پہلے معنی۔

منسوخ: وہ تخلیقات یا تخلیق کا حصہ جسے مصنف نے خارج کر دیا ہو

موازنہ: ایک متن کے مختلف نسخوں کے اندراجات کا تقابلی مطالعہ کر کے مناسب ترین کا تعین۔

## ن

ناقص الآخر: وہ کتاب جس کے آخر کے اوراق نہ ہوں۔

ناقص الوسط: وہ کتاب جس کے بیچ کے کچھ اوراق کم ہوں۔

ناقص الاول: وہ کتاب جس کے شروع کے اوراق نہ ہوں۔

ناقص الطرفين: وہ کتاب جس کے شروع اور آخر کے اوراق ضائع ہو گئے ہوں۔

نسخہ: کسی قلمی یا مطبوعہ کتاب کی ایک جلد

نظری: دیکھئے منسوخ



و

وحید نسخہ: اگر کسی متن کا دنیا میں ایک ہی نسخہ ملتا ہو تو اسے وحید نسخہ کہتے ہیں۔

وضاحتی فہرست: کتابوں کی فہرست جس میں اس کے مضمولات کی تفصیل و تحقیق دی ہو۔

وضاحتی کتابیات: ایسی کتابیات جس میں کتابوں کے مطالب کا مختصر بیان اور اس پر تبصرہ بھی دیا ہو۔

وضعی: جعلی

ولہ: اس کے معنی ہیں ”اس کا“۔ کسی شاعر کا ایک شعر، نظم و غزل لکھ کر اس کے بعد اسی کی دوسری

چیز دی جائے تو آخر الذکر کر کے اوپر ولہ لکھ دیتے ہیں جس کے معنی یہ ہیں کہ یہ بھی اسی شاعر کا

کلام ہے۔ نثر میں اس کا استعمال نہیں ہوتا لیکن غالب نے کیا ہے (مکاتیب غالب مرتبہ

عرشی ص: ۲۳۴ بحوالہ رشید حسن خاں، اردو الملاء ص ۵۴۵)



## ثانیاً۔ انگریزی اصطلاحات

### A

|                         |   |
|-------------------------|---|
| Abstract                | خلاصہ   |
| Accidentals             | اتفاقیے یعنی جے، رموز اوقاف، لفظوں کی تقسیم اور حد بندی |
| Accurate Observation    | صحیح مشاہدہ   |
| Action Research         | عملی تحقیق  |
| Ancestral transmission  | جدی یا سادہ تنشیر                                       |
| Annotated bibliography  | وضاحتی کتابیات  |
| Analogy                 | تمثیل مشابہت  |
| Analysis of Data        | تجزیہ معلومات   |
| Analysis of the Problem | مسئلے کا تجزیہ  |
| Appendix                | ضمیمہ   |
| Appatus                 | اختلافات نسخ  |
| Applied Research        | اطلاقی تحقیق  |
| Archival Collection     | دستاویزی ذخیرہ  |
| Archives                | دستاویزات   |
| Assumption              | مفروضہ  |
| Assumptions             | مفروضات   |
| Authority               | سند۔ اتھارٹی  |



Archetype

نسخوں کے شجرے میں سب سے اوپر کا مورث  
اعلیٰ نسخہ

Autograph

مصنف کے ہاتھ کا مکتوبہ یا ٹائپ شدہ نسخہ

**B**

Basic Research

بنیادی تحقیق

Baconian Induction

بیکن کا استقراء

Bibliography

کتابیات

Biological Evolution

حیاتیاتی ارتقا

Bibliographer

ماہر تدوین

Bibliographic School

ایک نسخے کو بنیادی قرار دے کر متن میں،  
نیز دوسرے نسخوں کو اختلاف نسخ میں لینے والے

**C**

Capitalisation

انگریزی میں لفظ کو بڑے حرف سے لکھنا

Case Study

مطالعہ احوال

Cause

علت

Cause and Effect

علت و معلول

Central Tendency

مرکزی میلان

Check list

پڑتالی فہرست

Citation

حوالہ

Collection of Data

معلومات کی جمع آوری



Comparative Method

تقابلی طریق

Concepts

تصورات

Conceptual Framework

نظریاتی ساخت

Conclusion

نتیجہ

Construction of Tables

جدول بندی

Code, Codex

نسخہ

Codus Unicug

وحید نسخہ

Collateral transmission

افقی تنشیر

Collation

موازنہ

Conflated version

مخلوط نسخہ

Conservative School

اس خاندان کے پیرو نسخے کی جمہ اغلاط کو برقرار

رکھ کر ان کی کچھ تشریح و تاویل کر دیتے ہیں

Copy text

۱۔ مصنف کا دستی نسخہ جو پریس کو دیا جائے

۲۔ تدوین متن میں بنیادی نسخہ

Corruption

متن میں کسی لفظ یا الفاظ کا مسخ ہو جانا

Critical Outlook

تنقیدی زاویہ نگاہ

Critical apparatus

اختلافات نسخ

Critical recension

مختلف نسخوں کی مدد سے تیار کیا ہوا نسخہ

Crossing

دو ذیلی خاندانوں کے نسخوں میں اختلاط ہو جانا

## D

Definitive text

مختلف نسخوں سے منتخب کر کے تیار کیا ہوا نسخہ



Deduction

استخراج

Deed

وثیقہ

Dependent Variable

متغیر تابع

Descriptive Research

وضاحتی تحقیق

Descriptive Statistics

شماریات بیانیہ

Documentary Research

دستاویزی تحقیق

## E

Educational Research

تعلیمی تحقیق

Electic School

انتخابی اسکول جو مختلف نسخوں کو ملا کر  
Defenitive text تیار کرتا ہے۔

Emendation

تصحیح

Empirical Knowledge

تجرباتی علم

Empiricism

تجربیت

Empiricist

تجربیت پسند

Evidence

شہادت

Evaluation of a Problem

مسئلے کی جانچ پرکھ

Exegesis

اغلاط متن کی زبردستی کی تشریح۔ الفاظ سے وہ  
معنی مراد لینا جو ان میں موجود نہیں۔

Exemplar

ماخذی نسخہ

Experimental Method

تجرباتی طریق

Expert Opinion

ماہرانہ رائے



Experimentation

تجربہ کاری

External Criticism

خارجی تنقید

**F**

Foot-notes

حواشی

Form of Foot-notes

صورت حواشی

**G**

Guess

قیاس

**H**

Handwritten Materials

خطی مواد

Heuristics

مختلف مآخذ سے مواد کی تلاش۔ تمام مخطوطات

اور شہادتوں کو شجروں میں ترتیب دینا

Higher Criticism

مصنف کے مآخذ کو دریافت کرنا

Historical Research

تاریخی تحقیق

Hypothesis

فرضیہ

Hypotheses

فرضیات

Ibid

ایضاً

Implicit

غیر واضح، مبہم

Incentives

ترغیبات

Indentions

رموز اوقاف



|                        |                    |
|------------------------|--------------------|
| Index                  | اشاریہ             |
| Induction              | استقراء            |
| Inductive Method       | استقرائی طریق کار  |
| Inter-mixing Crossing  | دیکھئے             |
| Imagination            | متخیلہ             |
| Imperfect Induction    | نامکمل استقراء     |
| Implications           | نتائج              |
| Independent variable   | متغیر مستقل        |
| Inferential Statistics | استنباطی شماریات   |
| Innovation             | جدت۔ اختراع        |
| Instruments            | آلات               |
| Internal Appraisal     | داخلی جانچ پرکھ    |
| Interval Scale         | وقفہ پیمانہ        |
| Interview              | انٹرویو            |
| Introduction           | تعارف              |
| Intuition              | وجدان              |
| Invariant              | غیر متغیر          |
| Irrelevant Variables   | غیر متعلقہ متغیرات |

L

Lectis Difficilise

دو نسخوں میں ایک ہی اندراج کی مشکل تر قراءت

Legends

قصے کہانیاں



Literature Search

تلاش مواد

Location of footnotes

مقام حواشی

Logical Possibility

منطقی امکان

## M

Major Premise

مقدمہ کبریٰ

Manuscript

مخطوطہ

Median

وسطانیہ

Mechanical Records

میکانکی ریکارڈز

Memory

یادداشت

Memorial

یادگار

Methodology

طریقہء تحقیق

Methods of Acquiring Knowledge

حصول علم کے طریقے

Minor Premise

مقدمہ صغریٰ

Mixed Transmission

مخلوط تنشیر

Mode

طور۔ اکثریہ

Model

نمونہ

Multiple Casuative Variables

متعدد تعلیلی متغیرات

Muniments

اسناد حقوق و مراعات

## N

Natural Sciences

طبعی علوم

Nature of Observation

نوعیت مشاہدہ



Nominal Scale

وضعی پیمانہ

O

Objective Criterion

معروضی معیار

Objectivity

معروضیت

Observation

مشاہدہ

Open System

تغیر پذیر نظام

Op. cit.

حوالہ ماسبق

Operational Definitions

عملی تعریفیں

Oral Traditions

زبانی روایات

Ordinal Scale

درجاتی پیمانہ۔ ترتیبی پیمانہ

P

Perfect Induction

مکمل استقراء

Personal Experience

ذاتی تجربہ

Physical Remains

مادی آثار

Pictorial Records

تصویری ریکارڈز

Pilot Study

ابتدائی مطالعہ

Pilot Test

ابتدائی آزمائش

Plausibility of Explanation

قابل قبول وضاحت

Predictability

صلاحیت پیش گوئی

Preliminary Material

ابتدائی مواد



Premise

مقدمہ - قضیہ

Premises

مقدمات

Pretest

قبل آزمائش

Primary Sources

بنیادی ماخذ

Preparation of the Report

رپورٹ کی تیاری

Printed Remains

مطبوعہ آثار

Probability

امکان

Processing of Data

معلومات کی عمل کاری

Public Opinion

رائے عامہ

Publication of Report

رپورٹ کی اشاعت

Pure Research

نظری تحقیق

## Q

Questionnaire

سوال نامہ

Qualitative Variables

کیفیاتی متغیرات

Quantitative Variables

مقداری متغیرات

Quotations

اقتباسات

Quotient

حاصل قسمت

## R

Random Sample

اتفاقی نمونہ

Random Sampling

اتفاقی نمونہ بندی



Ratio

نسبت

Ratio scale

نسبتی پیمانہ

Recension

۱۔ نسخوں کے شجرے میں آر کی ٹائپ سے جو شاخیں پھوٹی ہیں انہیں Recension کہتے ہیں۔

Reference Materials

۲۔ جملہ مخطوطات میں سے زیادہ قابل اعتماد مخطوطات کا انتخاب حوالہ جاتی مواد

Relationships

تعلقات

Relevance

تعلق۔ مناسبت

Reliability

اعتماد۔ اعتبار

Reliability and Validity

صلاحیت اعتبار و معقولیت

Relic

دستاویز۔ اثر

Remains

آثار

Research Design

تحقیقی منصوبہ

Research Proposal

تحقیقی خاکہ

Researcher

محقق

Review

جائزہ

## S

Sampling

نمونہ بندی

Sampling Techniques

نمونہ بندی کی تکنیکیں



|                              |  |
|------------------------------|--|
| Scientific Method            | سائنسی طریق  |
| Scientific Law               | سائنسی قانون                                       |
| Scientific School            | دیکھئے بلیو گرافک اسکول                            |
| Schedule                     | جدول۔ گوشوارہ                                      |
| Scientific Method of Inquiry | سائنسی طریق تحقیق                                  |
| Secondary Sources            | ثانوی مصادر  |
| Serendipity                  | اتفاقہ انکشاف                                      |
| Serial Publications          | سلسلہ وار مطبوعات                                  |
| Siglum                       | مختلف نسخوں کے شناختی مخففات                       |
| Specialization               | تخصیص  |
| Sponsorship                  | کفالت  |
| Standard Deviation           | معیاری انحراف                                      |
| Statistical Methods          | شماریاتی طریقے                                     |
| Statistics                   | اعداد و شمار                                       |
| Statement of the Problem     | بیان مسئلہ   |
| Statistical Methodology      | شماریاتی طریق تحقیق                                |
| Sub-Recension                | شجرے میں Recension کی اولاد نسخہ                   |
| Substantive                  | مغزدار جزو یعنی نسخے کے الفاظ اور طریقہ ہائے اظہار |
| Subjectivity                 | ذاتی نظریہ   |
| Stratified Sample            | طبقہ وار نمونہ                                     |
| Stratified Sampling          | طبقہ وار نمونہ بندی                                |



|                        |               |
|------------------------|---------------|
| Style                  | اسلوب         |
| Style of writing       | انداز تحریر   |
| Stemma Codicum         | نسخوں کا شجرہ |
| Subject Matter         | نفس مضمون     |
| Summary of conclusions | خلاصہ نتائج   |
| Survey                 | سروے - جائزہ  |
| Syllogism              | منطقی قیاس    |
| Synthesis              | ترکیب         |

## T

|                          |   |
|--------------------------|---|
| Tablulation              | جدول بندی                                   |
| Tentative Statement      | آزمائشی بیان                                |
| Tertiary Sources         | مصادر ثالثہ                                 |
| Testimony                | ذاتی رائے                                   |
| Testimonium, testimonia  | جزوی ماخذ جن میں متن کے کچھ اقتباس مل جائیں |
| Textual Criticism        | متنی تنقید - تدوین متن                      |
| Text                     | متن   |
| Theoretical Implications | نظری اطلاقات                                |
| Theoretical problems     | نظری مسائل                                  |
| Theories                 | نظریات                                      |
| Theory                   | نظریہ                                       |
| Time Schedule            | جدول اوقات                                  |



Transliteration

نقل حروفی

Transmission

تنشیر

Trial and Error

آزمائش و خطا

Tools of Research

آلات تحقیق

Tradition

روایت

## U

Universal

عالمگیر۔ مسلمہ

Universality

آفاقیت

## V

Valid Classification

معقول درجہ بندی

Validity

معقولیت

Variable

متغیر

Variants

ایک لفظ یا الفاظ کے مختلف نسخے

Verbal symbolism

زبانی علامات

Versions

شجرے میں Sub-recension سے ماخوذ

نسخہ ☆

☆ یہ اصطلاحات درج ذیل کتب سے ماخوذ ہیں:

- ۱۔ تحقیق کافن، گیان چند، ص ۵۷۲ تا ۵۶۳۔
- ۲۔ لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، ص ۳۱۲ تا ۳۰۵۔
- ۳۔ تعلیمی تحقیق اور اس کے اصول و مبادی، ڈاکٹر احسان اللہ خان، ص ۶۲۱ (آخر کتاب)۔



ملحق  
حصول مواد کے جدید ذرائع



## حصول مواد کے جدید ذرائع (۱)

عصر حاضر میں ایک محقق کو چاہیے کہ وہ اپنے تحقیقی عمل کے لیے حصول مواد کے جدید ذرائع و وسائل سے آگاہ ہو۔ اسے انٹرنیٹ کے ذریعے آن لائن ہونے والے مختلف النوع مواد کو حاصل کرنے کے طرق کا بخوبی علم ہو۔ اس سے ایک محقق تحقیق کے لیے موضوع کا انتخاب بھی کر سکتا ہے اور منتخب شدہ موضوع کے لیے مواد بھی حاصل کر سکتا ہے۔ اس طرح وہ تحقیقی کام کو جدید تقاضوں کے مطابق بطریق احسن انجام دے سکتا ہے۔ ذیل میں اردو عربی زبان میں کچھ ان لائن لائبریریوں، مجلات اور ویب سائٹس کی فہرست پیش کی جاتی ہے جن سے محقق طلبہ استفادہ کر سکتے ہیں:

### ۱۔ اردو میں آن لائن لائبریریوں کی فہرست

|   |                            |
|---|----------------------------|
| <a href="http://kitaben.urdulibrary.org/">http://kitaben.urdulibrary.org/</a>               | اردو کی برقی کتابیں        |
| <a href="http://www.urdulibrary.org/">www.urdulibrary.org/</a>                              | اردو ویب ڈیجیٹل لائبریری   |
| <a href="http://onlylor3.com">http://onlylor3.com</a>                                       | اسلام اور عیسائیت لائبریری |
| <a href="http://books.ahlesunnat.net">http://books.ahlesunnat.net</a>                       | اسلامی کتابیں              |
| <a href="http://www.minhajbooks.com">www.minhajbooks.com</a>                                | اسلامک لائبریری            |
| <a href="http://library.faizaneattar.net">http://library.faizaneattar.net</a>               | اسلامک لائبریری            |
| <a href="http://ahlehaq.org/">http://ahlehaq.org/</a>                                       | اہل حق ای لائبریری         |
| <a href="http://www.khatmenabowat.com">www.khatmenabowat.com</a>                            | ختم نبوت لائبریری          |
| <a href="http://kitabosunnat.com/kutub-library/">http://kitabosunnat.com/kutub-library/</a> | کتاب و سنت لائبریری        |



www.marfat.com

معرفت لائبریری

www.maktabah.org/aa/urdu-books

المکتبہ المجددیہ

http://millat.com/

ملت لائبریری

www.nafseislam.com

نفس اسلام لائبریری

http://islamicrch.org/

اسلامک ریسرچ سنٹر حیدرآباد، انڈیا

http://www.ziaislamic.com/default.php

ابوالحسنات اسلامک ریسرچ سنٹر، انڈیا

www.iqbalcyberlibrary.net/en/

علامہ اقبال سائبر لائبریری

ان آن لائن لائبریریوں میں جا کر آپ اپنے مقصد کی کتب تلاش کر کے ان سے مواد

حاصل کر سکتے ہیں۔

## ۲۔ اردو زبان میں مجلات کی فہرست

ذیل میں چند آن لائن مجلات اور ان کی سائٹس کی فہرست دی جاتی ہے۔ ان کی مدد

سے محقق طالب علم اپنے مقالہ سے متعلق مواد کو حاصل کر سکتا ہے:

ماہنامہ، اشرفیہ، مبارک پور، انڈیا

http://aljamiatulashrafia.org/monthly\_ashrafia.php?lang=UR

ماہنامہ، سنی دعوت اسلامی، ممبئی انڈیا

www.sunnidawateislami.net/literature/magazine.php

www.khushtarnoorani.in/articles/ ماہنامہ، جام نور، دہلی انڈیا

www.sunniawaz.com/category/monthly/ ماہنامہ، اعلیٰ حضرت، بریلی انڈیا

www.almazhar.com/ ماہنامہ، المظہر، کراچی

http://mahnama.ahlesunnat.net/ ماہنامہ، مصلح الدین، کراچی

www.mustafai.net/mustafai\_news.php ماہنامہ، مصطفائی نیوز، کراچی



ماہنامہ، تحفظ، کراچی <http://tahaffuz.com/>

ماہنامہ، منہاج القرآن، لاہور [www.minhaj.info/mag/index.php](http://www.minhaj.info/mag/index.php)

ماہنامہ، دختران اسلام، لاہور [www.minhaj.info/di/index.php?mod=mags](http://www.minhaj.info/di/index.php?mod=mags)

سہ ماہی، العلماء، لاہور [www.minhaj.info/ulama/index.php?mod=mags](http://www.minhaj.info/ulama/index.php?mod=mags)

ماہنامہ، آواز اہل سنت، گجرات <http://ahlesunnat.info/magzine/index.htm>

ماہنامہ، دلیل راہ، لاہور [www.daleelerah.info/](http://www.daleelerah.info/)

ماہنامہ، سیدھا راستہ، لاہور [www.seedharastah.com/seedha.php](http://www.seedharastah.com/seedha.php)

ماہنامہ، سلطان الفقر، لاہور

[www.tehreekdawatefaqr.com/sf/multimedia/eng/magazine.html](http://www.tehreekdawatefaqr.com/sf/multimedia/eng/magazine.html)

ماہنامہ، رضائے مصطفیٰ، گوجرانوالہ <http://raza-e-mustafa.blogspot.com/>

ماہنامہ، ترجمان القرآن، لاہور <http://tarjumanulquran.org/>

ماہنامہ ندائے اعتدال، انڈیا

[www.nadwifoundation.org/index.php/magazine](http://www.nadwifoundation.org/index.php/magazine)

ماہنامہ دارالعلوم دیوبند

[www.darululoom-deoband.com/urdu/magazine/new/index.php](http://www.darululoom-deoband.com/urdu/magazine/new/index.php)

ماہنامہ الفرقان، لکھنؤ [www.taubah.org/Al-furqan/](http://www.taubah.org/Al-furqan/)

ماہنامہ، پیام عرفات، بریلی [www.abulhasanalinadwi.org/payam\\_13.html](http://www.abulhasanalinadwi.org/payam_13.html)

سہ ماہی شعور و آگہی، لاہور [www.rahimia.org/shaor-o-agahi](http://www.rahimia.org/shaor-o-agahi)

سہ ماہی تحقیقات اسلامی، انڈیا [www.tahqeeqat.net/issues.aspx](http://www.tahqeeqat.net/issues.aspx)

ماہنامہ، رحیمیہ، لاہور [www.rahimia.org/rahimia-magazine](http://www.rahimia.org/rahimia-magazine)

ماہنامہ، لولاک، ملتان [www.laulak.info/MLAULAK/laulak.htm](http://www.laulak.info/MLAULAK/laulak.htm)

ماہنامہ، الاحسن، لاہور [www.jamiaashrafia.org/alhassan\\_magazine.html](http://www.jamiaashrafia.org/alhassan_magazine.html)



www.khatm-e-nubuwwat.info/ ہفت روزہ، ختم نبوت

www.alsharia.org/ ماہنامہ، الشریعہ، گوجرانوالہ

http://ahnafmedia.com/monthly-al-faqeeh ماہنامہ، فقیہ، سرگودھا

www.ahnafmedia.com/ سہ ماہی، قافلہ حق، سرگودھا

component/k2/itemlist/category/168-qafla-e-haq-magazine

http://magazine.mohaddis.com/ ماہنامہ، محدث لاہور

http://albalagh.deeneislam.com/ ماہنامہ، البلاغ، کراچی

www.banuri.edu.pk/ur/bayyinat ماہنامہ، البینات، کراچی

میشاق، حکمت قرآن لاہور

http://data.tanzeem.info/BOOKS/Magzine/2010/index.html

www.addawa.com/allmag.htm ماہنامہ، الدعوة الی اللہ۔

### ۳۔ عربی زبان میں آن لائن مجلات کی فہرست

ذیل میں چند آن لائن عرب دنیا سے شائع ہونے والے مجلات کی فہرست دی جاتی

ہے۔ ان سے تحقیقی مقالہ کے لیے مطلوب مواد حاصل کیا جاسکتا ہے:

www.alihyaa.ma/Default.aspx مجلہ، الاحیاء، المملكة المغربية

http://edhh.org/alwadiha/index.php مجلہ الواضحة، الرباط

https://uqu.edu.sa/page/ar/182549 مجلہ جامعة ام القرى

مجلہ البحوث والدراسات القرآنية

http://jqrs.qurancomplex.gov.sa/

مجلہ جامعة ام القرى لعلوم اللغة وادابها

http://uqu.edu.sa/page/ar/1061



مجلة المعهد المصري للدراسات الاسلامية

<http://wadod.net/bookshelf/category/12>

مجلة الجامعة الاسلامية بغزة [www2.iugaza.edu.ps/ar/periodical](http://www2.iugaza.edu.ps/ar/periodical)

مجلة آفاق التراث والثقافة

<http://wadod.net/bookshelf/category/35>

مجلة مجمع اللغة العربية. مصر

<http://wadod.net/bookshelf/category/8>

مجلة الفقه والقانون

<https://sites.google.com/site/marocsitta/home>

مجلة الشريعة والقانون

[http://sljournal.uaeu.ac.ae/prev\\_issues.asp](http://sljournal.uaeu.ac.ae/prev_issues.asp)

مجلة العدل، السعودية <http://adl.moj.gov.sa/archive.aspx>

المجلة القضائية، السعودية

<http://adl.moj.gov.sa/Alqadaeya/archivep.aspx>

مجلة الدراة، السعودية

[www.darah.org.sa/Resources/Magazine/Pages/1435161.aspx](http://www.darah.org.sa/Resources/Magazine/Pages/1435161.aspx)

مجلة العلوم الشرعية، السعودية

[www.csi.qu.edu.sa/Magazine/Pages/default.aspx](http://www.csi.qu.edu.sa/Magazine/Pages/default.aspx)

مجلة الجامعة العراقية

<http://aliraqia.edu.iq/publications/mabda>

مجلة الحجاز العالمية

<http://alhijaz-international-journal.com/ar/index.php?pa=issues>



مجلة الدراسات الاسلامية والعربية بدبي

[www.wadod.org/vb/showthread.php?t=5540](http://www.wadod.org/vb/showthread.php?t=5540)

المجلة الزيتونية <http://waqfeya.com/category.php?cid=140>

مجلة اسلامية المعرفة <http://eiiit.org/resources/eiiit.asp>

مجلة تبيان للدراسات القرآنية [www.alquran.org.sa/main/](http://www.alquran.org.sa/main/)

مجلة العلوم الاقتصادية والقانونية، دمشق

[www.damascusuniversity.edu.sy/mag/law/](http://www.damascusuniversity.edu.sy/mag/law/)

مجلة الجنان، لبنان

[www.jinan.edu.lb/main/index.php?id=aljinanar](http://www.jinan.edu.lb/main/index.php?id=aljinanar)

مجلة كلية العلوم الاسلامية، بغداد

<http://repository.uobaghdad.edu.iq/ArticleShow.aspx?ID=25>

مجلة الدراسات الدولية

[www.iasj.net/iasj?func=issues&jld=40&uiLanguage=ar](http://www.iasj.net/iasj?func=issues&jld=40&uiLanguage=ar)

مجلة جامعة القدس المفتوحة

[www.qou.edu/arabic/index.jsp?pageId=208](http://www.qou.edu/arabic/index.jsp?pageId=208)

مجلة جامعة فلسطين [http://research.up.edu.ps/Versions\\_M](http://research.up.edu.ps/Versions_M)

مجلة جامعة ابن رشد

[www.averroesuniversity.org/au/index.php](http://www.averroesuniversity.org/au/index.php)

مجلة العلوم التربوية والنفسية، بحرین

[www.uob.edu.bh/pages.aspx?module=pages&id=1564&SID=434](http://www.uob.edu.bh/pages.aspx?module=pages&id=1564&SID=434)

مجلة الدراسات العقديّة، مدينة منوره

<http://aqeeda.org/container.php?fun=bookmaincat&cat=mag>



مجلة العلوم الانسانية، فلسطين

[www.hebron.edu/index.php/ar/jour-hum](http://www.hebron.edu/index.php/ar/jour-hum)

مجلة الوعي الاسلامي، كويت

[www.alwaei.com/site/index.php/archive](http://www.alwaei.com/site/index.php/archive)

مجلة الاندلس للعلوم التطبيقية، صنعاء

[www.andalusuniv.net/issues-magazine.php](http://www.andalusuniv.net/issues-magazine.php)

مجلة العلوم الحديثة والتراثية

[www.jmsh.eu/news.php?action=list&cat\\_id=15](http://www.jmsh.eu/news.php?action=list&cat_id=15)

مجلة الجامعة الاسرية ليبيا

[www.asmarya.edu.ly/magazine/magazine.htm](http://www.asmarya.edu.ly/magazine/magazine.htm)

مركز دراسات الوحدة العربية، ليبيا

[www.caus.org.lb/Home/magazine\\_categories.php](http://www.caus.org.lb/Home/magazine_categories.php)

المجلة الاردنية في الدراسات الاسلامية

<http://web2.aabu.edu.jo/Islamic/>

مجلة جامعة الوادي [www.univ-eloued.dz/index.php/](http://www.univ-eloued.dz/index.php/)

[home/29-univ/univ-5/236-2014-02-23-10-06-07](http://home/29-univ/univ-5/236-2014-02-23-10-06-07)

مجلة المجمع الفقهي، مكة المكرمة [www.themwl.org/](http://www.themwl.org/)

[Publications/default.aspx?ct=1&cid=14&l=&pg=1](http://Publications/default.aspx?ct=1&cid=14&l=&pg=1)

مجلة البلقاء، جامعة عمان الاهلية [www.ammanu.edu.jo/ar/](http://www.ammanu.edu.jo/ar/)

[graduatestudy/pages/balqapublictions.aspx?row=1](http://graduatestudy/pages/balqapublictions.aspx?row=1)

مجلة الشريعة والدراسات الاسلامية . جامعة الكويت

[www.pubcouncil.kuniv.edu.kw/jsis/homear.aspx?id=8&Root=yes](http://www.pubcouncil.kuniv.edu.kw/jsis/homear.aspx?id=8&Root=yes)



### ۴۔ ویب سائٹس کے ذریعہ حصول کتب

ذیل میں کچھ ویب سائٹس کی فہرست دی جاتی ہے جن کی مدد سے محقق طلبہ اپنے موضوعات سے متعلقہ مواد حاصل کر سکتے ہیں اور کتب مفت میں ڈاؤن لوڈ بھی کر سکتے ہیں:

مکتبہ ابن مریم الاسلامیہ [www.ebnmaryam.com/web/](http://www.ebnmaryam.com/web/)

مکتبہ مشکاة الاسلامیہ [www.almeshkat.net/books/index.php](http://www.almeshkat.net/books/index.php)

مکتبہ المصطفیٰ [www.al-mostafa.com/](http://www.al-mostafa.com/)

مکتبہ الاسکندریہ <http://www.bib-alex.com/>

المکتبہ الاسلامیہ الایکٹرونیک الشاملہ [www.muslim-library.com/](http://www.muslim-library.com/)

مکتبہ الالوكة [www.alukah.net/library/](http://www.alukah.net/library/)

المکتبہ الشاملہ <http://shamela.ws/>

المکتبہ الاسلامیہ الشاملہ [www.ebooks4islam.com/](http://www.ebooks4islam.com/)

الموسوعة الشاملة <http://islamport.com/index2.html>

مکتبہ المهتدين الاسلامیہ لمقارنة الاديان <http://al-maktabeh.com/>

المکتبہ الوقفية <http://waqfeya.com/>

مکتبہ جميع الكتب <http://allbooks1.com>

جامع الكتب المصورة <http://kt-b.com/>

مکتبہ خالدة [www.khaldia-library.com/](http://www.khaldia-library.com/)

مکتبہ صيد الفوائد <http://saaaid.net/book/index.php>

مکتبہ السادة الاشراف [www.book.alashraf.ws/index.php](http://www.book.alashraf.ws/index.php)

مرکز تفسیر للدراسات القرآنية <http://library.tafsir.net/>

مرکز البحوث والدراسات فی الفقه المالکی [www.alfiqh.ma](http://www.alfiqh.ma)

موقع جدید الكتب [www.booksjadid.net/](http://www.booksjadid.net/)



صحابہ رسول اللہ ﷺ / www.sahaba.rasoolona.com

## ۵۔ عربی و اسلامی سافٹ ویئر ز اور سرچ انجنز

۱۔ المصحف الرقمی (Digital Quran)

قرآن مجید میں تلاش کے لیے یہ بہترین سافٹ ویئر ہے۔ اس میں آیات تلاش کرنے کے دو طریقے ہیں: ایک بحث (Search) دوسرا تصفح (Browse)۔ پورا قرآن مجید ”مصحف مدینہ منورہ“ کے مطابق ۶۰۴ صفحات پر مشتمل ہے۔ صفحہ نمبر کے ذریعے بھی قرآنی آیت تلاش کی جاسکتی ہے۔ ایک آیت یا اس کی تفسیر یا تلاش کی گئی تمام آیات اور ان کی تفسیر کو کاپی کر کے کسی دوسرے سافٹ ویئر میں مطلوبہ مقام پر لے جانے کی سہولت بھی موجود ہے۔ المصحف الرقمی انٹرنیٹ سے مفت ڈاؤن لوڈ کیا جاسکتا ہے [www.zulfiedu.gov.sa/](http://www.zulfiedu.gov.sa/)

۲۔ مكتبة التفسير و علوم القرآن

التراث کمپنی کا تیار کردہ یہ سافٹ ویئر قرآن مجید اور اس کی تفسیر سے متعلق اپنی نوعیت کا منفرد سافٹ ویئر ہے۔

۳۔ موسوعة الحديث الشريف

یہ سافٹ ویئر مصر کی ایک کمپنی ”شركة صخر لبرامج الحاسب“ نے تیار کیا ہے۔ اس کا فائل ورژن بہترین سہولیات سے آراستہ ہونے کی وجہ سے حدیث کا بہت اہم سافٹ ویئر ہے۔ اس میں کل نو کتابیں دی گئی ہیں۔ صحاح ستہ کے علاوہ موطا امام مالک، مسند امام احمد اور سنن دارمی شامل ہیں۔

۴۔ جامع الأحادیث

یہ سافٹ ویئر مشہور ایرانی سافٹ ویئر کمپنی ”مركز البحوث الكمبيوترية للعلوم الاسلامية“ کا تیار کردہ ہے۔ یہ پروگرام ۴۴۲ جلدوں میں ۹۰ مولفین کی ۱۸۷ کتابیں پیش کرتا ہے۔ اس میں قرآن مجید کے مکمل متن کے علاوہ، نہج البلاغہ، صحیفہ سجادیه، کتب اربعہ،



وسائل شیعہ، مستدرک الوسائل، بحار الانوار، علم رجال کی کتب ثمانیہ اور اہل بیت سے متعلق مذہب شیعہ کے مستند مصادر شامل ہیں۔ یہ سافٹ ویئر عربی، انگریزی اور فارسی میں ہے۔

#### ۵۔ المكتبة الالفية للسنة النبوية

یہ سافٹ ویئر "التراٹ" کمپنی کا تیار کردہ ہے۔ اس کا تیسرا ورژن ۳۵۰۰ کمپیوٹرائزڈ جلدوں پر مشتمل ہے۔ کتب حدیث کو فنی اعتبار سے مختلف عنوانات کے تحت منظم انداز میں رکھا گیا ہے۔

#### ۶۔ مكتبة السيرة النبوية

یہ سافٹ ویئر بھی التراٹ کمپنی نے تیار کیا ہے۔ اس سافٹ ویئر کے پہلے ورژن میں سیرت نبوی سے متعلق اہم مصادر کو ۱۲۰ کمپیوٹرائزڈ جلدوں میں جمع کیا گیا ہے۔

#### ۷۔ مكتبة الأعلام والرجال

یہ سافٹ ویئر اعلام و شخصیات، راویوں اور رجال حدیث کے سوانح و احوال حیات پر مشتمل "العریس" کمپنی کا بہت اہم کام ہے۔

#### ۸۔ مكتبة الفقه و اصوله

یہ سافٹ ویئر بھی "التراٹ" کمپنی نے تیار کیا ہے۔ اس میں چاروں فقہی مذاہب کی امہات الکتب دی گئی ہیں۔

#### ۹۔ مكتبة التاريخ والحضارة الاسلامية

اسلامی تاریخ و تمدن سے متعلق یہ سافٹ ویئر بھی "التراٹ" کمپنی نے تیار کیا ہے۔ اس میں عربی زبان میں لکھے گئے تمام اہم مصادر تاریخ کو جمع کر دیا گیا ہے۔

#### ۱۰۔ مكتبة الاخلاق والزهد

یہ سافٹ ویئر تصوف و اخلاق سے متعلق بنیادی مصادر کا عظیم انسائیکلو پیڈیا ہے جو ایک سو پچاس کمپیوٹرائزڈ جلدوں پر مشتمل ہے۔



## ۱۱۔ مکتبۃ النحو والصرف

اس سافٹ ویئر میں عربی زبان میں لکھی گئی اہم اور بنیادی کتب نحو و صرف کو ۴۵۰ کمپیوٹرائزڈ جلدوں میں جمع کیا گیا ہے۔

## ۱۲۔ سبع معلمات

جاہلی عرب شعراء کے طویل قصائد پر مشتمل یہ سافٹ ویئر قصائد کے مکمل متن اور آواز کے ساتھ تیار کیا گیا ہے۔

## ۱۳۔ المترجم الکافی

المترجم الکافی عربی سے انگلش اور انگلش سے عربی ترجمہ کا بہترین سافٹ ویئر ہے۔ اگرچہ یہ ترجمہ الٹوینک (Automatic) ہوتا ہے لیکن پھر بھی تقریباً ۸۰% صحیح ہوتا ہے۔ تھوڑی محنت اور سمجھ سے بالکل درست ترجمہ ہو سکتا ہے۔

## ۱۴۔ عربی زبان و ادب کے اہم سرچ انجنز، سائٹس اور سافٹ ویئر کی فہرست

(Arabic Search Engines)

## الف۔ محرکات البحث العربية

(www.ayna.com)

۱. آین

(www.khayma.com)

۲. النخيمة العربية

(www.cyoon.com)

۳. عیون

(www.naseej.com)

۴. نسیخ

(www.raddadi.com)

۵. دليل المواقع العربية

(www.sultan.org/a)

۶. دليل سلطان للمواقع الاسلامية العربية

(www.biblioislaminet/ar)

۷. موقع الابحاث

(e.Libraries)

## ب۔ مکتبات الیکرونیة

(www.waqfeya.net)

۱. المکتبة الوقفية



- (www.said.net) ۲. المكتبة صيد الفوائد  
 (www.furat.com) ۳. مكتنة فرات  
 (www.kfni.org.sa) ۴. مكتبة الملك فهد الوطنية  
 (www.abookstipsclib.com) ۵. المكتنة العربية

### ج۔ مواقع اللغة العربية و آدابها

#### Websites of Arabic Language & Literature

- (www.arabicl.net) ۱. نادى اللغة العربية  
 (www.voicefarabic.com) ۲. شبكة صوت العربية  
 (www.acatap.htmlplanet.com) ۳. المجمع العلمى العراقى  
 (www.arabicacademy.org.eg) ۴. مجمع اللغة العربية، القاهرة  
 (www.adab.com) ۵. ادب  
 (www.diwanalarab.com) ۶. ديوان العرب  
 (www.alsher.com) ۷. شبكة الشعر  
 (www.mashaheer.com) ۸. مشاهير العرب  
 (www.arabicstory.net) ۹. موقع القصة العربية  
 (www.pakarabic.com) ۱۰. ملتقى باكستان العربى

### د۔ عربى زبان و ادب كے اهم سافٹ ويئرز

#### Softwares of Arabic Language & Literature

۱. مكتبة الادب العربى  
 ۲. مكتبة الشعر العربى  
 ۳. مكتبة النحو والصرف  
 ۴. مكتنة المعاجم والمصطلحات  
 ۵. اطلس النحو العربى



۶. تعلیم الاملاء لطلاب المدارس

۷. تعلیم العربیة للناطقین بالانجليزية

مندرجہ بالا سافٹ ویئرز ”تراٹھ“ کمپنی کے تیار کردہ ہیں (<http://www.turath.com>) اس کے علاوہ ”الاریس“ کمپنی نے بہت اہم عربی و اسلامی سافٹ ویئرز تیار کئے ہیں۔

(<http://www.elariss.com>)

۱۵. المكتبة الشاملة

المكتبة الشاملة ایک جامع لائبریری ہے۔ یہ صرف ایک جامد ذخیرہ کتب نہیں بلکہ اس میں اپنی ضرورت کے مطابق اضافہ اور کمی بھی کی جاسکتی ہے۔ اس خصوصیت کی وجہ سے یہ ایک محقق کی ذاتی لائبریری بھی بن سکتی ہے۔ مکتبہ شاملہ کے چوتھے ورژن (Fourth Version) میں مندرجہ ذیل عنوانات کے تحت کتب کو درج کیا گیا ہے:

التفاسیر ، علوم القرآن ، متون الحدیث ، الاجزاء الحدیثیة ، کتب ابن ابی دنیا ، شروح الحدیث ، کتب العلل ، کتب التخریج ، کتب الالبانی ، مصطلح و علوم الحدیث ، الرجال و التراجم و الطبقات ، العقیدة ، العقیدة المسندة ، کتب الانساب ، اصول و قواعد الفقه ، فقه حنفی ، فقه مالکی ، فقه شافعی ، فقه حنبلی ، فقه عام ، السیاسة الشرعیة ، الفتاوی ، بحوث و مسائل مالیة و اقتصادیة ، کتب ابن تیمیة ، کتب ابن قیم ، الاخلاق و الآداب و الرقائق ، السیرة و الشمائل الشریفیة ، کتب التاریخ ، کتب البلدان ، علوم اللغة و المعاجم ، کتب الادب ، دواوین الشعر ، فهارس الکتب ، الطب ، شروح اخرى ، الفقه العام ، معاجم اللغات الأخری ، علوم القرآن ، التفسیر ، المجلات و البحوث و الدوریات ، کتب عامة . الاجزاء الحدیثیة . النحو و الصرف ، مصطلح الحدیث ، اصول الفقه و القواعد الفقھیة ، السیرة و الشمائل ، النحو و الصرف ، التراجم و الطبقات ، کتب التخریج و الزوائد ، الاخلاق و الرقائق و الاذکار ، الجوامع و المجلات و نجوها .



یہ سافٹ ویئر بالکل مفت دستیاب ہے۔ آپ انٹرنیٹ سے اسے اپنے کمپیوٹر میں مفت ڈاؤن لوڈ کر سکتے ہیں۔ اس کے لیے ویب سائٹ ہے۔ <http://www.shamela.ws/>۔ اس کے علاوہ اس ویب سائٹ سے آپ مکتبہ شاملہ میں شامل ہونے والی نئی کتابوں اور نئے اضافہ جات کو بھی Download کر سکتے ہیں۔

۱۶۔ آسان قرآن و حدیث: (Easy Quran wa Hadees)

یہ سافٹ ویئر مشہور ادارہ A.Q.F.S (Al Quran Facts and Statistics) برکت مارکیٹ، نیوگارڈن ٹاؤن، لاہور کا تیار کردہ ہے۔ اس پروگرام کا ورژن (3.1) قرآن مجید کے دس اردو تراجم، گیارہ انگریزی تراجم، گیارہ کتب احادیث کے اردو تراجم اور چھ کتب احادیث کے انگریزی تراجم پر مشتمل ہے۔ اس پروگرام میں مکمل عربی اور اردو متن کے ساتھ ڈیٹا بیس، الفاظ اور موضوعات کے حساب سے تلاش کی سہولت موجود ہے۔ آسان قرآن و حدیث کا سافٹ ویئر حاصل کرنے کے لیے اس e-mail پر رابطہ کیا جاسکتا ہے: [easyquranwahadees@gmail.com](mailto:easyquranwahadees@gmail.com)

## حوالہ جات

۱۔ مزید تفصیل کے لیے دیکھئے:

۱۔ تحقیقی مقالے کے موضوع کا انتخاب اور اس کی خاکہ سازی (علوم اسلامیہ کے طلبہ کے لیے جدید رہنما اصول اور طریقے)، خورشید احمد سعیدی، درمجلہ معارف اسلامی، جلد نمبر ۱۳، شمارہ نمبر ۱، جنوری تا جون ۲۰۱۳ء، فیکلٹی آف عربک اینڈ اسلامک سٹڈیز، علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی اسلام آباد۔

۲۔ المدخل الی استخدام الحاسوب لطلاب اللغة العربية، الدكتور عبد الماجد ندیم، ص ۷۸۵، اورینٹل بکس لاہور، طبع اول۔ ۲۰۰۱م۔

۳۔ اسلامی تحقیق کے جدید ذرائع (مقالہ ایم۔ اے، کالج آف شریعہ، منہاج یونیورسٹی لاہور، ۲۰۰۷-۲۰۰۸)۔



## مصادر و مراجع کی فہرست

### (BIBLIOGRAPHY)

— القرآن الکریم۔

- ۱۔ آثار الحدیث، علامہ خالد محمود، دارالمعارف، لاہور، ط اول، ۱۹۸۵ء۔
- ۲۔ اردو میں اصول تحقیق، مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانی بخش (۲ جلدیں)، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، طبع اول، ۱۹۸۶ء۔
- ۳۔ اردو دائرہ معارف اسلامیہ، پنجاب یونیورسٹی، لاہور، ۱۹۷۱ء، ط اول۔
- ۴۔ اردو میں تحقیقی اصول و طریق کار سے متعلق توضیحی سرمایہ، رابعہ اقبال، مشمولہ مجلہ ”تحقیق“، چوتھا شمارہ، شعبہ اردو، سندھ یونیورسٹی، ۱۹۹۰ء۔
- ۵۔ اردو تحقیق چند تصریحات، چند تجاویز، ڈاکٹر عبدالستار صدیقی، در مجلہ ”تحقیق“ دوسرا شمارہ، شعبہ اردو، سندھ یونیورسٹی، ۱۹۸۸ء۔
- ۶۔ اردو میں فنی تدوین، مرتب: ڈاکٹر ایم ایس ناز، ادارہ تحقیقات اسلامی، بین الاقوامی اسلامی یونیورسٹی اسلام آباد، طبع: اول، ۱۹۹۱ء۔
- ۷۔ الأصابة فی تمیز الصحابة، شهاب الدین أبی الفضل أحمد بن علی بن حجر العسقلانی (۸۵۲ھ)، وبہامشہ الاستیعاب فی معرفة الأصحاب لابن عبدالبر القرطبی (۴۶۳ھ)، دار صادر، الطبعة الأولى: ۱۳۲۸ھ۔
- ۸۔ اصول تحقیق (روداد سیمینار)، مرتب: اعجاز راہی، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، ط اول، ۱۹۸۶ء۔



- ۹۔ اصول تحقیق (مطالعائی راہنما)، مرتبہ: ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد، س-ن۔
- ۱۰۔ اصول تحقیق، قاضی عبدالودود، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم۔ سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد۔
- ۱۱۔ اصول تحقیق، ڈاکٹر سعید اللہ قاضی، ادارہ تعلیمی تحقیق تنظیم اساتذہ پاکستان، ۳۔ بہاول شیر روڈ مزنگ لاہور، اشاعت: دوم، ۲۰۰۲ء۔
- ۱۲۔ امام اعظم اور علم الحدیث، محمد علی صدیقی کاندھلوی، انجمن دارالعلوم الشہابیہ سیالکوٹ، ۱۹۸۱ء۔
- ۱۳۔ اِلاء ورموز اوقاف کے مسائل (روداد سیمینار) مرتب: اعجاز راہی، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، ط اول، ۱۹۸۵ء۔
- ۱۴۔ پاکستان میں تحقیق مخطوطات کا مسئلہ اور چند تجاویز، ڈاکٹر شیر محمد زمان، مشمولہ مجلہ فکر و نظر خصوصی اشاعت (مخطوطات) اسلام آباد، ادارہ تحقیقات اسلامی، بین الاقوامی اسلامی یونیورسٹی، ج ۳۵، ش ۲، ۳، ۱۹۹۷ء تا ۱۹۹۸ء۔
- ۱۵۔ تاریخ فنون الحدیث، محمد عبدالعزیز الخولی، دارالقلم بیروت - لبنان، الطبعة الأولى: ۱۹۸۶م۔
- ۱۶۔ تحقیق اور اس کا طریق کار، ڈاکٹر عنند لیب شاذلی، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم۔ سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد۔
- ۱۷۔ تحقیق اور اصول وضع اصطلاحات پر منتخب مقالات، مرتب: اعجاز راہی، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، ط اول، ۱۹۸۶ء۔
- ۱۸۔ تحقیقی عمل کے مراحل، پروفیسر عبدالستار دلوی، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم۔ سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۱۹۔ تحقیق کا طریق کار، ڈاکٹر ش۔ اختر، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش،



مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔

- ۲۰۔ تحقیق کافن، ڈاکٹر گیان چند، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، ط اول، ۱۹۹۳ء۔
- ۲۱۔ تحقیق کی چند تعریفات (اخذ و ترجمہ)، مترجم: نجم الاسلام، مشمولہ مجلہ ”تحقیق“ دوسرا شمارہ، شعبہ اردو، سندھ یونیورسٹی، ۱۹۹۸ء۔
- ۲۲۔ تحقیق کے روایتی اسلوب، ڈاکٹر نجم الاسلام، مشمولہ: تحقیق اور اصول وضع اصطلاحات پر منتخب مقالات، مرتب: اعجاز راہی، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول، ۱۹۸۶ء۔
- ۲۳۔ تحقیق کے اصول و ضوابط احادیث نبویہ کی روشنی میں، ڈاکٹر عمر فاروق غازی، کرنل (ر)، ص ۶۳ تا ۷۷، فاران کمیونی کیشنز، لاہور، ط اول: اگست ۱۹۹۸ء۔ ۸۔
- ۲۴۔ تحقیق کے بنیادی لوازم، ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان، مشمولہ: تحقیق اور اصول وضع اصطلاحات پر منتخب مقالات، مرتب: اعجاز راہی، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول، ۱۹۸۶ء۔
- ۲۵۔ تحقیق میں حواشی، حوالہ جات اور اقتباسات، پروفیسر سعید الدین ڈار، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق ج ۱، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۲۶۔ تحقیق و تصحیح متن کے مسائل، ڈاکٹر نذیر احمد، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق ج ۱، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۲۷۔ تحقیق و تنقید، ڈاکٹر سید عبداللہ، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۲۸۔ تحقیق و تنقید، پروفیسر ڈاکٹر نگیندر، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم۔ سلطانہ بخش، ج ۲ مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد۔
- ۲۹۔ تحقیق و تدوین، غلام عباس باہو، مکتبہ دانیال، لاہور، س۔ ن۔
- ۳۰۔ تحقیق و تنقید کا ربط باہم، سید مظفر، مشمولہ: تحقیق اور اصول وضع اصطلاحات پر منتخب مقالات، مرتب: اعجاز راہی، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، طبع اول ۱۹۸۶ء۔
- ۳۱۔ تدریب الراوی فی شرح تقریب النوای، علامہ جلال الدین



- السیوطی، (متوفی ۵۹۱۱ھ)، میر محمد کتب خانہ، کراچی، ط: ۸، ۱۹۷۲ء۔
- ۳۲۔ تدوین حدیث، مناظر احسن گیلانی، مکتبہ اسحاقیہ کراچی، س-ن۔
- ۳۳۔ تذکرۃ الحفاظ، امام عبداللہ شمس الدین الذہبی (متوفی ۵۷۴۸ھ)،  
حیدرآباد دکن، ۱۹۵۵م۔
- ۳۴۔ ترجمان السنۃ، مولانا بدر عالم، سعید کمپنی کراچی: س-ن۔
- ۳۵۔ تصنیف و تحقیق کے اصول، ڈاکٹر قاضی عبدالقادر، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد، طبع  
اول، ۱۹۹۲ء۔
- ۳۶۔ تعلیمی تحقیق اور اس کے اصول و مبادی، ڈاکٹر احسان اللہ، نگارشات میاں چیمبرز، لاہور،  
۱۹۹۱ء۔
- ۳۷۔ تنقید متن، ڈاکٹر نذیر احمد علوی، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش،  
مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۳۸۔ تیسیر مصطلح الحدیث، ڈاکٹر محمود الطحان، دارالکتب العربیۃ پشاور، س-ن۔
- ۳۹۔ توجیہ النظر الی أصول الاثر، طاہر بن صالح بن أحمد  
الجزائری (م ۱۳۳۸ھ)، دارالمعرفة، س-ن۔
- ۴۰۔ الثقافة الاسلامیة، علامہ راغب الطباح، مترجم: افتخار احمد بلخی، ترجمہ بنام  
”تاریخ افکار و علوم اسلامی“، اسلامک پبلی کیشنز لاہور، ط ۴، ۱۹۸۹ء۔
- ۴۱۔ جامع الأصول من أحادیث الرسول، الامام أبو السعادات مبارک بن  
محمد ابن الأثیر الجزری (م ۶۰۶ھ)، تحقیق: محمد حامد الفقی، دار  
احیاء التراث العربی بیروت - لبنان، الطبعة الثانية: ۱۳۰۰ھ/۱۹۸۰م۔
- ۴۲۔ الجامع الصحیح، الامام محمد بن اسماعیل البخاری (متوفی ۲۵۶ھ)،  
دارالفکر بیروت: س-ن۔



- ۴۳۔ جامع بیان العلم و فضلہ، ابن عبدالبر الاندلسی، مترجم: عبدالرزاق ملیح آبادی، لاہور: ادارہ اسلامیات، ط: اول، ۱۹۷۷ء۔
- ۴۴۔ حجة الله البالغة، شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، مترجم: مولانا عبدالحق حقانی۔ حامد اینڈ کمپنی لاہور، س-ن۔
- ۴۵۔ الحدیث و المحدثون، محمد، ابو زہو، مصر: ط اولی، ۱۹۸۵ء۔
- ۴۶۔ حدیث کا درایتی معیار، مولانا تقی امینی، قدیمی کتب خانہ، کراچی، ۱۹۸۶ء۔
- ۴۷۔ حفاظت حدیث، ڈاکٹر خالد علوی، المكتبة العلمية، لاہور، ط اول، ۱۹۷۱ء۔
- ۴۸۔ حفاظت و حجیت حدیث، محمد محترم فہیم عثمانی، دارالکتب لاہور، ط دوم، ۱۹۸۹ء۔
- ۴۹۔ دراسات فی الحدیث النبوی و تاریخ تدوینہ، الدكتور مصطفى الاعظمی، المكتب الاسلامی، ۱۹۹۶ء م۔
- ۵۰۔ دستاویزی طریق تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۵۱۔ الرحلة فی طلب العلم، احمد بن علی بن ثابت بن احمد بن مہدی الخطیب البغدادی، (متوفی ۲۳۶۳ھ)، تحقیق: ڈاکٹر نور الدین عتر، دارالکتب العلمية بیروت، ط اولی، ۱۹۷۵ء۔
- ۵۲۔ الرسالة المستطرفة، محمد جعفر الکتانی، اصح المطابع، کراچی، س-ن۔
- ۵۳۔ سنن ابن ماجہ، امام محمد بن یزید القزوی (متوفی ۲۴۷۳ھ)، تحقیق: محمد فؤاد عبدالباقی، عیسیٰ البابي الحلبي، مصر/ ۱۹۵۲ء۔
- ۵۴۔ السنة و مکانتها فی التشريع الاسلامی، مصطفى السباعی، مترجم: غلام احمد حریری، ترجمہ بنام ”حدیث رسول ﷺ کا تشریحی مقام“، ملک سنز پبلیشر فیصل آباد، س-ن۔
- ۵۵۔ سیرت النبی ﷺ، مولانا شبلی نعمانی، مکتبہ تعمیر انسانیت، لاہور، ط: اول، س-ن۔
- ۵۶۔ علوم الحدیث و مصطلحہ، ڈاکٹر سحیحی صالح، مترجم: غلام احمد حریری، ترجمہ بنام



- ”علوم الحدیث“، تاجران کتب فیصل آباد، ط: ۳، ۱۹۸۱ء۔
- ۵۷۔ علم الحدیث، عبداللہ العمادی، مکتبہ نشاۃ ثانیہ حیدرآباد، س-ن۔
- ۵۸۔ علم رجال الحدیث، مولانا تقی الدین الندوی المظاہری، مکتبہ الفردوس لکھنؤ (الہند) ۱۹۸۵ء۔
- ۵۹۔ علم فہرسة الحدیث، راجعہ وَقَدَمَ لَهُ: الدكتور يوسف عبدالرحمن المرعشيلي، دارلمعرفة بيروت - لبنان، الطبعة الأولى: ۱۴۰۶ھ-۱۹۸۶م۔
- ۶۰۔ فتح المغیث، شمس الدین محمد بن عبدالرحمن السخاوی، احمد نشات محمود شکر الأزهر الشریف، س-ن۔
- ۶۱۔ فن تحقیق، ڈاکٹر غلام مصطفیٰ خان، مشمولہ، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، اردو میں اصول تحقیق ج ۱، اسلام آباد: مقتدرہ قومی زبان، طبع: اول۔
- ۶۲۔ فن تحقیق، عبدالرزاق قریشی، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق ج ۱، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۶۳۔ فوائد جامعہ برعجالہ نافعہ، شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی (م ھ)، شارح: مولانا محمد عبدالحلیم چشتی، نور محمد کارخانہ تجارت کتب، کراچی، ط اول: ۱۳۸۳ھ-۱۹۶۳ء۔
- ۶۴۔ الفہرست، ابو الفتح، محمد ابن اسحاق بن النديم البغدادي، (متوفی ۵۳۸۵)، دارالمعرفة، بيروت، لبنان،
- ۶۵۔ الفہرست، ابن نديم، مترجم: محمد اسحاق بھٹی، ادارہ ثقافت اسلامیہ لاہور، ط: دوم، ۱۹۹۰ء۔
- ۶۶۔ فہم قرآن، مولانا سعید احمد اکبر آبادی، ادارہ اسلامیات لاہور، ط، اول، ۱۹۸۲ء۔
- ۶۷۔ قواعد التحدیث فی فنون مصطلح الحدیث. محمد جمال الدین القاسمی، بيروت: دارالکتب العلمیة، ط: اولی، ۱۹۷۹م۔
- ۶۸۔ کشف الظنون عن أسامی الکتب والفنون، ملاکاتب چلیپی



- مصطفیٰ بن عبداللہ المعروف بہ حاجی خلیفہ (م ۱۰۶۷ھ)، مکتبۃ  
المثنیٰ بغداد، آفسٹ فوٹو استنبول، س-ن۔
- ۶۹۔ کشاف اصطلاحات الفنون، الشیخ القاضی العلامة محمد اعلیٰ بن علی الفاروقی  
التھانوی (م ۱۱۹۱ھ-۱۷۷۷ھ)، سہیل اکیڈمی، لاہور پاکستان، س-ن۔
- ۷۰۔ کیف تکتب بحثا و رسالۃ، الدكتور احمد شلبی، مکتبۃ النهضة المصریۃ،  
القاہرۃ، طبع: ۱۱، ۱۹۹۰ء۔
- ۷۱۔ لائبریری سائنس اور اصول تحقیق، سید جمیل احمد رضوی، مقتدرہ قومی زبان، اسلام آباد،  
طبع: دوم، دسمبر ۱۹۹۲ء۔
- ۷۲۔ لسان العرب، ابوالفضل جمال الدین محمد بن مکرم بن منظور  
الافریقی، (متوفی ۱۱۱۱ھ)، دارالصادر، بیروت، س-ن۔
- ۷۳۔ متن اور روایت متن، ڈاکٹر نذیر احمد علوی، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانی بخش،  
مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۷۴۔ محدثین عظام اور ان کے علمی کارنامے، مولانا تقی الدین الندوی المظاہری، مجلس نشریات  
کراچی، س-ن۔
- ۷۵۔ مخطوطات: اہمیت، حصول، تحفظ، ڈاکٹر انجم رحمانی، مشمولہ مجلہ فکر و نظر خصوصی اشاعت  
(مخطوطات) ادارہ تحقیقات اسلامی، بین الاقوامی اسلامی یونیورسٹی، اسلام آباد، ج ۳۵،  
ش ۲، ۱۹۹۷ء تا ۱۹۹۸ء۔
- ۷۶۔ معرفۃ علوم الحدیث، امام ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ الحاکم  
النیشاپوری (متوفی ۴۰۵ھ)، مترجم: مولانا محمد جعفر شاہ پھلواری، لاہور، ۱۹۷۰ء۔
- ۷۷۔ المسند، امام احمد بن حنبل شیبانی (متوفی ۲۴۱ھ)، تحقیق:  
احمد شاہ کر۔ قاہرہ: دارالمعارف، س-ن۔



- ۷۸۔ مصادر الشعر الجاهلی، ناصر الدین الأسد، دار الجیل بیروت، ط ۱۹۹۸ء۔
- ۷۹۔ المفردات فی غریب القرآن، العلامة حسن بن محمد بن المفصل الراغب الاصفہانی، (متوفی ۵۳۰ھ)۔ تحقیق و ضبط: محمد سید گیلانی، اصح المطابع، کراچی، س-ن۔
- ۸۰۔ مقالہ کی تسوید، عبدالرزاق قریشی، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۸۱۔ مقالہ کی پیش کش، پروفیسر عبدالستار دلوی، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق ج ۱، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔
- ۸۲۔ مقدمہ ابن خلدون، اردو ترجمہ: مولانا سعد حسن خان یوسفی، کراچی، س-ن۔
- ۸۳۔ مقدمة تخفة الأحوذی شرح جامع الترمذی، الامام الحافظ أبو العلی محمد عبدالرحمن بن عبدالرحیم المبار کفوری (۱۳۵۳ھ) تحقیق: عبدالرحمن محمد عثمان، المكتبة السلفية بالمدينة المنورة، ت ن۔
- ۸۴۔ مقدمة شرح صحیح مسلم، یحییٰ بن شرف النووی، (صحیح مسلم بشرح النووی)، مؤسسة مناهل العرفان بیروت، س-ن۔
- ۸۵۔ المقدمة، عبدالرحمن بن محمد بن خلدون، بیروت: مؤسسة العلمی، س.ن۔
- ۸۶۔ مقدمہ تاریخ تدوین حدیث، فواد سزگین، مترجم: سعید احمد، ادارہ تحقیقات اسلامی بین الاقوامی اسلامی یونیورسٹی، اسلام آباد، ط اول، ۱۹۸۵ء۔
- ۸۷۔ منتخب مقالات، اردو علماء و رموز اوقاف، مرتب ڈاکٹر گوہر نوشاہی، مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع: اول، ۱۹۸۶ء۔



۸۸۔ منہاج البخاری، محمد معراج الاسلام، عرفان القرآن، اعوان ٹاؤن، لاہور،

س-ن۔

۸۹۔ موضوع کا انتخاب، ڈاکٹرش- اختر، مشمولہ اردو میں اصول تحقیق، ڈاکٹر ایم سلطانہ بخش،

مقتدرہ قومی زبان اسلام آباد، طبع اول۔

۹۰۔ الموطأ، امام مالک ابن انس، (متوفی ۹۷ھ)، تحقیق: محمد فواد

عبدالباقی، دار احیاء الکتب مصر، س-ن۔

۹۱۔ نعمة المنعم (اردو شرح مقدمہ مسلم)، مولانا نعمت اللہ، قدیمی کتب خانہ کراچی:

س-ن۔





## یہ کتاب نیشنل بک فاؤنڈیشن کی درج ذیل بک شاپس پر دستیاب ہے

- اسلام آباد: 6۔ ماڈو ایریا، تعلیمی چوک، G-8/4، اسلام آباد فون: 051-9261125
- راولپنڈی: ریلوے بک شال: پلیٹ فارم نمبر 3، ریلوے سٹیشن، راولپنڈی کینٹ فون: 0333-5756891
- لاہور: 56-57۔ شادمان کالونی، شادمان مارکیٹ، لاہور فون: 042-99203865 فیکس نمبر: 042-99203864
- ٹریولرز بک کلب/شاپ: علامہ اقبال انٹرنیشنل ایئر پورٹ، لاہور فون: 042-37740961
- ریلوے بک شال: پلیٹ فارم نمبر 2، ریلوے سٹیشن، لاہور فون: 0321-4376490
- وزیر آباد: ریلوے بک شال: پلیٹ فارم نمبر 3، ریلوے سٹیشن، وزیر آباد فون: 0331-6186996
- واہ کینٹ: این بی ایف بک شاپ، سنٹرل لائبریری عمارت واہ کینٹ (Premises) فون: 051-9314004
- فیصل آباد: شاپ نمبر 10، ہاشمی ہال شاپنگ سنٹر، زرعی یونیورسٹی، فیصل آباد فون: 041-2648179
- ملتان: شاپ نمبر 4-5-6، ایم۔ ڈی۔ اے روڈ، نزد آرٹ کونسل، ملتان فون: 061-9201281
- ریلوے بک شال: پلیٹ فارم نمبر 3، ریلوے سٹیشن، ملتان کینٹ فون: 0301-7556886
- پشاور: پلاٹ نمبر 36-37، سیکٹر B-2، فیز 5، حیات آباد، پشاور فون: 091-9217273 فیکس نمبر: 091-9217273
- ایبٹ آباد: فرسٹ فلور، پبلک لائبریری، جلال بابا آڈیٹوریم، ایبٹ آباد فون: 0992-9310291
- ڈیرہ اسماعیل خان: این بی ایف بک شاپ، گورنمنٹ اسلامیہ ہائر سیکنڈری سکول نمبر 2، سرکلر روڈ، ڈی آئی خان فون: 0336-7221016
- کراچی: لیاقت میموریل لائبریری، گراؤنڈ فلور، سٹیڈیم روڈ کراچی فون: 021-99230334 فیکس نمبر: 021-99231089
- ٹریولرز بک کلب/شاپ: ڈومیسٹک ڈیپارچر لاؤنج، جناح انٹرنیشنل ایئر پورٹ، کراچی فون: 021-99248432
- ریلوے بک شال: پلیٹ فارم نمبر 1، کینٹ ریلوے سٹیشن، کراچی فون: 0344-3102536
- سکھر: پبلک لائبریری، اولڈ سکھر فون: 071-9310892
- روہڑی: ریلوے بک شال: پلیٹ فارم نمبر 3-4، ریلوے سٹیشن، روہڑی فون: 0312-8526756
- حیدرآباد: این بی ایف بک شاپ، اولڈ کیمپس، گاڑی کھانا، حیدرآباد فون: 022-9200251 0347-3201467
- لاڑکانہ: این بی ایف بک شاپ، شہید محترمہ بے نظیر بھوشمیڈیکل یونیورسٹی، لاڑکانہ فون: 074-9410229
- جیکب آباد: این بی ایف بک شاپ، ریڈ کریسنٹ بلڈنگ، ڈی سی چوک، قائد اعظم روڈ، جیکب آباد فون: 0722-650817
- خیرپور: این بی ایف بک شاپ، شاہ عبداللطیف یونیورسٹی، خیرپور فون: 0306-3230045
- کوئٹہ: مکان نمبر 3-9/9، ناتھانگلہ سٹریٹ، کوئٹہ فون: 081-9201570 فیکس: 081-9201869

## نیشنل بک فاؤنڈیشن

6۔ ماڈو ایریا، تعلیمی چوک، G-8/4، پوسٹ بکس نمبر 1169، اسلام آباد  
فون: 051-2255572، 9261125 فیکس نمبر: 051-2264283  
ای میل: books@nbf.org.pk ویب سائٹ: www.nbf.org.pk



# اصول تحقیق

مجھے یہ جان کر بہت خوشی ہوئی ہے کہ ہماری یونیورسٹی کے استاد کی تالیف کردہ اس کتاب کو ملک کی دیگر یونیورسٹیوں نے ایم اے، ایم فل اور پی ایچ ڈی سطح کے تحقیق کے پرچہ کے لیے لازمی امدادی مواد کے طور پر منظور کیا ہوا ہے۔ ہماری یونیورسٹی میں بھی ان ہی سطحوں کے ”اصول تحقیق“ کے پرچہ کے لیے اسے امدادی مواد کے طور پر منظور کیا جا چکا ہے۔ مجھے اُمید ہے کہ ان شاء اللہ اس کتاب سے نہ صرف طلبہ بلکہ اساتذہ کرام بھی مستفید ہوں گے۔

پروفیسر ڈاکٹر شاہد صدیقی  
وائس چانسلر

علامہ اقبال اوپن یونیورسٹی، اسلام آباد



Price: Rs.250/-